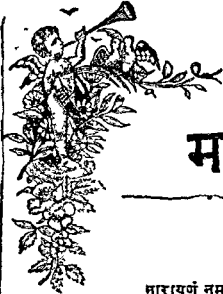


सूत्र	पत्र	Index to Sri and Saupthik Parv	पृष्ठ
१८ गान्धारी विलाप	७४०२	18. Gandhari's Lamentation	7402
१९ गान्धारी विलाप	४	19. " "	4
२० गान्धारी विलाप	६	20. " "	14
२१ गान्धारी विलाप	७	21. " "	7
२२ गान्धारी विलाप	९	22. " "	9
२३ गान्धारी विलाप	११	23. " "	11
२४ गान्धारी विलाप	१४	24. " "	14
२५ गान्धारी विलाप	१७	25. " "	17
२६ दाह क्रिया	२१	26 The Cremation Ceremony	21
२७ कर्णका सूत्रजन्म	६६	27 Karan's Secret Bath	26





महाभारत

सौप्तिक पर्व

नारायणं नमस्कृत्य नरञ्चैव नरोत्तमम् ।
 देवीं सरस्वतीं चैव ततो जयमुदीरयेत् ॥

७ सञ्जय उवाच । ततस्ते सहिता वीरा प्रयाता वृक्षिणामुखा । उपास्तमनवेलायां
 शिबिराऽप्यासमागता ॥ १ ॥ विमुच्यवाहांस्वरिता भीता समभवस्तदा । महत्तं देशमा
 साद्य प्रच्छन्नान्यविशन्त ते ॥ २ ॥ सेनानिवेशमभितो नातिदूरमवस्थिता । निकृत्ता
 निश्चितैः शस्त्रैः समन्तात् क्षमविश्रुता । दीर्घमुष्णञ्च निश्चस्य पाण्डवानेव चिन्तयन्
 ॥ ३ ॥ ध्रुत्वा च निन्दं घोरं पाण्डवानां जयैणिणाम् अनुसारमयाद्भीताः प्रांमुखा-
 प्राप्रवन् पुनः ॥ ४ ॥ ते मुहूर्त्तं ततो गत्वा भ्रातृवाहाः पिपासिताः । नामुष्यन्त महे

अध्याय १ ॥

श्रीनारायण नरोत्तम नरको और सरस्वती देवीको नमस्कार करके जय
 नाम महाभारत इतिहासको वर्णन करताहूँ सञ्जयवालेइसके पीछे बहवीर एकसाथही
 दक्षिण ओरको चले और सूर्यास्तके समय डेरोंके पास आये । १। तब ब्रह्मश्रीप्रही
 रथोंको छोड़ कर भयभीत हुये और घनदेश तो पाकर गुप्त निवासी हुये । २। अपनी सेना
 के निवासस्थान से कुछ थोड़ेही अन्तरपर निश्च हुये तेजशस्त्रोंसे छूटेभंग चारोंओर
 से घायन उन वीरोंने लम्बी और उष्णवासा लेकर पांडवोंकी चिन्ताकरी । ३।
 फिर विजयाभिलाषी पांडवों के घोर शब्दको सुनकरपीछा करनेके भयसे भयभीत
 होकर पीछेकी ओरको चलादिये । ४। वह सभ एकमुहूर्त चलकर तृपार्श्व और
 थकीसवारी वाले सह न सके वह बड़े धनुषधारी क्रोध और अशान्तताके आधीन

SAUPTIK PARV II. CHAPTER I.

Having bowed down to Narayan, to the best of males and to
 Saraswati, let us speak of the history of the Victory. Sanjaya said:
 "Then the warriors went together southwards and approached the
 camp at sunset. They came down from their cars in terror and en-
 tered a dense forest a short distance from their camp. With wounded
 hearts, they thought of the Pandavas. Then hearing
 the Pandavas, they receded further

वशासाः क्रोधात्मवशाङ्गताः । राक्षो वधेन सन्तप्ता मुहूर्त्तं समवस्थिताः ॥५॥ घृतराष्ट्र
 उपांशु । अश्वेन यमिदं कर्म कृतं भीमेन सञ्जय । यत् स नागायुतप्राणः पुत्रो मम
 निपातितः ॥ ६ ॥ अश्व्याः सधभूतानां वज्रध्वजानो युवा । पाण्डवैः समरे पुत्रो निहतो
 मम सञ्जय ॥ ७ ॥ न दिष्टमभ्यतिक्रान्तुं शक्यं गावहगणे नरैः । यत् समरे य रणे
 पार्थः पुत्रो मम निपातितः ॥ ८ ॥ अद्रिसारमयं नूनं हृदयं मम सञ्जय । हतं पुत्रशतं
 श्रुत्वा यन्न दीर्घं सहस्रधा ॥ ९ ॥ कथं हि वृद्धमिधुनं हृदपुत्रं भविष्यति । न ह्यहं
 पाण्डवेष्यस्य विषये घस्तुमुत्सहे ॥१०॥ कथं राज्ञः पिता भूत्वा स्वधं राज्ञाच सञ्जय
 मेष्यभूतः प्रवर्त्तय पाण्डवेष्यस्य शासनात् ॥११॥ आज्ञाप्य पृथिवीं सर्वां स्त्रियांश्चा मूर्द्धनि
 सञ्जय । कथमद्य भविष्यामि-मेष्यभूतो दुःस्मृतकृत ॥ १२ ॥ कथं भीमस्य वाक्शानि
 थोऽंतु शक्यामि सञ्जय । येन पुत्रशतं पूर्णमेकेन निहतं मम ॥ १३ ॥ कृतं सत्यं वच

और राजा के मारे जाने से दुःखी चित्त होकर एक मुहूर्त्त तक नियत हुये । ५ ।
 घृतराष्ट्र बोले हैं संजय भीमसेने ने यह कर्म अश्वके अयोग्य किया जो चतस्र
 हजार हाथीके समान मेरे पुत्रको मारा । ६ । हे संजय वह मेरा पुत्र जो कि सब
 जीवोंसे अवश्य वज्रके समान हृद शरीरवालाया युद्धमें पांडवोंके हाथसे मारा गया । ७
 हे गोलगणके पुत्र संजय मनुष्यों से मारव्य उल्लेघन करनेके योग्य नहीं है जो
 मेरा पुत्र पांडवों के सम्मुख होकर मारा गया । ८ । हे संजय निश्चय करके मेरा
 हृदय पत्थर है जो सौपुत्रों को मृतक घुनकर भी विदीर्ण नहीं होता । ९ । मृतक
 पुत्रवाला वृद्धों का मिथुन किस प्रकार से रहेगा मैं पांडवों के देश में निवास करने
 को विचार नहीं करता हूँ । १० । हे संजय मैं राजाका पिता आप राजा होकर
 पांडवोंका आज्ञावर्ती होकर सेवकके समान कैसे कर्मकरूंगा । ११ । हे संजय पृथ्वी
 पर राज्यशासन करके और सब राजाओं के मस्तकपर नियत होकर कैसे उसकी
 आज्ञाका पालन करूंगा जिसने कि मेरे पुत्रोंका एक पूरा सैकड़ा मार डाला । १२ ।
 हे संजय वचन को न करनेवाले उस मेरे पुत्रने महात्मा विदुरजी के वचनको
 सत्याकिया हे संजय कठिन नाश करनेवालेका मैं कैसे आज्ञावर्ती हूंगा और किस

for fear of chase. But they could not go very far with their feeble
 bodies and tired beasts, and had to stop again. The great warriors, enraged,
 disheartened and sorrowful at the fall of their prince, staid there for
 a while." Dhritasashtra said, " It grieves me to hear that Bhishu slew
 my son who was like a myriad of elephants. 6. He was unslayable
 by others, with body hard as vajra, yet he was slain by the Pandavas.
 Fate is surely insurmountable; for my son fell down before the Pan-
 davas. Surely my heart is hard as it does not break on hearing the
 news of the death of my hundred sons. How can an old pair live
 without sons? I donot think that I shall live with the Pandavas. Be-
 ing a king and father of a king, how can I obey the Pandavas? 11.
 Having ruled over kings and kingdom, I cannot obey him who des-
 troyed my hundred sons. My son has proved the prediction of Vidur

सस्य विदुरस्य महारथिनः । अकुर्वता वचस्तेन मम पुत्रेण सञ्जय ॥ १४ ॥ अघर्षेण हते
 तात पुत्रे दुर्योधने मम । कृतघर्षां कृपां द्रौणिः । किमकुर्वत सञ्जय ॥ १५ ॥ सञ्जय
 उवाच । गत्वा तु तावका राजभातिदूरमवास्थिताः । अपश्यन्त वनं घोरं नानादुमलता
 वृतम् ॥ १६ ॥ ते मुहूर्त्तं तु विभ्रम्य स्वस्वतोयैर्हृद्योत्तमैः । सूर्यास्तमनवेलायां समासे
 दुर्महद्वनम् ॥ १७ ॥ नानामृगगणैर्जुष्टं नानापक्षिगणावृतम् । नानादुमलताञ्छ्रंभं नाना
 व्यालनिषेधितम् ॥ १८ ॥ नानातोयैः समाकीर्णं नानापुष्पोपशोभितम् । पश्चिनीशत
 संछ्रंभं नीलोत्पल समापुतम् ॥ १९ ॥ प्रविश्य तद्वनं घोरं वीक्ष्यमाणाः समन्ततः ।
 शाखासहस्रसंछ्रंभं न्यप्रोक्षं वदन्नुत्ततः ॥ २० ॥ उपेत्य तु तदां राजन् न्यप्रोक्षं ते महा
 रथाः । वदन्नुर्ध्वपदां भ्रष्टा भ्रष्टं तं वै धनस्पतिम् ॥ २१ ॥ तेवतीर्यथे रथेष्वक्ष विप्रमुख्य
 च बाजिनः । उपस्पृश्य यथान्यायं सन्ध्यामन्वास्तत प्रभो ॥ २२ ॥ ततो रथं पर्वतश्रेष्ठ

प्रकार से भीमसेनके वचन सुननेको समर्थद्वंगा । १४ । हे संजय अहाँ से भरे
 पुत्र दुर्योधनके मरनेपर कृतघर्षां कृपाचार्य और अश्रुत्यामाने क्या किया । १५ ।
 सञ्जय बोले हे राजा आपके वीर योड़ीदूर जाकर नियतहुये और नानाप्रकार के
 वृक्ष लताओंसे संयुक्त घोरवनको देखा । १६ । उन्होंने जन पीनेवाके उत्तम घाड़ों
 समेत एक मुहूर्त्त विश्रामकरके सूर्यास्तके समय एक ऐसे वनको पाया । १७ । जो
 कि नानाप्रकार के मृगसमूहोंसे सेवित भांतिभांतिके पक्षीगणोंसे व्याप्त और बहुत
 प्रकारके वृक्ष लतादिकोंसे भराआहु बहुत भांतिके सर्पोंसे सेवित । १८ । नानाप्रकार
 के जलों से युक्त बहुत भेदके पुष्पोंसे शोभित सैकड़ों कमलनिर्गों से पूर्ण और
 नीले कमलों से संयुक्तया । १९ । इसकेपीछे चारोंओरको देखते उस वीरोंने उस
 तव वनमें प्रवेश करके हजारों शाखाओं से युक्त बटके वृक्षको देखा । २० । हे राजा
 घोर उन नरोत्तम महारथियों ने बटवृक्षको पाकर उस उत्तम वृक्ष के नीचे जाके
 अपने२ रथों से उतरकर घाड़ोंको छोड़ा और न्यायके अनुसार स्नानादिक कामके
 वहसव अपनी २ संध्यावंदन में प्रवृत्तहुये । २२ । इसके पीछे पर्वतों में उत्तम

by his waywardness. How can I obey that great destroyer? How shall I be able to hear Bhishma's voice? What did Kritvarma, Kripacharya and Ashwathama do, when my son was unjustly slain?" 15 Sanjaya said, "Your warriors stood at a short distance and saw the forest of large trees and creepers. They watered their horses and having rested themselves for a while, they found the evening come upon them in a part of the forest abounding in deer, birds, trees, creepers, serpents, water, flowers and lotus lakes. Wandering in various directions they came under a large banyan tree. 20. They came down from their cars and left their horses. They made ablations and performed evening service. In the meantime the sun disappeared and the night, nourisher of all beings, prevailed. It was a starry

मनुप्राप्ते दिवाकरे । सर्वस्य जगतो धात्री शर्वरी समपद्यत ॥ २३ ॥ ग्रहेनक्षत्रताराभिः
प्रकीर्णाभिरलेकृतम् । नभोऽशुकमिधामाति प्रेक्षनीयं समन्तत ॥ २४ ॥ इच्छया ते प्रथ
ल्पन्ति ये सत्त्वा रात्रिचारिण । दिवाचराश्च ये सत्त्वास्ते निद्रावशमागता ॥ २५ ॥
रात्रिचचराणां सत्त्वानां निर्घोषोऽभूत् सुदारुण । क्रव्यादाश्च प्रमुदिता घोरा प्राप्ता च
शर्वरी ॥ २६ ॥ तस्मिन्प्राप्तिमुखे वीरे तु खशोकसमन्विता । कृतवर्मा कृपो द्रौणिकृपो
पविषिस्तु समम् ॥ २७ ॥ तत्रोपविष्टाः शोचन्तो न्यग्रोधस्य समीपत । तमेवार्थमति
क्रान्तं कुरुपाण्डवयो क्षयम् ॥ २८ ॥ निद्रया च परीताङ्गा निषेदुर्घरणीतले । अग्नेन
सुदृढ युक्ता विक्षता विविधे शरे ॥ २९ ॥ ततो निद्रावश प्राप्ता कृपमोजौ महारथी ।
मुखोचितावदुःखार्शो निषण्णौ घरणातले ॥ ३० ॥ तौ तु सुप्तौ महाराज अमशोकसम
न्विता । मेहाश्शयनोपेतौ भूमधिव ह्यागद्यत ॥ ३१ ॥ क्रोधाप्रवधश प्राप्तौ द्रौणपुत्रस्तु
भारत । नैव स्म स जगामाद्य निद्रा सर्वा इव इवसन् ॥ ३२ ॥ तलेभे स तु निद्रां च

अस्ताचल में सूर्य के पहुचने पर सब जगत् की धात्री रात्रि वर्त्तमान हुई पूर्ण
ग्रह नक्षत्र और ताराओं अलेकृत चारोंओर से दर्शनीय आकाश स्वर्ण विन्दुओं
से जटित बल्लके समान शोभायमान हुआ । २४ । जो रात्रि में घूमनेवाले
जीवों बहसक नींद के स्वाधीन वर्त्तमान हुये फिर रात्रि में घूमनेवाले जीवों के
शब्द भयानकहुये मांसभक्षी राक्षस अत्यन्त प्रसन्न हुये और घोररात्रि वर्त्तमानहुई
। २६ । रात्रिके उसघोर मुखमें दुःखशोकसे संयुक्त कृतवर्मा कृपाचार्य और अश्व-
त्थामा बराबर समीप बैठे उस बटक सम्मुख कौरव और पाण्डवों के होनेवाले नाश
को शोचते । २८ । नींदसे पूर्णशरीर और परिश्रमसे अत्यन्त संयुक्त नानामकारके
बाणों से घायल पृथ्वीपर बैठे गये । २९ । इसपरिच्छे दुःखके अयोग्य और सुखके
योग्य पृथ्वीपर बैठेहुये महारथी कृतवर्मा और कृपाचार्य नींदके वशीभूतहुये । ३० ।
हे महाराज यकायट और शोकसेयुक्त पूर्वसमयमें बहुमूल्य शयनोपर सोनेवाले बह
दोनों अनाधोके समान पृथ्वीपर सांगये । ३१ । हे भरतवंशी क्रोध और अशान्ती
में वर्त्तमान और तपोंके समान आसलेकृत अश्वत्थामाजी ने निद्राको नहींपाया ३२
शोकसे ज्वलितरूप उस घोरने निद्राको नहींपाया तबउस महाबाहुने उन घोरदर्शन

night and the sky looked as if stung with gold dots. Sleep prevailed
over creatures and the night rovers made a hideous noise. Car
nivorous rakshases were glad at the prospect of that dreadful dark
night. 26. Mergel in grief and sorrow, Kritvarma Kripacharya
and Ashwathama sat together. Thinking of the great destruction of
the Kauravas and Pandavas tired and sleepy, they sat wounded with
arrows. Kritvarma and Kripacharya, unaccustomed to bear such
hardship, lay on the ground 30 Full of grief and tired, the two great
warriors accustomed to sleep on precious beds, slept on bare earth
like helpless ones. Enraged and disatisfied, sighing like serpents,

दक्षिणतो द्वि म-युना । श्रीश्लाघ्यक्रे महाबाहुस्तद्वनं घोरं दर्शनम् ॥ ३३ ॥ विदग्धानो
 बनीर्द्वयो नानासखीर्विवेकितम् । अपश्यतमहाबाहुर्न्यप्रोधं वायसैवृतम् ॥ ३४ ॥ तत्र
 काकसहस्राणि तां निशां पर्यनामयन् । सुप्तं स्वपन्ति कौरव पृथक् पृथुशुभाभयः
 ॥ ३५ ॥ सुप्तं तु तेषु काकेषु विश्रवेषु समन्ततः । सोऽपश्यत् सहसायातुर्लोकं घोर
 दर्शनम् ॥ ३६ ॥ महास्वर्नं महाकार्यं हृथ्यं च भुवि गलम् । सुदीर्घघोतानकरं सुगणं
 मित्र वेगितम् ॥ ३७ ॥ सोऽथ शब्दं मृदुं कुर्या लीयमान इवाब्जजः । न्यप्रोधस्य
 ततः शाखां प्रार्थयामास भारत ॥ ३८ ॥ सन्निरपत्य तु शाखायां न्यप्रोधस्य विहंगमः ।
 सुप्तान् जघान सुषट्कं वायसास्तकः ॥ ३९ ॥ केवाञ्चिद्वद्विद्यन्त् पक्षान् शिरां सि च
 चकस ह । चरणांश्च केवाञ्चिद्भ्रमद्भ्र चरणायुधः । क्षणेन द्रव्यं वन्ध्यात् वेऽव
 द्द्विपथे स्थिता ॥ ४० ॥ तेषां शरीरावयवैः शरीरैश्च विशास्यते । न्यप्रोधमण्डलं सर्वं
 वनकौर्देवो । ३३ । किं नानामकार के जीवों से लंबित वनक वीण को देखते
 महाबाहुने बटके टुकड़ों काकों से संयुक्त देखा । ३४ । हे कौरव उस वृक्षपर
 हजारों काकेंनि रात्रिमें निवास किया और प्रथक्-२ निवासी होकर मुख से निद्रा
 पुक्त हुए । ३५ । चारोंओरमें उन विश्रव्य काकोंके सोजानेपर उन अश्वत्थामाजी
 ने अक्रुस्मान् आनेवाले घोरदर्शन उलूकको देखा । ३६ । जो कि बड़ाशब्द बड़ा
 शरीर पीतनेत्र पिङ्गलवर्ण बहुत लम्बे नख और ऊंची नाक रखनेवाला गरुड के
 समान तेज्रगामी था । ३७ । हे भरतवंशी उस भुस्त आनेवाले के समान पत्नी ने
 मृदुशब्द करके बटकी शाखाको चाहा । ३८ । काकोंके कालरूप उसपत्नीने बट
 वृक्षकी शाखापर गिरकर मिलनेवाले बहुत से काकोंको मारा । ३९ । चरणरूपी
 शङ्खधारीने कितनोंही के पक्षमेत शिरोंकोकाटा और कितनोंहीके चरणोंको काटा
 उस वलवानने अपने सम्मुख दीखनेवाले अनेक काकों को एक क्षणमात्र में काटा
 । ४० । हे राजा उनके शरीरों के अंग और शरीरों से बटके वृक्षका मंडल सब
 ओरसे ढकगया । ४१ । इसके पीछे वह उलूक वनकाकोंको मारकर प्रसन्नहुआ
 वह शत्रुओंका मारनेवाला इच्छाके समान शत्रुओं को मारकर प्रसन्नहुआ । ४२ ।

Ashwathama could find no sleep That brave warrior did not sleep
 for grief and looked on at the dreadful forest. Looking at the various
 creatures of the forest, he saw a great number of crows on the banyan
 trees sleeping soundly and composedly in their nests 35, While the
 crows were thus sleeping, Ashwathama saw an ill-omened owl creep-
 ing towards them, With ominous sound, large, yellow body, yellow
 eyes, long claws and hooked beak, it flew fast like a garur. It flew
 softly and stealthily to a branch of the banyan tree and killed many
 crows. Having claws for weapons, it cut off the heads and wings of
 some and feet of others. It destroyed many of the crows in a moment.
 40. The parts of their bodies covered the circular ground beneath

सञ्जानं सवतामवत् ॥ ४१ ॥ तांस्तु हृत्वा ततः काकात् कौशिकी मुदितोऽम वत् ।
 प्रतिकृत्य यथाकामं शत्रूणां शत्रुसदनः ॥ ४२ ॥ तद्दृष्ट्वा सोपयं कर्म कौशिकेन
 कृतं निशि । तन्नाथ कृतसंकल्पी द्रौणिरकोऽन्वबिन्तयत् ॥ ४२ ॥ उपदेशः कृतोनेन
 पक्षिणा मम संयुगे । शत्रूणां क्षययोग्यकः प्राप्तकालश्च मे मतः ॥ ४४ ॥ नाथ शक्यता
 मया हन्तुं पाण्डवा जिनकशिनः । बलवन्तः कृतोस्वाहा लक्ष्यलक्ष्याः प्रहारिण ॥ ४५ ॥
 राक्षः सकाशात्तेषु न्तु प्रतिहातो बधो मया । पतंगानिससर्मा वृत्तिमार्थापारमर्षिभाशि
 नीम ॥ ४६ ॥ न्यायतो युध्यमानस्य प्राणस्यागो न संशयः । उग्रना तु जघेऽर्षिः
 शत्रूणां च क्षयो महान् ॥ ४७ ॥ तत्र संशयितादर्थं घोषो निःसंशयो भवेत् । संजना बहु
 म-यन्ते ये च शास्त्रविशारदाः ॥ ४८ ॥ यच्छाप्यत्र भवेद्भास्वर्षे गर्हितं लोकनिन्दित
 तम् । कर्त्तव्यं तस्मिन्ध्येण क्षत्रधर्मेण वर्त्तता ॥ ४९ ॥ निन्दितानि च

रात्रिमं उलूकके क्रियेदुये उत छलयुक्तं कर्त्तव्यं देवकर उत छलमं संकल्पकरनेवाले
 अकेले भवत्यथामार्जोने विचारकिया । ४३ । कि इस पक्षिने युद्धमे मुक्तको उपदेश
 कियाहै मेरे मतसे शत्रुओंका नाशकारी समय वर्त्तमानहुआ । ४४ । अब विजयसे
 शोभापानेवाले पराक्रमी कृतोत्साह लक्ष्यके प्राप्त करनेवाले और प्रहारकरनेवाले
 पाण्डव मेरे हाथ से मारने के योग्य नहीं हैं । ४५ । और मैंने राजाके सम्मुख उन
 सबके मारनेकी प्रतिज्ञाकरिहै पतंग और अग्निकेसमान अपने नाशकरनेवाली वृषि
 में प्रवृत्तहोकर मुझ न्याय से लड़ने वालेका निश्चय प्राणत्यागहोगा और छलकरके
 बड़ी सिद्धिसमेत शत्रुओं का बड़ा नाशहोगा । ४६ । इस्हेतुसेजो संशयात्मक अर्थके
 निस्संशयात्मक अर्थहोना योग्यहै जो विद्यावान् मनुष्यहै वह इसको बहुत मानते हैं
 । ४८ । ऐसे स्थानपर जो बचनचाहे गर्हित और लोकनिन्दितभी होयै वह क्षत्रिय
 धर्ममें प्रवृत्तहोनेवाले मनुष्यको भवइपकरना योग्यहै ४९ । अशुद्ध अन्तःकरणवाले
 पांडवोंने ऐसे छनसे भरेहुये कर्मकिये जोकि गर्हित और पदपदपर निन्दितहै इस
 विषय में पूर्व समयमें न्यायकं देखनेवाले धर्मका विचारकरनेवाले मुख्यताके ज्ञाता
 लोगोंके कहेहुये मुख्य प्रयोजन करनेवाले श्लोक सुनेजाते हैं । ५१ । शत्रुओं के
 धकनाने, पृथक् होने और भोजनकरने चलेजाने और प्रवेशहोनेपर शत्रुकी सेनाको
 मारना चाहिये । ५२ । जो सेना आभीरात्रिकी निद्राकेसमय निद्रासे पीड़ित और

the tree. The owl was much pleased at the destruction of its enemies,
 the crows. Seeing the deceitful work of the owl at night, Ashwattha-
 ma thought within himself " The bird has taught me. I think the
 death of the enemies is not far off. The victorious Pandavas cannot
 be slain by open warfare and I have made a vow to the king to slay
 them. My case will surely be like that of an insect falling in fire, if
 I fight honestly with them. I can destroy them in great numbers by decoit
 and wise men will not find fault with me. I must act upon pernicious
 proverbs. The deceitful Pandavas have performed various wicked deeds
 and we hear many verses to the effect that we should slay enemies
 and their warriors when they are tired, dispersed, engaged in eating

सर्वाणि कुस्सिताणि पदे । स्तोपञ्चानि कृतायेत पाण्डुधेरकृतारमणिः ॥ ५० ॥ अस्मिन्नयं
पुरा गीता अक्षते धर्मचिन्तकैः । श्लोका स्थायमवेसाद्भिस्तत्त्वार्यास्तस्वर्शिमिः ॥ ५१ ॥
परिभ्राष्टे बिहीर्षे वा भुञ्जानि वापि शत्रुभिः । प्रस्थाने वा प्रवेशे वा प्रहर्षस्य शिषो
वैकर्म ॥ ५२ ॥ निद्रासंभर्षेरात्रे च तथा नष्टप्रणायकम् । भिन्नयोधे बलं यच्च त्रिधा
युक्तञ्च यज्ञवेत् ॥ ५३ ॥ इत्येव निश्चयं चक्रे सुसनां निशि मारणे । पाण्डूनां सह
पाण्डवाहीर्षोऽपुत्रः प्रतापवान् ॥ ५४ ॥ स कुरां मतिमास्थाय विभिन्नय्य मुहुर्मुहुः ।
सुप्तौ प्राबोधयत्सौ तु मानुलं शोक्रमेव च ॥ ५५ ॥ तौ प्रबुद्धौ महात्मानौ कृपमोजौ महा
बली । मोक्षरं प्रतिपद्येतां तत्र युक्तं द्विया इतौ ॥ ५६ ॥ स मुहूर्त्तमिव ध्यात्वा वाश्य
विह्वलमवधीत् । इतो दुष्टयोधनो राजा एकवीरो महाबलः । यस्यायं धैरमस्मान्निपा
सकं पाण्डुधैःसह ॥ ५७ ॥ एकाकी वधुभिः युद्धैः राहवे शुश्रुविक्रमः । पातितो भीम
सेनेन एकादशचक्रपतिः ॥ ५८ ॥ इकोदरेण क्षुभ्रेण सुदृशीसमिद्धं कृतम् । मूर्खाभिषि
क्तस्य शिरः पादेन परिमृज्जता ॥ ५९ ॥ विनङ्गन्ति च पाञ्चालाः स्वेङ्गन्ति च हसन्ति

नाश युक्त प्रथम पृथक् २ शूरोंवाली और दोभाग होनेवाली होय । ५१ । उसपर
महार करना चाहिये प्रतापवान् अद्वत्थामाने इसप्रकार पांचालों समेत रात्रिके
समय सोतेहुये पांडवों के मारने का निश्चय किया । ५४ । उसने निर्दयी बुद्धि में
नियतहोकर बारम्बार निश्चयकरके अपने मामा और और भोजवंशी कृतवर्मा इन
दोनों सोनेवालोंको जगाया । ५५ । तब उनजगनेवाले महात्मापहावली लज्जयुक्त
कृपाचार्य और कृतवर्माने एकमुहूर्त्तपर ध्यानकरके प्रांथुधोसे व्याकुल नेत्रहोकर
पर बचत्रकहा कि बहवदा बलवान् एकवीर राजा दुष्टयोधन मारागया जिसके
हेतुसे हमारी शत्रुता पाण्डवों के साथ दुई । ५७ । युद्धमें बहुत नीचों समेत ग्यारह
असौगद्दीनी सेनाका स्वामी बड़े पवित्र पराक्रम वाळा अकेला दुष्टोधन भीमसेनके
हाथ मारागया । ५८ । महाराजाधिराजका शिर जो पैरों से मर्दनकिया यह
नीच नीमसेनने बड़ा निर्दय कर्मकिया । ५९ । पांचाल देशी गर्जने हैं क्रीड़ा
करते हैं हँसते हैं सैकड़ों शङ्खों को बजातेहैं और मसन्नचित्त दुन्दुभियों का भी

and walking or otherwise at a disadvantage. One may attack an enemy at midnight or when they are divided. " Thus glorious Ashwa-thama thought of slaying the Pandavas and with this view awakened his uncle and Kritvarma 55. The two heroes on awakening shed tears and said after meditation:- " Brave Duryodhan for whom we made the Paodavas our enemy, is slain. The lord of eleven akshaubinis has fallen in fighting with Bhim. He did a wicked deed in touching the king's head with his foot. The Panchals are exulting, laughing and sounding their conchs and drums. The sounds of their musical instruments fill the air. We hear the neighing of their horses, the grunt of their elephants and the lionine roars of

ताभ्यां सर्वैहिकायार्थामनुष्याणानरर्षमविच्छेत्स्मददयते निवृत्तास्तु तर्षध्व ॥९॥ इतः
 पुत्रवकारश्च सोपि देवेन सिध्यति। तथास्य कर्मणः कर्तुरभिनिर्घन्ते फलम् ॥१०॥ उवाच
 नन्तु मनुष्याणां दक्षाणां देवधारिजितम् । अफलं ददयते लोके सम्पत्सु पुपपदितम् ॥११॥
 तत्रालसा मनुष्याणां ये भयन्ममनस्विनः । उवाचानन्ते विगर्हन्ति प्राज्ञानोत्तम रोचते
 ॥१२॥ मायशो हि ह्यते कर्म नाफलं ददयते भुवि । अदृश्या च पुनर्दुष्टं कर्म ददयेमहा
 कलम् ॥१३॥ चेष्टामकुर्वन्मभे यदि किञ्चिच्चदृष्टया । यो वा न लभते कृत्वा पुनर्दुःखी
 साधुमाययि ॥ १४ ॥ शपनोति जतिवित्तुं दक्षी नालम्ः सुखमेवते । ददयन्ते जीवलोकं
 स्मिन् दक्षः प्रायो द्विदोषिणः ॥ १५ ॥ यदि दक्षः समारम्भात् कर्मणो नादमुने फलम्
 नास्य घाचयं भवेत् किञ्चिच्चलद्वयं पाधिगच्छति ॥ १६ ॥ अकृता कर्म यो लोके फलं
 विन्दति चिष्टितः । स तु चक्यतां यति देयो भवति प्रायशः ॥ १७ ॥ एवमेतदनादय

देखनेमें आते हैं । ८ । जो सपाय किया है वह भी देवसे ही सिद्ध होता है इसी प्रकार
 इन कर्मवालोंका कर्म सफल होता है । १० । सावधान चतुर मनुष्योंका अच्छे
 प्रकार से किया हुआ भी उद्योग जो देवसे रहित है वह लोकमें निष्फल दिखाई
 देता है । ११ । मनुष्यों में जो लोग आलसी और असाहसी होने हैं वह उद्योगको
 पुराकहते हैं उसको बुद्धिमान लोग प्रच्छा नहीं मानते हैं । १२ । बहुधा किया हुआ
 कर्म इस पृथ्वीपर निष्फल दिखाई देता है फिर दुख होता है और कर्मको न करके
 घड़े फलको देखता है । १३ । कर्मको न करके देवयोगसे जो कुछ पाता है और जो
 कर्म करके भी फलको नहीं पाता है वह दोनों दुर्लभ हैं । १४ । सावधान और
 निरालस्य मनुष्य जीवता रहनेको समर्थ होता है और शालस्य युक्त मनुष्य सुखसे
 दृष्टि नहीं पाता है इस जीवलोक में कर्म करनेमें सावधान लोग बहुधा बुद्धिके
 चाहनेवाले दिखाई देते हैं । १५ । जो कर्ममें सावधान मनुष्य मारक्य कर्म से कर्म
 फलको नहीं भोगता है उसकी कुछ निन्दा नहीं होती है जो प्राप्तिनेके योग्य अभीष्ट
 को नहीं पाता है । १६ । और जो कर्म को न करके लोक में फलको पाता है वह
 निन्दित होता है और बहुधा शत्रु होता है । १७ । जो मनुष्य इस प्रकार से इसको

The works of men are accomplished by both. Enterprises become successful by the help of providence. 10. The work of wise men when well performed can bear no fruit without God's blessing. The lazy and unenterprising speak ill of work and are therefore despised by the wise. A work done often bears no fruit and the mind is thereby afflicted. The fruit of work, by providence alone or by prowess alone is difficult to attain. A careful and earnest worker is able to live, while a lazy person finds life a difficulty. 15. He who does not get the fruit of actions by Fate, is not to be blamed, but he who gets the fruit without work, creates enemies. He who works contrary to this principle creates difficulty & this is the opinion of wise men. A work becomes fruit

कृते यस्त्यजोऽपथा । स करोत्यात्मनोऽनर्थानिष बुद्धिमर्ता नयः ॥ १८ ॥ हितं पुरुष
 क्षरेण यदि दैवेन वा पुनः । कारणाभ्यामर्थेताभ्यामुत्थानफलं भवेत् । १९ ॥ हितं
 पुरुषकारेण कर्म त्विह न सिध्यति । दैवतेभ्यो नमस्कृत्य यस्तर्धान् सम्परीहते । दृष्टो
 रक्षिण्यसम्पन्नो न स मोघं विहन्यते ॥ २० ॥ सुम्यगीहा पुनरियं नो बुद्धानुपसेयते ।
 नापृच्छति च यः श्रेयः करोति च हितं चचः । २१ ॥ उत्थयोरथाय हि सत्वा प्रष्टव्या
 बुद्धसम्पताः । ते स्म योगे परं मूलं तन्मूला सिद्धिरुच्यते ॥ २२ ॥ वृद्धानां वचनं
 कृत्वा योऽपुत्थानं प्रपोजयेत् । उत्थानस्य फलं सम्पृक्तं तदा स लभतोऽचिरात् । २३ ॥
 पागात् क्रोधाद्गयालोभात् योर्धानीहेत मानवः । अनिश्चिन्नायमानो च स शीघ्रं भ्रष्टयते
 श्रियः ॥ २४ ॥ सोढं दुःस्थोऽधनेतार्थो लुब्धेनादीर्घदर्शिता असंमत्तय समात्त्वो मूढ
 त्वाद्दिविचिन्नातः ॥ २५ ॥ हितयुद्धाननाहत्य संमन्त्र्यासाधुभिः सह । चाद्यमाणोऽक

निगादर करके इसके विपरीत कर्म करता है वह अपने अनर्थोंको उत्पन्न करताहै
 यह बुद्धिमानों की नीति है । १८ । फिर जब उद्योग अथवा देवमे रहितहो तबइन
 तर्कों हेतुओंसे उपाय निष्फलहोता है । १९ । इसलोक में उपायमे रहित किया
 हुआ कर्म सिद्ध नहीं होताहै जो मनुष्य देवताओंको नमस्कार करके अच्छीरीति
 से प्रयोजनों को चाहता है वह आलस्यमे रहित और साधुधानी से संयुक्तहै कर्म
 की निष्पत्तता से नाशका नहीं पाताहै । २० । फिर अच्छेकर्मकी इच्छा यहहैजो
 वृद्धोंका सेवनकरता है जो अपने कल्याणको पूछताहै और उनके हितकारी वचनों
 को करताहै सदैव उठर कर वृद्धों के अङ्गीकृत-पुरुष पूछने के योग्य है
 बहुपुरुष अभीष्ट सिद्धकरने में वड़े तेजहैं और पूछरखनेवाली सिद्धी कहेजातहैं । २२ ।
 जो मनुष्य वृद्धों के वचनों को सुनकर उपाय में प्रवृत्तहोता है वह थोड़ेही समय
 में उपायके फलको अच्छीरीति से पाता है जो मनुष्य रागक्रोध भय और लोभ
 से अभीष्टों को चाहता है वह अजितोन्द्रग और अपमान करने वाला
 शीघ्रही लक्ष्मीसे रहितहोकर नाशहोताहै । २४ । सो इसलोभी और अदृ-दर्शी दुर्घो
 षनेने अज्ञानतासे यह विना विचाराहुआ असमर्थ कर्म प्रारम्भ किया और निषेध
 करनेवाले शुभचिन्तकों को अनादर करके नीचोंकी सलाह से वड़े घणवान

less without the help of providence or prowess. One cannot accomplish
 work without earnestness and the blessing of heaven. 20 One doing
 work successfully, should ask the opinion of old men. The advice
 of old men lays a safe foundation for work. One doing a work with
 the advice of old men, accomplishes it with but little trouble. He
 who, being avaricious and resentful, wishes to accomplish his work,
 soon becomes despised and loses wealth. The avaricious and careless
 Duryodhan began his work foolishly and gave no heed to the advice
 of old men. He made the Pandavas his enemies. An ill-natured
 man cannot be patient and gets into trouble by the ill success of

॥ अमन्ति शङ्कान् शतशो हृष्टाः सन्निवृत्तान् सुन्दुमीन् ॥ ६० ॥ धार्तराष्ट्रापस्तुमुलो
 विमिषन् शस्त्रनिस्त्रयैः । आनलनेरिनो घोरो दिशः पूरयतीव ह ॥ ६१ ॥ अद्ययानां ह्येव
 मानानां गजानाञ्चैव वृंहताम् । सिंहनादञ्च शूराणां श्रूयते सुमहानयम् ॥ ६२ ॥ दिशं
 प्रार्थी समश्रित्य हृष्टानां गच्छन्तां भृशम् । रथनेमिस्तथाश्चैव श्रूयन्ते लोमहर्षणाः
 ॥ ६३ ॥ पाण्डवे चास्त्रैराश्रूणां यदिद् कन्दनं कृतम् । वयमेव त्रयः शिष्टा अस्मिन्महति
 वैशसे ॥ ६४ ॥ केचित्शमशतप्राणाः केचित् सर्वास्त्रकोपिधाः । निहताः पाण्डवेषुते
 मग्ने कालस्य पर्ययम् ॥ ६५ ॥ एवमेतेन भाव्यं हि नूनं कार्येण तद्वृतः । यथा ह्यस्य
 वशी निष्ठा कृते कार्वेऽपि बुष्करे ॥ ६६ ॥ भवतोस्तु यदि प्रज्ञा न मोहा द्युपनीयते ।
 ॥ यापन्नेऽस्मिन्महत्पर्ययः यत्नः श्रेयस्तदुच्यताम् ॥ ६७ ॥

इति सौप्तिकपर्वणि द्रौणिमन्त्रणार्थां प्रथमेध्यायाः १ ॥

बनाते हैं । ६० । शङ्कोके शब्दोत्पिक्त वायुसे चलायमान बाजों के घोरशब्द
 दिशाओंको पूर्णकरते हैं । ६१ । हँसते घोड़े और बिहाडते हाथियोंके बड़ेशब्द
 और शूरीरोंकेभी यह सिंहनाद सुनेजाते हैं । ६२ । पूर्वदिशामें नियत होकर अत्यन्त
 प्रमत्नचित्त ब्रानेवालों के रथ नेमियोंके शब्द जो कि रोमांचके खड़े करनेवाले हैं
 बड़भी सुनेजाते हैं । ६३ । पाण्डव लोगोंने धृतराष्ट्रके पुत्रोंका जो यह नाशकिया
 है इसबड़ेभारी नाशमें हम तीनशेष हैं । ६४ । कितनेही सौ हाथोंके समान पराक्रमी
 और कितनेही सवशस्त्र विद्याओं में कुशल ये वह पाण्डवों के हाथसे मारेगये हैं
 समथकी बिपरीतता को माननाहूँ । ६५ । निश्चय करके इस प्रकारके इनमेंही कर्म
 मूत्रममेत विचार करनेके योग्यहै जैसे कि कठिन कर्मके करनेपर भी ऐसीदिशा है
 । ६६ । भावकी बुद्धि यदि मोहने दूर नहीं तो इसबड़े प्रयोजनके वर्तमान होनेपर
 जो हमारा दिवकारी और भन्नाह उसको कहो ६७ ।

their warriors. 62. We hear the rumbling of their car wheels. The
 Pandavas have destroyed all our warriors except us three. Some of
 them had the strenght of a hundred elephants and clever in fighting.
 The times are changed no doubt. - 65. Surely we must give our
 thought to all these things; for we are reduced to this condition in
 spite of our great efforts. Let us know please, what is best to be done
 under the circumstances, if your intellect be not confounded with
 distress." 67.

कृप उवाच । श्रुतन्ते वचनं सर्वं यद्यदुक्तं त्वया विभो । ममापि तु वचः किञ्चिच्च
 षड्गुण्वाद्य महासुभ्र ॥ २ ॥ जायन्मानवाः सर्वे निवृद्धाः कर्मणोर्द्वयोः । देवे पुरुष
 कारेण परं ताभ्या न विद्यते ॥ २ ॥ न हि देवेन सिद्ध्यन्ति कार्याण्येकेन सत्तम । न
 चापि कर्मण्येकेन द्वाभ्यां सिद्धिस्तु योगतः ॥ ३ ॥ ताभ्यामुभाभ्यां सर्वार्था निवृद्धा
 ह्यवनोत्तमाः । प्रवृत्ताश्चैव हृद्यन्त निवृत्ताश्चैव सर्वशः ॥ ४ ॥ पर्जन्यः पर्वते वर्षन्
 किन्तु साधयते फलम् । कृष्टंते तथा वर्षन् किं न साधयते फलम् ॥ ५ ॥ उत्थानञ्च
 प्यदैवस्य ह्यनुत्थानञ्च दैवतम् । व्यर्थं भवति सर्वत्र पूर्णकस्तत्र निश्चयः ॥ ६ ॥ सुपृष्टे
 तु यथा देवे सम्यक् श्रेष्ठश्च कथित । यजिं महागुणं भूयात्तथा सिद्धिर्हि मानुषी ॥ ७ ॥
 तयोदैव विनिश्चित्य स्वयमेव प्रवर्तते । प्राज्ञाः पुरुषकारेण वर्तन्ते दाक्ष्यमास्थिता ॥ ८ ॥

अध्याय २ ॥

कृपाचार्य्य बोले हे समर्थ जो तुमनेकहा वह तुम्हारा सबवचन सुना हे महा
 बाहु अब मेरे कुछ वचनकोभी सुन । १ । कि प्रारब्ध और उद्योग इन दोनोंके
 कर्मों में सब बंधेहुये हैं इनदो बातों से कुछ अधिक वर्तमान नहीं है । २ । हे श्रेष्ठ
 अकेले देव सेही समाकरके कार्य्य पूरेनी होते और न केवल उद्योगही से सिद्ध
 होते हैं इसदशामें दोनों के मिछनेसेही कार्य्यकी पूर्णता होतीहै । ३ । सबछोटे बड़े
 प्रयोजनइन्हीं दोनों बातोंसे बंधेहुये हैं और सब कार्य्यजारी होकर पूर्णहोते दिखाई
 पड़ते हैं । ४ । पर्वतपर वर्षा करनेवाला पर्जन्य किस फलको सिद्ध नहीं करता
 हे उसीप्रकार जोतेहुये खेतमें भी किसफलको प्राप्त नहीं करताहै । ५ । प्रारब्ध
 को श्रेष्ठ माननेवाले उद्योग और उद्योगसे रहित प्रारब्ध भी निष्फल होताहै इन
 दोनोंको सर्वत्र निश्चयकरते हैं । ६ । जैसे कि अच्छेप्रकार दैवकेवर्षने और खेतके
 जोतनेपर बीज बड़े गुणवाला होताहै उसीप्रकार मनुष्यों का भी अभीष्ट सिद्धकरना
 है । ७ । इनदोनोंमें दैव बलवान है कि वह आपही विना उपायके फल देनेको
 प्रवृत्तहोताहै इसीप्रकार सावधान और ज्ञानी मनुष्य अच्छा निश्चयकरके उपाय में
 प्रवृत्तहोते हैं । ८ । हे नरोत्तम मनुष्योंके सकर्म उन दोनोंमेंही जारी और पूरेहोते

CHAPTER II

Kripacharya said, " I have heard all that you said; now hear me: all men are bound by Fate and prowess; and by nothing more. All works are neither performed by Fate alone nor by prowess; both must be united to accomplish deeds. All small and large works depend upon those two things and we see their continuation and end. The rain falls on mountains and fields and gives fruits at both places. 5. Fate and prowess are fruitless without each other; this is an admitted fact. Human enterprises depend upon fate as the hopes of a cultivator do on rain. Fate, however, is more powerful as it can give fruit without toil. Wise men engage in doing things after deep thought.

द्वैरं वाण्डवैर्गणवक्षरेः ॥ २६ ॥ पूर्वमप्यतिदुःशीलो न धैर्यं कर्तुमर्हति । तपस्ये विष
 श्रेष्ठि मित्राणां न कृते घबः ॥ २७ ॥ अनुवर्त्तामहे यत्तु घयं ते पापपूरुषम् । अस्मानप्य
 नयन्नस्मात्प्रातोपं दारुणो महाम् ॥ २८ ॥ अनेन तु ममाद्यापि व्यसनेनोपतापिता ।
 बुद्धिश्चिन्तयतः कीदृशं धवं श्रेयो नावबुध्यते ॥ २९ ॥ सुहृता तु मनुष्येण प्रष्टव्याः सुहृदो
 जनाः । तत्रास्य बुद्धिर्विनयलज्ज श्रेयश्च पश्यति ॥ ३० ॥ ततोस्य मूलं कार्याणां
 बुध्या निश्चित्य वै बुधाः । तेन पृष्टा यथा द्यूयुक्तकथं तथा भवेत् ॥ ३१ ॥ ते घयं
 घ्नतराष्ट्रञ्च गान्धारीञ्च समेयह । उपपृच्छामहे गत्वा विदुरश्च तहामतिम् ॥ ३२ ॥ ते
 पृष्टस्तु घदेयुर्वत् श्रेयो न क्षानन्तरम् । तदस्माभि पुनः कार्यमिति मे नैष्टिकी मतिः
 अनात्मनात्तु कार्याणां नार्थः सम्पद्यते क्वचित् ॥ ३३ ॥ कृते पुरुषकारे च येषां कार्यं
 न सिध्यति । देवैर्नोपहृतास्ते तु नात्र कार्यं विचारणा ॥ ३४ ॥

इति सौप्तिकपर्वणि द्वाणि कृपर्वणादे द्वितीयोध्यायः ॥२॥

पांडवों से शत्रुता करी । २६ । वड़ा दुःस्वभाष मनुष्य प्रथमही धैर्य करनेके योग्य
 नहीं है और अभीष्ट के पूरे न होनेपर दुःखी होता है कि मैंने अपने मित्रोंका बचन
 नहीं किया । २७ । हमलोग उत्तपापी पुरुषके पीछे चलते हैं इसहेतु से हमको भी
 यह भयकारी अनीति प्राप्त हुई । २८ । अतः इस दुःखसे तपायेद्वये मुझ्चिन्ता करने
 वालेकी बुद्धि अपने कुछ कल्याणको नहीं जानती है । २९ । और अचेत मनुष्य
 से सुहृज्जनपूछोंके योग्य हैं उसमें उसकी बुद्धि और नम्रता है और उसीमें कल्याणको
 देखना है । ३० । इसस्थानपर पूछद्वये वह ज्ञानीलोग इसके कार्योंके मूलोंको बुद्धिसे
 निश्चयकरके जैसे कहे वैसा करना चाहिये और वह उसीप्रकार से होगा । ३१ ।
 हम सबलोग जाकर घृतराष्ट्र गान्धारी और बड़ेज्ञानी विदुरजीसे मिल करके पूछें
 वह हमारे पूछने पर जो कहे वह निस्तन्देह हमारा कल्याण है । ३२ । बड़हिमको
 फिर करना चाहिये यह मेरा दृढ़मत है कार्यों के प्रारम्भ किये बिना कोई प्रयोजन
 सिद्ध नहीं होता है । ३३ । फिर उपाय करनेपर भी जिनका कार्यपूरा नहीं होता है
 वह निस्तन्देह देवके भारेद्वये हैं ३४ ॥

his enterprise by not hearing to friends. We have fallen in this dis-
 tress by following that sinful man. I donot know yet how to secure
 our safety. An unwise man's good, and safety lies in seeking the
 advice of his friends. 30. He should act upon the advice of wise
 men. We should seek the advice of Dhritrashtra and Gandhari. We
 should go to wise Vidur also. These persons will show us the way
 how to proceed. Our safety lies in doing this and I am resolved to
 do so. Nothing is gained without pains and surely they who fail are
 afflicted by Fate " 34.

सतप उवाच । कृपस्य वचने श्रुत्वा धर्मार्थसहितं शुभम् । अश्वत्थामा महाराज
 दुःखशोकसर्पिवृतः ॥ १ ॥ इक्ष्वाकानस्तु शोकेन प्रदीप्तेनाग्निना यथा । क्रूरं मननत-
 कृत्वा तावुभौ प्रवभाषत ॥ २ ॥ पुरुषे पुरुषे बुद्धियां वा भवति शोभना । तुष्यति च
 पृथक् सर्वं प्रवृथा ते स्वया स्वयां ॥ ३ ॥ सर्वो हि मन्यते लोक आत्मानं बुद्धिमत्तरम् ।
 सर्वस्वपात्मा बहुमतः सर्वात्मानं प्रशंसति ॥ ४ ॥ सर्वस्य हि स्वका प्रज्ञा सावुवादे प्रति-
 ष्ठिता । परबुद्धिश्च निन्दति स्वां प्रशंसति चासकृत् ॥ ५ ॥ कारणान्तरयोगेन योगे
 येषां समा मतिः । अन्योन्येन च तुष्यन्ति बहुधायति चासकृत् । ६ ॥ तस्यैव तु मनु-
 ष्यस्य सा सा बुद्धिसदा तदा । कालयोगे विपश्च्यसं प्राप्स्यन्त्योन्यं विपद्यते ॥ ७ ॥
 विश्वित्ररात् विज्ञानां मनुष्याणां विशेषतः । चित्तैकलक्ष्यमासाद्य सा सा बुद्धिः
 प्रजायते ॥ ८ ॥ यथा हि वैद्य कुशलो ज्ञातवाच्याधि यथाधिनि । जैपजं कुरुते योगात्

अध्याय ३ ॥

सञ्जय बोले है महाराज तब अश्वत्थामाभी कृपाचार्य के उम वचनको जो
 कि अत्यन्त शुभ और धर्म अर्थसे संयुक्तया सुनकर दुःख शोकसे संयुक्त । १ ।
 उजलित अग्निरूप के समान शोकसे प्रज्वलित होकर चित्तको निर्दय करके उन
 दोनोंसे बोले । २ । कि पुरुष पुरुषों जो बुद्धि होना है वही भेद है वह सब प्रथक्
 प्रथक् अपनी २ बुद्धिमें मग्न रहते हैं । ३ । और सब लोकके तनुष्य अपने २
 को बड़ा बुद्धिमान मानते हैं सबकी बुद्धि बहुत अङ्गीकृत है और सब अपनी २
 प्रशंसा करते हैं । ४ । सबकी निजबुद्धि अपनी उत्तमताके वर्णनमें नियत है दूसरेकी
 बुद्धिकी निन्दा करते हैं और अपनी बुद्धिकी वारम्बार प्रशंसा करते हैं । ५ । समा
 में अन्य २ कारणों के वर्तमान होने से जिनलोगों की बुद्धि एकसी है वह परस्पर
 प्रमग्नहोते हैं और वारम्बार अपने को बहुत मानते हैं । ६ । उसी उसी मनुष्यकी
 वह वह बुद्धि जब समयके योगसे विपरीतता को पाती है वे परस्पर विनाशको पाते
 हैं । ७ । मुख्यकर मनुष्यों के चित्तकी विचित्रता से चित्त की व्राकुलता को
 पाकर वह बुद्धि उत्पन्न होती है । ८ । हे मधु इसीप्रकार बड़ा सावधान वैद्य
 बुद्धिके अनुसार रोगको जानकर औषधी देनेके द्वारा रोगकी निवृत्ति के लिये

CHAPTER III

Sanjaya said, "Hearing the salutary advice of Kripacharya, Ashwatthama, in excess of grief, said to the two warriors "Every man thinks himself wise and bows and praise different from others. All men do what pleases them and praise their own wisdom. They praise themselves and blame others. 5. Those who are of the same opinion in an assembly, live happily; but when they are disunited they meet their destruction. A difference of opinion rises out of the fickleness of mind. A wise physician cures diseases by useful medicine. Men try to accomplish their work by their own wisdom and

द्वैरं पाण्डवैर्गणवत्सरेः ॥ २६ ॥ पूर्वमप्यतिदुःशीलो न धैर्यं कर्तुमर्हति । तपत्यर्थं विप
 भ्रां हि मित्राणां न कुरुं घचः ॥ २७ ॥ अनुवर्त्तामहे यत्तु घयं तं पापपूरयम् । अस्मानाप्य
 नयत्समात्प्रतोषं दाढणो महात् ॥ २८ ॥ अनेन तु ममाद्यापि व्यसनेनोपतापिता ।
 बुद्धिश्चिन्तयन्तः क्रिषत् एवं श्रेयो नाधबुध्यते ॥ २९ ॥ मुद्यता तु मनुष्येण प्रष्टव्या सुहृदो
 जना । तत्रास्य बुद्धिर्विनयस्तत्र धेयश्च पश्यति ॥ ३० ॥ ततोस्य मूलं कर्त्व्याणां
 बुध्वा निश्चित्य वै बुधाः । तत्र पृष्टा यथा ह्युत्तमत्कस्यं तथा भवेत् ॥ ३१ ॥ ते घयं
 धृतराष्ट्रञ्च गान्धारीञ्च समेत्यह । उपपृच्छामहे गत्वा विदुरञ्च महामतिम् ॥ ३२ ॥ ते
 पृष्टास्तु घदेयुर्यत् श्रेयो न क्षानन्तरम् । तदस्माभि पुनः कार्यमिति मे तैष्टिकी मतिः
 अनात्मान्तु कार्य्याणां नार्थः सम्पद्यते क्वचित् ॥ ३३ ॥ कृते पुरुषकारे च धियां कार्य्यं
 न सिध्यति । दैवेनोपहृतास्ते तु नात्र कार्य्यं विचारणा ॥ ३४ ॥

इति सौप्तिकपर्वणि द्रौणि कृपर्मवादे द्विर्नापोध्यायः ३॥

पांडवों से शत्रुता करी । २६ । वड़ा दुःस्वभाव मनुष्य प्रथमही धैर्यकरनेके योग्य
 नहीं है और अभीष्ट के पूरे न होनेपर दुःखी होताहै कि मैंने अपने मित्रोंका बचन
 नहीं किया । २७ । हमलोग उसपापी पुरुषके पीछे चलते हैं इसहेतु से हमको भी
 यह भयकारी अनीति प्राप्त हुई । २८ । अशक्त इसदुःखसे तपायेहुये मुक्ताचिन्ता करने
 वालेकी बुद्धि अपने कुछ कल्पाणको नहीं जानती है । २९ । और भवेत मनुष्य
 से सुहृदजन पूछोके योग्यहैं उसमें उमकी बुद्धि और मन्त्रनाहै और उसीमें कल्याणको
 देखना है । ३० । इसस्थानपर पूछहुये वह ज्ञानीलोग इसके कार्य्योंके मूलोंको बुद्धिसे
 निश्चयकरके जैसे कहें वैसा करना चाहिये और वह उसीप्रकार से होगा । ३१ ।
 हम सबलोग जाकर धृतराष्ट्र गान्धारी और बड़ेज्ञानी विदुरजीसे मिल करके पूछें
 वह हमारे पूछने पर जो कहें वह निस्तन्देह हमारा कल्याण है । ३२ । बड़हिमको
 फिर करना चाहिये यह मेरा दृढमत है कार्य्यों के प्रारम्भकिये बिना कोई प्रयोजन
 सिद्ध नहीं होताहै । ३३ । फिर उपाय करनेपर भी जिनका कार्य्यपूरा नहीं होताहै
 वह निस्तन्देह देवके मारेहुये हैं ३४ ॥

his enterprise by not hearing to friends. We have fallen in this dis-
 tress by following that sinful man. I donot know yet kow to secure
 our safety. An unwise man's good, and safety lies in seeking the
 advice of his friends. 30. He should act upon the advice of wise
 men. We should seek the advice of Dhritrashttra and Gandhari. We
 should go to wise Vidur a'so. These persons will show us the way
 how to proceed. Our safety lies in doing this and I am resolved to
 do so. Nothing is gained without pains and surely they who fail are
 afflicted by Fate " 34

सजय उवाच । कृपस्य वचनं श्रुत्वा धर्मार्थसहितं शुभम् । अश्वत्यामा महाराज
 दुःखशोकसपन्वितः ॥ १ ॥ दृष्टमानस्तु शोकेन प्रदीप्तेनाग्निना घया । क्रूरं मनस्ततः
 कृत्वा ताडुमौ प्रत्यभाषत ॥ २ ॥ पुरुषे पुरुषे बुद्धियां वा भवति शोभना । तुष्यति च
 पृथक् सर्वे प्रवृत्त्वा ते स्ववा स्वयां ॥ ३ ॥ सर्वो हि मन्यते लोक आत्मानं बुद्धिमत्तरम्
 सर्वस्पात्मा बहुमतः सर्वात्मानं प्रशंसति ॥ ४ ॥ सर्वस्य हि स्वका प्रज्ञा साधुवादे प्रति
 धिता । परबुद्धिषु निन्दति स्वां प्रशंसति चासकृत् ॥ ५ ॥ कारणान्तरयोगेन योगे
 येषां समा मतिः । अन्योन्येन च तुष्यन्ति घट्टव्यगिति चासकृत् । ६ ॥ तस्यैव तु मनु
 ष्यसा सा सा बुद्धिस्तदा तदा । कालयोगे विषय्यासं प्राप्त्वान्योन्यं विपद्यते ॥ ७ ॥
 विचित्रव्रथात् विद्वानां मनुष्याणां विशेषतः । चित्तपैक्यलव्यमासाद्य सा बुद्धिः
 प्रजायते ॥ ८ ॥ यथा हि वैद्य कुदालो क्षात्राव्याधिं यथाधिनि । जैयज्यं कुदते योगात्

अध्याय ३ ॥

सजय बोले हे महाराज तब अश्वत्यामाभी कृपाचार्य के उम वचनको जो
 कि अत्यन्त शुभ और धर्म अर्थसे संयुक्तथा सुनकर दुःख शोकेसे संयुक्त । १ ।
 उज्वलित अग्निरूप के समान शोकेसे प्रज्वलित होकर चित्तको निर्दय करके उन
 दोनोंसे बोले । २ । कि पुरुष पुरुषमें जोर बुद्धि होनाहै वही श्रेष्ठहै वहसब प्रथक्
 प्रथक् अपनी २ बुद्धिमें प्रमन्न रहते हैं । ३ । और सब लोकके तनुष्य अपने २
 को बड़ा बुद्धिमान् मानते हैं सबकी बुद्धि बहुत अद्भूत है और सब अपनी २
 प्रशंसा करते हैं । ४ । सबकी निजबुद्धि अपनी उत्तमताके वर्णनमें नियतहै दूसरेकी
 बुद्धिकी निन्दा करते हैं और अपनी बुद्धिकी वारम्बार प्रशंसा करते हैं । ५ । सभा
 में अन्य २ कारणों के वर्तमान होने से जिनलोगों की बुद्धि एकसी है वह परस्पर
 प्रसन्नहोते हैं और वारम्बार अपने को बहुत मानते हैं । ६ । उसी उसी मनुष्यकी
 वह वह बुद्धि जब समयके योगसे विपरीतता को पातीहै वे परस्पर विनाशको पाते
 हैं । ७ । मुख्यकर मनुष्यों के चित्तकी विचित्रता से चित्त की अगकुलता को
 पाकर वह बुद्धि उत्पन्न होती है । ८ । हे प्रभु इसीप्रकार बड़ा सावधान वैद्य
 बुद्धिके अनुसार रोगको जानकर औषधी देनेके द्वारा रोगकी निवृत्ती के लिये

CHAPTER III

Sanjaya said, "Hearing the salutary advice of Kripacharya, Ashwatthama, in excess of grief, said to the two warriors "Every man thinks himself wise or better and opinion different from others. All men do what pleases them and praise their own wisdom. They praise themselves and blame others. 5. Those who are of the same opinion in an assembly, live happily; but when they are disunited they meet their destruction. A difference of opinion rises out of the fickleness of mind. A wise physician cures diseases by useful medicine. Men try to accomplish their work by their own wisdom and"

मघवानि व दानवान् ॥ २७ ॥ अथ तान् सहितान् सर्वान् धृष्टद्युम्नपुरोगमान् । सूद
 विष्यामि विक्रम्य कक्षं दीप्त इवानलः । निहत्य चैष पांचालान् शान्तिं त्वञ्चारमि
 सत्तन ॥ २९ ॥ पाञ्चालेषु चारोगाम सूदयन्नद्यसंयुगे । पिनाकपाणिः संकुशः स्वयं
 वद्र पशुष्विव ॥ ३० ॥ अघाहं सर्वं पांचालानि कृत्य च तिहत्स्वा अहं विष्यामि संहृष्टो रणे
 पाण्डुसुतां तथा ॥ ३१ ॥ अघाऽहं सर्वं पाञ्चालैः कृत्या भूमिं शरीरिणीम् । प्रहृत्यैकैक
 शस्त्रेषु भविष्याम्यनूणः पितुः ॥ ३२ ॥ दुष्योधनस्य कर्णस्य भीष्मसैन्यवधोरपि ।
 मम विष्यामि पाञ्चालान् पदवीमघ दुर्गमाम् ॥ ३३ ॥ अथ पाञ्चालराजस्य वृष्टि
 द्युम्नस्य वै निशि । नक्षिरात् प्रमथिष्यामि पशोरिव शिरो घलात् ॥ ३४ ॥ अथ पांचा
 लपाण्डूनां शक्तितानां मजाक्षिति । सङ्गो मथिष्ये नाजौ प्रमथिष्यामि गौतम ॥ ३५ ॥
 अथ पाञ्चालसेनां तां निहत्य निशि सौप्तिको कृतकृत्य सुखी चैष मथिष्यामि गहामते ३६
 इति श्री सौप्तिकपर्वणि श्रौणमन्त्रणायां तृतीयोऽध्याय ॥ ४ ॥

मृतकरूप पांचाल देशियोंको हरे में बराजपकरके और पराक्रम करके ऐसे माहंगा
 जैसे दामवों को इन्द्र मारता है । २७ । अब उन धृष्टद्युम्न आदिक सब पांचालों
 को एक साथही ऐसे माहंगा जैसे कि ज्वलित अग्नि मूलै बनको हे भेष्ट में युद्धमें
 पांचालों को मारकर शान्तीको पाहंगा । २९ । अबमें युद्धमें पांचालों को मारता
 पांचालोंको के बीच में ऐसाहुंगा जैसे कि पशुओंको मारते पशुओं के मध्य
 में क्रोधयुक्त पिनाक धनुषधारी आप रुद्रमंदिताते हैं । ३० । अब अत्यन्त प्रसन्न
 सब पांचालोंको मारकाटकर उत्तीमकार से युद्धमें पांडवोंकोभी पीडावान कहंगा
 । ३१ । अब मैं पृथ्वीको सब पांचालोंके शरीरोंसे पूर्णकरके प्रत्येकको मारकर
 पिताके ऋणसे अन्धराहुंगा । ३२ । अब मैं पांचालोंको बुधोधन कर्म भीष्म और
 जयद्रथ के कठिन मार्ग में पहुंचाहुंगा । ३३ । अब मैं रात्रिके समय थोड़ीदूर में
 पांचालोंके राजाधृष्टद्युम्न के शिरको ऐसेमथुंगा जैसे कि पशुकेशिरको मर्दन करते
 हैं । ३४ । हे कृपाचार्य जी अब मैं पांचाल देशियों के और पाण्डवों के सोतेहुये
 पुत्रोंको रात्रिकेसमय युद्धभूमिमें तेजखड्गसे मथुंगा । ३५ । हे बड़े बुद्धिमान अब
 मैं रात्रिके युद्धमें उस पांचालकी सेनाको मारकर कृतकृत्य होकर सुखीहुंगा । ३६

lying within their tents. I shall de-roy them in their camp and shall do a difficult deed. I shall now slay them as Indra does the danavas. I shall destroy them as fire does dry forest. I shall roam among them as Shiv the wilder of Pinak roams among animals. 30. Having slain the Panchals, I shall destroy the Pandavas. Having destroyed the Panchals, I shall be free from the debt of my father. I shall cut off the head of Dhrishtadyumn of Panchal like that of a beast. I shall cut off the sleeping sons of the Panchals and Pandavas with my sharp sword. I shall satisfy my rage by slaying the army

कृप उवाच । दिष्ट्या ते प्रतिकर्ष्ये मतिर्योतियमभ्युत । ने त्वां चारयितुं शको
 ब्रजपाणिरपि स्वयम् ॥ १ ॥ अनुपास्यावहेतान्तु प्रभाते सहिताधुमौ । मद्य रात्रौ
 विश्रमस्य विमुक्तकवचध्वज ॥ २ ॥ भद्रं त्वामनुवास्यामि कृतवर्मा च सास्वतः । परा
 मभिमुखं घान्तं रथाषात्थाय देशिगौ ॥ ३ ॥ आवाश्यां अहितः शत्रून् श्वो निहन्ता
 समागमे । विक्रम्ब रथिनां भ्रष्ट गान्धालाम् सपदानुगात् ॥ ४ ॥ शफरत्वमसि विक्रम्ब
 विश्रमस्य निशामिमाम् ॥ चिरं न आग्रतस्तात स्वप तावन्निशामिमाम् ॥ ५ ॥ विश्रान्त
 अविनिद्रश्च सुस्यश्चित्तश्च मान्द । समेत्य समरे शत्रून् चविश्रयसि न संशयः ॥ ६ ॥
 न हि त्वां रथिनां भ्रष्ट प्रवृष्टीतधरायुधम् । जेतुमुत्सहते कश्चिदपि देवेषु वासव ॥ ७ ॥
 कृपेण सहितं घान्तं युतश्च कृतवर्मेणा । को द्रोणि युधि संरब्धं योषयेदपि देवराट्
 ॥ ८ ॥ ते च यं मिश्र विश्रान्तान् विनिद्रा विगतधराः । प्रभातायां रजन्त्यां वै निहनि

अध्याय ॥ ४ ॥

कृपाचार्य बोले कि मारुष्यमे बदला लेने में तेरी अविनाशी युद्धि उत्पन्न हुई
 है आप इन्द्रभी तेरे रोकनेको समर्थ नहीं है । १ । हमदोनों एकसाथ ही प्रातःकाल
 के समय तेरे पीछे चलेंगे अब रात्रिमें कवच और ध्वजासे पृथक् होकर विश्राम
 करो । २ । मैं और पाद्व कृतवर्मा अलंकृत रथोंपर सवार होकर तुझ शत्रुओंके
 सम्मुख जानेवाले के पीछे चलेंगे । ३ । हे रथियों में भ्रष्ट प्रातःकाल के समय तुम
 हम दोनों के साथ सम्मुखतामें पराक्रम करके शत्रु पाञ्चालों को उनके साथियों
 समेत मारोगे । ४ । तुम पराक्रम करके मारने को समर्थ हो इसरात्रिमें विश्रामकरो
 हे तात तुम्हको जागतेहुये बहुत बिलम्ब हुई तब तक इसरात्रि में शयनकरो । ५ ।
 विश्रामयुक्त शयन से सावधान चित्त तुम युद्ध में शत्रुओं को पाकर मारोगे हे
 वड़ाई देनेवाले इसमें संशय नहीं है । ६ । देवताओं के मध्य में इन्द्रभी तुम्ह रथियों
 में भ्रष्ट उत्तम शस्त्रधारी के विजय करने को उत्साह नहीं करता है । ७ । कृतवर्मा
 मे रक्षित और कृपाचार्य के साथ जानेवाले युद्धमें क्रोधयुक्त अश्वत्थामा से इन्द्र
 भी युद्ध नहीं करसक्त । ८ । हम रात्रिमें विश्रामयुक्त शयन करनेवाले तापसे

CHAPTER IV

Kripacharya said, "It is by Fate that you are resolved to take
 revenge; even Indra can not deter you from your purpose. Both of us
 together, will follow you in the morning; let us set aside our armour
 and banner and take rest for the night. Kritvarma, the Yadav, and
 I will follow you, destroyer of foes. Tomorrow you, accompanied by
 us, will destroy your Panchal foes. You have the power to slay.
 Take rest during the night; for you have not slept yet. 5. With
 your mind fresh after repose, you will slay the foes without doubt.
 Even surrounded by gods, Indra cannot conquer you, brave warriors!
 Protected by Kritvarma and followed by Kripacharya enraged Ashwa

ध्याम शात्रपाद् ॥ ९ ॥ तथ ह्यस्त्राणि दिव्यानि मम वैष न संशयः । सात्त्वतोपि महे
 स्वासो निरयं युद्धेषु कोविदः ॥ १० ॥ ते घयं सहितास्ताव सर्वांश्च शत्रून् समागताम् ।
 प्रसह्य समरे हृत्वा प्रीतिं प्राप्स्याम पुष्कलाम् । विभ्रमश्च त्वमह्यमः स्वपद्मेना निशां
 सुखम् ॥ ११ ॥ अहश्च कृतवर्मा च त्वां प्रयान्त नरोत्तमम् । अनुयास्याच सहितौ
 धृन्विनौ परतापनौ । रथिनं त्वरथायान्तं रथमास्थाय दंशितौ ॥ १२ ॥ स गत्वा शिविरं
 तेषां नाम विधाव्य चाहवे । ततः कर्त्तासि शत्रूनां युध्यतां कन्दनं महत् ॥ १३ ॥ कृत्वाच
 कन्दनं तेषां प्रमाते विमलेहनि । विहरस्व यथा शक्रः सूदधित्वा महासुरान् ॥ १४ ॥
 त्वं हि शक्तो रणे जेतु पाञ्चालानां वक्रधिनीम । दैत्यसेनामिव क्रुद्धः सर्वदानवसूदन
 ॥ १५ ॥ मया त्वां सहितं संघये गुप्तश्च कृतवर्मणा । न सहेत विभुः साक्षाद्भ्रजपाणि
 पि इवयम् ॥ १६ ॥ न चाहं समरे तात कृतवर्मा न वैव ह । अनिर्जितपरणे पाण्डून्
 ध्यपथास्याप कर्हिचिद् ॥ १७ ॥ इत्वा च समरे क्रुद्धान् पाञ्चान् पाण्डुभिः सह ।

रहित प्रातः काल शत्रुओं के लोगोंको मारेंगे । ९ । तरे और मेरे दिव्यअस्त्र हैं और
 वड़ा धनुषधारी यादव कृतवर्मा भी युद्धोंमें निस्तन्देह सावधान है । १० । हेतात
 हम दोनों एकसाथ मिलेहुये सब शत्रुओं को हठसे युद्ध में मारकर उत्तम आनन्द
 को पावेंगे तुम सावधान होकर विश्रामकरो और इस रात्रिमें सुखपूर्वक शयनकरो
 । ११ । मैं और कृतवर्मा धनुषधारी शत्रुओं के तपानेवाले कवचधारी दोनों एक
 साथ रथपर सवार होकर तुझ शीघ्र चलनेवाले नरोत्तम रथी के पीछे चलेंगे । १२ ।
 इसके पीछे तुम उन्हींके डेरोंमें जाकर युद्ध में नामको सुनाकर युद्ध करनेवाले
 शत्रुओं का बड़ाभारी नाश करोगे । १३ । प्रातः काल के समय उनका नाशकर
 के ऐसे विहारकरो जैसे कि महा भ्रमुरों को मारकर इन्द्र विहार करता है । १४ ।
 तुम युद्धमें पाञ्चालों की सेनाके विजय करनेको ऐसे समर्थहो जैसे कि सब दानवों
 का मारनेवाला क्रोधयुक्त इन्द्र दैत्योंकी सेनाको मारकर विहार करताहै । १५ ।
 वज्रधारी समर्थ साक्षात् इन्द्रभी तुझ मेरेसाथी कृतवर्मा से रक्षित को युद्धमें नहीं
 सहसकाह । १६ । हे तात मैं और कृतवर्मा युद्धमें पाण्डवों को विजय किये बिना
 कभी लौटकर नहीं आवेंगे । १७ । हम सब युद्धमें क्रोधयुक्त पाञ्चालों समेत पाण्डवों

thama is irresistible in battle even by Indra. We shall slay our foes
 in the morning when our fever has abated after repose at night. You
 and I possess divine weapons and Kritvarma, the great Yadav archer,
 is clever in fighting. We three, united together, are sure to destroy
 our foes. Take care to sleep for the night. Kritvarma and I, cased
 in armour, will follow your car. You will slay them tomorrow as
 Indra does asura. 15. You can slay the Panchal warriors as Indra
 does the asura. Even Indra cannot resist you protected and accom-
 panied by me and Kritvarma as you shall be in fight. Kritvarma
 and I will never return without conquering the Pandavas in battle.

निवर्त्तिष्यामहे सर्वं हता वा स्वर्गगावयम् ॥ १९ ॥ सर्वोपायैः सहोयासि प्रभाते प्रथ
माह्वे । सत्यमेतन्महाबाहो प्रब्रवीमि तवानघ ॥ २० ॥ एष युक्तस्ततो द्रोणिमांतुलेन
हितं वचः । अब्रवीन्मातुल राजन् क्रोधं संरक्तलोचनः ॥ २१ ॥ आतुरस्य कुतो निद्रा
नरस्याभर्षितस्य च । अर्षोऽभिनतयतश्चापि कामयानस्य वा पुनः ॥ २२ ॥ तद्विदं सप्त
भुवांसं पश्य मेघ चतुष्टयम् । यस्य भागश्चतुर्थो मे स्वप्नमहनाथ नाशयेत् ॥ २३ ॥ किं
नाम दुःखं लोकेऽस्मिन् पितुर्वंधमनुश्मरन् । हृदयं निर्दहन्मेष राज्यद्वानि न शक्यति
॥ २४ ॥ यथा च निहतः पापैः पिता मम विशेषतः । पर्यक्षमपि ते सर्वे तन्मे मर्माणि
कुन्तति ॥ २५ ॥ कथं हि मादभोलोके मुहुर्त्तमपि जीवति । द्रोणो हनेति तद्वाचः
पाञ्चालानां भ्रूणोऽयहम् ॥ २६ ॥ घृष्टघृष्णमहत्वाजी नाहं जीवितुमुत्सहे । स मे पितु
र्वंधाद्बन्धो पाञ्चाला ये च सङ्गताः ॥ २७ ॥ बिलापो भग्नसकथस्थ यस्तु राज्ञो मया

को मारकर लौटेंगे अथवा मरकर स्वर्गको जायेंगे । १९ । हे निष्पाप हम प्रातः-
काल युद्धमें सब उपायों से तेरे सहायक हूँ हे महाबाहु मैं यह तुझसे सत्य ही
कहता हूँ । २० । हे राजा मामाजी के ऐसे हितकारी वचनोंके सुनकर क्रोधसे
रक्तनेत्र अश्वत्थामाने मामाजी को उत्तर्गदिया । २१ । किरोगी क्रोधयुक्त पनादिकके
शोककरनेवाले और कामी इनके गोंको निद्रा कहासे होसकी है । २२ । अब यहमेरा
क्रोध चौथाई उत्पन्न हुआ है वह चौथाई क्रोध दिनके अर्थ श्रयनका नाशकरता है
। २३ । इसलोकमें क्या दुःख है कि पिता के मरण को स्पर्णकरता और जलता
हुआ मेरा हृदय अब दिन रात्रि शान्तिको नहीं पाता है । २४ । मुख्य करके जैसे
प्रकारसे मेरा पिता पापियों के हाथसे मारा गया वह सब आपके नेत्र गोचर है वह
मेरे भ्रमों को काटता है । २५ । लोकमें सुप्रसा मनुष्य एकमुहुर्त्त भी कैसे जीसक्ता
है जोमें पाञ्चालोंका वचन सुनताहूँ कि द्रोणाचार्य मारे गये । २६ । मैं घृष्टघृष्ण
को न मारकर जीवते रहनेको उत्साह नहीं करसक्ताहूँ वहमेरे पिताके मारनेसे काटने
के योग्य है और जो पांचलदेशी इकट्ठे हैं वह सबभी बघ्य हैं । २७ । इसके विशेष

We shall return after slaying the Pandavas and the Panchals or shall
go to paradise. Believe me, brave man, we shall help you in tomorrow's
battle." Hearing the good advice of his uncle, Ashwathama replied in
anger, "How can one find sleep over anger, loss of wealth and love
sickness! It is only a fourth part of my rage developed; but it is enough
to destroy my sleep at night. [It is a small thing that I find no
rest by night or day as I remember the death of my father. You
have seen how my father was slain by those sinful men and it cuts
me to the quick. 25. One like me cannot live in the world when
one hears from the Panchals that Dronacharya is slain. I cannot
live without slaying Dhrishtadyumna. He and his followers deserve
death by taking part in the slaughter of my father. Besides, whose
heart will not burn at Duryodhan's lamentations that I have heard?"

श्रुतः । स पुनर्हृदयं कस्य धूरवापि न तिर्ह्वेत् ॥ २८ ॥ कस्य ह्यकरुणस्यापि नेत्राभ्या
मथु नाव्रजेत् । नृपतेर्मग्नसकपस्य श्रुत्या तादृग्यच्च . पुनः ॥ २९ ॥ पञ्चायं मित्रपक्षो
मे मयि जीयति निर्जितः । शोकं च दर्शयत्येव धारिवेग इवाणं वम् । एकाग्रमनसो मद्य
दुतो निद्रा कुतः सुखम् ॥ ३० ॥ वासुदेवाजुनाश्रयां हि तानहं परिरक्षितान् । अविषह्य
म नमन्ये महेन्द्रेणापि मातुल ॥ ३१ ॥ न चास्मि शक्त संयन्तु कोपमेत समुत्थितम् ।
न त पश्यामि न्यासेस्मिन् यो मां कोपाग्निवर्त्तयेत् । इति मे निश्चिता बुद्धिरपि साधु
मताच्च मे ॥ ३३ ॥ धार्मिकैः कथ्यमानस्तु मित्राणां मे पराभव । पाण्डवानाञ्च विजयो
हृदयं दहताध मे ॥ ३४ ॥ अहन्तु कदन्तं हृत्वा शश्रूणामद्य सौत्तिक । ततो मित्रमिता
विद्य स्वप्ना च विगतज्वरः ॥ ३५ ॥

इति सौत्तिकपर्वणि द्रौणि पात्रिणायां चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

जो मैंने दूरी जघावाले राजाका विलापसुना वह किस निर्दयके भी चिचको
नहीं भस्म करेगा । २८ । फिर दूरी जघावाले राजाके उसप्रकारके वचनों को
सुनकर कौनसे निर्दय मनुष्य के अश्रुपात नहीं होंगे । २९ । मेरेजीवतेहूये जो यह
मेरामित्र पत्र विजयकिया यह मेरे शोकको ऐसे बढ़ाताहै जैसे जलकावेग समुद्रको
बढ़ाताहै अब मेराचित्त एकाग्रहै निद्रा और सुख कहां है । ३० । हे श्रेष्ठ मैं वासु
देवजी और अर्जुनसे रहित उनलोगों को महाइन्द्रसे भी सहने के योग्य नहीं जान
ताहूँ । ३१ । और इस चठेहूये क्रोधकेभी रोकनेको समर्थनहींहूँ मैं इसलोकमें ऐसा
किसीकोभी नहीं देखताहूँ जो मुझको मेरेक्रोधसे रहित करसके इसीप्रकार साधुओं
की अंगांकृत इसपेरी बुद्धिकोभी कोईनहीं लौटासक्ता । ३३ । मेरे मित्रोंकीपराजय
और पाण्डवोंकी विजय जो दूतोंने वर्णनकरी वह मेरे हृदयको भस्मकररही है । ३४ ।
अब मैं रात्रिके युद्धमें शत्रुओंका नाशकरके फिर तापसे रहितहोकर विश्राम
शयन करूंगा ३५ ॥

Who will not shed tears after hearing that prince with the broken
thigh. The defeat of my friends during my life time increases my
grief like a surge's swell My mind is made up and I can have no
repose 30 Protected by Vasudev and Arjun they are irresistible
even by Indra. I cannot check my rising anger. None can check
my anger or turn me from my purpose The news of my friend's
and enemies' victory burns my breast. I shall be able to find rest after
slaying my enemy at night " 35

कृप उवाच । सुभूरपि दुर्मेघाः पुरुषोर्नियतोद्भियः । नालं बन्दायितुं कृत्स्नो धर्मायां
 विति मे मतिः ॥ १ ॥ तथैव तावन्मेघाधी धिनयं वां न सिद्धते । न च कश्चन जानाति
 सोपि धर्मायं निश्चयम् ॥ २ ॥ चिरद्व्यपि जङ्घ्र्यः शूरः पाण्डितं पथ्युपास्यह । न स धर्मान्
 विजानाति वर्षोः सूपरसानिव ॥ ३ ॥ मुहुत्तमपि तं प्राह पाण्डितं पथ्युपास्यह । क्षिप्रं
 धर्मांश्च विजानाति जिह्वा सूपरसगनिव । शश्वपुश्रयेव मेघाधी पुरुषो नियतेद्भियः ।
 जानीयादागमान् सर्वान् प्राह्यश्च न धिरोघयेत् ॥ ५ ॥ अनेप्रस्थधमानी योदुरात्मा
 पापप्रकाः । दिष्टमत्स्वयकल्याणं करोति बहु पापकम् ॥ ६ ॥ नाथवन्तानु सुहृदः प्रति
 पेक्षन्ति पापकात् । निवर्त्तन्तु लक्ष्मीश्रीश्राजशीघ्रांजपसन्ते ॥ ७ ॥ यथा ह्यञ्चाध्वजे
 बाणैः सिंहाच्छो निवम्बते । तथैव सुहृदां शक्नो न शक्नवचसीदति ॥ ८ ॥ तथैव

अध्याय ५ ॥

कृपाचार्य बोले कि दुर्बुद्धी और अजितेन्द्रिय मनुष्य सुननेका अभिलाषी भी
 सम्पूर्ण धर्म अर्थ के ज्ञाननेको समर्थ नहीं है यथैवमेव । १ । इसीप्रकार शास्त्रों
 के स्मरण रखनेवाली बुद्धिकास्वाधी पुरुष जबतक नीतिको नहीं सखिताहै तबतक
 वहभी धर्म अर्थके निश्चयको नहीं जानताहै । २ । अल्पन्त भ्रजान शूरवीर मनुष्य
 बहुत कानतक भी पाण्डित के पास वर्त्तमान सेवाकरके धर्मको ऐसंनहीं जानताहै
 जैसे कि व्यञ्जनके स्वादुको चम्पव नहीं जानताहै । ३ । ज्ञानी पुरुष एक सुहृत्तभी
 वसपंडितके पास बैठकर शांश्री ऐमे धर्मको जानताहै जैसे कि दाल आदिके
 स्वादुको जिह्वा जानलेती है । ४ । बुद्धियान् जितेन्द्रिय और सेवाकरने वाला
 पुरुष सब शास्त्रोंको जानताहै और ग्राह्य वस्तुओं से विरोध नहीं करताहै । ५ ।
 जो दुर्बुद्धी और पापी पुरुष है वह सच्चेमार्ग में बुद्धिमाने के योग्य नहीं है वह
 उपदेश कियेहुये कल्याणको त्यागकरके बहुतसे पापों को करता है । ६ । फिर
 शुभचिन्तक लोग सनाय पुरुषको पापसे निषेध करतेहैं और धनकास्वाधी उसपाप
 से खौटताहै परन्तु धनरहित पुरुष नहींलौटताहै । ७ । जैसेकि विषयोंमें प्रवृत्ताचित्त
 पुरुष नानाप्रकारके वचनोंसे आधीन किया जाताहै उसीप्रकार शुभचिन्तक मित्रसे
 समझाने के योग्यहै और जो योग्य नहीं है वह पीड़ापाताहै । ८ । इसी प्रकार

CHAPTER V.

Kritvarma said, ' I think that one having no control over passions cannot be benefited by advice even if one be willing to hear, and the same is the case with one who has read the shastras but no Politics. A foolish warrior cannot learn his duties in the society of learned men as the spoon does not know the flavour of things, but a wise man learns it in an instant as the tongue does the flavour. A wise and obedient pupil having control over passions learns all the books and is willing to acquire useful things 5. An unwise and sinful man cannot go in the right path and commt many sins by disregarding the

सुहृद् प्राज्ञे कुर्वाणं कर्म पापकर्म । प्राज्ञाः संप्रातिषेयन्ति यथा शक्ति पुनः पुनः ॥ ९ ॥
 स कल्याण मनःकृत्वा निषेध्यात्मानमात्मना कुरु मेव च नैतात येन पञ्चान्न तत्स्यसे ॥ १० ॥
 न च व पृथक्ते लोके सुप्तानामिह धर्मतः । तथैवापास्तशस्त्राणां विमुक्तारयथाजिनाम
 ॥ ११ ॥ ये च मृत्युलवामीनि ये च मृत्युः शरणागताः । विमुक्तमूर्खजा के च मे व्यापि
 इतथाहनाः ॥ १२ ॥ अथ स्वप्स्यन्ति पाञ्चाला विमुक्त कथथा विभो । विश्वलो
 रजनीं सर्वे प्रेता इव विञ्चतस्तः ॥ १३ ॥ यत्नेयां नृप ४ स्थानं दुष्टोत् पुत्रोऽनुजः । इवकं
 स नाके मज्जेद्गन्ध विपुलेदुये ॥ १४ ॥ सर्वास्त्रविभुयां लोके भ्रष्टस्वर्मासि विभुत ।
 न च ते ज्ञातु लोकेस्मिन् सुसूक्ष्मपि किञ्चिद्वच ॥ १५ ॥ एवं पुनः सूर्यसंज्ञाराः इवोमृत
 उरिघने रथो । प्रकाशे सर्वभूतानां विजेतायुधि शात्रवाह ॥ १६ ॥ अस्मभक्तिरुपं हि
 त्वयि कर्म विगर्हितम् । शुक्ले रक्तमिष म्यस्तं भवेदिति मतिर्मम ॥ १७ ॥

ज्ञानीलोग प-पकर्म करनेवाले बुद्धिमान् मित्रको सामर्थ्य के अनुसार बारम्बार
 निषेध करते हैं । ९ । कल्याण में चित्त करके और मनसे बुद्धिको आधीनता
 में करके मेरे वचनको कर जिसके कारणसे पीछे दुःखी नहो । १० । इस लोकमें
 सोनेवाले मनुष्यों का मारना और इसीप्रकार भ्रष्टस्व रथ और घोड़ों से रहित
 मनुष्योंका मारना धर्मसे प्रशंसा नहींकिया जाताहै । ११ । जो कहे कि मैं तेरा हूँ
 जो शरणागत होय जो सुलेदुये केश होय और जो मृतक सवारी वालाहै । १२ ।
 हे समर्थ इन सबका मारना भी निषेध है कवच से रहित मृतकके समान अचेत
 विश्वास युक्त सब पाञ्चाल लोग सोतेहैं । १३ । जो कुटिलपुरुष ठसदज्ञावाले उन
 पाञ्चाल देशवासि शत्रुआकरेगा वह अथाह विना नौकावाले नरकस्थी समुद्र में
 डूबेगा । १४ । तुम लोकके सब अस्त्रों में श्रेष्ठ विख्यातहो इसलोकमें कभी तुम्हसे
 छोटामा भी पाप नहीं हुआ । १५ । फिर सूर्यके समान तेजस्वी तुम प्रातःकाल
 के समय सूर्योदय होने और सब जीवोंके मकट होनेपर बुद्धमें शत्रुओं के लोगोंको
 विजय करोगे । १६ । मेरे मतसे तुम्हमें ऐसा निकृष्ट और निषिद्ध कर्म ऐसा
 असम्भवहै जैसेकि श्वेतरज्जालापन्न रक्तवर्ण होना असम्भवहै । १७ । अश्वत्यामा

lessons taught to him. Well wishers turn a man from sin, but it is
 the fortunate who follows their advice. It is the duty of faithful friends
 to offer advice, but he who does not hear it falls into difficulty. .
 Similarly, wise men hinder a wise friend from falling into evil ways
 You should carefully listen to my advice so that you may not fall
 into difficulty. To slay a sleeping, unarmed and careless man is not
 commendable like that of a refugee or of one with dishevelled hair or
 of one whose beast is dead The Panchals are sleeping without armour
 like dead men. He who slays them in that state, will fall into bottom
 loss perdition. You are a famous warrior of the world and have
 never committed a sin. 15. You can slay your foes in day light

महत्तथाभावात् । एवमेव तयारथ रथ मानुसैश्च न संशयः तस्तु पृथमय सेतुः शतधा
 विदलीकृतः ॥ १८ ॥ प्रथमं भूमिपालानां भवताम्बापि सन्निकेतौ । न्यस्तशस्त्रो मम
 पिता घृष्टघुम्नेन पातितः ॥ १९ ॥ कर्णाश्च पतिते चक्रे रथस्य रथिनां वरः । उज्जमे
 व्यसने सन्नो द्रुपः गाण्डीवचाध्वजा ॥ २० ॥ तथा शान्तनवो भीष्मो न्यस्तशस्त्रो निरा
 युधः । शिपिश्च द्रुपः पुरस्कृत्य द्वयो गाण्डीवचाध्विना ॥ २१ ॥ भूरिश्रवा महेश्वासस्तथा
 प्राचगतो रणे । क्षीप्रतां भूमिपालानां सुयुधानेन पातितः ॥ २२ ॥ दुर्योधनश्च भीमेन
 समेत्य गदया रणे । पश्यतां भूमिपालानामवर्णेन निपातितः ॥ २३ ॥ एकाकी बहुभि
 स्तत्र परिदायै मशारथैः । कर्णमेघः तरुव्याधौ भीमसेनेन पातितः ॥ २४ ॥ विलापो
 भग्नसकपयस्य यो राक्षः परिभ्रुतः । धर्मिकानां कथयतां च मे मर्माणि कृततति ॥ २५ ॥
 एवम्बाधार्मिकाः पापाः पाश्चात्ता भिन्नसेतवः । तानेध भिन्नमर्यादान् । किं भवाञ्च

बोले हे मायाजी जैसा आप करते हैं वह निस्सन्देह वैसाही है परन्तु प्रथम उन
 पायदबानेही इस धर्मरूपी पुलको तोड़ा है । १८ । शस्त्र त्यागनेवाला मेरापिता
 राजाओं के समक्षमें आपलोमों के भी देखतेहुये घृष्टघुम्न के हाथसे गिरायागया
 । १९ । रथियोंमें भेष्ठ कर्ण रथ चक्रके पृथ्वीमें घुमजानेपर बड़े दुःखमें हुवाहुआ
 उस अर्जुनके हाथसे मारागया । २० । इसीप्रकार शस्त्र त्यागनेवाले धनुष आदिकसे
 रहित शान्तनुके पुत्र भीष्मजी भी शिखंडीको भागेकरके अर्जुनके हाथसे मारेगये
 । २१ । इसीप्रकार युद्धमें शरीर त्यागने के निमित्त वैठाहुआ भूरिश्रवा राजाओं
 के पुकारतेहुये सात्याकिके हाथसे मारागया । २२ । दुर्योधन गदासमेत भीमसेनके
 सम्मुख होकर राजाओंके देखते अधर्मसे मारागया । २३ । वहाँ अकेला नरोत्तम
 बहुत रथियोंसे घिरकर अधर्म युक्त भीमसेनके हाथसे गिरायागया । २४ । मैंने
 इतोंके मुखसे दूरी जंघाबाले राजाका जो विलाप सुना वह मेरे मर्मस्थलों को काट
 ताहै । २५ । उस प्रकारसे पांचालदेशी लोग अधर्मी और पापी हैं जिनका कि
 धर्मका पुच्छूट गयाहै आप इसप्रकारसे उन बे मर्यादवालोंकी निन्दा नहीं करतेहो

You should keep aloof from such a heinous sin as the white is from
 the red." To this Ashwathama replied, " You speak the truth uncle
 But the Pandavas have already broken the bridge of virtue. My
 father, who had laid aside his weapons, was slain by Dhrishtadyumna
 in your own presence. Kāran the bravest of warriors was slain by
 Arjun when the wheel of his car was stuck in mud. 20. Similarly
 Bhishma the son of Shantanu, without arms and weapons, was slain by
 Arjun led by Shikhandi. In the same manner, Bhurishrava, who
 had exposed himself to death in the field of battle, was slain by
 Satyaki in spite of the remonstrations of all the warriors. Duryodhan
 was unjustly hit by Bhim in the presence of all the kings. He
 received an unfair blow when he was alone and the enemy surround

धिगर्हित ॥ २६ ॥ पितृहन्तृनहं हत्वा पाञ्चालाक्षीश्री सौप्तिके । काम फटि पतंगो वा
 जन्म प्राप्य भवामि मे ॥ २७ ॥ त्वरे चाहमनेनाद्य यदिह मे चिकीर्षितम् । तस्य मे
 स्वरमाणस्य कुतो निद्रा कुतः सुषम ॥ २८ ॥ न स जातः पुमांल्लोके कश्चिन्न स
 भविष्यति । मां मे ष्वाधसंयेदेता वने तेषां कृतमितिम् ॥ २९ ॥ सञ्जय उवाच । एव
 मुक्त्वामहाराज द्रोणपुत्रः प्रतापवान् । एकास्ते योजयिष्याम्याह प्रावाद्भिमुखः परान्
 ॥ ३० ॥ तमब्रूवां महारथानो भोजधारुताधुमो । किमर्थं स्वन्दतो युक्तः किञ्च
 कार्यं चिकीर्षितम् ॥ ३१ ॥ कदलायं प्रपृथो स्वल्पवधा कष्ट सत्यम् । जमपुं जमपुं
 चापि नायां शङ्कितुमर्हसि ॥ ३२ ॥ अद्यत्पामा तुसंक्रुद्धः पितृबन्धमनुस्मरन् । ताभ्यां
 उदाचख्यौ यदस्वात्माचिकीर्षितम् ॥ ३३ ॥ हत्वा शतकहस्ताणि वोढामां निहितैः शरैः
 न्यस्तशस्त्रो मम पिता धृष्टद्युम्नेन पतितः ॥ ३४ ॥ स तथैव हनिष्यामि न्यस्तवर्षाम्

। २६ । मैं रात्रिके समयनिद्रा युद्धमें अपने पिताके मारनेवाले पांचालोंको मारकर
 जन्मपाकर चाहे कीट पतङ्गभी होजाऊँ । २७ । और मैं इसीहेतुसे क्षीणता करताहूँ
 कि जो यह मेरे कर्मकरने की इच्छाहै वतमुझ शीघ्रबां 'करनेवालेको कर्षा निद्रा
 और सुखहै । २८ । वह पुरुष जोकर्म न पैदा हुआहै न होगा जो कि वन पांचाल
 देशियोंके मारनेमें बह मति देकर मुझको छोडावे । २९ । संजय बोले हे महागज
 प्रतापवान् अश्वत्थामाजी इनप्रकार कहकर और एकान्त में बाँहोंको जोड़कर
 शत्रुओं के सम्मुखगये । ३० । बड़े साहसी कुम्भर्मा और कृपाधारिणी दोनों उससे
 कहनेलगे कि किसनिमित्त रथको जोड़ाहै और क्या कर्मकरणा चाहते हो । ३१ ।
 हे नरोत्तम तेरे साथ हम दोनों चलेगे एकसा सुलदुःखवाले हमशेनोपर तुमको
 सन्देहकरना उचित नहीं है । ३२ । पिताके मरणको स्मरणकरते अत्यन्त क्रोधयुक्त
 अश्वत्थामाजी ने अपने मनका यह सत्य सत्य विचार वनसे वर्णन किया जो उसके
 चिचर्म करनेकी इच्छाथी । ३३ । तेजराजोंसे लालों शूरीरोंको मारकर शत्रुओंका
 त्यागनेवाला मेरा पिता युद्धमें धृष्टद्युम्न के हाथमे मारागया । ३४ । निश्चय काके

ed him in large numbers. The lamentations of the king, with broken
 thigh, reported to me by the informers, break my heart ! Why do
 you not blame the Panchals who are so lawless and sinful ! I shall
 avenge my father's death by slaying the Panchals at night, though
 I have to be born among reptiles. I am therefore in a hurry to work
 and can find no rest. No earthborn man can turn me from my reso-
 lution of slaying the Panchals." Sanjaya continued, "Having said
 this, Ashwathama began putting his horses to the car, 30. Brave
 Kripacharya and Kripacharya said to him, "Why have you prepared
 your car and what will you do? We must go along with you.
 Have no suspicion of us who are your partners in weal and woe."

मघवे । पुत्र पाञ्चालराजस्य पाप पापेन कर्मणा ॥ ३५ ॥ कथञ्च निहत पाप
पाञ्चालस्य पशुवन्मया । शस्त्रेण विजिताहोकाघ्राण्डुयादिति मे मति ॥ ३६ ॥ क्षिप्र
सन्नद्धकवचौ सन्नद्धगावात्तकार्मुकौ । मामास्थाय प्रतीक्षेता रथघटयो परन्तपौ
॥ ३७ ॥ इत्युक्त्वा रथमास्थाय प्रायाद् भिमुक्तः परात् । तमन्वगात् कृपो राजन् कृत
धर्माच्च सन्वृत ॥ ३८ ॥ ते प्रवता व्यरोचन्त परानभिमुक्त्वास्त्रय । इयमान् यथा
यत्रे समिद्धा हव्यवाहना ॥ ३९ ॥ ययुञ्ज शिविर तथा सप्रसुप्तजन विभो । द्वारदे
शन्तु सप्राप्य द्रौणिस्तस्यौ महारथः ॥ ४० ॥

इति सौप्तिकपर्वस्य द्रौणिपाण्डवाश्चिचिरगमनेऽपञ्चमोऽध्यायः ५ ॥

मैं इसी प्रकार इस पापी धर्मके त्यागनेवाले राजा पांचाल के पुत्र धृष्टद्युम्नको
पापकर्म से मारूंगा । ३५ । मेरे हाथसे पशुके समान माराहुआ धृष्टद्युम्न
किसी प्रकार से भी शस्त्रोंसे विजय किएहुये लोकों को नहीं पावेगा यह मेरा मत है
। ३६ । कवचधारी, सन्नद्ध और धनुषके उठानेवाले शत्रुविजयी उत्तम रथ
रखनेवाले तुम दोनों सवारहोकर मेरा मार्ग देखो । ३७ । हे राजा वह अन्वत्यामा
यह कहकर रथपर सवारहोकर शत्रुओंके सम्मुखगये कृपाचार्य्य और यादवकृतवर्मा
उसके पीछेचले । ३८ । शत्रुओंके सम्मुख जानेवाले वह तीनोंपैसे शोभायमानहुये
जैसेकि यज्ञमें आवाहनकीहुईहुईद्विषुक्त अग्निहोतीहै । ३९ । हेसमर्थ फिरवह उनके
उनेडेरोंमें गये जिसके मनुष्य अच्छी रीतिसे सोरहेथे और महारथी अन्वत्यामा द्वार
स्थानको पाकर नियतहुये ४० ॥

Remembering his father's death, Ashwathama, much enraged, dis-
closed to them the scheme that he had formed in his mind, saying,
" Having slain millions of warriors with his sharp arrows, my father
laid aside his weapons and was slain by Dhrishtadyumn, I shall
therefore slay the sinful son of the king of Panchal, Dhrishtadyumn,
with unfair means 35. Slain by me like a beast, he will no longer
attain the regions open to those who die fighting. This is my
opinion. Cased in armour and aimed with swords and bows, you
will wait for my return, destroyers of foes! " Having said this,
Ashwathama mounted his car and proceeded to face the enemies
Kripacharya and Kritvarma the Yadav followed him The three
warriors going towards the enemies, looked glorious like fire They
went to the camp of the sleeping warriors and Ashwathama stopped
at the entrance " 40.

धृतराष्ट्र उवाच । द्वारदेशे ततो द्रौणिमयस्थितमेवैक्ष्य तौ । शकुर्पतां भोजकृपौ
 किं सञ्जय वदस्व मे ॥ १ ॥ सञ्जय उवाच । कृतवर्माणामानन्द्य कृपञ्च स महारथ ।
 द्रौणिमेन्युपरीतारमा शिशिरधारमासदत् ॥ २ ॥ तत्र सूर्यं महाकायं चन्द्रार्कसदृशद्यु
 तिमम् । सोऽपवद्यत् द्वारमाश्रित्य तिष्ठन्त लोमहर्षणम् ॥ ३ ॥ वसानधर्मं धैर्यान् महा
 वीर्यविस्तरम् । कृष्णाजिनोद्यरासङ्गं नागयशोपवीतिनम् ॥ ४ ॥ धाडुभिः स्वायते
 पैनैर्नानाप्रहरणोद्यतैः । पद्भ्यामग्नमहासर्पं ज्वालामालाकुलाननम् ॥ ५ ॥ दंष्ट्राकराल
 वदनं व्यादितास्यं भयानकम् । नयनानां सदृशंश्च विचित्रैरभिभूयितम् ॥ ६ ॥ मेघ
 तस्य वपुः शक्यं प्रवक्तुं वेश एव च । सर्वथा तु तदालक्ष्यं स्फुटैर्युरपि पर्वता ॥ ७ ॥
 तस्यास्पतासिकाभ्यास्तु अश्याश्राड्य सर्वशः । तेष्वर्थाक्षसहस्रेभ्यः प्रादुरासीम
 हर्षिचक्षुः ॥ ८ ॥ तथा तेजोमरीचिभ्यः शंखचक्रगदाधराः । प्रादुरासन् हवीकेशाः

अध्याय ६ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय इसकेपीछे उनदोनों कृतवर्मा और कृपाचार्य्य ने द्वार
 स्थानपर अश्वस्थापाको नियत देखकर क्या क्रिया उसको मुझने वर्णनकरो । १ ।
 संजयबोले कि वह महारथी अश्वत्यामा कृतवर्मा और कृपाचार्य्य को पृष्ठकर क्रोध
 से पूर्णशरीर डेरे के द्वारपरगया । २ । उसने वहाँ जाकर एक तीक्ष्णकां देखा जो
 कि बड़े शरीर वाला चन्द्रमा और सूर्य के समान प्रकाशमान द्वारपर नियत रोम
 हर्षण करनेवाला । ३ । व्याघ्र चर्मधारी बड़े रुधिरको गिरानेवाले कृष्ण मृगधर्म
 का ओढ़नेवाला नागाका यज्ञोपवीत रखनेवाला । ४ । बहुतलम्बी स्थूल और
 नानाप्रकारके शस्त्रों के धारण करनेवाले भुजाओं से बड़े सर्पका बालूवन्द बांधने
 वाला ज्वाल समूहों से व्याप्त मुख । ५ । दंष्ट्राओं से भयानक महा भयकारी फैले
 हुयेहजारों विचित्र नयनोंसे शोभायमानथा । ६ । उसका शरीर और पोशाकवर्णन
 के योग्य नहीं जिसको कि देखकर सब दशार्मे पर्वतभी फटजायँ । ७ । उसके मुख
 नाक कान और हजारों नेत्रोंसे बड़ी २ ज्वाला निकलतीरथी । ८ । उन ज्वालाओं

CHAPTER VI

Dhritrashtra said, "What did Kripacharya and Krtvarma do on seeing Ashwathama stand at the entrance?" Sanjaya said, "Having talked with them he went at the entrance of the camp and saw there a being glorious like the sun and the moon. He was dreadful to look at, with a tiger's hide, blood thirsty, clothed with the skin of a black antelope, serpents for sacred thread, with long and muscular arms, with a huge serpent tied at his arm attended by luminous bodies, with dreadful mouth and teeth and thousands of dreadful and wonderful eyes. His body and attire were dreadful beyond the power of speech. Sparks of fire came out from his mouth, nose, ears and thousands of his eyes and thousands of Janardans, adorned with conch, discus and mace, were to be seen amid those sparks. Seeing dreadful being thus stationed, Ashwathama fearlessly hid him with

शतशोथ सहस्रशः ॥ ९ ॥ शतशोथसहस्रशो भूतं लोकनाथद्वारम् । द्रौणिणरथधियो
 विधैरश्वधैरवाकिरत् । द्रौणिमुक्ताञ्जलिस्तु तद्भूत महदप्रसत् ॥ १० ॥ उक्चेरिव
 वार्योघान् पावको पडुवामुखः । अश्रुसन्तान्ता भूते द्रौणिना प्रहिताञ्जलिम् ॥ ११ ॥
 अश्वरथामातु संप्रेक्ष्य शरीरालाधिर्यकात् । रथशक्तिं मुमोचस्मै वीक्षामग्निशिखा
 मिष ॥ १२ ॥ सा तमाहरय दीप्ताग्रा रथशक्तिरदीर्घ्यत । युगात्ते सूर्यमाहरय महो
 र्केव दिवश्च्युता ॥ १३ ॥ अथ हेमतरं विव्य खड्गमाकाशपञ्चंसम् । कौपात् समु
 द्रवहांशु विलादीप्तमिवोरगम् ॥ १४ ॥ ततः खड्गधरं धामान् भूताय प्राहिणोत्तदा ।
 स तदासाद्य भूतं ये विल नकुलवद्यथौ ॥ १५ ॥ ततः स कुपितो द्रौणिर्भ्रुकेतुनिर्भा
 गदाम् । उवलन्तो प्राहिणोत्तस्मै भूतं तामपि चाश्रयत् ॥ १६ ॥ ततः सर्वायुषामावे
 त्रीक्ष्यमाणस्ततस्ततः । अपश्यत् कृतमाकाशमनाकाशं जनार्दनैः ॥ १७ ॥ तदद्भुततमं

के प्रकाश से शङ्ख चक्र गदावारी, हजारों श्रीकृष्ण प्रकट थे । ९ , उसबड़े अपूर्व
 सब सृष्टिके भयकारीको देखकर पीड़ासे रहित अश्वत्यामाने उसको दिव्य अश्वों
 की वर्षासे ढकदिया उस बड़े तेजरूपने अश्वत्यामाके छोड़ेहुये बाणोंको निगला
 । १० जैसे कि बड़बामुखनाम अग्नि समुद्रके जलसमूहोंको निगलाहै उसी प्रकार
 उस तेजरूपने अश्वत्यामाके चलायेहुये बाणोंको निगला । ११ । फिर अश्वत्यामा,
 ने उन अपने बाणसमूहोंको निष्फल देखकर ज्वलित अग्निके समान प्रकाशित
 शक्तिको छोड़ा । १२ । वह प्रकाशमान रथ शक्ती उसको घायल करके ऐसे फट
 गई जैसे कि प्रलय के समय आकाश से गिरीहुई बड़ी उल्का सूर्यको घायलकरके
 फटजाती है । १३ । इसके पीछे सुदर्णकी मूठ आकाशवर्ण दिव्य खड्ग
 का ऐसेशीघ्रतापूर्वक मियानमे निकाला जैसे कि विलसे प्रकाशित सर्पकोनिकासतेहै
 । १४ । इसके पीछे बुद्धिमानने उत्तम खड्गको उस तेजरूपके ऊपर चलाया वह
 उस तेजरूपको पाकर उसके शरीरमें ऐसे चलागया जैसेकि नौला बिवरमें घुसजाता
 है । १५ । इसके पीछे उस क्रोधयुक्त अश्वत्यामाने इन्द्रध्वजाके समान उसज्वलित
 रूप गदाको ऊपर चलाया उस तेजरूपने उसको भी निगला । १६ । इसके पीछे

his celestial weapons, but he swallowed all his arrows 10. He received
 all the arrows within himself as the ocean fire soaks the waters of the
 ocean. Seeing his arrows fruitless, Ashwathama discharged at him
 a Javelin bright as fire. But the Javelin broke upon him like the
 meteor of pralaya after striking the sun. Then he drew out his gold-
 handled sword from the scabbard, like a serpent from its hole. He
 threw the sword at the wonderful being and it entered his body like
 a mungoose in a hole. 15. Then Ashwathama hurled at him his
 mace, but that too, disappeared. When all his weapons were thus
 exhausted, he looked all round and saw the whole sky full of Shri-
 Krishn. Destitute of arms, Ashwathama, seeing that miracle,

इन्द्रवा द्रोणपुत्रो निरायुधः । अग्रवीदति सारतप्तः कृपधाक्यमनुस्मरन् ॥ १८ ॥ प्रवृत्ता
 ममिथं पथं सुहृदं न शृणोति यः । स शोचत्यापदं प्राप्य यथाहमतिवर्त्यते ॥ १९ ॥
 शास्त्रे ह्यहानविद्वान् य समतीत्य जिघांसति । स पथः प्रच्युतो घर्मात् कुपये प्रतिहन्वते
 ॥ २० ॥ गार्वाह्यणनृपस्त्रीषु सव्युर्मातुर्गुरोस्तथा । हानमाणजडान्घेषु सुप्तभीतोत्थि
 तेषु च ॥ २१ ॥ मत्तोमत्तप्रमत्तैषु न शस्त्राणि निपातयेत् । इत्येवं गुयामि, पूर्वमुपदिष्ट
 नृणां सदा ॥ २२ ॥ सोऽहमुत्कम्प पन्थानं शास्त्रदष्टं सनातनम् । अमार्गेणैवमारुह्य
 योऽरामापदमागत ॥ २३ ॥ तथापदं घोरतरां प्रवदन्ति मनीषिणः । यद्युद्यम महत्
 कृत्यं रथापि निवर्त्तते ॥ २४ ॥ अशक्यञ्चैव तत कर्तुं कर्म शक्तिबलादिह । न हि
 देवान्मरीचो वै मानुषं कर्म कथ्यते ॥ २५ ॥ मानुष्यं कुर्वतः कर्म यदि देवाश्च सिध्यति ।
 स पथ प्रच्युतो घर्माद्विपथं प्रतिपद्यते । प्रतिघातं ह्यविद्वानं प्रवदन्ति मनीषिणः । यदा
 रथ्य क्रियां काञ्चिद्द्रयादिह निवर्त्तते ॥ २७ ॥ तदिवं दुस्प्रगीतेन मयं मां समुपदिष्ट

सब शास्त्रोंके नाशवान होने पर जहां तहां देखनेवाले अश्वत्थामाने आकाशको भी-
 कृष्णसे पूर्णदेखा । १७ । शास्त्रोंसे रहित अश्वत्थामा उमं बड़े चमत्कारको देखकर
 अत्यन्त दुःखी और कृपाचार्य के वचन को स्मरण करते बोले । १८ । कि जो
 पुरुष अभियं और परिणाम में शुभदायक मित्रोंके वचनोंको नहीं सुनताहै वह आप
 त्तिको पाकर ऐसे शोचता है जैसे कि मैं दोनोंको उल्लंघनकर अर्थात् उनके विरुद्ध
 कर्म करके जो अज्ञानी शास्त्रों को उल्लंघन करके मारना चाहताहै वह धर्म से
 च्युत होनेवाला है इसहेतुसे कुमार्गमें माराजाता है । २० । गौ ब्राह्मण राजा स्त्री
 मित्र माता गुरु निर्वल विलिप्त अन्धे सोनेवाले भयभीत उठेहुये मदमें उन्मत्त रो
 गादिकों से अचेत और भूतादिकके आवेशसे मतवाले मनुष्यपर शस्त्र नहीं चलावे
 । २२ । इसप्रकार पूर्वमें बड़े २ लोगोंके उपदेश होतेथे सो मैंने शास्त्रके बतायेहुये
 संनोर्तन मार्गको उल्लंघन करके कुमार्ग से कर्मका प्रारम्भ करके घोर आपत्तिको
 पाया । २३ बुद्धिमान लोग उस आपत्तिको घोरकहतेहैं जोबड़े कर्मको प्रारम्भकरके
 भयमें मुँहको फेरताहै । २४ । यहाँ वह कर्म सामर्थ्य और बलमें करने के योग्य
 नहीं मनुष्य का कर्म दैवसे बड़ा नहीं कहाजाताहै । २५ । कर्म करनेवालेका जो

remembered the words of Kripacharya and said to himself, " He who
 does not give ear to the unpleasant but salutary advice of his friends,
 falls into misery and feels remorse like myself and is destroyed by
 falling into bad ways Let no one lay hand on the cow, brahman, king,
 woman friend, mother, preceptor, feeble, mad, blind, sleep intoxicated
 sick and ghost-riden 22. Thus I have set at nought the precepts
 of old men and have fallen into difficulty by acting against the teach-
 ings of scriptures A calamity is termed the worst by wise men, where
 the beginning a great work has to recede from it Here the work I
 have to do is not to be accomplished by physical power, for human

तम् । न हि द्रोणमुत संख्ये निवर्त्तेन कथयत ॥ २८ ॥ इदञ्च समद्वन्द्वं देवदण्डमि
 बोधयतम् । न चैतद्विजानामि खिन्नयन्नि सर्वथा ॥ २९ ॥ ध्रुव भयमधर्मेण प्रवृत्ता
 कल्पयामतिः । तस्याः फलमिदं घोरं प्रतिघातापहृष्यते ॥ ३० ॥ तद्विदं देवविहितं मम
 संख्ये निवर्त्तनम् । नाम्यत्र देवादुष्टान्तुमिह शक्यं कथयत ॥ ३१ ॥ सोऽहमद्य महादेवं
 प्रपद्ये शरणं प्रभुम् । देवदण्डमिदं घोरं स हि मे ताशयिष्यति । ३२ ॥ वपाहिं देव
 देवमुमापतितनाययम् । कपालमालिनं रुद्रं भगनेत्रहरं हरम् ॥ ३३ ॥ स हि देवोत्प
 गादेवांस्तपसा विक्रमेण च । तस्माच्छरणमभ्येति गिरिशं शूलपाणिनम् ॥ ३४ ॥

इति सौप्तिकपर्वणि महाभूतदर्शने द्रौणिचिन्तायां षष्ठोऽध्यायः ६ ॥

मनुष्य कर्म देवसे सिद्ध नहीं होता है वह धर्ममार्ग से च्युत होकर आपत्ति को
 प्राप्त होता है । २६ । ज्ञानी पुरुष प्रातिज्ञानको अविज्ञान कहेते हैं जो इसलोक में
 किसीकार्यको प्रारम्भ करके फिर भयसे छोड़ देता है सो अन्यायसे यह भय मेरे
 समझमें नियत हुआ द्रोणाचार्यका पुत्र युद्धमें किसी दशामें भी मुख फेरनेवाला
 नहीं हुआ । २८ । और यह बड़ा तेजरूप उत्पन्न देवदण्डके समान सन्नद्ध है मैं सब
 प्रकारसे विचाराता हुआ भी इसको नहीं जानता हूँ २९ । निश्चयकरके जो मेरी यह पाप
 बुद्धि अधर्ममें प्रवृत्त है उसका यह महाभयकारी फल मरककेलिये प्रकट है । ३० । वह
 जो युद्ध में मुखका फेरना देवका रचा हुआ है यहाँ किसी दशामें भी कोई बात
 पाप करने के योग्य नहीं । ३१ । तो मैं अवसमर्थ और शरणके योग्य महादेवजी
 की शरणागत होता हूँ वही मेरे इस घोर देव दण्डका नाश करेगा । ३२ । जो कि
 लपटों, देवताओं के भी देवता, उमापति, उपाधि से रहित कपालों की माला रख-
 नेवाले रुद्र, भगनेत्र के मारनेवाले हर । ३३ । उस देवताने तप और पराक्रम से
 देवताओं को उरुंधन किया इसहेतुसे मैं उस गिरीश और शूल धारी की शरणा
 गत होता हूँ ॥ ३४ ॥

work cannot supersede a divine one 25 He whose work is not blessed
 by God; falls from the path of virtue into misery. It is a folly in the
 opinion of wise men I am now in the danger of giving up my enter-
 prise. Drona's son never turned face in any battle. This glo-
 rious form is standing before me an embodiment of divine wrath, and
 I cannot gauge it in spite of my efforts. Surely this is the fruit of
 my own evil intention. 30. This defeat is ordained by god for me,
 and I can devise no remedy for it. I shall now seek refuge of almighty
 Mahadev and he will remove this divine chastisement. He is the
 god of gods and Har, who surpassed all the gods in asceticism and
 prowess. I shall therefore seek refuge of Girish the bearer of
 trident. 34

सञ्जय उवाच । एषं स चिन्तयित्वा तु श्लोकपुत्रो विशाम्पते । अपतीत्यं रथोपस्था
 द्वेषेण प्रगतः स्थितः ॥ १ ॥ श्लोकपुत्रो वाच । उग्रं रथात्तु शिव रुद्र सर्वमीशानमीश्वरम् ।
 गिरिशं धरदं देवं भवभावनमीश्वरम् । २ ॥ शितिकण्ठं मञ्जं शर्फं दक्षक्रतुहरं हरम् ।
 विद्मरूपं विरुपाक्षं बहुरूपमुमापतिम् ॥ ३ ॥ इशानवासीनं हतमहागणपतिं विस्मृतं
 खट्वांगधारिणं रुद्रं जटिलं ब्रह्मचारीणम् ॥ ४ ॥ स्तुतं स्तुत्य स्तुषमानममोघं कृत्स्निवा
 ससम् । विलोहितं नीलकण्ठमसह्यं दुर्निवारणम् ॥ ५ ॥ शुभ्रं ब्रह्मरुजं ब्रह्म ब्रह्मचारी
 णमेषधः । व्रतघ्नं तपोनिष्ठमनन्तं तपतांगतिम् ॥ ६ ॥ बहुरूपं गणाध्यक्षं इयक्षं परिषद
 प्रियम् । घनाप्यक्षेक्षितमुच्चं गौरीहृदयवत्सलम् ॥ ७ ॥ कुमारपितरं पित्रं गोवृषोत्तमवा
 हनम् । तनुवाससमद्युप्रभुमाभूषणतत्परम् ॥ ८ ॥ परं परेऽपः परमं परं यस्मान्मविद्यते
 इषवोत्तममक्षरं दिग्न्तं देशराक्षिणम् ॥ ९ ॥ ॥ हिरण्यकवचं देवं सद्गुणैः

अध्याय ७ ॥

सञ्जय बोले हे राजा बहू अज्ञरथामा इतमकार अच्छेप्रकार विचार करके रथ
 के बैठनेके स्थानमें उतरकर नम्रता पूर्वक देवेशके सम्मुख निपत हुआ । १ ।
 अज्ञरथामा बोले कि मैं अत्यन्त शुद्धचित्त से अज्ञानियों के काठिन कर्म्मों मेंटने
 शिवजीको पूजन करताहूँ जोकि उग्र, स्याणु, शिव, रुद्र, शर्व, ईशान, ईश्वर,
 गिरीश, धरद, देवभवभावन्, ईश्वर । २ । शितिकण्ठ, अम, शुक, दत्त क्रतुहर,
 हर विश्वरूप, विरुपाक्ष, बहुरूप, उमापति । ३ । इशानवासी, हत, महागणपति,
 विष्णु खट्वाङ्ग गरी, रुद्र, जटिल, ब्रह्मचारी । ४ । स्तुत स्तुत्य स्तुषमान, अमोघ,
 कृत्स्निवास, विलोहित, नीलकण्ठ, असह्य, दुर्निवारण । ५ । इन्द्र, ब्रह्मरुज, ब्रह्म,
 ब्रह्मचारी, व्रतघ्न, तपोनिष्ठ, अनन्त, तपतांगति । ६ । बहुरूप, गणाध्यक्ष, त्रिनक्षः
 परिषदप्रिय, घनाध्यक्ष, क्षितिमुख, गौरीहृदयवत्सल । ७ । कुमारपितर, पित्रः
 नन्दीवाहन, तनुवासम, शतयुग, उमाभूषणतत्पर । ८ । परतेपरे जितसे कि उत्तम
 श्रेष्ठ नहीं है उत्तमवाण अज्ञोंके स्वामी दिग्न्त देशराक्षिण । ९ ।

CHAPTER VII

Sanjaya said. " Having reflected well, Ashwathama came down from his car and stood humbly before the god of gods. He said, "With a pure and concentrated mind, with a work difficult to be done by the ignorant, I worship the great Sh'vanu, Shiv, Rudra, Shary, Ishan Ishwar, Girish, Bhud, Devbhav-bhavan, Ishwar, Shitikanth, Aj, Shukra, Dakshkrituhar, Har, Vishwarup Virupaksh, Umapati, Shmashanvasi, Dript, Mahaganpati, Vibhu, Khatwaugdhari, Rudra, Jati, Brahmeshari, Stut, Stutya, Stooyman, Amogh, Krativasas, Bilohit, Nilkanth, Aashya, Durnivaran, Indra, Brahm, Bratvant, Teponikth, Anant, Taptatgit, Vahurup, Ganadhyaksh, Trinetra, Parishad-priya, Dharadhyaksh, Kshitimukh, Gauri-hridayavallabb, Kharapiter, Piz, Na d'vahan, Tanuvaaas, Atyugra, Umabhushau-

विभूषणम् । प्रपद्ये शरयं देव परंभेण समाधिना ॥ ११ ॥ इमाश्चेदापदं घोरा तरामाद्य
 सुदुस्तराम् । सर्वभूतोपहारेण यक्ष्येहं शुचिना शुचिम ॥ १२ ॥ इतितस्य ध्यवसितं
 क्रात्वाद्योगात्, स्वकर्मणः । पुरस्तात् काञ्चनी वेदी प्रादुरासीन्महात्मनः ॥ १३ ॥
 तस्यांबेधातवाराः अश्वमाभरजायतासिद्धिो विदिश पञ्चज्वालाभिरभिपूषन् ॥ १४ ॥
 दीप्तास्यनवनाभ्राश्च नैकपादशिरोभुजा । रत्नविभ्रागदधरा' लमुद्यतकरास्तथा ॥ १५ ॥
 द्विपशैलप्रतीकाशाः प्रादुरासन्महागणाः । इयवराहोऽप्यवत्राश्च हयगोमायुगोमुखा
 ॥ १६ ॥ नामावादिब्रह्मसिनध्वेडितो कृष्टगार्जितैः । सत्राद्यन्तस्ते विदयगदधत्यामान
 नप्ययुः ॥ १८ ॥ संस्तुवन्तो महादेवं भा कुर्वाणा सुवर्चसतः । विष्वेद्विष्वेदो द्रौणि
 र्भेहिमानं महात्मनः । जिह्वासमानास्तत्तज्ज. सौप्तिकश्च दिदक्षत ॥ १८ ॥ भिमोप्र
 परिधानात्शूलपीडशपाणय. घोररूपा समाजग्मुर्भूतसंघा समन्ततः ॥ १९ ॥ जन

हिरण्यकवच, मृष्टिरसक, देव चन्द्रमौलि विभूषण ऐमे देवताके उत्तम ममाधि से
 शरणागत होताहूँ । ११ । अब जो इमघोर कठिन आपात्तमे उत्तीर्णहीनाऊ उस
 दशार्धे जन शिवजी का मैं सर्वभूत वाले मे पूजन करूंगा । १२ । उस शुभकर्मों
 महात्मा के निश्चयको योगसे जानकर आगे से स्पर्णमयी वेदी प्रकटहुई । १३ । हे
 राजा तब उस वेदी में अग्नि देवता प्रकट हुए उसने दिशा विशाओं को और
 आकाशको अपनी ज्वालाओंसे पूर्णकिया उस स्थानपर प्रकाशित मुख और नेत्र
 रखनेवाले बहुतसे चरण शिर और भुजाव ले स्तनजटित बाहुबन्धधारी ऊँचा हाथ
 करनेवाले । १५ । द्वीप और पर्वतके स्वरूप बड़ेगण प्रकटहुये जोकि कुत्ता बाराह
 और ऊँटकी सूरत घोड़े बैल और शृगाल के समान, मुख रखनेवाले । १६ । सब
 सृष्टिको भयभीत करके बड़े प्रकाशको उत्पन्नकरते महादेवजी की स्तुति करते बड़े
 तेजस्वी उस अश्वत्थामाके सम्मुखगये । १७ । महात्मा अश्वत्थामाकी महिमा के
 बढानेके अभिलाषी और उसके तेजको जानना चाहते रात्रियुद्ध देखनेके उत्कण्ठित
 । १८ । ऐसे भवानक और उग्र मभाववाले शूल पटिश शस्त्रोंको हाथमें रखनेवाले
 घोररूप भूतगण चारोंओरसे आपहुँचे । १९ । जोकि अपने दर्शनसे तीनों लोकोंके

tatpar, above all and best fal, possessor of god weapons, Dignit.
 Deshrakshin, 10. Hiranyakavach, Srishti-rakshak, Dev, Chandra-
 mauli, I bow to you with all my heart. I shall worship Shiv with
 the offering of my whole body, to get rid of this trouble " With
 these thought in the mind of that virtuous man, a god's altar stood
 before him. Then god Agni, appearing on that altar, illumined the
 sky and the directions. There also appeared glorious faces and eyes,
 with many feet, heads, jewelled arms upraised, 15 Huge bodies like
 hills and isles, having the appearances of dogs, hogs, camels, horses,
 oxen and jackals, terrifying all the world, diffusing light and praising
 Mahadev. They all came before Ashwathama, to glorify him as well
 as to know his strength and desirous of seeing the battle at night.

मयुर्मप ये ह्यत्रैते कथस्यापि दशनम् । तान् प्रक्षमन् त्रिपि वर्यां न चकार महाबलः ॥ २० ॥ ततः सौम्येन मन्त्रेण द्रोणमुच्यते प्रतापवान् । उपहारं महाभयुद्यत्मानमुपाहरत् ॥ २१ ॥ तं कुरु दौद्रकमाणि यौद्वैः कर्मजित्कृतम् । तन्मिच्छुष्य महात्मानमिन्द्रियुवाचः कृताञ्जलिः ॥ २२ ॥ द्रोणिहवाच ॥ इममात्म भयपाह आनमार्गिरेत्सु, कुले । भर्तौ भगवन् प्रतिगृहीष्व म बालम् ॥ २३ ॥ नच भक्त्या महादेव परमेज, समन्वितः । भस्वामागदि विद्युत्पातमुत्पन्नमि सवाभतः ॥ २४ ॥ स्वपि सर्वाणि भूतानि, सर्वभूतेषु चासि वै । गुणानां हि प्रभानानामेकत्वं स्वपि तिष्ठति ॥ २५ ॥ सर्वभूताभ्य विमो ह्विसूतमवस्थितम् । प्रतिगृह्णान मां देव ब्रह्मराज्याः परे मया ॥ २६ ॥ इत्युक्त्वा द्रोणि रास्थाय तां चेदं विसृज्यमानः । संतश्च्युत्मानमादद्यात् कृपणवर्ममुपाविशत् ॥ २७ ॥

भयको उत्पन्नकरे उनको देखकर महाबली भयवत्यामाजी ने भी पीड़ा नहीं की । २० । इसके पीछे बड़े क्रोधयुक्त प्रतापवान् अश्वत्थामाने-सोमदेवता-से सम्बन्ध रखनेवाले मन्त्रके द्वारा शरीररूप भेंटको अर्पण किया । २१ । हाथ जोड़ेहुये अश्वत्थामा उम रुद्र कर्मवाले अजेय महात्मा रुद्रजी को-उन्के रुद्रकर्मों से स्तुति करके यह बचन बोले । २२ । हे भगवन्-अब मैं अंगिरावंश में उत्पन्न होनेवाले इस शरीरको आत्म रूपी अग्निमें हवन करताहूँ मुझ बलिरूप को आप-अंगिकार करिये । २३ । हे विश्वात्मन महादेवजी मैं इस आपत्तिमें आप की भक्ति और परम समाधि से आपके आगे अर्पण करताहूँ । २४ । सबजीव आप में हैं और निश्चय करके सबजीवों में आपही हैं और आप में प्रधान गुणों को ऐक्यताभी नियतहै । २५ । हे सब जीवोंके रक्षास्थान-समर्प्य देवता मुझ नियत ह्वय रूपको स्वीकारकरो जो शत्रु मुझमें अजेय हैं । २६ । अश्वत्थामाजी यह कहकर और शरीरकी भीतिको त्यागकरके उम वेदीपर जिसपर अग्नि प्रकाशितथी जुड़कर अग्निमें प्रवेश करगये । २७ । साक्षात् भगवान् महादेवजी हैंसतेहुये उस ऊंचे हाथ

They bore dreadful arms and weapons and gathered these from all sides. They could terrify the three worlds with their appearances but Ashwathama remained firm there. Then glorious-Ashwathama in great rage, with incantations of hymns relating to S m, offered his own body. 21 Having praised Rudra of dreadful prowess, with clasped hands, he said, "I, born in the family of Angira, offer a sacrifice of my own body. Pray accept me as such. I offer myself, with full devotion, at this time of distress. All beings live in you and you are surely wit in all beings. You are the seat of all virtue 25. Refuge of all beings: accept me as a victim of sacrifice, if I cannot conquer my foes." Having said this, Ashwathama gave up all love for his own body and ascended the altar of burning fire. Seeing him thus enter fire with upraised arms, Shriv said to him with a smile, "I

सुखंवाहुं निश्चेष्टे हृष्ट्या हृषिकरुस्थितम् । अत्रवीद्भगवान् साक्षात्प्रदक्षो हसन्निव
 २८ ॥ सत्यशौचाज्जैवत्यागंलपसा नियमेन च । क्षान्त्या भक्त्या च धृत्या च
 ज्ञया च वचसा तथा ॥ २९ ॥ यथावद्दामाण्ड- कुम्भेनाविलष्टकर्मणा । तस्मादिष्ट
 मः कृष्णादन्धो मम न दिष्टो ३० ॥ कुर्वता तस्य सम्मानं स्वाङ्घ्रिः जिहासना
 या । पाञ्चालाः सहसा गुता म पश्च वहुना कृता ॥ ३१ ॥ कुरुस्तस्यैव सम्मानः
 आलासक्यता मया । अभिभू-स्तु कालेन तैयामद्यापि जोषितम् ॥ ३२ ॥ एतमुक्त्वा
 हात्मानं भगवानात्मनस्तनुम् । आयिवेश ददौ चास्त्रे विमलं खड्गमुत्तमम् ॥ ३३ ॥
 श्यावित्यो भगवता भूयो जज्वाल तेजसा । वलयाभ्यामशुभ्रे देवसृष्टेन तेजसा ॥ ३४ ॥
 महद्यानि भूतानि रक्षांसि च समाद्रवन् । अभितः शत्रुनिधिरं याते साक्षा
 देवेश्वरम् ॥ ३५ ॥

इति सौप्तिकपर्वणि द्रौणि शिबिरप्रवेशे शप्तमोऽध्यायः ७ ॥

वर्णरहित हृष्य रूपको नियत देखकर बोले । २८ । मैं जिसप्रकार पुण्यकर्मा
 श्रीकृष्णजी की सत्यता पवित्रता सरलता त्याग तप नियम ज्ञान्ति भक्ति धैर्य
 बुद्धि और वचन से अराधन किया गया और उस श्रीकृष्ण से अधिकतम मेरा
 कोई प्रिय नहीं है । २९ । हे तान तुझको जाननेके अभिलाषी श्रीकृष्णजी
 का गान करनेवाले मैंने अकस्मात् पांचालदेशियों की रक्षाकरी और बहुतसी
 माया प्रकटकीं । ३० । पांचालदेशियों के रक्षाकरनेवाले मैंने उन श्रीकृष्णजी का
 निश्चया परन्तु अब यह पांचालदेशी काल से पराजय हुये है इससे अब इन का
 जीवन नहीं है । ३१ । भगवाने उस महात्मा से ऐसा कहकर अपने शरीरको उत्तम
 प्रवेश किया और उसको बहुत निर्मल और उत्तम खड्ग दिया । ३२ । फिर भगवान्के
 प्रवेशित शरीरसे अश्रुत्यामार्जी तेजसे ज्वलित अग्निरूप हुये और देवताके दियेहुये
 तेजसे युद्धमें भगवानहुये ३४ साक्षात् ईश्वरसम्पान शत्रुके डरे में जाननेवाले उन
 अश्रुत्यामार्जीके पीछे दृष्टिने गुप्त जीव और राक्षस चारों ओरसे चले ॥ ३५ ॥

was worshipped with t o truth, holiness, straight forwardness, resig-
 nation, tap, vows, devotion, patience and wisdom of Shri Krishn, who
 does things with the greatest ease, and surely I hold none dearer than
 him Desirous of knowing these and wishing to keep the prestige
 of Shri Krishn, I protected the Panchals and produced many illusions
 I had regard to the prestige of Shri Krishn in protecting the Pan-
 chals But the Panchals are conquered by Time and their days are
 numbered." Having said this, Bhagwan entered his body and made
 him the present of a good sword. Then Ashwathama became
 glorious like fire and endued with divine energy was ready to fight.
 Going like Ishwar himself into the enemy's camp, Ashwathama was
 followed by invisible beings and raksasas " 35.

धृतराष्ट्र उवाच । तथा प्रयाते शिविरं द्रोणपुत्रे महारथे । कच्चित्
 मयाचौ न न्यवर्त्तनाम् ॥ १ ॥ कश्चिन्न वारितौ शुद्धैरक्षी भर्त्सयत्कृतौ ।
 मन्वानौ न निवृत्तौ महारथौ ॥ २ ॥ कच्चिदुन्मथ्य शिविरं हृत्वा
 दुष्योधनस्य पदवीं गतौ परमिकारणे ॥ ३ ॥ पाञ्चालैर्निहतौ वीरौ कश्चिन्न
 क्षितौ । कश्चित्ताश्वां कृतं कर्म तन्ममाचक्षुः सञ्जय ॥ ४ ॥ सञ्जय उवाच ।
 प्रयाते शिविरं द्रोणपुत्रे महात्मनि । कृपश्च कृतवर्मा च शिविरद्वार्यतिष्ठताम् ॥ ५ ॥
 अश्वत्थामानु तौ दृष्ट्वा यद्यवन्तौ महारथौ । प्रहृष्टः शनैः राजश्रिवं
 ॥ ६ ॥ यत्तौ भवन्तौ पयसांसौ सर्वशत्रुस्य नाशने । किं पुनर्योद्धरणस्य प्रसूतस्य ।
 यतः ॥ ७ ॥ अहं प्रथेदगे शिविरं चरिष्यामि च कालघ्न । यथा न कश्चिदपि
 जीवामुच्येत मानवः । तथा भवत्युभय कार्थे स्यादिति मे निश्चिता मतिः ॥ ८ ॥ इत्युक्त्वा

अध्याय ८ ॥

धृतराष्ट्र बोले डेरे में महारथी अश्वत्थामा के जानेपर भयसे पीड़ामान् कृप
 चार्य और कृतवर्मा तो लोटकर नहीं चलेगाये । १ । कहीं नीच रत्नों से
 नहीं रोकेगाये और क्या उनलोगों ने उनको नहींदेखा दोनों महारथी रात्रिके
 को असह्य जानकर तो नहीं लौटे २ डेरेको मथकर और शुद्धमें सोमक पांड
 को मारकर दुष्योधन की उचम पदवी को प्राप्त किया । ३ । क्या वह दोनों
 पांवाळ देशियों के हाथ से मुतरु होकर पृथ्वीपर शयन करनेवाले तो नहीं ।
 अथवा कोई उनदोनों ने कर्म भी किया है संजय वह सब मुझसे कहौ । ४ । सं
 बोले कि डेर में उस महात्मा अश्वत्थामा के जानेपर कृपाचार्य और कृतवर्मा
 के द्वारपर नियतरहे । ५ । हे राजा फिर अश्वत्थामाजी उनदोनों महारथियों
 उपाय करनेवाला देखकर बडे प्रसन्न होकरयह वचन बोले । ६ । उपाय करे
 आप सब शत्रियों के नाश करने को समर्थ है मुख्यकर शेष वचे और सो
 शूरवीरों के मारनेको फिर क्यों नहीं सपर्यहोगे । ७ । मैं डेरेमें प्रवेश करुंगा
 कालकेसमान घुंमगा इस द्वारपर भानेवाला कोईमनुष्य भी जैसे प्रकार जीवता
 जानेपावे वैसाही आपको करना योग्यहै यह मेरा दृढ़ विचारहै । ८ ।

CHAPTER VIII

Dhritrashtra said, " Did Kripacharya and Kritvarma turn back out of fear, when Ashwathama had entered the camp? Were they of no aid of the night attack and so turned back? Did they obey Duryodhan by destroying the Somaks and the Pandavas in their camp? Were the two warriors slain by the Panchals? Did they perform any thing? If so tell it to me, Sanjaya." 4 Sanjaya said, " Kripacharya and Kritvarma kept standing at the entrance, while Ashwathama entered the camp. Seeing them thus standing, Ashwathama was much pleased and said, ' You can destroy all the warriors by your

शिविशत द्रौणि. पार्थानां शिविर् महत् । अद्वारणोऽप्यवस्कन्ध विहाय भयमात्मनः ॥११॥
 स प्रविश्य महाबाहुर्दशशङ्ख तस्य ह । धृष्टद्युम्नस्य निलये शनकैरभ्युपागमन् ॥१०॥
 ते तु कृत्वा महत् कर्म शान्ताश्च बलवद्गणे । प्रसुप्ताश्चैव विश्वस्ता. समेत्य परिवारिताः ।
 ११ ॥ अथ प्रविश्य तद्वेदनं धृष्टद्युम्नस्य भारत । पाञ्चाल्ये शयने द्रौणिणरपश्यत्
 प्रोत्तमैस्तिकात् । १२ ॥ क्षोमावदति महति स्वर्ज्यात्तरणसेवृत । मलियंवरसै युक्त
 रूपैर्दूर्णैश्च वासिते ॥ १३ ॥ तं शयानं महात्मानं विश्वघ्नन्शुभामयम् । प्रबोधयत्
 पादनिशपनस्यं महीपते ॥ १४ ॥ रुदुष्य चरणरूपीमुत्थाय रणदुर्मदः । अऽप्यजानन्
 केषामा द्रोणपुत्रं महारथम् ॥ १५ ॥ तमुत्पतन्तं शयनादश्चरामा महाबलः । केशेष्व्वा
 ल्मन्य पाणिभ्यां निष्पिपेय महीगले ॥ १६ ॥ स घलात्स्नि निष्पिष्टः साध्वसेन च
 भारत । निद्रया चैव पाञ्चाल्यो नाशकश्चापिष्ठुं तदा ॥ १७ ॥ तमाक्रम्य पदा राजन्
 श्री शरीरके भयको त्यगकर अन्यद्वारमं घुसकर पारुडवोके वडे डेरे में पहुँचे । ११ ।
 उसके स्थानोंके जाननेवाले ने सुगमता से धृष्टद्युम्नके डेरेको पाया । १० । वह
 लौट सम्मुख होकर युद्धमें भुजागंधोर, दौड़नेवाले युद्धमें महाकठिन, कर्मों को करके
 बहुत श्रमित होकर सोगये थे हे भरतवंशी इसके पीछे अश्वत्थामानी ने उस धृष्ट
 द्युम्न के उस स्थान में प्रवेशकरके शयनपर सोतेहुये धृष्टद्युम्न को समीपसे देखा
 । ११ । हे राजा स्वच्छ अत्यन्त अनसी से तैयार बहुमूल्य विस्तरोंसे युक्त बड़ी
 उत्तम मान्छाओं से अलंकृतधूप चन्दन चूरेआदित सुगन्धित बड़े शयनरर सोनेवाले
 विश्वासी और निर्भय उस महात्मा धृष्टद्युम्न को चरणघात से जगाया । १४ ।
 युद्धमें दुर्मद धृष्टद्युम्न ने चरणके घातसे जागकर बड़े बुद्धिमानने महारथी अश्व
 त्थामा को पहचाना । १५ । वहे पराक्रमी अश्वत्थामाने उस शयनसे उछलनेवाले
 धृष्टद्युम्न को हाथोंसे बालों के द्वारा पकड़ कर पृथ्वी पर रगड़ा । १६ । हेभरत
 वंशी तब बल से उस धृष्टद्युम्नका रगड़ाहुआ वह धृष्टद्युम्न भय और निद्रासे चंचल
 करने को समर्थ नहीं हुआ । १७ । हे राजा परासे उसका कण्ठ और छातीपर

why shall you be not able to slay these remaining few who are sleep-
 ing. I am about to enter the camp and to roam there like Death
 and I charge you not to let any one pass alive out of this entrance."
 Ashwathama fearlessly entered the camp by another way, and well
 acquainted with all its parts, he easily found the tent of Dhrishtady-
 umn. 10. All the warriors were asleep after the toils of the day.
 Ashwathama entered the tent of Dhrishtadyumn and viewed him
 from a short distance. With a kick he awakened Dhrishtadyumn
 who was sleeping a sound and fearless sleep on a capacious bed, soft
 and precious, well-decked with garlands and sandal powder. Awak-
 ening at the blow of the kick, wise and valiant Dhrishtadyumn
 recognised Ashwathama. He jumped up from his bed and Ashwa-

कण्ठे चोरासि चोभयोः । नदन्तं दिग्भ्रुवन्तञ्च पशुमारममारयत् ॥ १८ ॥ तुष्टप्रसूत
 च द्रौणि नानिद्यकमुदाहरत् । आचार्यपुत्र शस्त्रेण जहि मामा चिरं कृपा । स्व
 कृते सुकृतांलोकान् गच्छेयं द्विपदाश्चर ॥ १९ ॥ पक्षमुक्त्वा तु घञ्चनं विरराम परमप-
 स्मनः पाञ्चालराजस्य आक्रान्ते बलिनाश्रमम् ॥ २० ॥ तस्याद्यकान्तुं तां घञ्च-
 संश्रुय द्रौणिरब्रवीत् । अचार्यघातानां लोकान सन्ति कुलपांसन । तस्माच्छस्त्रेण
 निघने न स्वमर्हसि दुर्मते ॥ २१ ॥ पथं सुवाणस्तंवीरं सिंही मत्तमिष द्विपम् । मर्ष-
 स्थप्यवव्रति क्रुद्धः पादाष्टिलैः सुदारुणैः ॥ २२ ॥ तस्य घातस्य शब्देन माय्यभाणत्
 घञ्मनि । भूतमेवाध्यक्षस्यन्तो न स्म प्रग्याहरन् भयात् ॥ २३ ॥ तन्तु तेनाश्रुपाये-
 गमपित्वा यमक्षयम् । अधपतिष्ठत तेजस्वी रथं प्राप्य सुदर्शनम् ॥ २४ ॥ स तस्य
 भवनाद्राजन् निष्कस्य नादयन्दिशः । रथेन शीघ्रं प्रायाज्जिज्ञासुर्द्विपतो घली ॥ २५ ॥

दवाकर पुहारते और चेष्टा करने को पशुकी भांति मारा । १८ । फिर नहीं से
 पीड़वान् करते उस धृष्टद्युम्नने धारे अश्रुत्यामासे कहा हे आचार्य के पुत्र मुझसे
 छत्रने मारो बिलम्ब मत करो हे द्विपादों में श्रेष्ठ मैं आपके कारण से पवित्र लोकों
 को पाऊं । १९ । शत्रुमोका तपानेवाला बलवान् से कठिन दवायाहुआ राजा
 पाञ्चालका पुत्र इस प्रकार के वचन को कटकर मौनही गया । २० । इस के पीछे
 अश्रुत्यामा उसके उस धीरे से कहेहुये वचन को सुनकर बोले हे कुलकलकी गुर्के
 मारनेवाले के नाकनहीं हैं इसहेतुसे तुम शस्त्रने मरने के योग्य नहींही हेदुवृद्धी । २१
 जैसे कि सिंह मारनेवाले हाथी की भोरको गर्जना है उसीप्रकार उस धीरसे इसप्रकार
 कहेतेहुये कोधयुक्त अश्रुत्यामा ने कठिन एंडियोंसे मर्षस्थलोंपर घावल किया । २२
 उस मरनेवाले धीरके शब्दों से महलमें वह स्त्रियां भूतको निश्चय करनेवाली होकर
 भयमे नहीं वाली । २३ । वह तेजस्वी उन उपायसे उस धीरको यमचोकमें पहुँचा
 कर और सुन्दर दर्शन रथको पाकर नियतहुआ । २४ । हे राजा वह समर्थ और
 बलवान् अश्रुत्यामा उसके डेरने निकलकर दिशाओं को शब्दायमान करते शत्रुओं
 के मारने के अभिनपी रथ ही सचारीके द्वारा डेरको गये । २५ । इसके

tham caught him by the hair of his head and brought him down on
 the ground. Dashed to the ground Dhrishtadyumu was unable to
 move out of fear and sleep. He crushed the neck and breast of the
 struggling and crying prince with his feet and wanted him to kill
 like a beast. Scratching with his nails, Dhrishtadyumu said to him
 gently, "kill me with a weapon, son of acarya, and make no delay
 so that I may attain good regions by your grace best of men." Har-
 pressed by the enemy, the valiant Panchal prince became silent. 20.
 Having heard the slowly uttered words of the prince, he said "There
 are no good regions for despicable preceptoricides and therefore you
 do not deserve to die with a weapon." Having said with a

अपराधेन तनलस्त्रिन् द्रोणपुत्रेण हारणं संहितेः रक्षिभिः सर्वैः प्रणेयुर्योपितस्तदा २६॥
 राजानं निहनं दृष्ट्वा भृशं शोकरावयाः । व्याक्रोधान् शत्रियाः । सथां घृष्टद्युम्नस्य
 भारत । २७ ॥ तास्मान्तु तेन शब्देन समीपे शत्रियर्षभाः । क्षिपन् च समनद्यन्त किम
 तादृति आबुवन् ॥ २८ ॥ क्षिपस्तु राजन् वित्रला भारद्वाजं निरीक्ष्यताः । अद्भुयन् दीन
 कण्ठेन क्षिप्रमाद्रवनेति वै ॥ २९ ॥ राक्षसो वा मनुष्यो वा नैनं जानामि हे
 पञ्चालराजानं रथगच्छ निष्ठति । ३० । ततस्ते योधमुख्याश्च सहस्रा परदेवारयन्
 स तः पापततः सर्वान् रुद्रस्त्रेण व्यपोषयत् ॥ ३१ ॥ घृष्टद्युम्नश्च हर्षास ताश्च वास्य
 पशानुगान् । अपदपच्छयने सुप्तमुत्तमौजसमन्तिके ॥ ३२ ॥ तमप्याक्रम्य पादेन कण्ठे
 चारामि हेमसा । तथैवां मारयामास धिनर्हस्तमरिन्दमम् ॥ ३३ ॥ युधामन्युश्च संप्राप्तो

महारथी अश्वत्थामाके दृष्टजानेपर सब स्त्रियां अपने रक्षकों समेत पुकारां हे भरत-
 वंशी राजाको मराहुआ देखकर अत्यन्त दुःखी सब शत्रिय जोकि घृष्टद्युम्नेक नौकरथे
 पुकारे । २७ । फिर उन्हीं के शब्दों से सम्मुखंही उत्तम शत्रिय तैगारहुये और
 बोले कि यह क्या बात है । २८ । हे राजा वह भयभीत स्त्रियां अश्वत्थामा को
 देखकर दुःखी कंठ से बोलीं कि शीघ्रजावो । २९ । यह राक्षसहोय अथवा मनुष्य
 होय हमको नहीं जानती हैं वह राजा पांचाल को मारकर रथं पर नियत है
 । ३० । उसके पीछे उन उत्तम शूरोंने अकस्मात् चागोंओरसे घेरलिया उसने उन
 सब चढ़ाई करनेवालों को रुद्र स्त्रेण से मारा । ३१ । फिर उसने सब साधियों
 समेत घृष्टद्युम्नको मारकर समीपसे शयनपर सोनेवाले उत्तमौजसको देखा । ३२ ।
 उसको भी पराक्रमसे कण्ठ और छाती को दबाकर उस पुकारनेवाले शत्रु
 विजयी को उती प्रकार से मारा । ३३ । और युधामन्यु उसको

roar, enraged Ashwathama wounded his vital parts with his hard
 feet. The women of the household heard the cries of the prince, but
 kept quiet for fear of a goblin. Having slain the brave prince he
 approached his car and drove in it to slay the other men of the camp.
 25. At the departure of Ashwathama the women and the attendants
 saw Dhrishtadyumna slain and cried out for grief. The warriors
 awoke at their cries and asked the reason of it. The terrified women
 who had seen Ashwathama, said in grief, " We donot know whether
 he was a rakshas or man, but surely he has slain the Panchal prince
 and got upon his car. Make haste to slay him." Then the warri-
 ors surrounded Ashwathama on all sides and he slew them all with
 the weapon of Rudra. 31. Having slain Dhrishtadyumna and his
 followers he saw Uttamaujas sleeping hard by and slew him in the
 sameway by his feet. Thinking that he was slain by a rakshas, Yudha-
 manyu came there and wounded Ashwathama on the breast with

मत्वा तं रक्षसा हन्म । गदामुद्यम्य वेगेन हृदि द्रौणिमनाडयत् ॥ ३४ ॥ तमभिदुष्य
जग्राह क्षितीं चेतमताडयत् । विस्फुरन्नञ्च पशुवत्तथैवमभ्यारयत् ॥ ३५ ॥ तथा स
वीर्ये हत्वा तं ततोऽन्यान् समुपाद्रयत् । संसृप्तानिव राजेन्द्र तत्र तत्र महारथान् ॥ ३६ ॥
स्फुरतो वेषमानाश्च शमितेव पशुमखे । ततोर्निर्निखिमादाय जघानान्यान् पृथग्जतान्
॥ ३७ ॥ भागतो विचरन्मार्गानसिधञ्जविशारद । तथैव गुल्मे सोमेश्वर शयान्मध्यगौलिम
कान् । आगतान्पुत्रायुधान सर्धान् क्षणेनैव व्यपोधयत् ॥ ३८ ॥ योधान्भ्रान् द्विपाञ्चैव
प्राच्छन्नन् सवरासिना । रुधिरोक्षितमर्वाग कालवृत्र इषान्तकः ॥ ३९ ॥ विस्फुरन्निभ
तैर्द्रौणिर्निखि सस्योद्यमेन च । शाक्षेणेन चैवासेस्त्रिधा रक्तोक्षितोभवत् ॥ ४० ॥ तस्य
लोहितनिकस्य दीप्नखड्गस्य युध्यतः अमानुष इवाकारोऽसौ परमभीषणः ॥ ४१ ॥

राक्षस के हाथमे मृतक मनकर आया और वेगसे गदा को उठाकर
अश्वत्यामा को हृदय पर घायल किया । ३४ । गदाके आघात से घायल होकर
भी अश्वत्यामा युद्धमें कम्पायमान नहीं हुआ और उस के सम्मुख जाकर उसको
भी पशुके समान मारा । ३५ । वह भीर उसको उसप्रकार से मारकर जहाँ तहाँ
सोनेवाले दूसरे महारथियों की ओर गया । ३६ । क्रोधयुक्त ने सभीपही पाँचाल
देशी वीरोंको दबाकर फड़कते और कापतेहुओंको एभेमारा जैसे कि यहममारने
वाना पशुओंको मारताहै । ३७ । इसके पीछे भागक्रमसे मार्गोंको घूमते खड्ग युद्धमें
कुशल भइवत्यामाने खड्गको लेकर पृथक् अन्य लोगों को मारा इस प्रकार गुल्म
नाम सेनाके भागमें सोनेवाले अशस्त्र और थकेहुये उन सब गुल्ममें वर्तमान लोगों
को एक क्षण भरमें मारा । ३८ । रुधिर से लित सब शरीर काल मृष्टि में अन्तक
के समान अश्वत्यामा ने शूवीर घोड़े और हाथियों को मोरा वह अश्वत्यामा
तीनप्रकार से रुधिर में लित हुए उन चेष्टा करनेवालों से खड्ग खसानेवालों से
और खड्ग के कम्पायमान होनेसे । ४० । उस रुधिर से रक्त वर्ण प्रकाशित खड्ग
धारी युद्ध करनेवाले वड़े भयके उत्पन्न करनेवाले अश्वत्यामा का रूप अमानुष
दिखाई पड़ा । ४१ । हे कौरव जो जग उठे वह भी शब्द से अचेतहुये और

his mace; The latter did not shake with the blow of the mace and
slew his adversary like a beast 35. Having slain him in this
manner he proceeded towards other warriors who were sleeping. He
slew the sleeping Panchals like beasts at a sacrifice. Then he enter-
ed other divisions and slew the warriors with his sword. He extirpat-
ed the armless and sleeping warriors in an instant. With his body
drenched in blood and looking dreadful like death himself, he slew
horses and elephants also. Bleeding from head to foot with the
blood of the slain, his own wounds and the droppings of his sword,
he was dreadful to behold with his drawn sword and was superhuman
in appearance. Those who awoke with the noise, became insensible
at the dreadful sight. Thinking him to be a rakshas, the warriors

वे स्वजाग्रत कारुण्य तेषु शब्देन मोहिताः । निरीक्षयामाणा अयोध्यां द्रौणिं दृष्ट्वा प्र वि
 द्यधुः ॥ ४२ ॥ तद्रूपं तस्य ते दृष्ट्वा क्षत्रिया शत्रुवर्षिणः । राक्षसं मन्यमानास्तं न प
 नानि न्यमीळयन् ॥ ४३ ॥ स घोररूपो व्यचरत् कालघाच्छिधिरे ततः । अपमथद्रौपदी
 पुत्रानथशिष्टांश्च सोमकात् ॥ ४४ ॥ तेन शब्देन विजला धनुर्हस्ता महारथाः । धृष्टद्युम्नं
 हव्यं भत्वा द्रौणदेया विशामरते । अशक्तिरञ्जयामासाद्वाज रभितयत् ॥ ४५ ॥ ततस्तेन
 निनादेन संप्रयुद्धाः प्रभद्रकाः । शिखीमुखै शिखण्डैः च द्रोणपुत्रं समाह्वयन् ॥ ४६ ॥
 मारुद्वाजः स तान् दृष्ट्वा शरधर्षाणि ययत् । ननाद् बलवशान् जिज्ञासुस्तान्महारथान् ॥
 ४७ ॥ ततः परसंक्रुद्धः पितुर्घननुहारत् । जरेदञ्ज रथोपस्थात्परमाणे मियुद्धे ५९
 कृद्दक्षचन्द्रं विमलं गृहीत्वा धर्म संयुगे । सद्गन्ध विपुलं दिव्यं जातरुपपरिष्कृतम् ।
 द्रौपदेयानभिदुह्य खड्गेन व्यथमद्वर्त्ता । ५० ॥ ततः स नरशार्दूल प्रतिविन्ध्यं महाहने ।

एक दूसरे को देखकर पीड़ावान् हुये । ४२ । उस शत्रु विजयी के उस रूपको
 देखकर उस को राजस मानते उन क्षत्रियों ने अपने नेत्रों के बन्द कर लिया
 ४३ । इसके पीछे डरेमें कालके समान घूमते हुये उन घोररूपने शेष बचे-हुये
 द्रौपदी के पुत्र और सोमकों को देखा । ४४ । हे राजा उन शब्दने भयभीत धनुष
 हाथमें लिये द्रौपदीके पुत्रों ने धृष्टद्युम्नको माराहुआ सुनकर निर्भय के समान
 वाणोंके समूहोंसे अश्वत्थामाको ढक दिया । ४५ । इसके पीछे उस शब्दसे प्रभद्रक
 नाम क्षत्रिय जागउठे शिखण्डीने शिखीमुख वाणोंसे अश्वत्थामाको पीड़ावान किया
 । ४६ । वह अश्वत्थामा वाणोंकी वर्षा करनेवाले उनवारों को देखकर उन
 महारथियों को मारनेका अभिलाषी बड़ा बलवान् शब्दको गर्जा फिर पिताके मरण
 को स्मरणकरता अत्यन्त क्रोधयुक्त रथमें उतर कर शीघ्रही सम्मुखगया । ४७
 और युद्धमें हजार चन्द्रबाणों के बिन्धोंसे चित्रित निर्मल ढाकको लेकर सुवर्ण से
 निर्मित दिव्यखड्गको पकड़कर द्रौपदी के पुत्रोंके सम्मुख जाकर बलवान्ने सबको
 खड्गसे घायल किया । ५० । हे राजा इसके पीछे उस नरोत्तमने बड़ेयुद्धमें प्रात

shut their eyes. Roaming in the camp, he saw the sons of Draupadi
 and the Somaka. Terrified at the outcry and hearing that Dhrish-
 tadyumn was slain, the sons of Draupadi came out with their weapons
 and fearlessly covered Ashwatthama with their arrows. 46. Thus
 the Prabhadraks awoke at the noise and Sukhandi wounded Ashwa-
 thama with his sharp arrows. Seeing those warriors shower their
 arrows and desirous of slaying them, he reared with all his might,
 and remembering the death of his father, he at once came down
 from his car and faced them. He took up his many-mooned shield
 and bright gold-handled sword and wounded all the sons of
 Draupadi 50. Then that best of men wounded Prativindhya on
 the side and he fell down dead on the ground. Glorious Sute m

कुक्षिदेशेऽथवीजाजम् स ह्योऽथपनहुवि ॥५१॥ प्रासेऽ विध्ना द्रौणिन्तु सुतसोमः
 प्रतापघ्नः । पुनश्चासि समुद्यम्यैः द्राणपुत्रमुपाद्रथत् । ५२ ॥ लुतसोमस्य चासि तं
 घातुं छिन्वी नरपते । पुनरप्याहवत् पादवै स्व भिन्नहृदयोऽपतत् ॥ ५३ ॥ नाकुलिष्ठु
 यतातीको रथचक्रेण विद्यमान । दोषयानु रक्ष्यै षेणै वक्षस्वममताडलत् ॥ ५४ ॥
 अतोऽपचक्रागीकं मुक्तचक्रं द्विजस्तुमः । न विह । लो यवैः भूयै ततोऽथापादरक्षिणः
 ॥ ५४ ॥ श्रुतकर्मानु परिष पृथै तथा समताडयत् । अमिदृश्य यथा द्रौणि सव्ये सफलके
 भृशम् ॥ ५६ ॥ स तु ग श्रुतकर्माणामसो जत्रे धरासिता । स ह्योऽपनहुमो विमूढो
 विकृतानन ॥ ५७ ॥ तेष शस्त्रेण वारस्तु श्रुतकीर्त्तिमहारथ । अश्वत्थामानमान्वाद्य
 शरवर्षैरघाविरत् ॥ ५८ ॥ सम्वापि शरवर्षाण चर्मणा प्रतिषाद्यम । सकुण्डल शिर
 कायद्वाजमानमपाहत् ॥ ५९ ॥ ततोऽपि निहन्तां सह सव्येः प्रभद्रके । अहन्तत्सर्वतो

विन्दुको कुक्षि स्थलपर घा । ल किया वह मत्कर, पृथ्वी पर गिरपड़ा । ५१ ।
 प्रतापवान् सुतसोम प्रासे अश्वत्यामाको छेदकर खड्गको उठाके अश्वत्यामा के
 सम्मुख गया ॥ ५२ ॥ नरोत्तम अश्वत्याम ने सुतसोम की भुजाको खँदम समेत काट
 कर कुक्षिपर घायम किया बड़ी भी दृशहृदय होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा । ५३ । फिर
 निकुलिष्ठे पुत्र पर क्ली शतानीकने रथ चक्रको दोनों भुजाओं से घुर्पाकर वेगमे
 उसको छातीपर घायलकिया । ५४ । फिर उस ब्राह्मणने चक्र छःइने वाले शतानीक
 का घायल किया वह व्याकुल होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा इसके पीछे उसको शिर
 को काटा । ५५ । फिर श्रुतकर्मा परिषको लेकर और दौडकर अश्वत्यामा के
 सम्मुख गया और ढालसे युक्तवाम कुक्षिपर कटिन घायलकिया । ५६ । फिर उस
 अश्वेत्यामाने उत्तम खड्गसे उस श्रुतकर्माको मुखपर घायलकिया वह रूपान्तर
 और अचेत होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा । ५७ । फिर उसकहुदसे महारथी श्रुतकीर्त्ति
 ने अश्वत्यामा को पाकर बाणोंकी वर्षसे टकादिया । ५८ । उस अश्वत्यामाने उसे
 की घाणवृष्टीको ढालपर रोककर कुण्डलवागी प्रकाशित शिरको शरीरसे छुदा

pierced Ashwathama with a spear and felled him with the drawn sword. But he cut down his sword arm and wounded him on the rib, making him fall down with the wound. Then Nakul's son, glorious Shatanik hurled a car wheel with both hands and hit him on the breast, but the brahman slew Shatanik also. 55. Then Shrut Karma faced him with a club and hit him hard on the left side. Ashwathama wounded him on the face and he fell down on earth disfigured and senseless. Shrut Karma then sent forth a shower of arrows at Ashwathama, but the latter took it on the shield and covered his adversary's glorious body, decked with earrings, from the body. Then with various weapons he wounded Shatanik and the Prashasta and pierced the former between the two eye brows with sharp arrow.

॥ ६० ॥ स तु काञ्चन
 ॥ ६१ ॥ शिखरिणः सखासांश्च द्विधा चिक्रेत् सोऽसिता
 ॥ ६२ ॥ शिखां च ततो हत्वा क्रोधविष्टः परन्तपः । प्रमदकगणान् सवानभिक्षु
 ॥ ६३ ॥ भव्यात्
 ॥ ६४ ॥ शिली रक्तस्त्रपतां रक्तमालया लपताम् । रक्तम्बरधरामिका पाशहस्तांकुटुम्बनीम्
 ॥ ६५ ॥ दहशुः कालरात्रिभते गायमानामवस्थिताम् । नराश्वकुञ्जरान् पार्श्वेऽपार्श्वे
 ॥ ६६ ॥ हस्तींश्चिविधान् प्रेतान् पाशवतान् विमूर्खजान् । तथैव च सदा
 ॥ ६७ ॥ स्वप्ने सुताश्वन्तीं ता रात्रिश्चक्षुःसु मारिव ।

॥ ६० ॥ उसके पीछे उस पराक्रमीने सब ओरने नानाप्रकार के शस्त्रों के द्वारा वीर
 शिखण्डीको सब प्रभद्रकों समेत घायल किया उस शिखण्डी ने दूबरे शिलीमुखसे
 दोनों भक्तियों के मध्यमें घायलीकिया । ६० । फिर क्रोधसेपूर्ण उस बड़ेबलवान्
 मन्वत्पुत्र ने शिखण्डीको पाकर खड्गसे दोखण्ड करीदिया । ६१ । फिर क्रोधसे
 पूर्ण बहुओंका तानेवाला उन बड़े वेगवान शिखण्डी का मारकर प्रभद्रकों के
 वर पशुओंके सम्बुवारा और राजा भिराटकी जो सेना शेष थी उसपर भी
 बहार करिबाना हुआ । ६२ । बड़े बलवान् ने देख देखकर हुपदके पुत्र पौत्र
 और भित्री काभी वर नाशकिया । ६३ । खड्ग मार्ग में दुश्मन भवत्वामाने
 अन्य लोगों केभी नम्बुव जाजाकर उनको खड्ग से काटा । ६४ । उनलोगों ने
 रक्तनेत्र रक्तमाला चन्द्रनते अलंकृत लाल पोशाकवारी पोशाहायमें लड़के आदिक
 रखनेवाली अक्रीकाननी । ६५ । गतीदूई नियत कालरात्रिकी देखा हेराजा
 पनुष्य घेड़े आर हारियोंको पार्श्वे वांहर जानेके अनिलायी धोरहा । ६६ ।
 बालों के पृथक् पार्श्वों में बंधेहुये बहुतप्रकारके पृथकों के लेजानेवाने और शमी
 प्रकार अन्य शस्त्रियों में । ६७ । स्वप्नावस्था में सदैव वेतलाड होतेहुये महारथियों

60. -Then in his rage, he cut Sikhandi into two with his sword. Having slain him, he faced the Prabhadriaks and attacked the remnant of the Panchal warriors. He selected the sons and grand sons of Drupad from among them and destroyed them with great force. Glorified in sword-manship, he cut them down with his sword. They saw the blind Death with red eyes, red garlands, adorned with sandal and red dress, negro in hand and accompanied by her offspring singing songs. The warriors hid off in such a dream, crying the dead warriors and bursts in her nostrils and accompanied by Aswataman. They hid in the breast of the warrior her accompanied by Ashvataman in their dreams. - With continu. tones.

ऊरुत्तमं गृह्णाताश्च कस्मला मितो जसः । वितदन्तौ शूश्रूषस्तः समासीद्विन परस्परम् ॥ ७८ ॥ ततो रथं पुनर्द्रोणिं रास्थितो भ्रामनिस्वभम् । धनुष्याणि शरैरन्यान् प्रेषयन् प्रथमक्षयम् ॥ ७९ ॥ पुनरुत्पन्नतश्चापि दूरादपि नरोत्तमान् । शूराश्च संपततश्चान्यान् कालरात्र्यै न्यथेदयत् ॥ ८० ॥ तथैव स्वन्दनाग्नेण प्रमथन् स विधावति । शरवर्षैश्च विविधैरथैश्च कृत्वा भ्रवांस्ततः ॥ ८१ ॥ पुनश्च सुविचित्रेण शतचन्द्रेण धर्मणा । तेन चाकाराशयैतं तदाघरत् सोसिना ॥ ८२ ॥ तथा स शिघिरं तेषां द्रौणिराहवदुर्मदः । श्वश्रोभयग राजेन्द्र महाहृदमिषद्विषः ॥ ८३ ॥ उत्पेतुरस्तेन शब्दंन धीघा राजन् विचे तसः । निद्रात्तांश्च भयात्तांश्च व्यधावन्त ततस्ततः ॥ ८४ ॥ विस्पर्धं चक्रुश्चान्ये बहुशब्दं तथावयन् । न च स्म प्रत्यपद्यन्त शस्त्राणि वसनानि च ॥ ८५ ॥ विमुक्तकेशाश्चाप्यन्ये नाम्यजानन् परस्परम् । उत्पन्तान्तोपतञ्छ्रान्ताः केचित्तत्र भ्रमन्तथा ॥ ८६ ॥

इम पीडावान हुये । ७८ । इमंके पीछे धनुष हाथमें लिये अश्वत्थामा ने भयकारी रथपर सवार हो कर शरणोंसे अन्य मनुष्यों को भी यमलोक में पहुंचाया । ७९ । फिर दूर से उछलतेहुँनरोत्तम आतेहुये दूसरे शूरांकोभी कालरात्रि के आधीनकिया इसी प्रकार रथकी नोकसे मथता हुआ वह दौड़ताथा इस के पीछे बहुत प्रकार की वाणवाष्टियों से शत्रुओं के मनुष्योंपर वर्षा करने लगा । ८१ । फिर बड़ी विचित्र मूये चन्द्रमा रखनेवाली टाळ और उस आकाशवर्ण खड्ग के द्वारा धमण करनेलगा । ८२ । हे राजेन्द्र उस युद्धमें दुर्मद अश्वत्थामाने उन्हीं के डरेको भी ऐसे छिन्न भिन्न किया जैसे कि हाथी वडे हृदको करंदता है । ८३ । हेराजा इस शब्दसे अचेत शूवीर उठे और निद्रा और भयसे पीडावान होकर इधरउधर हो दौड़े । ८४ । इसीप्रकार अराभ्य धचन कहतेहुये अन्गलोग वडे शब्दसे पुकारे और शस्त्र और चस्त्रांको नहीं पाया । ८५ । बहुत से खलेहुये वालवाले मनुष्योंने रथपर नहीं पहचाना तब वहां उछलतेहुये कितनेही मनुष्य धककर गिरपड़े और कितनेही भ्रमण करनेलगे । ८६ । कितनही लोगोंने विष्टाकोछोड़ा

people hid themselves here and there. We too, were terrified and riveted to the spot where we stood. Then Ashwathama slew other warriors with the arrows shot from his car. He slew those whom he saw coming near. 80. He ran his car among them, showering arrows and crushing them under wheels. Then he roamed with his helm studded with gems and moons, carrying the bright sword in his hand. He upset their camp as an elephant does a lake. The warriors awoke with the noise and ran away here and there in their sleep and fear. Others uttered obscene words, but could not get their arms and armour in the hurry of the moment. 85. Others with dishevelled hair did not know one another. Some fell down with exhaustion, while others ran here and there. Some dropped urine. Elephants

दशशुर्गोघमुखास्ते प्रन्तं द्राणिश्च सर्वदा ॥ ६८ ॥ यतः प्रभृति संग्रामः कुरुपाण्डव
 सेनयोः । ततः प्रभृति तां कन्यामपदयन् द्रौणिमेध च ॥ ६९ ॥ तांस्तु दैवहतान् पूर्वं
 पथाद्द्रौणिर्न्यपातयत् । प्रासपन् सर्वभूतागि धिगेदन् भरवानुयान् ॥ ७० ॥ तदनु
 स्मृत्य ते धीरा दधान् पूर्णकालिकम् । इदं तदित्यमन्यन्त दैवेनोपनिर्पादिताः ॥ ७१ ॥
 तवस्तंन निगार्त्तं प्रत्ययुधन्त घयिन । विधिरं पाण्डवेषानां शतशोऽथ सख्यम् ॥
 ७२ ॥ साञ्छिन्नम् कस्यचित् पादौ कथमन्वेष कस्यचित् । काश्चिद्धिमं
 कारमष्ट इवान्तकः ॥ ७३ ॥ अस्त्युप्रप्रातिपिष्टैश्च नदाद्भ्यश्च सृष्टानुरैः । गजाश्वमार्षो
 ष्वान्पैर्मही कीर्णामधत् प्रमो ॥ ७४ ॥ क्रौशतां किमिदं कोऽयं क शब्दं किन्तु किं
 छतम् । एधं तेषां तदा द्रौणिस्तकः समपद्यत ॥ ७५ ॥ अपेतशस्त्रशभाहान् सप्तद्वार
 पाण्डुसृज्जवान् । प्राहिणोन्मृत्युलीकायद्रौणिः प्रहरताम्बरः ॥ ७६ ॥ ततस्त्रच्छब्दव्यव्रल्लो
 उत्पतस्तो भयानुगः । निद्रान्वा नष्टसंज्ञश्च तत्र तत्रः निलिहिपरं ॥ ७७ ॥

लेजनेवाली उस कालीको और उग मारनेवाले अश्वत्थामाको उत्तम शूम्बरीने
 सदैव देखा ॥ ६८ ॥ जबसे कि कौरवीय और पाण्डवीय सेनाका युद्ध जारीहुआ
 तबसे लेकर उस कन्याको और अश्वत्थामा को स्वप्न में देखा । ६९ । युद्धमें सब
 निवधारियों को डराने और भयानक शब्दोंको गर्जते अश्वत्थामा ने प्रथम दैव
 से हुतेहुये उन लोगोंको पीछे गिराया । ७० । दैवसे पीड़ित उन वीरोंने उसपूर्व
 समयके देखेहुये स्वप्नको स्मरणकरके माना कि यह वही बात है । ७१ ।
 पीछे पाण्डवोंके ढेरमें वह सैकड़ों और हजारों अनुपधाी उस शब्दसे जागउठे ७२
 कालसे प्रवृत्त मृत्युके समान उस अश्वत्थामाने हिंसीके पैरोंको काटा किसी
 जत्रन को और कितने ही को कक्षिपर छेदा । ७३ । हे मनु कठिन मर्दन कियेहुये
 शब्द करनेवाले मतलाले हाथी और हाथी घोड़ों से मधेहुये अन्य मनुष्यों से वह
 पृथ्वी आच्छादित होगई । ७४ । जो लोग कि इसप्रकार से पुकारते थे कि यह
 क्या है कौन है कैसाशब्द होरहा है उन सब लोगोंको प्रहार करनेवालों में श्रेष्ठ
 अश्वत्थामाने पाण्डवोंके नातेदार और सृजिलोग जो कि शस्त्र और कवचों से
 रहित थे उनकोभी समलोकमें भेजा । ७६ । इस के पीछे उस शस्त्र से भयभीत
 उछलते और भयमे पीडावान् निद्रासे अंधे अचेतहोकर वहलोग जहां तहां गुप्त
 होगये । ७७ । और ऊहस्तम्भ मूर्छासे निर्बल भयभीत कठोर शब्द करते

Ashwathama slew the warriors whose days were numbered 70 The
 warriors, afflicted by Fate, remembered their dreams and realised
 them. Then hundreds and thousands of archers awoke in the
 Pandav camp with that noise, but Ashwathama, like an embodiment
 of Death, cut their feet, thighs and ribs. The ground was covered
 with the shrieking mad elephants and corpses of men crushed by
 elephants and horses. Ashwathama slew the Srinjis and other allies
 of the Pandavas who were awaking in wonder, 'Who is it? What is
 this noise for?' Then afraid of the weapons and blind with sleep

अधुः स्थानेषु तत्राय कालेनाभिप्रचोदिताः ॥ ९६ ॥ त्यक्त्वाह्वाराणि च हास्यास्त्रया
 शुल्मानि गौलिमकाः । प्राद्वन्त यथाशर्कं काग्निशीका विचेतसः ॥ ९७ ॥ विप्रमष्टा
 यत्नेधोर्न नाजानन्तो तथा विभो । क्रोशन्तस्मात् पुत्रेति वैचोपहतचेतसः ॥ ९८ ॥ यला
 यतां दिशस्तेषां तानप्युत्सृज्य धान्ववान् । गोधनामभिरन्योऽभ्याक्रन्दन्त ततो जनाः
 ॥ ९९ ॥ हाहाकारश्च कुर्वाणाः पृथिव्यां शेरते परे । तान् पुष्पा रणमध्येसौ द्रोणपुत्रो
 म्पपातयत् ॥ १०० ॥ तत्रापरे घृष्यमाना मुहुर्मुहुश्चेतसः । शिबिरानिष्यतन्ति ह्य
 क्षत्रिया मयपीडिताः ॥ १०१ ॥ तांश्च दिश्यततस्त्रस्ताः खड्गपिराज्जीवितैविणः । कृतवर्मा
 कृपश्चैव द्वारदेशे निजगतुः ॥ १०२ ॥ विशस्त्रयन्त्र क्वचवान्मुक्केशान् कृतांजलीन् ।
 वेपमानान् क्षितौ भीताश्चैव काञ्चिद्वसुचयतान् । १०३ ॥ नामुच्यत तयोः कश्चिन्न
 क्रांतः शिबिराद्बहिः । कृपस्य च महाराज हार्दिकस्यच दुर्मतेः ॥ १०४ ॥ भूयश्चैव

अन्वकारसे घिरे और कालसे मेरित लोगोंने वहां उनको मारा । १०० । इसीप्रकार
 द्वारपाल द्वारोंको और गुल्मनाले लोग गुल्मोंको त्यागकर के भयभीत और अचेत
 होकर सामर्थ्य के अनुमार भागे । १०१ और परस्पर नाश होगये इसीप्रकार एक
 ने दूसरेको नहीं पहचाना अपने बान्धवों को छोड़कर दिशाओं को भागते उन
 लोगों के मध्यमें से दैवमे व्यथित चित्त मनुष्य पुकारे हे पिता हे पुत्र इसके पीछे
 लोगोंने गोत्र और नामोंसे परस्पर पुकारा । १०२ और कितने ही हाहाकार कर
 के पृथ्वीपर गिरपड़े ह्य अशक्तमाने युद्धमें उनको जानकर रंका । १०० ।
 और बहुत से क्षत्रिय वरंशर घायल और अचेत और भयसे पीड़ित होकर डेरे
 बाहरगये । १०१ । उन भयभीत जीवन के इच्छावान डेरे से निकलने वालों को
 कृतवर्मा कृपाचार्य ने द्वारस्थानपर मारा । १०२ । जिनके यन्त्र और क्वच गिर
 पड़े वह खुदेहुये बाल हाथ जोड़े वृद्धीपर कम्पायमान और भयभीत थे । १०३ ।
 उनमेंसे कित्तीकोभी नहीं छोड़ा डेरेसे बाहरनिकलनेवाला कोईभी मनुष्य उनदोनोंके
 हाथमे बचकर नहीं गया हे महाराज अशक्तमाना प्रिय करने के अभिलाषी उन

another. The door keepers and camp soldiers deserted their posts
 and ran away with all their might. They destroyed one another
 without seeing. Leaving their kinsmen, they dispersed in all directions
 and called out for fathers and sons in confusion. They announced
 their clans and names. Some fell down on earth with cries of dismay
 and Ashwathama checked them in their flight. 100. Many
 warriors, wounded and insensible with fear tried to go out of the
 camp to save their lives; but they were slain by Kritvarma and
 Kripacharya who were stationed at the entrance. The warriors,
 destitute of arms and armour, with dishevelled hair and clasped hands,
 lay on earth, trembling with fear. None of those who tried to escape
 from the camp for their lives, were able to escape from Kripacharya
 and Kritvarma. To please Ashwathama, they set fire to camp from

पुत्रीयवसुजन् केचित् केचिन्मूत्रं प्रमुसुवुः । घन्घनानि च राजेन्द्र सञ्छिद्य तुषा
 द्विपाः ॥ ८७ ॥ समं पर्यपतेश्चान्ये कुर्वतो महादुकुलम् । तत्र केचिन्नरा भीता स्वरं
 यत् महीतले । तथैव तान्निपतितानर्पितान् गजवाजिनः ॥ ८८ ॥ तस्मिन्स्तथा चैतमा
 रक्षांसि पुरुषर्षभ । हृष्टानि घनदन्तुर्वैसुरा भरतसत्तम ॥ ८९ ॥ स शब्दः पुरितो राज
 भूतसंघैर्मुदायुतैः । अपूरयद्दिशः सर्वा दिवशातिमहास्वनः ॥ ९० ॥ तेषामाद्यस्वरं श्रुत्वा
 चित्रस्ता गजवाजिनः । मुक्ताः पर्यपतन्नाजन् मृदन्ततादीविरे जनाः ॥ ९१ ॥
 परिधापद्भिश्चाणोदीरितं रजः । अकरोच्छिविरे तेषां रज्ज्यां द्विगुणं समः ॥ ९२
 तस्मिन्स्तमसि सञ्जाते प्रमूढाः शिविरे जनाः । नाजानन् पितरः पुत्रान् भ्रातृन् प्रा
 एवच ॥ ९३ ॥ गजा गजानतिक्रम्य निर्मनुष्यान् द्रव्या हपात् । अताडयं स्तथाभञ्जंस्त
 धामृदन्श्च भारत ॥ ९४ ॥ ते भग्नाः प्रपतन्निस्म निर्घनन्तश्च परस्परम् ।
 चान्पान् पातयित्वा लघापिपन् ॥ ९५ ॥ विचेतसः सन्निद्राद्य तमसा चाप्रतान

कितनाही मूत्रका करदिया हे राजेन्द्र हाथीघांटे घन्घनोंको तोड़कर । ८७ ।
 ओरको दौड़े और कोई महाब्याकुलता उत्पन्न करनेवालेहुये वहांकितनेही
 भादमी पृथ्वीपर सोगे उसीप्रकार उन पड़ेहुओं को हाथी और घोडों ने
 किया । ८८ । हे भरतर्षभ पुरुषोत्तम इसप्रकार उम नाशके वर्चमान होनेपर
 लोग प्रसन्न होकर वदे शब्दसं गये । ८९ । हे राजा प्रसन्नोचित जीवोंके
 से किया वह शब्द सर्वत्र व्याप्त होगया लयबड़े शब्दने सवादिशा और
 पूर्णकिया । ९० । उन्होंके पीड़ित शब्दोंको सुनकर भयभीत और घन्घनोंसे
 हाथीघोड़े इंसमें मनुष्यों की खूदते मर्दन करते चारोंओर को दौड़े । ९१ । वहांउत्त
 चारोंओर दौड़नेवालों के चरणों से उठीहुई धूलने रात्रिक्रममय उन्होंके डेरोंमें दू
 अन्धकारको उत्पन्न किया । ९२ । उम अन्धकार के उत्पन्न होनेपर मनुष्य
 ओरसे शज्ञान हुये पितामोंने पुत्रोंको नहीं जाना भाइयों ने भाइयों को ।
 । ९३ । हाथियों ने हाथियोंको सवारों से रहित घाड़ानें घोडोंकोदवाकर
 और दूटे संगीकया उसीप्रकार मर्दन करते परस्पर भारतहुये बहसत्र घायल
 पड़े इनीप्रकार अन्धोंको भी गिराकर मर्दन किया । ९५ । अचेत निद्रासे

and horses broke their ropes and ran in all directions. Some lay on earth out of fear and were crushed down by elephants' hooves. During that destruction the rakshases roared in all directions: 90. At the sounds of their wailings, elephants and horses broke their ropes and ran away crushing and trampling the men in their way. The dust raised by their feet made the night very dark. People lost their senses in that darkness; fathers did not know their sons and brothers did not recognize brothers. Frightened and wounded elephants and the riders' horses wounded and

horses, 95. Inensible with sleep and darkness, they slow

बध्नुः स्वानेष तत्राय कालेनाभिप्रचोदिताः ॥ ९६ ॥ त्यक्त्वाह्वाराणि च द्वास्थास्त्रया
 शुल्मानि गौत्सिकाः । प्राद्वन्त यथाशक्तं काग्निशीका विचेतसः ॥ ९७ ॥ विप्रमन्त्रा
 धत्तेन्योन्यं नाजानन्तो तथा धिमो । क्रोशन्तस्त्रात पुत्रेति वैचोपहनचेतसः ॥ ९८ ॥ यला
 यतां दिशस्तेषां तानप्युत्सृज्य वान्धवान् । गोत्रनामभिरन्योन्यमाक्रन्दन्त तनो जनाः
 ॥ ९९ ॥ हाहाकारश्च कुर्वाणाः पृथिव्यां शेरते परे । तान् बुध्वा रणमध्येसौ द्रोणपुत्रो
 म्पयातपत् ॥ १०० ॥ तत्रापरे घड्यमाना मुहुर्मुहुश्चेतसः । शिथिरानिष्पतन्ति स्म
 क्षत्रिया भयपीडिताः ॥ १०१ ॥ तांश्च निष्पततस्त्रस्तान्छिविराज्जीविनैविणः । कृतवर्मा
 कृपश्चैव द्वारद्वेषो निजगतुः ॥ १०२ ॥ विशस्त्रमन्त्रकवचान्मुक्तकेशान् कृतांजलीन् ।
 वेपमानान् क्षितौ भीताश्रय काञ्चिदमुच्यताम् । १०३ ॥ तामुच्यत तयोः कश्चिद्वि
 श्क्रांतः शिथिराक्षिः । कृपस्य च महाराज हार्दिकस्यच दुर्मतेः ॥ १०४ ॥ भूयश्चैव

अन्वकारसे घिरे और कालसे मेरित लोगोंने वहाँ उनको मारा । ९६ । इसीप्रकार
 द्वारपाल द्वारोंको और गुल्मवाले लोग गुल्मोंको त्यागकर के भयभीत और अचेत
 होकर सामर्थ्य के अनुमार भागे । ९७ । और परस्पर नाश होगये इसीप्रकार एक
 ने दुसरेको नहीं पहचाना अपने बान्धवों को छोड़कर दिशाओं को भागते उन
 लोगों के मध्यमें से दैवने व्यथित चित्त मनुष्य पुकारे हे पिता हे पुत्र इसके पीछे
 लोगोंने गोत्र और नामोंसे परस्पर पुकारा । ९९ । और कितने ही हाहाकार कर
 के पृथ्वीपर गिरपड़े स्म अश्वत्थामा ने युद्धमें उनको जानकर रोका । १०० ।
 और बहुत से क्षत्रिय वारंवार घायल और अचेत और भयसे पीड़ित होकर डरे
 बाहरगये । १०१ । उन भयभीत जीवन के इच्छावान डरे से निकलने वालों को
 कृतवर्मा कृपाचार्य ने द्वारस्थानपर मारा । १०२ । जिनके यन्त्र और कवच गिर
 पड़े वह खुलेहुये वान्धव हाथ जोड़े वृद्धीपर कम्पायमान और भयभीत थे । १०३ ।
 उनमेंसे किसीकोभी नहीं छोड़ा डरेसे बाहरनिकलनेवाला कोईभी मनुष्य उनदोनोंके
 हाथमें बचकर नहीं गया हे महाराज अश्वत्थामा म्रिय करने के अभिलाषी उन

another. The door keepers and camp soldiers deserted their posts and ran away with all their might. They destroyed one another without seeing. Leaving their kinsmen, they dispersed in all directions and called out for fathers and sons in confusion. They announced their clans and names. Some fell down on earth with cries of dismay and Ashwathama checked them in their flight. 100. Many warriors, wounded and insensible with fear tried to go out of the camp to save their lives; but they were slain by Kritvarma and Kripacharya who were stationed at the entrance. The warriors, destitute of arms and armour, with dishevelled hair and clasped hands, lay on earth, trembling with fear. None of those who tried to escape from the camp for their lives, were able to scape from Kripacharya and Kritvarma To please Ashwathama, they set fire to camp from

विधाधनं द्वाणपुत्रस्य नामयम् । त्र्युदेवेषु दंतुः शिबिरं च द्रुताशनपः ॥ १०५ ॥
 तत प्रकाशे शिबिरं मद्भुगेन गित्नुनन्दनः । अश्वत्थामाः द्वाणजं च चरत्कृतं सधत्
 । १०६ ॥ रुद्रिचशपनो द्वाणपरं शैलं भावत । द्युतं जगत् रुद्रुगेन प्राणैर्द्विजघ
 रात्तम ॥ १०७ ॥ कांश्चिद्यद्यन् स अङ्गेन मध्ये संघिद्य चार्थे वात् ।
 अपानयद्भुगेण पुत्रः संरथ्यस्तिलकाण्डवन् ॥ १०८ ॥ विनदंश्चिभुंशाथंस्त
 नराभवाद्द्विरदोत्तमैः । पतितैरभयत् कोणां भेदिनी भरतवभ ॥ १०९ ॥
 मानुषाणां सहस्रेषु हतेषु पतितेषु च । उदारैश्च कवचानि यद्भुगुथाय ध्यापन
 ॥ ११० ॥ सायुधान् साङ्गदान् वाह्विरिचकत् शिरांशिव । हस्तिहस्तो पमानक
 हस्तान् पादाश्च भारव ॥ १११ ॥ पृच्छन्निजान् शिरिच्छिन्नान् पाद्विच्छिन्नान् परान्
 स महात्मा करद्वेक्षणं । कांश्चिच्च वापि परांमुत्रात् ॥ ११२ ॥ मध्यदेशे नरानप्यांश्चिच्छ

कृपाचार्य्य और दुर्बुद्धी वृत्तवर्माने डेरोंके तीनोंओर अग्निलगदी । १०५ । फिर
 डेरों के प्रज्वलित और प्रकाशित होनेपर पिराको प्रयत्न करनेवाला, अश्वत्थाम ।
 हस्तलाघवको समान खद्गको लेकर घुपनेलगा । १०६ । कितनेही आनेवाले और
 दौड़नेवाले धारोंको खद्गकेद्वारा प्रयासे रहितकिया और ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ परा-
 क्रापी आश्वत्थमाने कितनेही शूरवीरों को खद्गके द्वारा मध्यसे काटकर क्रोध
 युक्तने तिलकाण्ड के समान गिराया । १०८ । हे भरतवभ अत्यन्त घायल मर्जित
 गिरते मनुष्य घड़े और हाथियों से पृथ्वी आच्छ दितर्बुद्धी ॥ १०९ ॥ हजारों मनुष्यों
 के मरने और गिरने पर वर्द्धन करद उठे और उठकर गिरपड़े । ११० । शस्त्र
 और वाजुन्द रत्नवाली भुजाओं समेत शिरको कार्य और हाथीकी सूँठके
 समान जघाओं का और हाथ पैरों को काटा । १११ । हे भारतवंशी दूरी पीठकुक्षि
 और शिरवाले अन्य लोगों को गिराया उस महात्मा अश्वत्थामाने कितने ही
 मनुष्यों को मुखफैरनेवाला किया । ११२ । किसीको कान से स्थानपर और किसी
 को कटिस्थानपर काटा किसी को कन्धे के स्थान पर घायल करके शिरको शरीर
 में प्रवेश किया । ११३ । इनप्रकार उम के घुमने और बहुत आदियों को मारते

all sides. 105 When the camp was thus illumined, Ashvathama the
 joy of his father roamed dexterously with his sword. He killed the
 coming and running warriors with his sword. He cut some in the
 middle and others into piecemeal. The ground was covered with
 men and beasts, wounded, cying and falling down. At the fall of
 thousands of men, headless bodies rose and fell down again. 110.
 He cut down the jewelled hands and hands as well as thighs like the
 trunks of elephants and hands and feet. He cut under the backs,
 sides and heads of others. Many warriors turned back from Ashwa-
 thama. He cut the ears and trunks of some and wounded others on
 the shoulders making their heads enter their bodies. While he was
 thus roaming and killing, the night became dreadful to behold. The

वास्यांश्च कर्णनः । अस्मिन्देशे नि हृत्प न्यान कायेप्राधेशयच्छिरः ॥ ११३ ॥ एष विद्यरस्तस्य निघ्नतः सुवह्वरराव । तमसा र वनी घोरा वभौ दारुणदर्शना ॥ ११४ ॥ किञ्चित् प्राणिञ्च पुरुषोहंतैश्चान्यैः सहस्रशः । घट्टन, च राजाश्चन मरुत् न्दी मदर्शना ॥ ११५ ॥ यक्षरयः स्वम कीर्णै रथाश्वत्रिपदाकणे । कुण्डेन द्रोणपुत्रेण साच्छिद्राः प्रापन्तु भुयि ॥ ११६ ॥ भ्रातृत्वश्चे चितृत्वश्चे पुत्रान्तमं दिद्रुद्र ह्युः । वेचिदृच्छन्तं त् क्रुद्धे घांशिराष्टैः कृतैरेणः ॥ ११७ ॥ यत्कृतं न प्रसूसानारक्षारि क्रूरकारिभि असाक्रि ध्यादि पाशानामिदं न मदाने कृतमः ॥ ११८ ॥ न देवासुरगन्धर्वैर्नयक्षैर्न च राक्षसैः । शश्वो विधेतु कौन्तेयो गंता वस्य जनाईनः ॥ ११९ ॥ अक्षयः सत्यवाग्दांतः सधं मूतानुक्रमाकः । म स सुतंप्रमत्तं वा न्यस्तशरं कृतालक्षिम । चायन्त मुच वे क्षया हन्ति पार्थो ह्यक्षय ॥ १२० ॥ तदिदं नः कृतं वोर रक्षंसिः क्रूरच र्मीभः । इति लालयमानाः स्म शेरते घट्टो जनाः ॥ १२१ ॥ स्तनसाञ्च मनुष्याणामपरेषाश्च कजताम । ततो महत्तां प्राशङ्ग्यास शब्दस्तुम्लो

दुषे अन्धकार से यह रात्रि घोर रूप महाभयानक दशन देखनेम आई । ११४ । कुछ कण्ठगत प्राणवाले कुछ धृतक हजारों मनुष्य हाथी और पांडोंसे पृथ्वी भया नकरूप देखनेमें आई । ११५ । पक्ष राक्षसों से संयुक्त रथ घोड़े और हाथियोंसे भयानक रूप पृथ्वीके होनेपर क्रोधयुक्त अश्वत्यामाक हाथसे घायल होकर पृथ्वी पर गिरपड़े । ११६ । कोई-माइयों को कोई पिताओं को और पुत्रोंको पुकारत था और कैवन हां वाले कि यद्ध क्रोधयुक्त धतराष्ट्रके पुत्रोने भी वह कर्म कियाय जो के निर्दयी राक्षसोंने हम सोनेष लों के साथ कियाई पांडवों के वर्तमान न होने से यह हमारा नाशकिया । ११८ । वह अर्जुन असुर गन्धर्व यत्न और राक्षस से भी विजय करनेके योग्य नहीं है जिसके कि रत्नक श्रीकृष्णजीई । ११९ । वह अर्जुन वेद ब्रह्मणों का रत्नक जितेन्द्रिय और सब जीवधारियोंपर कृपाकरनेवाला है वह बाण्डय अर्जुन सोनेवाले मतवाले अशुभ हाथ जोड़नेवाले खुले केश और माग्नेवाले मनुष्योंको नहीं मारताई । १२० । निर्दयी राक्षसों ने हमारा यह नाशकिया इसप्रकार विनाप करतेदुषे बहुतसे मनुष्य पृथ्वीपर सोगये । १२ ।

ground looked dreadful with the dying and dead men and beasts. 115 Full of yakshes, rakshases, cars, horses and elephants, cut down by Ashwathama the ground was dreadful to behold. Some called out their brothers, fathers and sons, while others said, "The rakshases have done the same with the sleepers as the sons of Dhritrashtra did in daylight in the presence of the Pandavas. Having Shri Krishna for his protector, Arjun is invincible by asurs, gandharvas, yakshes and rakshases. Arjun is the protector of the Vedas and brahmens has control over his organs and is merciful to all beings. He does not play the sleeping mad and weaponless, nor those who seek refuge with dishevelled hair and joined hands. 120. The cruel

महान् । १२२ ॥ शोणितः निपिकायां घमुघायाश्च भूमिप । तत्र जस्तुमुलं घोरं क्षणे
 नांतरधीयत ॥ १२३ ॥ सवेष्टमाना मुक्तिमनाश्चिह्नत्वाद्दान्महत्कृतः । न्यपातयन्नराश्च
 क्रुद्धः पशून् पशपनिर्धया ॥ १२४ ॥ अ-योन्धं संपरिष्वज्य शयानान् प्रवतोऽपरान् ।
 संलीनान् सुधमानाश्च सर्वान् द्रौण्यरथायवन ॥ १२५ ॥ दृष्टवानान् हुताशेन घप्य
 गानांश्च तेन ते । परस्पर तदा योयाननयद्यमसादनम् ॥ १२६ ॥ तस्याजन्नास्त्वर्जन
 पाण्डवानां महद्वलम् । गमयामास राजेन्द्र द्रौणिमनिनेशनम् ॥ १२७ ॥ निशाच
 राणा सत्त्वानां रात्रिः सा हर्षयस्त्री । आसीन्नरगजादवानां रात्रौ क्षयकर्त्री भृशम्
 ॥ १२८ ॥ तत्राद्दश्यन्त रक्षांसि पिशाचाश्च पृथग्विधाः । खादन्तो नरमांसानि निरन्तप
 चोणितानि च ॥ १२९ ॥ करालाः पिङ्गला रौद्राः शैलदग्धा रजस्वला । जटिन दीर्घ
 सक्थाश्च पञ्चप दामशंदराः । १३० ॥ पश्चादंगुलया कृष्णा भिक्षुपा भैरवस्वना ।

इनके पीछे एक युद्धतर्मही पृथ्वी पर और गर्भेदुगे अन्य मनुष्यों का वह बहुत बड़ा
 शब्द बन्द हो गया । १२२ । हे राजा रुधिरसे पृथ्वीके अच्छे प्रकार तरहोनेपर वह
 घोर और कठिनधूल एकलक्षगमैरी दूरहोगई । १२३ । उसको घप्युक्तने चेष्टाकरनेवाले
 व्याकुल और उत्साहेभ रहित इनारों मनुष्योंको ऐसे गिराया जैसे कि पशुओं को
 रुद्रजी गिराते हैं । १२४ । उत अश्वत्थामाने पृथ्वीपर गिरेहुये मनुष्योंको परस्पर
 मिलाकर भागनेवालों को और किननेही युद्ध युद्धकरनेवालोंको अत्यन्त मारडाला
 । १२५ । तत्र भाग्निमे जलनेवाने और उस अश्वत्थामाके हाथसे घायल उन
 शूरवीरों ने परस्पर यमलोक्तमें पहुँचाया । १२६ । हे राजा अश्वत्थामाने उसरात्रि के
 अर्द्धभागमें पाण्डवां की बड़ी सेनाका यमलोक में पहुँचाया । १२७ । वह रात्रि
 रात्रियों की प्रसन्नता बढ़ानेवाली मनुष्य घोड़े और हाथियों का भय उत्पन्नकरने
 वालाशिकर महाकठिन नाशकारी हुई । १२८ । वहाँ पृथक् २ प्रकार के पिशाच
 रात्रिस मनुष्यों के मांसको खाते और रुधिर को पीतेहुये दिखाई पड़े । १२९ ।
 जोकि कराल पिङ्गल वर्ण पर्वताकार दांत रखनेवाले धूलसे लिप्त जटाधारी लम्बे
 शङ्ख पांच पैर और बड़ा उदर रखनेवाले । १३० । पीछेकी और उँगलियां रखने

rakshases have destroyed us." Thus crying and lamenting, many warriors lay on earth. After some time, the noise of men and beasts subsided and the ground being well drenched with blood, the storm of dust had disappeared. Enraged Ashwathama had slain thousands of warriors as Rudra does beasts. He extirpated the men fallen on the ground as well as those who were running away or fighting from a hiding place. 125. Hearing by fire and wounded by Ashwathaman, the brave warriors slay one another. Ashwathama destroyed the great Pandav army during that midnight which gave pleasure to rakshases and fear and destruction to men and beasts. Pishaches and rakshases were seen eating the flesh of men and drink-

घण्टाजालानवजाथ नीलकण्ठा विभीषणाः ॥ १३१ ॥ सपुत्रदाराः सकूरा-सुदुर्वा
 सुनिर्घृणाः । विविधानि च रूपाण तत्राहस्यन्त रत्नसाम ॥ १३२ ॥ पीत्वा च शोणितं
 दृष्ट्वाः प्रानृत्यन् गणश-परं । इदं पामिद् मेघमिदं स्वगदिति चामुयन् ॥ १३३ ॥ मेदो
 मज्जास्त्रिकानां वसनात्प्रभृशं गता । परमांसानि खादन्तः क्रव्यादा मांसजीविनः
 ॥ १३४ ॥ वसास्रैघापरे पीत्वा पयध्रावन् विकुक्षिफाः । नानावस्त्रास्तथा रौद्राः
 क्रव्यादाः पिशिताशिनः । १३५ ॥ मयुतानि च तत्रासन्प्रयुतन्ययुदानि च । रत्नसां
 धोररूपाणां स्रष्टां क्रूरकमेणाम ॥ १३६ ॥ मुदितानां विवृप्तानां तस्मिन्महन्नि वैशसे ।
 स्वमेतानि बहुन्यासन् भूतानि च जनाधिप ॥ १३७ ॥ प्रत्यूषकाले शिविरात् प्रतिभन्तु
 म्रियेष सः ॥ १३८ ॥ नृशोणिताघसिक्तस्य द्रौणिरासीद्वसितसहः । पाणिना सह संद्वलपट
 पकीभूत इव प्रभो ॥ १३९ ॥ दुर्गमां पदवीं गत्वा विरराजजनक्षये । युगान्ते सर्वभूतानि

बाले खूबे कुरूप भयानक शब्दवाले घण्टाजाल से युक्त नीलकण्ठ भयउत्पन्न कर
 नेवाले पुत्र स्त्रियोंको साथ रखनेवाले निर्दयी दुर्दर्शन और दया से रहित थे वह
 राक्षसों के रूपभी अनेक प्रकारके देखनेमें आये । १३२ । कोई रुधिरको पान
 करके मसन्न चित्त होकर नृत्य करने लगे और कहते थे कि यह उद्यमद्वैयहपवित्रहै
 यह स्यादुहै । १३३ । भेजा मज्जा अस्थि और रुधिरको अच्छीरीतिसे भक्षण करने
 वाले रुधिरसे अच्छे प्रकार तृप्तहुये । मांससे जीवनेवाले वह राक्षस अन्यलोगोंके मांस
 खानेसे तृप्तहुये । १३४ । इसीप्रकार नानाप्रकारके मुखरखनेवाले कोई कुरूप मांसभक्षी
 बड़ा उदर रखनेवाले राक्षस मज्जा को पान करके चारोंभोर को दौड़े । १३५ ।
 वहाँ निर्दय कर्मी भयानकरूप बड़े राक्षसोंकी संख्या हजारों किराहों और अर्बुदों
 थी । १३६ । हे राजा उत्सवदेनाश ममन्न चित्त अत्यन्त तृप्त राक्षसोंकी यःसंख्या
 थी और बढ़तेभूतगण भी इकट्ठेहुये । १३७ । उसने प्रातःकालके समय उसदेरे
 से निकलनाचाहा । १३८ । मनुष्यों के रुधिरों से लिप्त अशस्थामा का लहंग
 हायसे चिपटाहुआ एकरूप होगया हे प्रभु वह अशस्थामा दुःखसे भिन्ननेवाले मार्गमें
 जाकर मनुष्योंक नाशमें ऐसा शोभायमानहुआ जैसे कि प्रलयकाल में सबजीवों को

ing their blood. They had dreadful forms, yellow colour, huge teeth
 dust stained hair, long conchs, five toes, large belly, toes turned
 backward, dreadful visage, with bells and net, blue thongs, dreadful
 women, accompanied by women and sons, cruel, bad looking unmerciful
 and of various forms 132 Some felt joy at drinking blood and
 danced, saying, "It is good, holy and delicious." They ate flesh,
 fat and bones and were satisfied with drinking blood. Some dreadful
 cannibals, with large bellies, fed on fat and ran like a and together.
 135. The cruel and dreadful rakshasas were millions in number,
 which was augmented by g blues. With his arm and sword of the
 same hue, Ashwathama wished to go out of the camp in the morning and

भस्म कृ-वेष पावकः ॥ १४० ॥ यथाप्रतिहतं तत्कर्म कृत्वा द्रौणायनिः प्रभो । दुर्गमां
पदवीं गच्छन् पितुरासीद्गतज्वरः ॥ १४१ ॥ यथैव संसुप्तजने शिविरे प्राविशन्निति
तथैव हत्वा निःशब्दं निश्चभ्राम नर्यम ॥ १४२ ॥ निष्कम्ब्य शिविरास्तमात्ताड्यां
सङ्गम्य धार्यवान् । आचख्यौ कर्म तन् सर्वं हृष्टः सहर्षयन् विभो ॥ १४३ ॥ तावप्या
चख्यतुस्तस्मै प्रियं प्रियकरौ तदा । पाञ्चालान् खड्गयान्श्चैन भिनिकृत्तान् सहस्रशः ।
प्रीत्या चोच्चैरुदकोशस्तथैवास्फोटयन्सलान् ॥ १४४ ॥ एवं विधा हि सा रात्रि सोम
कानां जनक्षये । प्रसुप्तानां प्रमत्तानामासीत् सुधृशदावणा ॥ १४५ ॥ असंशयं हि कालस्य
पर्यायो दुरतिक्रमः । तादृशा निहता यत्र कृत्वास्माकं जनक्षयम् ॥ १४६ ॥ धृतराष्ट्र
उवाच ॥ प्रागेव तुमहत्कर्म द्रौणिरेतन्महारायः । नाकरोदीदृशं कस्मान्मत्पुत्रविजयेधृतः
॥ १४७ ॥ अथ कस्माद्धते क्षत्ते कर्मदे कृतवानसौ । द्रोणपुत्रो महेश्यासत्तन्मे संशितु
मर्हसि ॥ १४८ ॥ सञ्जय उवाच ॥ तेषां तूतं मयाप्रासी कृतवान् करुणन्दन । कसाभि

भस्मकरके अग्नि शोभायपानहोताहै । १४० । हे प्रभुवह अश्वत्थामा प्रतिज्ञा के
अनुसार उस कर्मको करके पिताके दुष्प्राप्य मार्गको प्राप्तकरता तापसे रहितहुआ
। १४१ । वह नरोत्तम जैसे किरात्रिमें सोनेवाले लोगोंके समान ढेरमें पहुँचा उसीप्रकार
मारकर ढेरके निःशब्द होनेपर ढेरसे वाह निकला । १४२ । उस ढेरसे निकल उनदीनों
से मिलकर प्रसन्न और प्रसन्न करते उस पराक्रमीने उनमव कर्मको वर्णन किया हे
समर्थ तबउन विजय करनेवालों ने उस प्रिय वचन को उससे वर्णन किया कि हमने
ढेरसे निकलेनवाले हजारोंपांचाल और सृजिनियोंको मारा वह प्रसन्नता समेत बड़े
उच्चस्वरमें पुकारे और हाथकी तालियोंको बजाया । १४४ । सोते और भवेन
सोपकों के नाशमें बहरात्रे इसप्रकारकी कठिन और भयकारी हुई । १४५ ।
निस्पन्देह समयकी लौट पौन दुःखमें उल्लेखनकरनेके योग्यहै जहाँ कि उस प्रकार
के वीर हमारे मनुष्योंका नाश करते मारेगये । १४६ । धृतराष्ट्र बोले कि मेरे
पुत्रकी विजयमें प्रवृत्तचित्त महारथी अश्वत्थामाने प्रथमही इस प्रकारके कठिन कर्म
को कैसे नहींकिया । १४७ । उमनीच दुर्योधनके मग्नेपर उयमहात्मा अश्वत्थामा
ने किसहुँसे उस कर्मको किया वह सब मुझे कहने को योग्यहै । १४८ । संजय

looked glorious like the fire of pra'laya. 140. Having done the deed
to avenge his father's death, he felt cheerful. He left the camp as
noiseless as it was when he entered it at midnight. He met his two
friends and cheered them by relating his exploits. They also told
him the cherished news of their own victory and slaughter of thou-
sands of Panchals and Srinjayas. They shouted for joy and clapped
their hands. The sleeping Somaks had been slaughtered during that
dreadful night. 145. Surely the changes of Time are hard to be
passed over; for those who had slain our men were themselves slain."
Dhritrashtra said, "Why did Ashwathama not do a deed like this
though he was so intent on my son's story? Why did he do it at the

धृष्टाक्षे पार्थानां केशवस्य च धीमताः । स्नात्येकंश्चापि कर्मदं द्रोणपुत्रेण साधितम् ॥ १४९ ॥ को हि तेषां समक्षं तान् दृश्यादपि मरुत्पतिः । एतदीहशकं वृत्तं राजन् सुप्तं जने विभो ॥ १५० ॥ ततो जनक्षयं कृत्वा पाण्डवानां महाशयम् । दिष्ट्या दिष्ट्येति चान्योन्यं समेत्योचुर्महारथा ॥ १५१ ॥ पर्येष्यजत तौ द्रौणिस्ताप्यां संप्रतिनन्दितः । इदं हर्षोस्तु सुमहदाददे धाक्ष्यमनुत्तमम् । १५२ ॥ पाञ्चाला निहताः सर्वे द्रौपदेषाम्भ सपेशः । सोमका मत्स्यदेशीश्च सर्वे विनिहता मया ॥ १५३ ॥ इदानीं कृतकृत्या स्मयाम तथैव मा चिरम् । यदि जीवति नो राजा तस्मै संशामहे विषमम् ॥ १५४ ॥

इति सांक्षिकपर्वणि पांचालादिवधेऽष्टमाध्यायः ८॥



बोले हे कुरुनन्दन निस्संदेह उस अश्वत्थामाने उन पाण्डवों के भयसे इस कर्मको नहीं किया पाण्डव केशवजी और मात्याकी के वर्त्तमान नहीनेपर अश्वत्थामाने इस कर्म का साधन किया । १४९ । उन्हीं के समक्षमें कोई मनुष्य तो क्या इन्द्रभी नहीं मारसक्ताथा हे राजा रात्रिके समय मनुष्यों के सोने पर ऐसा वृत्तान्त हुआ । १५० । फिर पाण्डवों के लोगोंका कठिन नाश करके वह महारथी परस्पर मिलकर बोले कि दिष्ट्या दिष्ट्या अर्थात् सुवारक सुवारकहोय । १५१ । इसके पीछे मत्स्य कियाहुआ अश्वत्थामा उन दोनोंसे स्नेह पूर्वक मिला और मत्स्यतासे इस उत्तम और बड़े वचनको बोला कि सब पाञ्चाल और द्रौपदी के पांचो पुत्र मारेगये श्रेय वचेद्वेषे सब सोमक और मत्स्य देशीभी मेरे हाथसे मारेगये । १५२ । अबहम क्रम क्रम हैं वहाँही चलें बिलम्ब मतकरो जो हमारा राजा जीवताई हम उमसे चलकर वर्णन करें । १५४ ।



fall of Duryodhan? Pray tell me all this." Sanjaya said, "Surely, he did not do it before for fear of the Pandavas. He was able to perform it in the absence of the Pandavas, Keshav and Satyaki. Not even Indra can cope with those personages. He did it when the warriors were asleep. 150. Having destroyed the Pandav warriors, the three heroes congratulated one another. Ashwathama embraced the two men joyfully and said, "The Panchals and the five sons of Draupdi are slain like the Somaks and Matsyas. We are now happy. Let us go and inform the king without delay, if he be yet alive." 154.

सञ्जय उवाच । ते हत्वा सर्वपाण्डवालां द्रौपदींश्च सर्वशः । आगच्छन् सहि
नास्तत्र यत्र दुर्योधनो हतः ॥ १ ॥ गत्वा चैनमपश्यन्त चिञ्चिवत्प्राणं जनाधिपम् ।
ततो रथेषु प्रस्कन्ध परिवर्जितवारमजम् ॥ २ ॥ तं भग्नसर्पं राजेन्द्र कृच्छ्रप्राणम्
केतनम् । घमन्तं रुधिरं वक्त्रादपश्यन् वसुधातले ॥ ३ ॥ पृथं समन्तः द्रुहिभिः श्वापै
र्धौर्दर्शनः । शालावृकगणैश्चैव मक्षयिष्यद्भिरन्तिकत् ॥ ४ ॥ निघारवन्तं कृच्छ्रात्तत्र
श्वापदांश्च चिखादिपूतं । विचेष्टमानं महाम्बु सुभृशं गाढवेदनम् ॥ ५ ॥ तं शयानं तथा
तथा दृष्ट्वा भूमौ स्वरुधिरोक्षितम् । हनशिष्टास्त्रयो वीराः शोकात्तां पर्यवारयन् ।
अदवस्थामा कृपाश्चैव कृतवर्मा च सात्त्वतः ॥ ६ ॥ तोहिभिः शोणितदिग्धैर्निश्चसद्भि
र्गह्वारैः । शुशुभे शश्वतो राज्ञा वेदी त्रिमिरिवाग्नाभिः ॥ ७ ॥ ते तं शयानं संप्रेष्य
राजानमनयोचितम् । अत्रिपहान दुःखेन ततस्ते च्यवुस्त्रयः ॥ ८ ॥ ततस्तु रुधिरं हस्तै

अध्याय ९ ॥

संजय बोले कि वह तीनों सब पञ्चाङ्ग और पाँचो द्रौपदी के पुत्रों को मार
कर एकमाथी नदी में गये जहाँ कि घायल दुर्योधन था । १ । और जाकर कुछ
शेष पाण्डवाने राजाको देखा इसके पीछे रथोंसे उतरकर आपके पुत्रको मध्यवर्ती
किया । २ । हे राजेन्द्र उन्होंने उम टूटी जंघा और पाणों से पीड़ावान् अन्न और
मूत्रसे रुधिर डालनेवाले राजाका पृथ्वीपर देखा । ३ । भयानक दर्शनवाले बहुतसे
हिंस्रजीवोंने युक्त और समीप से भक्षण करने के अभिन्नापी शृंगारों दिकके समूहोंसे
घिरद्वये । ४ । खानेके अभिन्नापी भेड़िया आदिकको दाख से रोकनेवाले पृथ्वी
पर घेष्टा करनेवाले कठिन पीड़ावान् । ५ । रुधिर से लिप्त उस प्रकार पृथ्वीपर
सोनेवाले राजादुर्योधनको देखकर मरनेसे शेषवचे शोकसे पीड़ावान् तीनोंवीरों ने
चारोंसे उसको व्याहृति किया अर्थात् अश्वत्थामा, कृपाचार्य और पादव कृतवर्मा
। ६ । रुधिरसे लिप्त श्वासलेनेवाले तीनों महाराथियों ने संयुक्त वह राजा ऐसे
शोभायमान हुआ जेमेकि तीनों अग्नियोंमे वेदी शोभायमान होताहै । ७ । इस के
पीछे वहतीनों उमदशके अयोग्य पृथ्वीपर पड़ेहुये राजाको देखकर असह्य दुःख
समेत रोदन करनेलगे । ८ । फिर युद्धभूमि में सोनेवाले उम राजाके मुखसे रुधिर

CHAPTER IX

Sanjaya said, " Having slain the five sons of Draupadi, the three warriors went to the place where Duryodhan was lying wounded. They saw him at the point of death and went to him from their cars. They found him lying on earth, with his thigh broken, insensible in the agonies of death and blood coming out from his mouth many a dreadful beat of prey, and jackal, wishing to devour his body, surrounded him. Seeing Duryodhan incapable of keeping wolves and other animals at a distance, the three warriors, Ashvathama, Kripaharya and Krtivarma came round him. Accompanied by the three bloody

मङ्गलमिन्द्रं तस्य हि । रणे राज्ञः शयानस्य रूपेण पश्यं देवयन् ॥ १९ ॥ रूप उपाच । न
 देवस्यातिभारोरित यद्वं रुधि गौक्षित । एकादशचमूर्त्तां शैने दुर्योधनो हतः ॥ १० ॥
 पश्य चाभीराभस्य चामीकरधिमूषिताम् । गदागदाप्रियस्ये । समीपे पतितां भुवि
 ॥ ११ ॥ ह्यभेने गदा शूरं न जहाति रणे रणे । स्वर्गोघापि ब्रजन्तं ह न जहाति यज्ञ
 स्विनम् ॥ १२ ॥ पश्येमां सद्य धारणं जान्यूनदभिमूषिताम् । शयाना शयते हर्म्ये भार्या
 प्रीतिमतीमिष ॥ १३ ॥ योयं मूर्द्धाभिपिक्तानाम्ने यानः परन्तप । स हतो व्रसते पांशुन्
 पश्य कालस्ये पश्येयम् ॥ १४ ॥ येनाज्ञौ निहतो भूनावशेरत हतद्विग । स भूमौ निहतः
 श्येते कुरुराज परैरयम् ॥ १५ ॥ भयान्नमन्ति राजानां यस्य स्म शतसंघशः । सर्वैरश
 यने शैने ऋशान्द्रि परिवारितः ॥ १६ ॥ उपासन्त द्विजाः पृथ्वीपतेतोर्यमीश्वरम् । उपा
 सते च तं ह्यद्य ऋष्यादामांसहेतवः ॥ १७ ॥ सञ्जय उवाच । तं शयानं कुरुधेष्टं ततो

को अपने हाथों से सफाकरके करुणापूर्वक विनाप किया । १ कृपाचार्य बोले
 कि देवका बड़ाभार नहीं है जो यह ग्यारह अक्षौहिणी सेनाका स्वामी राजा
 दुर्गोपिन रुधि से लिप्त घायल हुआ पृथ्वीपर सोता है । १० । इस सुवर्णके समान
 भकाशमान सुवर्ण जटित राजाकी गदाको पृथ्वीपर सम्मुख पड़ी हुई देखो । ११ ।
 यह गदा मन्वेक युद्धमें इम शूरको त्याग नहीं करती अर्थात् स्वर्ग जानेवाले यश
 मानको नहीं त्यागकरती । १२ । सुवर्ण से अलंकृत वीरके साथ सोनेवाली इस
 गदाको ऐसे देखो जैसे कि महलमें सोनेवाली प्रीतिमान् भार्याको देखते हैं । १३ ।
 जो यह शत्रुका तपानेवाला मूर्द्धाभिपिक्तों के आगे प्रधानहुआ वह घायल होकर
 पृथ्वीकी धूलिको स्पर्श करता है समयकी विपरीतता को देखो । १४ । जिसके
 हाथसे युद्धभूमिमें मारेहुये शत्रु पृथ्वीपर सोनेवाले हुये वह मृतकशत्रुवाला यह
 कौरवराज शत्रुओं के हाथमें माराहुआ सोता है । १५ । हजारों राजाओं के समूह
 जिसके भयसे झुकने थे वह मांसपत्नी जीवों से घिराहुआ वीर पृथ्वीपर सोता है
 । १६ ब्राह्मणों ने धनकेनिमित्त जिस ईश्वरकी उपासनाकी अब उसकी मांसपत्नी
 मांसखानेकेलिये भक्षसाकरते हैं । १७ । सञ्जयबोले कि हे भरतर्षभ उमकेपछे

warriors, the king looked like an altar over which the three fires preside. 7. They wept to see the king lying in that deplorable condition. They wiped blood from his mouth with their hands and wept. Kripacharya said, "We have not much to thank Fate, for Pinak Duryodhan the lord of eleven akshauhinas of army lies bleeding here on earth. 10 Here lies his golden mace which never left the dying prince. It is lying with him like an affectionate wife. This leader of kings lies here on earth. Look at the changes of Time! Having slain his foes the Kaurav Prince lies here struck by the enemy. 15. He to whom thousands of the kings bowed, sleeps on earth surrounded by beasts of prey. He who was praised by Brahmana for the sake of his wealth is now attended by flesh eating animals for the sake of his flesh." 17.

भरतसत्तम । सद्गत्यामा समालोक्य कर्णं पर्यवेक्ष्यत् ॥ १८ ॥ आहुस्त्वां राजशा
 दूलं मुखं सर्वधनुषात्ताम् । धनाध्वक्षोपां रुद्धे क्रियं रुद्धेणरय च ॥ १९ ॥ कथं
 धिधरमद्रार्क्षं भ्रमिसेनस्तदापघ । कलिनं कृतिनं निरयं स ख्र पापाःमघानृष ॥ २० ॥
 कालो नूनं महाराज जालेस्मिन् बलवत्तर । पश्यामो निहतं त्वाञ्च भ्रमिसेनेन संयुगे
 ॥ २१ ॥ कथं त्वां सर्वधर्मज्ञं क्षुद्रः पापी वृकोदरः । निकृत्या हतवान् मग्दो नूनं कालो
 दुरत्ययः । २२ ॥ धर्मयुद्धे ह्यधर्णेन सनाहूयौजसा मृधे । गदधा भ्रमिसेनेन निर्भयं
 सक्थिनी तपः २३ ॥ अधर्णेण हतस् ॥ जौ मृधमानं पदा शिरः । य उपेक्षितवान् क्षुद्रं
 धिधतमस्तु युधिष्ठिरम् ॥ २४ ॥ युद्धेष्वपघद्विष्यन्ति घोधा नूनं वृकोदरम् । यावत्
 स्थास्यन्ति भूतानि निकृत्या ह्यासि पतितः ॥ २५ ॥ ननु रामाऽब्रवीद्राजस्यं सदा बहु
 तन्दन । दुःखान्धनस्यमो नाभि गदधा इति वीर्ययान् ॥ २६ ॥ ह्लाघते त्वां हि धार्ष्ण्यो

अश्वत्थामाने उस कारवों में श्रेष्ठ सोतेहुये दुर्योधन को देखकर दयासे कबला
 धिलाप किया । १८ । हे राजाओं में श्रेष्ठ तुमको सब धनुषधारियों में प्रथम बल
 देवजीका शिष्य और युद्धमें कुबेरकेसमान वर्णन कियाहै । १९ । हे पापोंसे रहित
 भ्रमिसेनने कैसे तेरे छिद्रको देखा हे राजा उस पापात्माने तुझ बलवान् और सदैव
 कर्म करनेवाले को मारा । २० । हे महाराज निश्चय करके इस लोकमें काल बड़ा
 पराक्रमी है कि हम तुमको युद्धमें भीमसेनके हाथ से मराहुआ देखते हैं । २१ ।
 क्रोधयुक्त अज्ञानी पापी भीमसेनने किस प्रकार से तुझ सबधर्मों के ज्ञाताको छलसे
 मारा निश्चय काल दुःखमें उल्लंघनके योग्य है । २२ । धर्मयुद्ध में बुलाकर फिर
 युद्धमें अधर्मसे साथ भीमसेनकीगदा और पराक्रम से तेरी दोनों जंघाटूटी । २३ ।
 जसने युद्धभूमि में अधर्मा से घायल शिरपात्र से नहीं युक्तको देखकर
 ध्यान नहीं किया उस क्रोधयुक्त युधिष्ठिरको धिकारहै । २४ । निश्चयकरके शूर
 वीरलोग युद्धोंमें जबतक पृथ्वी वर्त्तमानहै तब तक भीमसेन की निन्दाकरेंगे क्योंकि
 तुम छलसे मारेगयेहो । २५ । हे राजा निश्चयकरके यदुनन्दन पराक्रमी बलदेवजी
 ने सदैव तुझसे कहाके गदायुद्धकी धियामें दुर्योधनके समान कोई नहींहै । २६ ।

Sarjaya continued, "Ashwathama felt pity on the Kaurav prince and wept for grief, saying, " You were the foremost of Baldeva's disciples and were a famous warrior like Kuber. How was Bhim able to discern a weakness in you ? How did he slay you ? Surely Time is very powerful in this world as we see you slain by Bhim. How did enraged, foolish and sinful Bhim slay you by deceit ? Surely Time is hard to be over-topped. 22, Challenged to a fair fight, he unfairly broke your thighs. Think on Yudhishtir, who saw you unjustly struck down and looked on the indignity when your head was being touched by him. Surely brave men will always speak ill of Bhim for slaying you unjustly. 25, Baldev always spoke of you that you had no

राजन् सखासु भारत। सुशिष्यो मम कौरव मे गदायुद्ध इति प्रभो ॥ २७ ॥ या गाँते
 क्षत्रियस्याहुः प्रशस्तां पत्ययः । इतस्त्राभिमुखस्याजौ प्राणस्त्वमसि तां गतिम् ॥ २८ ॥
 दुर्योधन न शोचामि त्वामहं पुरुपर्यम । हतपुत्री तु शोचामि गान्धरा पितरंच ते
 ॥ २९ ॥ भिक्षुको विचरिष्येते शोचन्तौ पृथिवीमिमाम् । धिगस्तु कृष्ण चर्षेया जु
 मष्ठापि दुस्मतिम् ॥ ३० ॥ धर्मज्ञमानिनौ यौ त्वां वध्यमानमुपश्र ॥ ३१ ॥ पाण्डवाभ्यां
 ते सर्वे किं वध्यन्ति मराधिर । कथं दुर्योधनोऽगामिहंत इत्यनपप्रसाः ॥ ३२ ॥ धन्य
 स्वममि गान्धारे वस्त्रमाधोधने हतः । प्रयानोऽभिमुखः शत्रून् धर्मेण पुरुपर्यम ३३ ॥
 हतपुत्राहं गान्धारी निहतशानिवान्वया । प्रताचक्षुश्च दुर्धरे वां गतिं प्रतिपत्स्यने
 ॥ ३४ ॥ धिगस्तु कृतधर्माणं मां कृपत्रच महारथम् । ये वयं न मताः स्वर्गं त्वा वस्तुत्य
 पार्थिवम् । ३५ ॥ दातारं सर्वकामानां रक्षितारं प्रजाहितम् । यत्तर्धं नानृगच्छामम्यां

हे मंझ भरतवंशी राजादुर्योधन वह बलदेवजी सभाओं में तुम्हाी प्रशंसा करते हैं
 कि वह कौरव गदायुद्ध में मेरा शिष्य है । २७ । मर्षियों में युद्धभूमि में सम्मुख
 करनेवाले क्षत्रीकी जिमगतिको उत्तम कहा तुम उभीमर्तिको मासदो । २८ हे
 पुरुषोत्तम दुर्योधन मैं तुझको नहीं शोचताहूं तेरोपिताको और गान्धारिको शोचता
 हूं जिनके कि सवपुत्र मारेगये । २९ । इन पथीको शोचने वह भिक्षु रूप होकर
 इस पृथीपर विचरेंगे यादव श्रीकृष्णजी को और दुर्बद्धी अर्जुनकोभी धिकारहोय
 । ३० । आपको धर्मज्ञ जानते जिनदोनों ने तेरे घायल होनेको ध्यान नहीं किया
 हे राजा यह लज्जाराहित और सव पाण्डवभी कहेंगे कि हमारे हाथ से
 दुर्योधन किमकार से मारागया । ३१ । हे पुरुोत्तम दुर्योधन
 तुम धन्यवाद के योग जो तुम बहुधा धर्म से शत्रुओं के सम्मुख होकर युद्धभूमि
 में मारेगये । ३२ । जिसके जाति वान्धव और पुत्र मारेगये वह
 गान्धारी और ज्ञानचक्षु रत्नेनवाला अजय घृतराष्ट्र दोनों किस गतिको पावेंगे
 । ३४ । कृतधर्मा को मुझको और महारथी कृपाचार्य को धिकारहोय जो हम तक
 राजा को आगेकर के स्वर्गको नहीं गये । ३५ । जो हम तुझ सव अभीष्ट के देने

equal in mace fighting. He praised you in courts and was proud of
 having you for his disciple. You have died fighting and this sort of
 death is recommended by wise men for a kshatriya. I donot regret
 your death, Duryodhan, but I mourn for your father and Gandhari
 who have lost all their kingdom and will roam like borgas. Fire on
 Krishna and Arjun who call themselves virtuous and yet disregarded
 the injury done to you. How can the shameless Pandavas
 boast of slaying you;? I congratulate you, Duryodhan for your
 securing a warrior's end. 33. To what state will Gandhari and blind
 Dhritrashtra be reduced who have lost all their kinsmen! Fire on
 Kritvarma, on me and on Kripacharya, for we did not follow you to

धिगत्माशराजमान् । ३६ । कृास्य नव श्रीर्यण मम चैव पितुश्च मे । समृत्याना ना
 नाभ्याम्र रत्नवन्त शृहाणि च ॥ ३७ । भव प्रसादादस्माभि समिन्न सह चाश्रये ।
 भगवता क्रनयो मुख्या घदयो भृदिक्षिणा ॥ ३८ ॥ कुनश्चापीदश पाप प्रधीक्षिष्यामहे
 वयम् । यादृशेन परस्म्यत्व गत सर्वगर्धिवान् ॥ ३९ । वयनेव त्रयोऽराजन् मच्छ तं
 परमा गतिम् । यै त्वा नानुमच्छामस्तेन पक्ष्यामहे वयम् ॥ ४० ॥ त्वसगहीना हीनार्था
 स्मरन्त सुकृतस्य ते । किन्नाम तद्गुण्य कर्म येन त्वां न व्रजाम धे ॥ ४१ ॥ दुःखं नूनं
 कुच्छथ चरिष्याम तद्दक्षिणाम् । हीनाना नस्त्रयाराज्ज् कुतः शान्ति कुत सुखम्
 ॥ ४२ ॥ गत्वेतस्तु महाराज समेष्व च महारथान् । यथाश्रेष्ठ यथाऽप्यष्टं पूजयेद्वचनान्
 मम ॥ ४३ ॥ आश्राय्यं पूजायत्नाच्च केतुं सर्ववनुत्पनताम् । हं मयाद्य शसेखा पृष्टद्युम्न
 नराधिप ॥ ४४ ॥ परिश्रजेथा राजान वाहलिकं समहारथम् । सैभ्यं स्तोमदस्यथ

पाले रत्नरु और संभारके प्रियकर्त्ता के पीछे नहीं जाते हैं हम नीच मनुष्योंको
 धिक्कार है । ३६ । हे नरोत्तम नौकरों सपेत कृपाचार्य के मेरे और मेरे पिताके
 रत्नजडित स्थान भापही के पराक्रममे हुये है । ३७ । मित्र और बान्धवों समेत
 हम लोगों ने आपकी कृपामे बहुत दक्षिणावाल अनिच्छितम बहुत यज्ञ प्राप्तिये ३८
 दृष्ट पपी कहीं मे ऐसे मार्गपर कर्मकर्त्ता हागे जिम मार्गमे कि तुम सब जीवों को
 आगेकरके गये । ३९ । हे राजा जोहमरीनां तुझ परमगति पानेवाल के पीछे नहीं
 जाते हैं उस हेतुमे हम भस्व होते हैं । ४० । स्वर्ग और अभीष्टोंमे रहित हमलोग
 उन राजाओंको और तेरे शुभकर्म को स्मरण करते जिसहेतुसं आपके पीछे नहीं
 जाते हैं वह हमारा केन कर्मयोगा । ४१ । हे कौरवों में श्रेष्ठ राजा दुर्योधन निश्चय
 करके हम सब महादुखी होकर इन पृथ्वीपर विचरेंगे तुम्हमे पृथक् होकर हमलोगों
 को कहांते शान्ती और सुख प्राप्त होसका है । ४२ । हे महाराज तुप जाकर और
 महारथियों से मिलकर मेरे वचनसे दृढ़ता और उचमताके विचारसे पूजन करना
 । ४३ । हे राजा सब घनुपधरियों के ध्वजारूप आचार्य जी को पूज कर अब
 मेरे हाथमे मेरे हुये धृष्टद्युम्नको वर्धन करना । ४४ । और बड़े महारथी राजा

heaven. Fie on us who do not accompany you, our benefactor and
 protector! My father, kripacharya and I owe our greatness to you
 We and our friends were able to perform rich sacrifices by your grace
 How can sinful men like us follow the path that you have trodden!
 We burn with grief because we do not follow you to heaven 40. Des-
 titute of heaven and cherished desires, we are undone because we
 do not follow you. Duryodhan, best of kauravas! surely we are
 reserved to lead a life of misery and can have no peace without you
 Pay my respect to the departed warriors when you meet them, king
 Inform D onacharya the best of a chers that I have slain D uryodhan
 dyumn Convey my greetings to Vahlik Jayadrath, Soudatta, Bhuris-

परिभ्रमन्मेव च ॥ ४५ ॥ तदा पूर्वागतात्स्वयं पार्थिवसक्तमात्रं । अस्मद्वाक्यात्
 परिभ्रमन् पृच्छेद्यस्त्वमनामयम् ॥ ४६ ॥ तद्वचनं उवाच । इत्येवमुक्त्वा राजान भग्न
 सक्तमचेतनम् । अश्वत्थामा सम्पुत्रं पुनरप्यनमस्रवीत् ॥ ४७ ॥ दुर्योधना जीवति
 स्व वाचं श्रोत्रतुल्यं शृणु । सप्त पाण्डवसुः शेषा धार्तराष्ट्रास्त्रयो वयम् ॥ ४८ ॥ ते
 शेष भ्रातरः पथ घातुन्नेद्योय सात्यकिः । शहस्रं ह्यनवमार्चं ह्यः शारद्वतस्तथा ॥ ४९ ॥
 द्रौपदेया ह्युताः सर्वे धृष्टद्युम्नस्य चात्मजा । पाञ्चाला निद्रताः सर्वे मत्स्यशेषश्च
 भारत ॥ ५० ॥ सुतं प्रीकृतं पश्य ह्यनुपुत्रा हि पाण्डवाः । सौप्तिके शिविरं तेषां हतं
 शरणाहनम् ॥ ५१ ॥ मया च पापकर्माभिः धृष्टद्युम्नो महीपते । प्रविश्य शिविरं राघौ
 ण्णुमारेण मरित ॥ ५२ ॥ दुर्योधनस्तु तां वाचं निशम्य मतसः प्रियाम् । प्रतिलभ्य
 तश्चेत इह बचनमब्रवीत् ॥ ५३ ॥ न मेऽकरांस्रभ्रातृगो न कर्णो न च ते पिता । यस्वथा
 गृहीक, जयद्रथ, सामंश्च और भूरिभवासे मिलना । ४५ । उसी प्रकार स्वर्ग
 में प्रथम जानेवाले अथ २ उत्तम राजाओं को मेरे बचनसे मिलकर कुशल मंडल
 को पूछना । ४६ । संजय बोले कि अश्वत्थामाजी उत भ्रचेत और दृष्टी जंघावाले
 राजाको इसप्रकार कहकर और सम्पुत्र देखकर फिर बचन शो बोले । ४७ ।
 हे दुर्योधन ह्यन भीवतेहो कानोंके सुखदायी बचनोंको सुनो कि पाण्डवोंके सात
 और दुर्योधनके ह्यमतीन शेषवचेहैं । ४८ । वह पांनोंभाई केशवजी और सात्यकि
 हैं वतीमकार में शतवर्षा और तीसरे शारद्वन कृपाचार्यजी शेषहैं । ४९ । हे भरत
 शी द्रौपदीके सब पुत्र धृष्टद्युम्नके सब पुत्र पांचाल और शेष वनेद्रुय सब मत्स्य
 देखी मारगये । ५० । बदलेके कर्म को देखो और पाण्डव असन्तान हैं शत्रि के
 युद्धमें मैंने उन्होंका डेरा सब मनुष्योंममत नाश करदिया । ५१ । हे राजा मैंने
 रात्रि में डेरेमें प्रवेश करके यह पापकर्ता धृष्टद्युम्न पशुके समान मारा । ५२ ।
 दुर्योधन उम दित्तके प्रियबचनोंको सुनकर और मनेनहो कर यहवचन बोला ५३

shrava and other warriors when you meet them in heaven" 46 San
 jaya continued, " Having thus talked with the wounded king in this
 strain, Ashwathama again said, " Hear what is pleasing to the ear, O
 king, if you are yet alive: seven on the side of the Pandavas and three
 of us are the only men alive—the five brothers, Keshava and Satyaki
 on their side, and Kritvarma, Kripacharya and I on yours. "All the
 sons of Draupdi, with Dhrishtadyumna and his sons, all the Pandavas
 and the rest of the Matsyas are slain. 50. See the work 'of revenge.
 The Pandavas are childless; for I destroyed all their camp at night.
 I entered the camp at night and slew sinful Dhrishtadyumna like a
 beast." Having heard this cherished news and coming to conscious-
 ness, Duryodhan said, " Neither Bhishm nor Karna nor your father
 did for me the thing which would be by you with the help of Krija
 charya and Kritvarma. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100.

कृपमोक्षाभ्यां सहितेनाथ ते कृतम् ॥ ५४ ॥ स च सेनापतिः भुद्रो हतः सार्धं
 विह्वला । तेन मध्ये मघघता सममात्मानमघवे ॥ ५५ ॥ स्वस्तिं प्राप्नुवत् नद्रं व-
 मः संगमः पुनः । इत्येषमुक्त्वा तूर्णानि कुरुराजोमहामताः ॥ ५६ ॥ प्राणाण्यव्युत्तरं
 कुड्वाडु-अमुतुखजत् । आक्रामत दिवं पुण्यां शरीरं कितिमाविशत् ॥ ५७ ॥ एवं
 निघनं पातः पुत्रो दुर्योधनो नृप । अग्रे यात्थारणे शूरः पञ्चाङ्गिनिहतः परैः । ५८ ॥
 संथेष ते परिपक्ता परिष्वज्यथ तेनृपमापुनः पुनः प्रेक्षमाणाःस्ककानरुहू रथाद् ॥ ५९ ॥
 इत्यहं द्रोणपुत्रस्य निशम्य करुणां गिरम् । प्रत्युपकारे शोकार्क्षः प्राद्रवन्त
 ॥ ६० ॥ एवमेष क्षयो कृतः कुरुपाण्डवसेनयोः । घोरो विशमनो राद्रो
 निघते तथ ॥ ६१ ॥ तथ पुत्रे गते स्वर्गे शोकार्क्षस्य ममानघ । ऋषिदत्तं व्रनघं
 शिशममघ वै ॥ ६२ ॥ वैशम्पायन उवाच । इति श्रुत्वा स नृपतिः पुत्रस्य निघनं
 निघस्य द्वाघमुष्णञ्च ततश्चिन्तापरोभवत् ॥ ६३ ॥ इति दुर्योधनप्राणत्यागेनबभोः
 किं मेरावईकर्म नं भिष्मजी ने न कर्णने और न आपके पिताने किया आ
 कृपाचार्य और कृतवर्मासमेत तुमने किया । ५४ । बहनीच सेनापति
 समेत मारागया उसेहु से अबपै आपकी इन्द्रके समान मानताहं । ५५ ।
 की पांशो तुम्हारा भलाहोय अवस्वर्ग में हमारा तुम्हारा फिर मिलापहोगा
 साहसी कौरवराज इसमकार कहकर मौनहुआ । ५६ । और मित्रोंकेदुःखको
 करते उसवीर ने अपने प्राणोंका त्यागकर पवित्र स्वर्गको गया और
 रहा । ५७ । हेराभा इसमकार आपकेपुत्र दुर्योधनने मरणको पाया बहसूर
 प्रथमजाकर फिर शत्रुओं के हाथसे मारागया । ५८ । उसीमकार उनसेमिलेहुए वह
 सोंग फिर मिलकर राजाको वारम्बार देखते अपनेअपने रथोंपर सवारहुये । ५९ ।
 इसमकार अवस्थामाके करुणारूप घचनोंको सुनकर शोकसेपीडित बहतीनों प्रात
 कालके समय नगरकी ओर शीघ्रनासे चले । ६० । हेराभा आपके कुमन्त्रह
 इसमकार कौरव और पांडवोंका यहघोर और भयकारी मारनेवाला नाश वर्षमान
 हुआ । ६१ । हेनिष्पाप शोकसेपीडित आपके पुत्रकेस्वर्गजानेपर अबव्यासऋषिका
 दिपाहुआ वह दिव्यदर्शन और दिव्यनेत्र विनाशमान हुये । ६२ । वैशम्पायनकोले
 कि सबवह राजापुत्रराष्ट्र पुत्रके मरुको सुनकरलज्जवी और उच्छ्वासाओंकोलेकर
 महाधितायुक्तहुआ ६३ ॥

been slain and therefore I am as happy as Indra. May you be
 we shall meet again in heaven." Having said this the brave Kaurav
 prince resumed silence. 56. Causing grief to his friends, he left the
 world for heaven and left his body lying there. Thus your son died
 O'king The three warriors left him there and rode their cars, Hav-
 ing heard the pitiable talk of Ashwathama, they rode towards the
 city at day break. 60. All this great destruction was brought about
 by your own evil policy, king. At the death of your son, the divine
 eyes, given me by Vyan, and their power disappeared." Vaisham-
 payan said that on hearing of his son's death, king Dhritrashtra
 heaved long and hot sighs and was plunged in the ocean of grief. 63.

॥ अथ ऐपिकपर्वारम्भः ॥

वैशम्पायन उवाच । तस्यां रात्र्यां स्वतीतायां घृष्टद्युम्नस्य साराधिः । शशंस धर्म
 प्रभाष सौप्तिके कन्दन कृतम् ॥ १ ॥ सूत उवाच । द्रौपदेया इता राजन् दुपदस्यात्मजेः
 हृद । प्रसन्ना निशि विश्वलाः स्वपन्तः शिबिरे स्वके ॥ २ ॥ कृतवर्मणा नृशंसन गौत
 मस्य कृपेव च । अश्वत्थाम्ना च पापेन हतं व शिबिरे निशि ॥ ३ ॥ पतेनैरगाज्जवानां
 भास्यच्छिपरश्चभैः । सहस्राणि निकृन्तद्भिर्निःशेषं ते बलं कृतम् ॥ ४ ॥ छिद्यमानस्य
 अहता वनस्यैव परश्चभैः । शुभ्रैश्च स महान् शम्भो बलस्य तव भारत ॥ ५ ॥ अहमेको
 बधिष्ठस्तु तस्मात् सैन्याग्नमहीपते । मुक्त कथञ्चिद्वर्मात्मन् । न्यग्रस्य कृतवर्मणः ॥ ६ ॥
 त्वत्कृपा वाक्यमशिवं कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः । पपात मद्यां दुर्धरं । पुत्रशोकसमन्वितः
 ॥ ७ ॥ तं वतन्तमभिक्रम्य परिजग्राह सारथिकः । भीमसेनोर्जुनश्चैव माद्रीपुत्रौ च
 प्राणहरो ॥ ८ ॥ लब्धचेतास्तु कौन्तेय शोकविह्वलया गिरा । जित्वा शत्रुं जितः

अध्याय ॥ १० ॥

वैशम्पायनबोले कि उस रात्रिके स्वतीत होनेपर घृष्टद्युम्नके साराथीने युद्धमें होनेवासे नाशको धर्मराजके सम्मुख बर्णनकिया । १ । साराथी बोला हे राजनाराथी के समय अपने डेरे में सोनेवाले विश्वास युक्त अचेन सोतेहुये द्रौपदी के पुत्र द्रुपद के पुत्रों समेत मारेगये । २ । निर्दयी कृतवर्मा गौतम कृपाचार्य और पापी अश्वत्थामाके हाथसे रात्रिके समय आपका डेरा नाशहुआ । ३ । पास शक्ति और फरमोंसे हजारों मनुष्य घोड़े और हाथियों को मारनेवाले इन तीनों से आपकी सेना मारीगई । ४ । हे भरतवशी फरसोंसे कटतेहुये घड़ेवनकी समान आपकी सेना के बड़ेशब्द सुनेगये । ५ । हे बड़ेझानी केवल मैंभी अकेला उस सेनामेंसे बचा हूँ हे धर्मात्मा मैं उस दुष्ट कृतवर्मा से किसीभकार करके बचगया । ६ । कुन्तीका पुत्र अज्ञेय युधिष्ठिर उस दुःखशोक के बचनको सुनकर पुत्रशोक से युक्त होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा । ७ । सात्यकी भीमसेन अर्जुन नकुल औरसहदेव ने उस गिरते हुये राजाको पकड़ लिया । ८ । फिर सबेत होकर शत्रुओंका विजय करनेवाला

CHAPTER X

Vaishampayan said, " At the close of that night, Dhrishtadyumna's car driver brought the news of the great destruction to Yudhishtir. He said, " Sleeping soundly in their tents last night, the sons of Drupad and Draupadi were all slain by cruel Kripacharya and Kritvarma, who destroyed your camp by night. The three warriors slew your men and beasts with their weapons. Your army was cut with battle axes like a large forest. I managed some how to escape from Kripacharya and am the only man alive out of that great force." Yudhishtir the son of Kunti became insensible with grief on hearing that sad news. Bhim, Arjun, Nakul and Sahadev saved the king from

पश्चात् पर्यवेद्यदासंधत् ॥ ९ ॥ दुर्चिदा गतिरर्ता नोमपि ये दिव्यसन्नुप । जीवमाना
जयन्त्यये जयमाना प्रयं जिता ॥ १० ॥ हृत्वा ध्रुतान् जयस्यांश्च पितृषु पुत्रान् सुहृत्
पान् । अन्धून्मातृषु पौत्रांश्च जित्वा सर्वांश्च जिता वयम् ॥ ११ ॥ अनयो ह्ययं सङ्घा
स्तथानयोऽर्थदर्शनम् । जयोऽयमजयकारो जयसास्मात् पराजयः ॥ १२ ॥ यत्किञ्चिद्वा तप्यते
पश्चादापन्न इव दुर्मति । कथं मन्येत न्निजयं ततो जिततरः परैः ॥ १३ ॥ येषामयोष
पाप स्याद्विजयस्य सुहृद्भवैः । निजिनैरप्रमत्तैर्हि विजिता जितकाशिनः ॥ १४ ॥ कर्ण
नालीकदण्डस्य खड्गाजहवस्य संयुगे । आपदासात्परौद्रस्य ज्यातलस्त्रीनत दिनः
॥ १५ ॥ क्रुद्धस्य नगसिंहस्य संप्रामेभ्यपत्न्यधिनः । ये व्यमुञ्चन् कर्णस्य प्रमादात् इमे
इताः ॥ १६ ॥ रथहृद् शरवयोर्मिममस्तं रत्नाञ्जितं वाङ्मयाजियुक्तम् । शकृष्टिमीनध्वज
नागतकं शरासनावर्तमद्रेषुफेनम् ॥ १७ ॥ संप्रामन्नन्दोदपत्रेगणले द्रंणाणवै ज्योतलने
युधिष्ठिर शोकसे व्याकुल दुःखसे पीडावान् के समान विहाप कर्णलमा । १ । अर्थों
की गति दुःखसे जानने के योग्य है जो दिव्यसन्नुप रखनेवाले हैं उनको भी अन्यलोग
पराजित होकर विजय करते हैं विजय करनेवाले हमलोग विजय किये गये । १० ।
मार्ह समान अवस्थामें पिता पुत्र पित्रर्ग वान्धव मन्त्री और पौत्रों समेत सबको
मारकर भी हम दूसरों से विजय कियेगये । ११ । निश्चयकरके अनर्थ अर्थरूप
है उत्सप्रकार अनर्थ अर्थको दिखलाने वाल है यहविजय पराजयरूप है इसहेट से
विजयही पराजय है । १२ । जो दुर्बुद्धो विजयकरके पीछ आपत्तिमें बंधे हुये के समान
दुःखी होता है वह किम प्रकार विजय को माने उम हेतु से शत्रु के
हाथसे अत्पन्त पराजित है । १३ । मित्रोंके नाशसे विजयका पाप जिनके निमित्त
होय पराजितहोये चतुर मारधान मनुष्योंकरके विजयमें शोभागमान आशमी विजय
कियेगये । १४ । युद्धमें कर्णनालीक नाम प्राण के समान टाढ़ रखनेवाले खड्गका
समान जिज्ञा धनुषके समान चौड़ागुग्द्ररूप मत् ज्वा और तल के समान शब्द
वाले । १५ । गोधनुक्त युद्धों में मुख न फेरनेवाले नरोत्तम कर्णके हाथसे जो बचे
वहमव शायीर अचेततासे मारिगये । १६ । रथरूप हृद् वाण शृष्टिरूप तरङ्ग वाले
दृष्टोंसे पूर्ण छोड़े और सवारियों से युक्त शक्ति वा दुधारे खड्गरूप पछली ध्वजा
रूप सर्प और नक्त धनुषरूप भंगर वड़े वाणरूपी फण रखनेवाले । १७ । युद्धरूप

falling down He began to lament the great loss on coming to himself
, "The ways of the world are difficult to understand : the conquerors
are conquered by the conquered. 10 He who slays our kinsmen, friends
and advisers, we are at last conquered by the enemy. Surely our
success is false and victory is turned into defeat. The foolish con-
queror who mourns like a miserable man, is really not a conqueror but
one conquered by the enemy. The wise conquered the conquerors
who had sinned in slaying their friends. The warriors having hard
arrows for tongues, swords for tongues, bows for wide mouths, sounds of

निदोषम् । ये तेऽर्कश्चाधत्तदास्त्रनाम्निले राजपुत्रा निहता प्रमादात् ॥ ८ ॥ नहि प्रमा
 दात् परमोक्ति कश्चिद्दुष्टो नराणामिह जीवन्तके । प्रमत्तमर्या हि न समन्तात् त्यज
 म्यनर्थाश्च समादिशन्ति ॥ ११ ॥ ध्वज समामोच्छ्रितध्वजकेतु शरार्थिषु कोपमहास
 श्रीरम् । महाधनुर्ज्यातलनेमिघाय तनुन्नगानाधिवशरहोमम् । २० ॥ महाचमूककृदृष
 म्पन्न महाहवे भीष्मभयाग्निदाहम् । ये मेदुरायुक्ताऽतीक्ष्णवेग तेराजपुत्रा निहता प्रमा
 दात् ॥ २१ ॥ नहि प्रमत्तेन नरेण शफव विद्या तप भीर्षिपुल यशो वा । पश्यामस्योदेन
 निहृव शत्रुन् सर्वार्थमहेन्दु सजमेघमानम् ॥ २२ ॥ इन्द्रोपगान् पार्थिवपुत्रपौत्रान् पश्या
 रिशेषेण इतान् प्रमादात् । तीर्त्वा समुद्रं घण्टिज समुद्राः स्रष्टा कुनद्यामिष हेलभानाः
 ॥ २३ ॥ अर्धैर्हैर्हे निहता शराना नि लशय तपि दिध प्रपन्ना । लुप्यान्तु सोचां प्र
 कर्षं नु साञ्ची शंकाण्व साद्य विशक्षयतीनि ॥ २४ ॥ भानृक्ष पुनाश्च ह्नाक्षिशम्भ

चन्द्रोदय तीव्रता रूप किनारेवाले ज्यातल और नेमियोंके शब्दवाले द्रोणाचार्यरूपी
 समुद्रको भिनराजकुमारों ने नानाप्रकारके शस्त्ररूपी नौकाओंके द्वारातरा वह प्रमाद
 से मारगये । १८ । इस जीवलोक में मनुष्यों के भस्त्रका कारण प्रमत्ततासे अधिक
 कोईनहीं है प्रमत्त मनुष्य को धनादिक चारोंओर से त्याग करत है और निर्भन्ता
 रूप अनर्थ प्रवेश होते है । १९ । उत्तमध्वजाकी जोकमूरत उँचाई रखनेवाली घाण्यरूप
 न्वाळावाली क्रोधरूप वायुकी तीव्रता रखनेवाली बड़े धनुषकी ज्यातल और नेमी
 के शब्द से युक्त कवच और नानाप्रकार के शस्त्ररूप हवन रखनेवाली बड़ी मेना
 रूप दावानल से संयुक्त लड़े हुए शस्त्ररूप कठिन तीव्रतावाली
 भीष्मरूप अग्निही भस्मतको जिन राजकुमारोंने इंदु युद्धमें सहा वह सब अचेत
 तासे मारगये । २१ । प्रमत्त मनुष्यको विद्या तप धन और उत्तमकीर्ति नहीं प्राप्त
 होसक्ती है साधुधानी से सब शत्रुओं को मारकर सुखमे हाँडे पानेवाले महाइन्द्रको
 देखो । २२ । इन्द्रके समान राजाओंके पुत्र पौत्रादिकों को अत्यन्त अचेततासे ऐसे
 मराहुआ देखो जैसे कि धनकी वृद्धिवाला व्यापरी समुद्र को तरकर छोट्टी नदीमें
 डूबजाय । २३ क्रोधयुक्त पुरुषों ने जो सोते वीरोंको मारा वह निसन्देहे स्वर्गको गये

bowstrings and clap of his bow, when virtue is but a brittle
 and who wept with rain. Kaias and Javelins centre by want of
 wavel fuld's Having cars for lakes sl owners of arrows, fir waves, horses for
 trees, javelin and arrow also fish, banners for serpent, and er codies bows
 for oddies, arrows for horse, battle field for moonshun, dexterity for
 ban and loud sounding with claps and bowstrings, the warriors who
 crossed the ocean of Drona with the boats of their weapons have been
 slain by want of wakefulness. Insensibility kills most of the people
 in this world. Wealth leaves an insensible man and penury overtakes
 him. Having tall standards, arrows like flames, dexterous like a storm
 of wind, noisy with the sounds of bowstrings, armed with

पत्रवानराज गिताइव वृद्धम् । पुयं विमहा पतिता पुगिर्वा सा शेषवते शोककृतांश
 यद्भिः ॥ २५ ॥ तच्छोकजं दुःखमपारयन्ती कथं मविध्यायुषिता स्वजानाम् । पुत्रस्य
 भ्रातृमधमपुत्राप्रदह्यमानेषु दुताशनेन ॥ २६ ॥ इत्येवमार्त्तं परिदेववत् स राजा कुकुरा
 नकुल वभाषे । गच्छानयिताग्निं मन्दमार्थ्यो समात्पक्षामिनि राजपुत्रीम् ॥ २७ ॥ माद्री
 सुतस्तत्र परिभूयै पापव धर्मेण धर्म-प्रतिमस्य, रावः । ययौ रवेवासवमाशु देव्याः
 पाञ्जलराजस्य च यत्र वार्यः ॥ २८ ॥ प्रस्थाप्य माद्रीसुतमाजभीहः शोकार्दितरैः
 सहितः सुहृद्भिः । रोक्यमाणः प्रथमो सुतानामापोवन भूतगणानुकीर्णम् ॥ २९ ॥ स तत्र
 प्रविश्यादित्यसुप्तमन्वददशं पुत्रान् सुहृदः सक्तीभ्यः । स्मृतं स्वानामिचिरार्द्रमाशाद्

में द्रौपदी को शोचताई धर वह पतिव्रता निर्भयहोकर किसप्रकार से शोचकपी
 समुद्रमें डूबगई । २४ । माई चेटे और हृद पिता राजा पांचाल को हथक मुनकर
 निश्चय करके ब्यामोहित होकर पृथ्वीपर गिरेगी शोकसे कृपात्र नहीकरिए प्र
 द्रौपदी शुक होरही । २५ । मुखेके योग्य वह द्रौपदी पुत्र और साहसोके प्रनेसे
 व्याकुल अग्निसे जलतीहुईके समान उस शोकजन्म दुःखसमुद्र से पारन होकर कैसी
 दशावाली होगी । २६ । इसप्रकार बिलाप करता वह औरवराज युधिष्ठिर ककु
 से बोना जाओ उम मन्दभागिनी राजपुत्री को उसके सात्पक्षियों समेध वहा
 लामो । २७ । नकुल धर्मरूप राजाके बचनको धर्मसे अहीकार करके स्वकी
 सवारी से देवी द्रौपदी के उस स्थान कोगया जहांपर राजा पांचाल कीभी शियां
 थीं । २८ । नकुलका भेजकर शोकसे पीडावान् रोदनकरते युधिष्ठिर उन सुहृदोंसमेत
 पुत्रोंकी युद्ध भूमिको गया जाकि भूतगणोंसे युक्त्या । २९ । उसने उस कस्याज

a m and a m ur and killing enemies as fire does a forest, the warri-
 ors who escaped death from Bhishm have been destroyed by sleep. 21
 A person as man cannot acquire knowledge, asceticism, wealth and fame.
 Look at Yudra who destroyed all his foes by his carefulness. Ladies
 like princes and warriors have been destroyed by want of vigilance like
 an avaricious merchant who crosses the ocean but sinks down in a small
 river. The sleeping warriors slain by angry men have surely gone to
 haven; but I am anxious for Draupadi who has fallen into the ocean
 of grief. She will lose her senses on hearing of the death of her bro-
 thers and sons. Her body already lean with grief will become dry, 25.
 Unworthy of bearing sorrows, she will burn with the fire of grief on
 hearing of the death of her brothers and sons " Thus lamenting, Yu-
 dhishthir ordered Nakul to fetch hapless Draupadi and the women
 of her mother's household. Nakul rode a car and went to the place
 where Draupadi and the women of Panchal were. Having sent Nakul
 that way, Yudhishtir with tears in his eyes, went to visit the place

विभिन्नदेहात् प्रकृतोत्तमांगत् । ३० ॥ स तास्तु दृष्ट्वा, भृशमारुहो युधिष्ठिरो, धर्म
मूर्ता वरिष्ठः । उच्यते, प्रभुकाश च कौरवाप्रपः पपात चोर्षी सगणो विसह ॥ ३१ ॥

इति सौप्तिकवर्णनि बोधैरुपवर्णने युधिष्ठिरानुगापेक्षयो ध्याय १० ॥

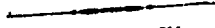


वैशम्पायन उवाच । स दृष्ट्वा निहतान् संख्ये पुत्रान् पौत्रान् सखींस्तथा । महानुः
खं पितृतात्मा वभूव जनमेजय ॥ १ ॥ ततस्तस्य महान् शोक प्रादुरासन्निहात्मनः ।
स्मरत्, पुत्रपौत्राणां घ्रातृणां स्वजनस्य च । २ ॥ तमश्रुत्वा रूपांश्च वरदानमचननम् ।
सुहृदीं भृशसन्निभानाः सान्त्वयाम्बुकिरे तदा । ३ ॥ ततस्तस्मिन् क्षणे कदयो रघेनादि
त्वत्सर्वथा । नहुतः कृष्णवासाद्युपायात् वरमार्षया । ४ ॥ उपप्लव्यं गता सा तु
वनं गौर दृष्ट्वा बुद्धभूमि में प्रवेशकरके पुत्र सुहृद् और मित्रोंको पृथ्वीपर सोते
वधिरसे किंतु अंग दूटे शरीर और दूटे शिर देखा । ३ । वह धर्मधारियों में और
कौरवोंमें श्रेष्ठ युधिष्ठिर वनको देखकर अत्यन्त पीडावान् मृत उच्चस्वरमें पुकार
और सावियों समें अचन होकर पृथ्वीपर गरपड़ा । ३९ ॥



अध्याय ११ ॥

वैशम्पायन बोधि हे राजा जनमेजय वह युधिष्ठिर बुद्धमें मरेहुये उन पुत्रपौत्र
और मित्रों को देखकर बड़े दुःखमें पूर्णचित्त हुआ । इसके पीछे बेटे पोतेभई
और अपने अनुषोंका स्मरण करतेहुये उममहात्मा को बड़ाशोक उत्पन्न हुआ । २ ।
तब अत्यन्त र्थाकुल सुहृदोंने उस अश्रुओंसे पूर्ण कम्पायमान और अचेत राजा
को विश्वास कराया । ३ । इसके पीछे समर्थ नकुल बड़ी पीडावान् द्रौपदी समेत
सूर्यके संवाँन शकौकमान रवकी सवारीसे एकत्रणमें सम्मूल आया । ४ । तब
where his sons and kinsmen lay dead. He found them sleeping on
earth with bodies and heads wounded and bleeding Yudhishtir,
the best of Kauravas and righteous men, gave a loud cry and fell
down senseless with his companions. " 31.



CHAPTER XI

Vaishampayan said to Janmejaya, "Seeing the sons, grandsons
and friends slain in battle, Yudhishtir felt much grief. He remem-
bered the departed sons, grandsons, cousins and other people and his
mind was full of sorrow. His sorrowful friends consoled him. Nakul

श्रुत्वा सुमहदप्रियम् । नदा विनाशे पुत्राणां मर्त्येषां दग्धिमाश्रयत् ॥ ५ ॥ कल्पमात्रं
 कन्दली घतिनाभिमगीरिता । शृङ्गाराजानमायाय शोकार्त्तां न्यपश्रुवि । ६ ॥ बभूव
 पद्मं तस्यः महता शोककथितम् । फुल्लरत्नप्रकाशाद्व्यामनगोप्रस्त इवांशुमान् ॥ ७ ॥
 ततस्तां पणितान् दृष्ट्वा संगृही सत्यविक्रमः । द्युभुव्यां परिजग्राह सगुतपथं वृको
 दरः ॥ ८ ॥ सा समाश्यासिता तेन भीमसेनेन भाविनी । रदती पाण्डुयं कृष्णा महभ्रा
 त्तममभीत् ॥ ९ ॥ दिष्ट्वा राजरुणपथेगामच्छिलां गोंद्वयमे महाम् । आत्मजान् ह्यत्र
 घर्मेण श्रुत्वा शूरान्निपातितान् ॥ १० ॥ दिष्ट्वा त्व पार्थं कुशली मत्समातङ्गगामिनेम् ।
 अयात् पृथिवीं कृत्स्नां रौमद्रं न स्मरिष्यसि ॥ ११ ॥ आत्मजान् क्षत्रधर्मेण श्रुत्वा
 शूरान्निपातितान् । उग्लुञ्चे यथा स र्द्धं दिष्ट्वा त्वं न स्मरिष्यसि । १२ ॥ प्रसूतानो
 वध श्रुत्वा द्रौणिना पा कर्मणा । शोकस्वपनि मा पाणे ह्यनशा इत्यश्रयम् । १३ ॥

उपप्लुवी स्थानपर वत्तमान यद् द्रौपदी तत्र पुत्रां के अभियनाशको मुनकर बड़ी
 पीड़ावानहुई । ५ । इवामे चलापमान केले के समान कपापमान यद् द्रौपदी राजा
 को पाकर शोकमे भोको पीड़ा हाकर पृथीपर गिरपड़ी । ६ । उस प्रफुल्लित
 पद्म पत्राश के समान नेत्रराली द्रौपदीका मुख अरुस्पात् शोक से ऐसे पीड़ावान
 हुआ जैसे कि अंधरे से दृक्ता हुआ सूर्य होता है । ७ । इसके पीछे क्रोधयुक्त सत्य
 पराक्रमी भीमसेनेने दौड़कर उस गिरी हुई द्रौपदीको पकड़लिया । ८ । भीमसेन
 से विश्वशित उम रानी तेजस्वती द्रौपदीने भाइयो समेत युधिष्ठि से यह वचन कहा
 । ९ । हे राजा तुम निश्चयकरके क्षत्रीधर्म से अपने पुत्रांको यपराजके लिये देकर
 मारवसे इस सम्पूर्ण पृथीको भोगोगे । १० । हे राजा तुम मारवसे कुशलहो
 और सब पृथीको पाकर मतवाले हाथीके समान चलनेवाले अभिमन्यु को स्मरण
 नहीं करोगे । ११ । तुम क्षत्रीधर्मसे गिरायेहुये शूरपुत्रांको मुनकर मारवसे मुझ
 समेत तुम उनकी उपप्लुवी स्थानपर स्मरण नहीं करोगे । १२ । हे राजा पापकर्मों
 अश्वत्थामाके हाथने सोनेवालों के मारने से शोक मुझको ऐसे तथाता है जैसे कि
 स्थानको अग्नि संतप्त करण है । १३ । अब जो पृथ्वीमें तेरे हृयने उस पापकर्मों

brought so rowful Draupadi in the cur. She was in great distress on
 hearing of the death of her sons 5. Striking like a plantain tree
 moved by the wind, she fell down on earth and was insensible with
 grief. Her lotus like face became suddenly changed like the sun
 covered with darkness Enraged Bhimsen at once ran and took up
 fallen Draupadi. Consoled by him, she said to Yudhishtir and his
 brothers, " Having caused your sons to be slain in battle, you are
 sure to rule the kingdom," 10 It s by good luck that you are safe
 Will you not remember Abhimanyu, who used to walk like an ele-
 phant, when you will rule over the world? Will you not remember
 the fall of your brave sons at Upaplavi? Ashwathama's destruction
 of the sleepers burns me like fire I shall sit on this very place and

तस्य पापकृतो द्रौणिर्न वेदय्य त्वयामृधे । द्वियते साद्रुषश्चस्य युधि विक्रम्य जीहितम् ॥ १४ ॥ इदेष प्राणमाशिव्ये तान्नोद्यत पाण्डवाः । न चेत् फलमयामोति द्रौणि
 प्रापस्य कर्मणः ॥ १५ ॥ एषमुपस्था तत्र कृष्णा पाण्डवं प्रयुपाविशत् । युधिष्ठिरं
 पाण्डसेनो धर्मराजं तणस्थिनी । १६ ॥ एष्टबोपविष्टा राजर्षिः पाण्डवो महिषीप्रियाम
 प्रयुवाच स धर्मात्मा द्रौपदींश्चापदर्शनात् ॥ १७ ॥ धर्म्ये धर्मेण धां हे प्रसाले
 निघनं शुभे । पुत्रास्ते भ्रातरश्चैव तान्न शोचितु मर्हसि ॥ १८ ॥ स कल्याणि वनं दुर्गं
 दूरं द्रौणिभितो गतः । तस्य त्व पातनं स्त्रये कथं शास्यसि सोमने ॥ १९ ॥ द्रौपद्युवाच
 द्रौण्युत्रस्य सहजो मणिः शिरसि मे श्रुतः । निदस्य संघे तं पापं पश्येय मणिमाहृतम् ।
 राजन् शिरसि ते कृत्वा क्षीयेवमिति मे मति ॥ २० ॥ इत्युपस्था पाण्डव कृष्णा राजानं
 वारुदर्जना । भीमसेनमयाश्रयेत् परमं वाक्यमप्रधीत् ॥ २१ ॥ प्रातुर्गंसि मा भीम

अश्वत्थामा का उसके साथियों समेत जीवन हरण नहीं किया जाता है तो इसी
 स्थानपर शरीर त्यागने के निमित्त आसन बिठाकर बैठेगी हेपाण्डव जो अश्वत्थामा
 इस बुद्धकर्म के फटको नहीं पाता है तो निश्चय इसी मेरिवास को जानों । १५ ।
 इसके पीछे वह मुपदकी पुत्री यशवन्ती कृष्णा धर्मराज युधिष्ठिर से ऐसा कहकर
 आसन पर बैठ गई । १६ । उस धर्मात्मा राजर्षि पाण्डवने उस सुन्दर दर्शन प्यात्री
 पटरानी द्रौपदी को शरीर त्यागने के निमित्त आसन पर बैठा हुआ देखकर यह
 उत्तर दिया । १७ । कि धर्मोंकी जाननेवाली शुभ द्रौपदी वह तेरे पुत्र और भाई
 धर्मरूप मरणको प्राप्तहये उनका शोचकरना तुमको योग्य नहीं है । १८ । हे
 कल्याणी वह अश्वत्थामा यहासे दुर्गम्व दूर बतकी गया हे शोभायमान तुम युद्ध
 में उस के मरने को कैसे जानोगी । १९ । द्रौपदी बोली कि मैंने शरीर के साथ
 उत्पन्न होनेवाला माण्ड अश्वत्थामा के शिर पर सुनाई युद्धमें उम पार्श्वकी मारकर
 छायेहुये उस मणिको दे बूगी । २० । हे राजा उमको आपके शिर पर धारण
 कर के जीकंगी यह मेरा मत है वह सुन्दर दर्शन द्रौपदी राजा से इसमकार कह
 कर । २१ । फिर भीमसेन के पास आकर उत्तम वचनको बोली हे समर्थ तुमत्तत्री

d., if sinful Ashwatthama and his accomplices are not slain I shall prove
 my words true, if Ashwathama is not punished. 15. Having
 said this to Yudhishtir, Draupadi took her seat there. Seeing his
 beautiful and dearest queen ready to give up her life, he said, "Your
 sons and brothers have died a glorious death and you must not deplore
 their loss. Ashwathama has entered far away into an impenetrable
 forest how will you know that he is dead?" Draupadi said, "I hear
 there is a gem on Ashwathama's head, born with his body and I
 wish to see it as a proof of his death. I shall live to see it put
 on your head." Having said this to the king, she turned toward
 Bhishma and asked his help in her emergency. saying, "You must slay

सप्तधर्ममनुस्मरत् । जडितं पापकर्माणं शम्बरं मघवानिष २२ ॥ न हि ते विक्रमे
पुमानस्तीह कश्चन । श्रुते तत् सर्वलोकेषु परमव्यसने यथा ॥ २३ ॥ श्रीयोऽभूत्सर्वे
पापानां नगरे धारणाघने । द्विद्विम्पदर्शनेष्वैव तथा स्वममघो गतिः ॥

कीचकेन भूशार्दिताम् । मानपुत्रतवाङ्कच्छात्वौलोमी मघवानिष ॥ २५ ॥ यथेताम्बुज्याः
पार्थः महाकर्माणं वैपुत्र । तथा श्रीणिममित्रत्र विनिहत्य सुखीमघ ॥ २६ ॥ तत्र वा बहुविधं
दुःखं निशम्य परिदेयितम् । न चामर्षत कौन्तेयो भीमसेनो महाघवः ॥ २७ ॥ स काच
न विषित्राङ्गमारुरोह मद्धारयत् । आदाय रुचिरं चित्रं समागणतुणं धनुः ॥ २८ ॥
नकुलं सारथिं कृत्वा श्रीणपुत्रघषेधतः । विस्फार्थं क्षयारब्धापं

॥ २१ ॥ हे. हयाः पुरुषव्याघ्र चोदिता घातारहतः । वेगेन त्वरिता कम्पुर्हरवः
शीघ्रगीमनः ॥ ३० ॥ शिपिरात् स्वाद्गृहीत्वा स रथस्य पद्मक्युतः । श्रीणपुत्रस्यस्वाङ्ग
ययौ वेगेन वीर्यवान् ॥ ३१ ॥ येषिकपर्षणि श्रीणिषघार्थं भीमगमने एकादशोऽप्यावः

धर्मको स्मरण करतेहुये भेरी रत्नाकरने के योग्यहो । २२ । उस पापकर्मी को बैसे
मारो जैसे कि इन्द्रने शम्बर को माराथा यहां कोई दूसरा पुरुष आपके
समान नहीं है । २३ । सब लोकों में सुना गयाहै कि जिसप्रकार धारणाघत

मध्यमें महाभापात्ति में तुम पाण्डवोंके रक्षक हुये । २४ । उसीप्रकार दिदम्ब राक्षस
के देखने में तुम गतिहुये इसीप्रकार विराटनगर में कीचक के भक्षे पीडावात् सु
कोभी तुमने दुःखसे एमे छुटाया । २५ । जैसे कि पुलोमकीपुत्री इन्द्राणी को
से छुटायाथा हे पाण्डव जैसेकि पूर्वममघमें तुमने इनकर्मोंको कियाहै । २६ । उसी

प्रकार उस मारनेवाले अपने शत्रु अश्वत्थामाको मारकर सुखीहो उसके विद्याप
कियेहुये बहुत प्रकारके दुःखको सुनकर । २७ । बड़े बलवान पाण्डव भीमसेन ने
नहीं सहा और स्वर्णमयी बड़े उत्तम रथपर सवारहुआ । २८ । पाण्डव प्रत्येचासमेव
सुन्दर जडाऊ धनुषको लेकर नकुलको सारथीकरके अश्वत्थामाके मारने में प्रवृत्त

होनेवालेने । २९ । बाणसमेव धनुषको टकारकरशीघ्रही घोड़ोंको चलायमान किया
है । पुरुषोत्तम वह सधेहुये बाणके समान वेगवान् । ३० । शीघ्रगामी हरिजासके घोड़े
तीव्रतासे जल्द चलदिये वह अजेय महापराक्रमी भीमसेन अपने से रथके चिह्नको

लेकर तीव्रतासे अश्वत्थामाके रथकी ओर शीघ्रवक्ष ३१ ॥

the great sinner as India had done Shamvar. There is no man equal to you in prowess. I have heard how you protected all the Pandavas at Barnavat. You protected them from Hidimb. You relieved me from the fear of Kichak at Barnavat. 25. Slay Ashwathama as you slew others and make me happy like the queen of Indra." Bhishm could not bear to hear her lamentations and rode his gold car. He armed himself with jewelled bow and arrows and having made Nakul the driver of his car, he proceeded to slay Ashwathama. The swift horses of Hari breed drew his car as fast as wind and Bhimason followed the marks made by Ashwathama's car." 31.

वैशम्पायन उवाच । तस्मिन् प्रयाते दुर्धरे वदूनामृभक्तनः । भर्तृवत् पुण्डरीकाक्षः
 लीपुत्रं युधिष्ठिरम् ॥ १ ॥ एष पाण्डव ते भ्राता पुत्रशोकपरायणः । जिघांसुद्रौ नि
 कम्पे एक एवाभिधासति ॥ २ ॥ मांमः प्रियस्ते सर्वेभ्यो भ्रातृभ्या भरतर्षभ । सं
 ज्ञातमद्य त्वं कस्मान्नाङ्गुपपद्यसे ॥ ३ ॥ यत्तदाचष्ट पुत्राय द्रोणः परपुरञ्जयः । अत्र
 षष्ठिरे नाम दहेत वृधिधीमपि ॥ ४ ॥ तन्महार्ता महाभागः केतुः सर्वघनुष्मताम्
 वषाद्बदाचार्यैः प्रीयमाणो घनञ्जयम् ॥ ५ ॥ तं पुत्रोप्येक एवैनमन्वयादमवर्षणः ।
 नः प्रोवाच पुत्राय नातिदृष्टयना इव ॥ ६ ॥ विदितं चापलं ह्यासीदात्मजस्य महार्तमन ।
 विष्वन्निददाचार्यैः सोषशात् स्वसुते ततः ॥ ७ ॥ परमापद्गतेनापि न स्म तात त्वया
 वे । इवमखं प्रयोक्तव्यं मानुषेषु विशेषतः ॥ ८ ॥ इत्युक्तवान् शुभः । पुत्रं द्रोणः पश्चा
 योक्तवाच । न त्वं जातु सतां मार्गं स्यातेति पुनरर्षभ ॥ ९ ॥ स तदात्माय युष्ट रमा

अध्याय १२ ॥

वैशम्पायन बोले कि उस अजेय भीमसेनके प्रस्थान करनेपर यादवों में श्रेष्ठ
 भीष्मप्यात्री कुन्तीपुत्र युधिष्ठिर से बोले । १। हे पाण्डव पुत्रके शोकसे पूर्ण यह तेरा
 माई तुझमें अस्वस्थापा के मारनेका अभिनापी अकेलाही दौड़ताहै । २ । हे भरतर्षभ
 वह भीमसेन सबभाइयों से अधिक तुमफोःप्याराहै अवतुम उस आपात्ति में फँसहुये
 की क्यों नहीं रक्षाकरतेहो । ३। जय सत्रुओं के पुरके विजय करनेवाले द्रोणाचार्य
 ने ब्रह्मशर अस्त्रका पुत्रको उपदेश किया जो पृथ्वीको भी भस्मकरसक्ता
 है । ४ । सब घनुपधारियोंके ध्वजा रूप महात्मा महाभाग प्रसन्नचित्त आचा
 र्यभी ने वह अस्त्र अर्जुनको बतलाया क्रोधयुक्त अकेले पुत्रने भी इसअस्त्र
 को चाहा जो कि उससे अत्यन्त प्रसन्नचित्त नहीं ये इसहेतु से जहाँ ने उस
 दुर्बली पुत्रकी चपलता जानकर निखलतातो दिया परन्तु सर्व धर्मज्ञ आचार्य जी
 ने इस पुत्र को शिक्षापूर्वक आज्ञादी । ७ । कि हे पुत्र युद्ध में वही आपात्ति में
 परभी तुझको भी यह अस्त्र छोड़ने के योग्यनहीं है अार विशेषकर मनुष्यों
 ऊपर तो कभी नछोड़ना । ८ । यह कहकर फिर पुत्रने यह वचन कहा कि तुम
 भी सत्पुरुषों के मार्ग में नियत नहीं होंगे । ९ । हे पुरुषोत्तम युधिष्ठिर तव दृष्ट

CHAPTER XII

Vaishampayan said " At the departure of invincible Bhim, Shree
 Krishna the best of Yudavas said to Yudhishthir, " Full of grief for
 his son's death, your brother is going alone to slay Ashwathama.
 Why do you not protect Bhim who is dearer to you than all other
 brothers? Ashwathama has learnt from his father Dronacharya the
 use of Brahmshar weapon which is capable of destroying all the
 world. When the acharya taught that weapon to Arjun, Ashwa
 thama the only son of the acharya, was much engaged, and wished
 to learn it. He was not pleased with this conduct of his son. He

पितुर्वचनमभियोगम् । निराशः सर्वकल्याणैः शोकात् पर्यचरन्महीम् ॥ १० ॥ ततस्तदा
 कुन्धेष्ट धनस्ये रथि मारुत । अथसद्धारकामेत्य वृष्णिणि परमादिष्ठत ॥ ११ ॥ स
 कर्वाचित्तं समुद्रोन्ते यस्तद् द्वारवतीमनु । एक एकं समागम्य मामुवाच हस्तप्रियः ॥ १२ ॥
 पंचदुष्टं तेषः कृष्ण चरन् सत्यपराक्रमम् । अगस्त्याद्धारताचार्य्यं प्रियपद्यते मे पिता ॥
 ॥ १३ ॥ अर्धं ब्रह्मशिरो नाम देवगन्धर्वपूजितम् । तद्यथा मयि वाशाई यथा पितरि मे
 तथा ॥ १४ ॥ अस्मत्सन्नुपादाय दिव्यमस्त्रं यद्वत्तम् । स चाप्यस्त्रं प्रयच्छ त्वं चक्रं रिपु
 हर्षारणे ॥ १५ ॥ स राजन् प्रियमाणेन मयाप्युक्तः कृताञ्जलि । याचमानं प्रयत्नेन
 गत्तोऽर्धं भरतपते ॥ १६ ॥ देवदानं वगन्धर्वं मनुष्यपतमोरगात् । न सता मम धार्दयंश्च
 दातांशिनपि पिण्डिता ॥ १७ ॥ इदं धनुरियं शक्तिरिदं चक्रमियं गदा । यद्यच्छिच्छसि
 च्छेदं मरुस्तत्तद्दानि ते ॥ १८ ॥ यच्छक्रमोपि सनुष्यन्तुं प्रयोक्ष्यमपि धारणे तद्व्य
 अन्तः करणवाला पिताके अभिय वचन को जानकर सब कल्याणों से निराश
 होकर शोकमे पृथ्वीपर घूमा । १० । द्वारका में आकर बादशे से परमपूजित
 होकर वंसा वह एकममय द्वारकाके सम्मुख समुद्रके पार निवास करताहुआ अकेला
 ही हँसकर मुझ से बोला । ११ । कि हे श्रीकृष्णजी बड़े तपको करते भरतवंशियों
 के आचार्य सत्यपराक्रमी मेरे पिताने जो उन ब्रह्मशरनाम अस्त्रको जो कि देवता
 और गन्धर्वों से पूजित हे अगस्त्यजीसे पाया हे श्रीकृष्णजी अब वह वैभेही मेरे
 भी पासहै जैसे कि पिताके पासहै । १४ । हे यादवों में श्रेष्ठ तुम उस दिव्य अस्त्र
 को मुझसे लेकर मुझको भी वह चक्रशस्त्रको जो कि युद्धमें शत्रुओं का मारनेवाला
 है । १५ । हे भरतपते राजा युधिष्ठिर वह हाथ जोड़कर बड़े उपाय पूर्वक मुझ से
 अस्त्र मांगनेवाला हुआतब मुझ प्रमत्तचित्त ने उससे कहा कि देवता दानव, गन्धर्व
 गन्धर्व, पत्नी, सर्प यह सब मिलकर भी मेरे पराक्रम के सालहवें भाग के समान
 नहीं हैं । १७ । यह धनुष है यह शक्ति है यह चक्र है यह गदा है इनमें से जिस
 अस्त्र को तुम मुझ से चाहते हो उसको मैं तुमको देताहूँ । १८ । जिसको तुमउठा

taught him the use of it, but warned him never to use it, specially against human beings, even at the time of great emergency. He also foretold at the same time that his son would never be firm on the path of the righteous. Ill-natured Ashwathama, finding that his father was not well-disposed towards him, roamed restlessly through out the world. 10. He staid at Dwarka and was respected by the Yadavas. One day he met me alone near the sea shore in the vicinity of Dwarka and said to me with a smile " My glorious father learnt from Agastya the use of Brahmshar which is respected by gods and gandharvas, and I have shared the knowledge of it with my father. I shall teach you all about it, if you will give me your foe-destroying discus " 15. With joined palms he asked me to

हाण विनाशेण मग्ने दातुमभीप्ससि ॥ १२ ॥ स सुनामं सहस्रारं वज्रनामयमस्मयम् ।
 चक्रं चक्रं महाभागो मत्तः स्पर्द्धंमया सह ॥ २० ॥ गृहाण चक्रमित्युक्ता मया तु तद्
 नभस्तरम् । अत्राहोत्परय सहसा चक्रं सन्ध्ये पाणिना ॥ २१ ॥ तच्चैतमशकत् स्थानात्
 सञ्चालयितुमप्यत । अथेनं दक्षिणेनापि गृहीतुमुपचक्रमे ॥ २२ ॥ सर्वयत्नेन तेनापि
 ब्रह्मणेभ्योऽपि ततः । ततः सर्वघलनापि यदैतन्म शशाक ह ॥ २३ ॥ उद्यन्तु वा चक्र
 यितुं द्रौणिः परमदुर्मणाः । कृत्वा यन् परिश्रान्तः संश्रय संतं भारत ॥ २४ ॥ निवृत्तम
 मसं तस्माद्भिषायाद्विचिंतसम् । ब्रह्मामप्य सभ्यग्मभ्रवाणानामयमम् । २५ ॥ यः
 सदेवैर्मनेभ्येषु प्रमाणं परमं गतः । गण्डोद्यधन्वा द्यवताह । ॥ अपिप्रवरकेतनः ॥ २६ ॥
 य साक्षाद्दिव्यदेशं शितिकण्ठमुमापतिम् । इन्द्रयुद्धे पराजिष्णुस्तोषयामास शङ्करम्
 ॥ २७ ॥ यस्मात् प्रियतरो नास्ति ममान्य पुरुषो भुवि । नादेयं यस्य मे किञ्चिदपि

सक्ते हो और युद्ध में चक्राभी सक्ते हो आप जिस अस्त्रको मुझे देना चाहते हो
 उसके बिना दियेही इनमें से जो चाहे सो लो । १२ तब युद्ध में ईर्ष्या करनेवाले
 उस महाभाग ने सुन्दर नाभि और हजार आरा रखने वाले वज्रनाम सोहमयी
 चक्र को युद्ध में मांगा । २० । तब मैंने भी उमी समय कह दिया कि चक्रको
 लो तब उस ने उठकर अकस्मात् वायें हाथ से चक्र को पकड़ लिया । २१ ।
 परन्तु उसके स्थानपर से हटाने को समर्थ नहीं हुआ फिर दक्षिण हाथ से
 भी उस को पकड़ना प्रारम्भ किया । २२ । इसके पीछे अनेक उपायोंसे भी उसको
 उठाने न सका । २३ । फिर बड़ा दुःखीचित्त अश्वत्यामा जब कि सब पराक्रम
 करने से भी उसके उठाने और हटानेको भी समर्थ नहीं हुआ और वह उपायोंको
 कारके यककर अलग होगया तब मैंने उस अभिजाप से चित्त उठानेवाले विमन
 और व्याकुल अश्वत्यामासे यह वचन कहा । २५ । कि जिस गाँदीव धनुष
 श्वेत घोड़े और हनुमान्जीकी धजा रखनेवाले अर्जुनने देवता और मनुष्यों के
 मध्यमें बड़े प्रमाणको पाया और जिसने पूर्वमयमें साक्षात् प्रधान देवताओं के

give him my weapon, I was pleased with him and said, "Gods,
 gandharvas, men, birds and serpents, all put together, are not equal
 to even the sixteenth part of my prowess. Here are my bow, Shakti
 discus and mace. Select whichever of those you like and I shall
 give it to you. Take whichever of these you can bear and wield,
 without giving me anything in return." Bearing malice against
 me, he asked of me my discus with a good nave and a thousand
 spokes, entirely made of iron, which I call my vajra. 20. Of course
 I at once gave him permission to take it away. He held it by the
 his left hand, but could not move it from its place. Then he used
 his right hand also but for all his efforts could not lift it up. He was
 much troubled in his mind when he could not lift and move it. Being
 fured, he stood aloof Seeing that he was hopeless, heartless and

वारा सुनास्तथाः ॥ २८ ॥ तेनापि सुहृद्वा ब्रह्मन् पार्थिनाद्विलम्बकर्मणा । भोक्तृपूर्वमिदं
 वाक्यं यत्नं मायमिभाषसे ॥ २९ ॥ ब्रह्मचर्यं महद्घोरं धीरर्थाद्वाद्वावार्थिकम् । हिम
 वात्पादार्थमप्येष यो मया तपसाजितः ॥ ३० ॥ समाप्तवत्प्रतिष्ठायां क्विपवर्षा
 योऽन्वयायत । सनत्कुमारस्तेजस्वी प्रद्युम्नो नाम मे सुतः ॥ ३१ ॥ तेनाप्येतमहद्विष्य
 चक्रमप्रतिमे मम । नप्रार्थितमभूत्सूढयादिदं प्रार्थितं त्वया ॥ ३२ ॥ रामेणातिचक्रेनतत्रो
 क्तपूर्वं कदाचन । न गदैन न शास्त्रेण यदिदं प्रार्थितं त्वया ॥ ३३ ॥ द्वारकावासमिच्छा
 म्येवृण्व्यचक्रमहाराथैः । भोक्तृपूर्वमिदं जातु यदिदं प्रार्थितं त्वया ॥ ३४ ॥ आरतात्वात्
 पुत्रस्यं मानितः स्वर्थादथैः । चक्रेण रथिनां श्रेष्ठकम्बुनात् युयुत्ससे ॥ ३५ ॥ एव
 मुक्तो मया द्रौणिर्मांमिदं प्रत्युवाच ह । प्रयुज्यमवने पूजां योत्स्वहृष्य त्वयत्युत ॥ ३६ ॥

ईश्वर शितिकण्ठ उपापति शंकरजी को दृन्दनाम युद्ध में प्रसन्न किया जिससे
 अधिक इसपृथ्वीपर मेरा दूसरा कोई भिय नहीं है । २८। और पुत्रादिकभी उसको
 देनेके अयोग्य नहीं हैं हे ब्राह्मण उस सुगमकर्मी मेरेभिन्न अर्जुन नेभी प्रथम मुझसे
 यह वचन नहीं कहा जो तुमने मुझसेकहा है । २९ । मैंने हिमालयकी कुक्षिमें नियत
 होकर बारहवर्ष बड़े घोर ब्रह्मचर्यको करके तपकेद्वारा जिसको प्राप्त किया । ३०।
 और जो सदैव वाकरनेवाली क्विपणी में उत्पन्न हुआ तेजस्वी सनत्कुमार प्रद्युम्न
 नाम मेरेपुत्र नेभी इस बड़े दिव्य और युद्धमें अनुपम चक्रकी इच्छा नहींकी हे
 अज्ञान जिसको तैने मांगा है । ३१ । उसको कभी हमार बड़े बलदेवजी ने भी नहीं
 मांगाथा जो तैने मांगा है वह गंद और साम्ब ने भी नहीं मांगा
 और अन्य बृष्णी अन्वकर्षी द्वारकावासी महारथियोंने भी पूर्व में इस
 को कभी नहीं मांगा । ३४ । तुम भरतवंशियों के आचार्य के बुझो और
 सब यादों से प्रसन्ननीपहो हे रथियों में श्रेष्ठ तात तुम चक्रसे किसके साथ युद्ध
 करोगे । ३५ । मेरे इस वचनको सुनकर अश्वत्थामा ने मुझको यह उत्तरदियाकि
 हे श्रीकृष्णजी मैं आपका पूजनकरके आपही के साथ लड़ूंगा । ३६ । मैंने देवता

distressed, I said to him. 25. The wielder of Gandiv bow and possessor of white horses and ape banner, Arjuna, who is of well tried prowess among gods and men, he who pleased Sankar the husband of Uta and god of gods himself in a duel, than whom I hold none dearer in the world and whom I would give away my wife and son, even that cow-working Arjuna never told us that thing that you have. He whom I got after a severe asceticism in a Himalayan cave, and who is born of ever vow observing Rukmini, even that glorious son of mine, Pradyumn never had any desire to possess this matchless discus which you were foolish enough to ask of me. 32 I was never requested to part with it by Baldev, Gada, Samv or any other warriors of Uwarika. You, the son of the acharya respected by

प्रांथिते ते मया अक्रं देवदानवपूजि । अजेय स्यामिति विमो सत्यमेतद्ब्रवीमि ते
 ॥ ३७ ॥ स्वस्तोर्हं दुर्लभं काममनवाप्यैव केशव । प्रतिवास्यामि गोविन्द शिषेनामि
 च्छ्वमाम् ॥ ३८ ॥ एतत् समीपं गीमान्मृपभेण त्वया घृतम् । अक्रमप्रतिचक्रेण
 भुविनाप्योभिपद्यते ३९ ॥ एताश्च दुक्त्वा द्रौणिर्मा युग्मानदधान् धनानि ॥ आदायोपयथा
 काके रत्नानि विविधानि च ॥ ४० ॥ स सरस्मी दुराता च अपठः क्रूर एव च ।
 वेद आस्य ब्रह्मशिरस्तस्माद्रक्ष्यो पृथोदरः ॥ ४१ ॥

इति सीतकपर्वणि ऐषिक विंशो ग कृष्ण उपनिषत्संवादे द्वाःशोऽध्यायः । १२ ।



और दानवोंसे पूजित प्राप्त करके चक्रकी याचना करी है और हेममथ मैं, भापसे सत्य २
 करताई कि मैं अनेयहं ॥ ३७ ॥ हे केशवजी आपने दुष्पाप मनोरथको न पाकर चला
 जाऊंगा हे गोविंदजी आपमुझको करपाण के साथ नमस्कार करा ॥ ३८ ॥ मुझउत्तम
 और अनुभवं चक्रवाके मे यह भयनक रूपोंका भी भयानक चक्रपारण किया है पृ
 थ्वीपर दूसराइसको नहीं पासक्ता है ॥ ३९ ॥ अश्वत्थामा इमस्कार मुझसे कहकर और
 तपस्वर मुझसे छोड़घन और अनेकप्रकार के रत्नोंको लेकर इस्तिनापुरको चला-
 गया ४० ॥ वह क्रोधयुक्त दुर्बुद्धी चालाक और निर्दयी है और ब्रह्मशरअस्त्रको जान
 वा है भीमसेन वसंत रत्नाके योग्य है ॥ ४१ ॥



all the Yadavas, whom would you use the weapon to fight with ? " 35.
 To this question of mine he made the following reply, " I would wor-
 ship and fight with you, Krishn. It was there fore that I asked of
 you the weapon. I say truly that I am invincible I came to you on
 a bootless mission Bless me Govind, and bid me good bye. You
 possess a dreadful and matchless weapon such as none else in the
 world has, " Having said this to me, Ashwathama accepted from me
 a present of horses and wealth in precious stones and went away to
 Hasthinapore. He is rash, ill-natured, reveng ful and cruel and
 knows the use of Brahmshar, and therefore Bhim is worthy of being
 protected from him. " 41. .

वैशम्पायन उवाच । एषमुक्त्वा युवांसेष्ट सर्वबाह्वनन्दन । सर्वायुधवरोपेण
 सरोह रथोत्तमम् ॥ १ ॥ युक्त परमकामधोमेस्तुरगेहोममालिमिः । आद्विषोद्वेषवर्णस्य
 धुर रथपरस्य तु ॥ २ ॥ दक्षिणान्ध्रैश्च सश्रीव सत्यतेऽभवत् । गार्धिवाहू
 तस्मस्ता मेघ, एवलाहकौ ३ ॥ विश्वकर्माणा द्विव्या रत्नवानुभिर्मुषिता । उद्वि
 तेष रथे माया ध्वजयष्टिः हृद्यत ४ ॥ वैदित्ये, स्थितस्तस्यां प्रशामगडलरहिमवात् ।
 तस्य सत्यवत केतुभुजगारिरहृद्यत ॥ ५ ॥ अन्वारोहद्वयोः केशः केतुः सर्वधनुःप्रताप
 भर्तुन सत्यकर्मा च कुन्ताजो युधिष्ठिरः ॥ ६ ॥ महात्मेर्वा महात्मानो दाशार्ह
 भीमतः स्थितौ । रथस्य शार्ङ्गवन्ता मगधिवनाविध यासवम् ॥ ७ ॥ ताद्युपारोप्य दाशार्ह
 वन्दन्लोकपूजितम् । प्रतोदेन अयापेतात् परमाद्यानञ्चोद्यत् ॥ ८ ॥ तेर्षवा सहसोत्पेतुर्गु
 ष्ठात्वा स्मन्तनोत्तमम् । आस्थितं पाण्डवेयाऽर्षा यद्गामुपभेण च ॥ ९ ॥ वदतां शार्ङ्ग

तेरहर्षा अध्याय ११ ॥

वैशम्पायन बोले कि युद्धकर्त्ताओंमें श्रेष्ठ और सबबाह्वोंके प्रसन्न करने वाले
 श्रीकृष्णजी इसप्रकार कहकर उन उत्तम रथपर सवारहुँके जोकि उत्तम मख शस्त्रों
 से युक्त स्वर्णमयी माल धारी कामधोमदशी घोड़ोंके जुड़ाहुआथा और जिसके
 उत्तमधुर उदयद्वये सूर्य के स्वरूपमें । १। शैब्यनाम घोड़ने दक्षिणचक्रको उठाया
 और सुश्रीव नाम घोड़ा पाईभोर हुआ और उन रथके पाईवहाइक मेघपुष्पवन्ताहक
 नामघोड़ेहुये ३ विश्वकर्मा के घनाईहुईरत्न और धातुसे अलंकृत दिव्यऔर उन्वन
 यष्टी रथकी ध्वजापर मायाके समान दिखईपडी। ४। प्रकाश मण्डलरूप किरण, रत्न
 नेचाले गरुडजी उस ध्वजामें निपतहुये उस सत्यवक्ताकी ध्वजागरुडरूप दिखईपडी
 ५ उसके पीछेसब धनुषधारियोंकी ध्वजा केशवजी सत्यकर्माभर्तुन और कौन्वराज
 युधिष्ठिररथपर सवारहुय । ६। सभीप वर्तमान दोनों महात्माओंने रथपर सवार शार्ङ्ग
 धनुषधारी श्रीकृष्णजीको ऐसे शोभायमान किया जैसे किदोनों अश्विनीकुमारोंने
 इन्द्रको शोभित कियाथा । ७। भीष्मपूजने उन दोनोंको उस पूजित रथपर बैठाकर
 शीघ्रतासे संयुक्त उत्तम घोड़ोंको चाबुक से त्राहित किया । ८। पाण्डव और यादवों

CHAPTER XII

Vaishampayan said, 'Shri Krishna the best of warriors and joy of the Yadava, having spoken as above, rode the good car furnished with arms and weapons, decked with gold chaplets and drawn by excellent horses of Camboj breed. It shone like the rising Sun. Shavya, Sugrev, Meghvisp and Valshik were the four horses that drove the car. The standard made by Vishwakarma himself, was composed of metals and precious stones, and the figures of garud adorned the banner. Such was the car in which sat Keshav, Yudhishtir and Arjun. The two heroes sitting by the wielder of Bharng bow, looked like the Ashwinikumaras with Indra in the middle. When the trio were seated in the car, Shri Krishna drove the horses fast as

बन्वानमदवानां शीघ्रगामिनाम् । प्रादुरासीन्महान् शब्दः पक्षिणा पततामिव । १० ॥
 ते समाच्छेद्यव्याघ्राः कृणेन भरतर्षभ । भीमसेनं महेष्वासं समनुदु य वेगिता ॥११॥
 क्रोचदीप्तन्तु कौन्तेयं द्विपदर्थे समुद्यतम् । ताशफनुधनु पारयितुं समेत्यापि महारथाः
 ॥ १२ ॥ स तेषां प्रेक्षतामेव भीमता हृद्यध्विनाम् । ययौ भागीरथीकच्छं हरिभिर्भृश
 वेगित । यत्र स्म शूयते द्रुणि पशुहन्तामहात्मनाम् ॥ १३ ॥ स ददर्श महात्मानमुद
 कान्ते यशस्विन्म् । हृद्यैपायने व्याममासीत्सृष्टिभिः सह ॥ १४ ॥ तच्चैव क्रूरक
 र्माणि वृणाक्तं पुत्राचीरिणम् । रजला ध्वलाभासीनं ददर्श द्रौणिमन्तिके ॥ १५ ॥ तमप्य
 धावत कौन्तेयः प्रगृह्य सशरं घनु । भीमसेनो महाबाहुलिष्ठ तिष्ठति पाद्यनीत ॥१६॥
 स हृष्ट्वा भीमघन्वामं प्रगृह्णतिशरालनम् । ज्ञानरौ पृष्टतश्चास्य जनाहर्नरथेस्थितौ
 ॥ १७ ॥ न्यघितात्माध्वद्रौणि प्राप्नञ्चेदमन्यत । त तद्विच्यमदीनात्मा परमात्मनि

धम श्रीकृष्णजी से सवारी युक्त उत्तम रथको वह घाँटेनेकर अकस्मात् उड़ो १।
 श्रीकृष्णजीको लेचलनेवाले शीघ्रगामीघोड़ोंके ऐसे बड़ेशब्दहुये जैसे उड़तेहुये
 पक्षियोंके शब्दहोतेहै ॥१०॥ हेभगवत्पुत्रउन देगवान् नरोत्तमानेबड़े धनुषधारीभीमसेन
 को और चलकर सणपरपेही उसकोभाषा ॥११॥ वह महारथी भिलकरभी उत्तकोधमे
 प्रकाशितधौर शशुसे युद्धकरने को सन्नद्ध भीमसेनके रोकरनेको समर्पणहुये ॥१२॥
 वह भीमसेन उन हृद्यधनुषधारी भीमान् भाइयों और श्रीकृष्णजी के देखनेहुये अत्य
 न्तशीघ्रगामी घोड़ोंके द्वाराधीरंगाजी के तटपर गये जहाँकि महात्माओंके पुत्रोंके
 मारनेवाले अश्वयामा घुनेगये ॥१३॥ उसभीमसेनने जलके समीप महात्मा यशवान्
 व्यासजी को ऋषियों समेत बैठाहुआ देखा । १४ । और उन निर्दोषकर्मा धृतसे
 मर्दित शरीर बड़े चीरधारी धूलसे लित शरीर अश्वत्यामाको भी समीप बैठाहुआ
 देखा । १५ । वह कुन्तीकापुत्र महाबाहु भीमसेन धनुषत्राणको लेकर उनके सम्मुख
 दीहा और तिष्ठ २ वचन कहा । १६ । वह अश्वत्यामा धनुषधारी भीमसेनको देख
 कर और पीछे श्रीकृष्णजी के रथपर नियत दोनों भाइयोंको देखकर चिच से

the wind The noise of the swift horses resembled that of a flight of
 of birds. 10 They soon overtook Bhim, but could not stop or keep
 him back from his purpose of fighting with the enemy. He continu-
 ed moving on within sight of his glorious brothers and Sri Krishn
 till he reached near the bank of the Ganges where Ashwathama the
 slayer of the sons of the Pandavs was reported to be. Bhimsean saw
 Vyasa and other rishis sorted near water, Ashwathama 'o', with his
 body rubbed over with glue and dust, sat near them 15. Valiant
 Bhim the son of Kunti, taking up his bow and arrow, ran to wards
 him, saying, "Stay, stay" Seeing Bhim armed with bow and arrow and
 followed by Sri Krishn and the two brothers, Ashwathama was much
 distressed and lost all hope for his life. The brave man's re!

तयत् १८ ॥ जग्राह च स चेवीकां द्रौणिः सध्वेन पाणिना । स
मखमुदैरयत् ॥ १९ ॥ ससृष्य माणस्ताञ्छरान् दिव्यायुधधरान् स्थिताद् ।
पति रूपाभ्यस्तज्जहाकणं वचः ॥ २० ॥ इत्युक्त्वा राजशार्ङ्गं द्रौणपुत्रः
सर्षलोकप्रमोक्षार्थं तद्वत् प्रमुमोक्ष ह ॥ २१ ॥ ततस्तस्यामिपीकार्या पाशकः
प्रधस्यन्निव लोकांस्त्रीन् कालान्तकयमोपमः ॥ २२ ॥

इति सौप्तिकपर्वण्यि षेधिकपर्वण्यि ब्रह्मशिरोस्त्रत्यागे त्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥



पीडितहृये और मृत्युको वर्तमानजाना उस महासाहसीने उस दिव्य महा
अस्त्रको स्पर्श किया । १८ । और बायेंहाथसे एक सीकको पकड़ा और
आपीत को प्राप्त होकर दिव्य अस्त्रको पड़ा । १९ । और दिव्य शस्त्रधारण
वाले इन धूर्तों को न सहकर उस अश्वत्थामा ने क्रोधसे भयफागी बचन को
फि यह अस्त्र मैं पाण्डवोंके नाश के निमित्त छोड़ताहूँ । २० । हे रामेन्द्र
अश्वत्थामा ने यह कहकर सब लोक के बड़े मोहके निमित्त उस अस्त्रको
। २१ । इसके पीछे उस सीकमें काल और यमराजके समान तीनल्लोको
भस्मकरनेवाली अग्नि उत्पन्नहुई । २२ ॥

the divine weapon. He took up a piece of broom and pronounced
over it the aphorism. Unable to bear the sight of those warriors, he
uttered dreadful words in his rage, saying, "I discharge this weapon
for the destruction of the Pandavas." Having said, this glorious Ashwa-
thama discharged the weapon to stepify the world. Then deadly
sparks began to come out of that broom." 22.



वैशम्पायन उवाच । इङ्गितैव दाशार्हस्तमभिप्रायमादितः । द्रोणेषुष्त्रा महाबाहुर
 । अश्वत्थामा ॥ १ ॥ अर्जुनार्जुन यद्विषयमस्त्रं ते हविषर्त्तते । द्रोणोपादिष्टं तस्यासं
 शक्यं संमतिं पाण्डव ॥ २ ॥ आनृणामामनश्चैव परिप्राणाय भारत । विसृजेतस्त्वमप्या
 शस्त्रं क्वचिन्निवारणम् ॥ ३ ॥ केशवेनैवमुक्तस्तु पाण्डवः परधीरहा । अवातरद्रथासूते
 । सशरं घ्नतः ॥ ४ ॥ पूर्वमाचार्य्यपुत्राय ततोऽनन्तरमात्मने । आतृभ्यश्चैव सर्वेभ्य
 स्तैस्त्युक्त्वा परमसतः ॥ ५ ॥ देवताभ्यो नमस्कृत्य शुक्रभ्यश्चैव सर्वशः । उत्ससज्ज
 वं ध्यायन्नस्त्रमस्त्रेण शास्यताम् ॥ ६ ॥ ततस्तदस्त्रं सहसा सृष्टं गाण्डीयवधना ।
 उज्ज्वलं महास्त्रं प्रद्युगास्तामलसन्निभम् ॥ ७ ॥ तथैव द्रोणपुत्रस्य तदस्त्रं तिम्रते
 नः । प्रज्ज्वलन् महाज्वालं तेजोमण्डलसंभृतम् ॥ ८ ॥ निर्घाता वयथश्चासन्नं पेतुस्तुका

अध्याय १४ ॥

वैशम्पायन बोले कि महाबाहु श्रीकृष्णजी ने प्रथमही से उस अश्वत्थामा के
 तत्कालके विचारको जानकर अर्जुन से कहा । १ । कि हे पाण्डव अर्जुन जो
 शस्त्रार्थ का उपदेश किया हुआ वह दिव्य अस्त्र यत्तमानैह उसका यह समय
 तिम्रते हुआ है । २ । हे भरतवंशी तुमही इस युद्धभूमि में अपनी और अपने
 शस्त्रोंकी रक्षाके लिये अस्त्रके रोकनेवाले उस अस्त्रको छोड़ो । ३ । इसके पीछे
 कुंभको वीरोंका मारनेवाला और केशवजीसे इसप्रकार कहाहुआ पाण्डव अर्जुन
 शूणवाय को लेकर शीघ्रही रथसे उतरा । ४ । वह शत्रुओं का तपानेवाला प्रथम
 शस्त्र के लिये फिर अपने और सब भाइयों के अर्थ भलाहोय यह कहकर । ५ ।
 स्वयं और सब गुरुओंके अर्थ नमस्कार करके शिवजीको ध्यान करते हुये अर्जुन
 ने उस अस्त्रको छोड़ा और कहा कि अस्त्र से अस्त्र क्षान्तहोय । ६ । इसके पीछे
 अस्त्रका गाँदीय धनुषधारी से छोड़ाहुआ और प्रलपकालकी अग्नि के समान
 प्रज्ज्वलाशित अस्त्र उज्ज्वलरूप हुआ । ७ । और उसीप्रकार बड़े तेजस्वी अश्वत्थामा
 जीकी वह अस्त्र उज्ज्वल रूपहुआ जो कि तेजमण्डल से युक्त बड़ी ज्वाला रसने
 गयाना था । ८ । परस्पर वायुके संघटनों के बड़े शब्दहुये हजारों उल्कापातहुये

CHAPTER XIV

Vaishampayan said, "Knowing already the evil intentions of Ashwathama, Sri Krishna said to Arjun, "This is the time to discharge the weapon given you by Dronacharya. Discharge it to check the weapon of your adversary in order to protect yourself and your brothers." Thus urged by Keshav, Arjun the destroyer of foes came down at once from the car with his bow and arrow. 4 Saying, "Shutty to the son of acharya and the Pandav brothers," he bowed down to his proceptor and meditating on Shiv, he discharged his weapon, saying, "To mitigate the effect of the weapon." Discharged by the wielder of Gandiv, the weapon shone like fire. Ashwa-

सद्वैद्यः । महद्गुणश्च भूतानां सर्वेषां समजायते ॥ ९ ॥ सशब्दमशब्दयोर्मन्त्राणां
 मालाकुलं शृणुम । अचालश्च मही कृत्स्ना सपथैतवनेदुमा । १० । ते त्वस्मैतेजसी
 लोकोक्तापयन्तो व्यधस्थिते । मर्त्यां रुदितौ तत्र दर्शयामासतु रुदा ॥ ११ ॥ नारदः
 सर्वभूतात्मा भारताणां पितामहः । उभौ शमयितुं वारौ भरद्वाजं नमस्कृत्यौ ॥ १२ ॥ तौ
 मुनिौ सर्वधर्मज्ञौ सर्वभूतहितैषिणौ । दीप्तनोरस्त्रयामध्ये स्थितौ परमतेजसौ ॥ १३ ॥
 तदन्तरं शशाङ्कधनुषावुपागम्य यशस्विनौ । आस्तासु दिवरीतत्र उदलित्वा विषयाश्चकौ
 ॥ १४ ॥ प्राणमूर्द्धिरनाधुष्यौ देवदानवसम्मतौ । संस्मृतेजश्शमयितुं लोकानां हितार्थी
 र्मया ॥ १५ ॥ श्रुत्वा ऊचतुः । नामादकृषिदं पूर्णं येऽप्यहीता महारथाः ।
 मनुष्येषु ते प्रमुक्तं कथञ्चन । किमिदं साहसं धारो कृतवन्तौ महारथ्यम् ॥ १६ ॥
 सौमित्रपर्वणि एपिऽपर्वणि अञ्जुनास्त्रत्यागे चतुर्दशोध्यायः १४ ॥

और जवजीवों को बड़ा भय उत्पन्न हुआ । ९ । शब्दायमान आकाश
 मालाओं से बहुत व्याप्त हुआ पर्वत वन और दल्लों समेत पृथ्वी कम्पायमान हुई ।
 इमप्रकार बरदोनों प्रकाश लोकोको तपातेहुयेनियतहुये तववहाँ उनदोनों
 एकसाथ दर्शनाकिया । ११ । सवजीवों के आत्मारूपभारदजी और भरद्वाज
 पितामह व्यासजी बरदोनों महात्मा वैर अश्वत्थामा और अञ्जुनके शान्त
 उपस्थितहुये । १२ । सशर्मोंके ज्ञाता और सवजीवों के हितकारी बड़े
 दोनों मुनि बड़ेप्रकाशित उनदोनों अस्त्रोंके मध्यमें नियतहुये । १३ । समसमय
 अनेक यशोमान और अग्निके समान प्रकाशित दोनों उत्तमश्रुति-वर्षांजाकर
 हुए । १४ । बड़े जीवमानों अनेक देवता और दानवों के अगकृत दोनों श्रुति
 लोकोकी दृष्टिही इच्छामेअस्त्रोंको नेत्रशान्त करतेहुये मध्यमें नियतहुये । १५ ।
 और अलोकके नानामहार अस्त्रोंहेज्ञाता सव महारथी जो पूर्णपयमेंही उत्पन्नहुये
 उन्होंने भी इसअस्त्रको कभीहिती मनुष्यपर नहीं छोड़ा हेवीरलोगो तुमने इससे
 विनाशकारी मादमहो क्योंकिया १६ ॥

Ashama's weapon to, looked like a tree of fire. There was a
 severe storm of wind and meteors fell down with a crash, causing fear
 to life. The sky was covered with flames of fire and the Earth
 her trees shook. 10. Thus the two lights stood side by
 heating the world. The two great rishis Narad and Vyas came
 to appease the wrath of Ashwathama and Arjun. Knowing all
 and wishing good to the world, the two glorious rishis stood in
 midst of the two weapons, glorious and invincible, bright as fire. C
 ing the fury of both the weapons, invincible by all beings, the
 rishis respected by gods and gandharvas, stood there and said, "
 former warriors who knew the use of all sorts of weapons, never
 charged this weapon against humn beings. Why have you
 led this rashness brave men ?" 16.

वैशम्पायन उवाच । दृष्ट्वा नरदाहूल तावग्निसमनेजसौ । सजहार शर दिव्य
 त्विरमाणो घनञ्जय ॥ १ ॥ उवाच भरतश्रेष्ठ सावृषी प्राञ्जलिस्मिन्दा । प्रयुक्तमश्रमस्रण
 शोभ्यतामिति वै मया ॥ २ ॥ सहेत परमाश्रेस्मिन्, सर्वानस्मानशयन । पापकर्मा युव
 प्रीतिं प्रचक्ष्यस्त्रतेजसा ॥ यदत्र हिममस्माकं लोकानाञ्चैव सया । भवन्तो देवम
 ज्जाशौ तथा सम्मन्तुः ह्य ॥ ४ ॥ इ युक्त्वा सजहारस्र पुनरेव घनञ्जय । सहागे
 दुष्करस्तस्य देवैरपि हि सयुगे ॥ ५ ॥ दिख्यस्य रणे तस्य परमाश्रय्य संगृहे ।
 अशक पाण्डवाद्यस्य साक्षादपि शतक्रतु ॥ ६ ॥ ब्रह्मतेजोऽप्य तस्मि दिख्यमवृतात्
 मत्ता । न शक्यमानसंयितु ब्रह्मचारिप्रनाहते ॥ ७ ॥ अर्चीर्णब्रह्मचर्यो य सृष्ट्वावर्त
 यतेषुन । इतस्त्रं आनुवन्धस्य मूर्धान तस्य ह्यतति ॥ ८ ॥ ब्रह्मचारीव्रती चापि दुराचा

अध्याय १५ ॥

वैशम्पायन बोले हे नरोत्तम शीघ्रता करनेवाले अर्जुन ने अग्नि के समान
 प्रकाशित उन ऋषियों को देखकर दिव्यबाण को संहार कर लिया। अर्थात् जैना
 शिष्या । १ । हे भरतर्षभ तब वह अर्जुन हाथजोड़कर उन ऋषियों से बोला कि मैंने
 यह समझकर अस्त्रको प्रकट किया है कि यह अस्त्र इम अस्त्र से शान्त होय । २ ।
 इम उत्तम अस्त्रके लौट आनेपर निमपकरके पापकर्मी अश्वत्थामा इमतेज अस्त्रसे
 इम सबको भस्म करेगा । ३ । यहापरसदैव हमारा और लोकोका जोहित है उसको
 देवतारूप आपलोग उमीमकार से अङ्गीकार करने के योग्यहो । ४ । अर्जुनने इस
 प्रकारसे फिर अस्त्रको लौटाया युद्ध में देवताओंसेभी उसका फिरलौटाना कठिन
 है । ५ । पाण्डव अर्जुनके सिवाय युद्धमें सात्वात् इन्द्रभी उस छोटेहुये परम अस्त्र
 के लौटानेको समर्थ नहीं है । ६ । ब्रह्मचारीका व्रतखेनवाले पुरुषके सिवाय ब्रह्म
 तेजम उत्पन्न छोटाहुआ अस्त्र अनितेन्द्रिय से कभी लौटाने के योग्य नहीं है । ७ ।
 ब्रह्मचर्य न करनेवाला जो पुरुष अस्त्रको छोडकर फिर लौटाता है वह अस्त्र
 साधियों समेतउस छोडनेवालेके मस्तकको काटताहै । ८ । ब्रह्मचारी व्रत करनेवाला

CHAPTER XV

Vaishampayan said, "Seeing the two fishes glorious like fire, Arjun recalled his divine arrows. And with joined palms he said to them, "I discharged my weapon to appease the other. Surely Ashwathama will burn us with his weapon, for I have recalled mine own. You will do what is good to us and to the world, divine sages." Thus Arjun recalled the weapon and did a deed which was difficult to be achieved by gods. 5 None except Arjun, not even Indra himself, could recall that weapon when once discharged. None except a Brahmachari could do the glorious deed, for the weapon kills the man who recalls it, if he is not a Brahmachari. Arjun the Brahmachari recalled the weapon in spite of having so much to revenge for. For Arjun was the

रमबाप्य तत् । परमवसन्तोर्भोपि नार्जुनोऽस्त्रं व्यमुञ्चत ॥ ९ ॥ सत्यव्रतधरः शूरो
 ब्रह्मचारी च पाण्डवः । गुरुवर्षी च तेनास्त्रं संजहागर्जुनः पुन ॥ १० ॥ द्रौणिरप्यथ
 संप्रथमं नावृषी पुरतः स्थितः । न शशाकं पुनर्घोरमस्त्रं संहर्तुं योजसा ॥ ११ ॥ अशक्तः
 प्रतिस्ंहारे परमास्त्रस्य संपुगे । द्रौणिर्विनिमना राजन् देवायनमभाषत ॥ १२ ॥ उत्तमस्य
 सनासेन प्राणप्राणगभीप्सुना । मथेतदस्त्रमुत्सृष्टं भीमसेनमवाप्नुमे ॥ १३ ॥ अथर्मज्ञ
 कृतोनेन चार्शंगष्टं जिघांसता । मिथवाचांण भगवन् भीमसेनेन संपुगे ॥ १४ ॥ अतः
 सूष्टमिवं ब्रह्मण मवास्त्रमकृतात्मना । तस्य भूयोऽथ संहारे कर्तुं ग्राहमिहोरस्तरे ॥ १५ ॥
 विशुद्धं हि मया दिव्यमेतदस्त्रं दुरासदम् । अपाण्डवव्यथिति मुने बहिनर्तव्योऽनुमन्थ वै
 ॥ १६ ॥ तार्क्ष्यं पाण्डवैयानामन्तकायामिसंहिनम् । अथ पाण्डुसुभान् सर्वाद् जीषिता
 ऋणयिष्यति । १७ ॥ कृतं पापमिदं ब्रह्मघ्नोषोविष्टेन वेतसा । यज्जनासास्त्रं पृथ्वीनां

औरबड़े दुःखमे पीड़ावात् अजुन नेभी उस दृष्टभाचारको पाकर उस अस्त्रको नहीं
 छोड़ा । ९ । पाण्डव अर्जुन सच्चाव्रत करनेवाला शूर ब्रह्मचारी और गुरु भक्त
 या इतहेतुमे उसने उम अस्त्रका फिर लौटा लिया । १० । इसके पीछे अशक्तथावा
 भी अपने आगे नियतहुये दोनों ऋषियोंको देखकर अपने बलते उसघोर अस्त्र के
 फिर लौटानको समर्थ नहीं हुआ । ११ । युद्धमें उसपरमभक्तके लौटानेमें असमर्थ
 बड़े दुःखीचित्त अश्वरथामोने व्यासजीसे कहा । १२ । कि हेमुनि वही आपचिते
 पीड़ावात् और प्राणोंकी रक्षाका अभिलाषी होकर मैंने भीमसेनके भंसे उक्त अस्त्र
 को छोड़ा । १३ । हे भगवन के मारनेके अभिलाषी और दुराचारी इस भीमसेनवे
 युद्धमें अधर्मिकया । १४ । मे ब्राह्मण इनहेतुये मुझ ब्रह्मानी ने इस अस्त्रको छोड़ाहे
 अब फिर उसके लौटानेको उत्साह नहीं करताहूँ । १५ । हे मुनि मैंने पाण्डवों के
 नाशके अर्थ ब्रह्मनेजको धारणकरके इसकीठनता से सहनेके योग्य अस्त्र को छोड़ा
 । १६ । यह अस्त्र पाण्डवों के नाशके लिये बहुतही अब यह अस्त्र सब पाण्डवों को
 जीवनसे रहित करेगा । १७ । हेब्राह्मण क्रोधसे पूर्णचित्त और युद्धमें पाण्डवों के
 मारने के अभिलाषी मुझ अस्त्र छोडनेवाले ने यह पाप किया । १८ । व्यासजी बोले

observer of true vows, brave and devoted to his preceptor, and there
 fore he could recall the weapon. 10. For the sake of those rishis Ashwa-
 thama too, tried his best to recall his weapon, but was not success-
 ful in his attempt. Failing in his attempt, he said to Vyas with a
 distressed mind, " Being hard pressed and afraid of Bhim, I discharged
 the weapon to save my life. Bhim had sinned against Duryodhan
 and slain him unfairly. I therefore discharged the weapon, but am
 now unable to recall it 15. I discharged it to slay all the Pandavas
 in my anger. It is sufficient to slay the Pandavas and will surely
 deprive them of life. Surely I have committed this sin to slay the
 Pandavas " Vyas said, " Arjun discharged the Brahmashar by way of
 retaliation and not to slay you He discharged it to mitigate the effect

पार्श्वं सुजता रणे ॥ १८ ॥ इत्यस उवाच । अस्मि ब्रह्मशिरस्तात विद्वाश् पाशो धन
 अथः । गत्सुहृषाश्च रोपेण न नाशायतवाहये ॥ १९ ॥ अस्ममस्त्रेण तु रणे तव संशाम
 वृत्तता । विशुद्धमर्जुनेनेह पुनश्च प्रतिनेहृतम् ॥ २० ॥ ब्रह्मास्त्रमप्यथाप्येतद्रूपदेशात् पितृ
 त्वम् । ह्यधर्मान्महाशत्रुर्नाकम्पत धनञ्जय ॥ २१ ॥ एवं धृतिमतः साधोः सर्वास्त्र
 वेपुषः क्षतः । सज्ञात्सुहृदोः कस्मात्त्वं धनमस्य चिकीर्षसि ॥ २२ ॥ अस्मि ब्रह्मशिरो
 ष्च परमास्त्रेण वध्यते । समाः प्रादश पण्डित्यस्तद्राष्ट्रं मभिवर्षति ॥ २३ ॥ पाण्ड्य
 ष्चोवाहः शक्तिमानीप पाण्डवः । न विद्व्यात्तदस्त्रं तु प्रजाहितचिकीर्षया ॥ २४ ॥
 सस्त्रव्यास्तस्त्रं च राष्ट्रं सदा खरस्यमेव हि । तस्मात् सदा दिव्यं त्वमस्त्रमेतस्महा
 स्त्रम् ॥ २५ ॥ अरोरस्तव कैपास्तु पार्याः अस्तु निरामया । न ह्यवर्मेण राजर्षि । पाण्डवो
 मृत्युविच्छेदित ॥ २६ ॥ मण्डिपैश्च प्रपञ्चैः यो यस्ने शिरसि निष्ठमि । एतमावाच ते
 शत्रवाश्च प्रति वाक्यन्ति पाण्डवाः । २७ ॥ द्रौणिरुवाच । पाण्डवैर्वाणि एतानि वक्ष्या

त्वात् बुद्धिमान् पाण्डव अर्जुनने युद्धमे जो ब्रह्मशरनाम अस्त्र छोड़ा वह क्रोधसे
 छोड़ा तेरे नाशकोछिने नहीं छोड़ा । १९ । युद्धमेंतेरे अस्त्रको अपने अस्त्र से शान्त
 करनेके अभिलाषी अर्जुनने वहअस्त्र छोड़करभी फिर डीटालिया । २० । यह महा
 बाहु अर्जुन तेरे शिताके उपदेशसे ब्रह्मअस्त्रको भी पाकर त्रिविधधर्म से कम्पायमान
 नहीं हुआ । २१ । इस प्रकार धैर्यवान् माधु सब अस्त्रों के ज्ञाता सत्पुरुष इस
 अर्जुनका भारना भाई बंधुओं समेत किसालिये तुमकरना चाहते हो । २२ । जिस
 देशमें ब्रह्मशर अस्त्र परमअस्त्रके द्वारा दूरकियाजाताहै उस देशमें वाग्दण्डपतक इन्द्र
 जलको नहीं परताताहै । २३ । महाबाहु सपर्य पांडव संसार के नाशमात्रों का
 बुद्धिको अद्विजापासे इसी निमित्त उस अस्त्रको अपने अस्त्रसे दूरनहीं करता । २४ ।
 पांडव देश और तुमभी सदैव रक्षा के योग्यहो हे महाबाहु इसहेतुमे तुम इस दिव्य
 अस्त्रको लौठाभी तेराकोप दूरहोय और पाण्डवोंकी कुशल होय यह राजश्रापि
 पांडव करवने विजयकरमा नहीं चाहताहै । २५ । अबतुम उस मणिको ददो जो
 तेरे फिरर निबतहै पांडव उसको लेकर तुझको माणदान देंगे । २६ । अबत्यामा
 बोले कि बाण्डवों ने जो एत और फौरपोंने जो अन्यधन इसलोक में प्राप्त किया

of your weapon and has recalled it. 30 Having got the knowledge
 of Brahmshar from your father, Arjun did not deviate from his duty.
 Why do you desire to slay him and his brothers. Indra does not
 bring forth rain for twelve years when one Brahmshar is destroyed
 by another. Valiant Arjun does not use his weapon for that pur-
 pose, though he has the power to do so. The Pandavas, the country
 and you are worthy of protection and you must recall your weapon
 15 Babduo your wrath and let the Pandavas live. They do not like to
 gain victory by unfair means. Give the Pandavas your head jewel
 and they will spare your life in return." Ashwathama said, " My

न्यत् कौरवैर्द्धनम् । अवाप्तयिह तेभ्योऽयं मणिर्मम विशिष्यते ॥ २८ ॥ यमावुपयज्व
 नास्ति शस्त्रव्याधिभुधाश्रयम् । दुर्वैभ्यो दानुर्वैभ्यो वा नागैभ्यो वा कथञ्चन ॥ २९ ॥
 न च रक्षोगणस्य न तत्करमयस्त्रया । एवं वीर्यो मणिरयं नमे स्वाद्य कथञ्चन ॥ ३० ॥
 यस्तु मे भगवानाह तन्मे कार्यमनन्तरम् । अथ मणिरयवाद्दर्शिकास्तु पतिप्रति
 ॥ ३१ ॥ गर्भेषु पाण्डुतेषाममोघं चैतदुच्यते । न च शफोऽस्मि भगवन् संहर्तुं पुनश्च
 यताम् ॥ ३२ ॥ एतद्दह्यतेऽथैव गर्भेव दिव्यजास्यहम् । न च व्याज्य भगवतो न कश्चि
 मेवामुने ॥ ३३ ॥ अत्र उपाच । एवं ब्रुवन् आम्नास्तु बुद्धिः कार्यो त्वमानम् ।
 गर्भेषु पाण्डुवेषामा पितृवैतदुच्यते । ३४ ॥ वैशम्पायन उवाच । तत्र प्रारममह्यम्
 द्रौणिरुवाचमाह च । द्वैपायनवच । श्रुत्वा गर्भेषु प्रमुमोक्ष ह । ३५ ॥

इति सौप्तिकपर्वणि प्रह्लाशिरास्त्रस्य पाण्डवगर्भवेक्षणेऽवदशाऽध्यायः- १५ ।

उन्होंने यह मेरा मणि प्रत्यक्ष है । २८ । जिसको याचकर किसी दशा में भी शस्त्ररोग
 और छुवासम्बन्धी कोई भय नहीं होता है इस बाँचेवाले को देवता दानव और
 सर्पोंसे भी भय नहीं है । २९ । न राक्षसों के समूहों का और न चोरों का भय है इस
 प्रकार से यह उत्तम मणि है और किसी दशा में भी मुझ से त्याग करने के बोध
 नहीं है । ३० । और जो भगवान ने मुझको आज्ञा करी है वह शत्रुही भूक्तो कर्ष
 स्प है यह मणि है यह मैं हूँ परन्तु यह शिक । ३१ । पाण्डवों के गर्भोंपर गिरेगी
 क्योंकि यह उत्तम अस्त्र सफल है हे भगवन् इस प्रकट होनेवाले प्रह्लाको मैं फिर
 नहीं लौटा सकता हूँ । ३२ । मैं इतनेतु से इस अस्त्र को पाण्डवों के गर्भोंपर छोड़
 ता हूँ हे महामुनि आपके बचनों को अदृश्य करूँगा । ३३ । वासजी बोले हे
 निष्पाप इसी प्रकार करो तुमको दूसरी बुद्धि न करना चाहिये इस अस्त्रको
 पाण्डवों के गर्भोंपर छोड़कर युद्धमें नित्त हो । ३४ । वैशम्पायन बोले इसके
 पठि अश्वत्थामाजी के पवन व्यासजी के पवन को इनकर युद्धमें सज्ज परम
 प्रह्लाको गर्भोंपर छोड़ा ३५ ॥

j-wel forms no part of the wealth of the Kauravās and Pandavās.
 The possessor of it is never oppressed by weapons, sickness or hunger.
 He is never in fear of gods, danavas and serpents. The possessor of
 it has no fear of rakshases or thieves and I donot wish to part with it
 under any condition. 30 I am however bound to do your bidding
 My jewel and myself are at your disposal. But this piece of broom
 shall fall on the pregnant women of the Pandavās; for this weapon
 can not fail to do its work nor I have power to recall it. I shall do
 your bidding, great rishi. My weapon shall fall on pregnant women
 of the Pandavās." Then Vyās said, " Do it as you have said. Let
 your weapon fall on the pregnant women and cease fighting." Vai
 shampayan said, " Thus ordered by Vyās, Ashwathama, let his weapon
 fall on pregnant women." 35

वैशम्पायन उवाच । तद् ज्ञाय हृषीकेशो विशृष्टं पापकर्मणा । कृष्यमाण इदं शार्ङ्गं
 नि प्रत्यब्रवीच्छुभम् ॥ १ ॥ विराटस्त्व सुतां पूर्वं स्तुतां भाण्डीवचन्धतः । उपलुभ्यगतां
 द्या भ्रमवान् ब्राह्मणोऽभवत् ॥ २ ॥ परिक्षीणेषु कुरुषु पुत्रस्तव भविष्यति । एतदस्य
 रिक्षित्वं गर्भस्थस्य भविष्यति । ३ ॥ तस्य तद्वचनं साधोः सत्यमेतद्विद्यते ।
 रिक्षित्वाहिता ह्येषां पुनर्वैजकरः पुनः ॥ ४ ॥ एवं सुश्राण गोविन्दे सारथ्यां प्रघर्तदा ।
 रीणिः परमसंरक्षः प्रत्युवाच रमुत्तरम् ॥ ५ ॥ नैतद्वचं यथाह त्वं पक्षपतिन केशव ।
 जने पुण्डरीकान्न न ख मद्राक्ष्यभयथा । ६ ॥ पतिष्यति तद्वृक्षं हि गर्भे, तस्या मयो
 मय । विराट् बुद्धितुः कृष्ण य एवं रक्षितमिच्छसि ॥ ७ ॥ भगवानुवाच । भमोघः
 रमाक्षस्य पातलस्य भविष्यति । स तु गर्भोऽमृतो जातो, दीर्घमायुरवाप्स्यति ॥ ८ ॥

अध्याय १६ ॥

वैशम्पायन बोले तर श्री कृष्णजी पापकर्म करनेवाले अश्वत्थामा के छोड़े
 ये उम भस्त्रको जानकर प्रसन्नहोकर अश्वत्थामा से यह वचनबोले १ । किं
 पूर्वं समर्थे नियमवान् ब्राह्मणने विराटकी पुत्री अर्जुनकी पुत्रवधू उत्तराको जोकि
 वपुष्वी स्थानपर वर्त्तमानथी उसमे यह कहा । २ । कि कारवों के नाशवान होने
 पर तेरापुत्रहोगा इस गर्भस्थ बालकका इसीहिनुमे परीक्षितनाम होगा । ३ । उस
 मापु का यहवचन सत्यहोगा परीक्षितपुत्र फिर उन्हों के देशका चटानेवाला होगा
 ४ । तव अत्यन्त क्रोधयुक्त अश्वत्थामा ने यादवों में अत्यन्त श्रेष्ठ इमप्रकार
 कहनेवाले गोविन्दीकीको यह उत्तर दिया । ५ । हेकमललोचन केशवजी यहइसप्रकार
 नहीं है जैसे कि तुमने पत्नपतिहोकर यहवचन कहाई मेरा वचन मिथ्या नहींहै । ६ ।
 हे श्रीकृष्णजी मेरा बलाया हुआ वह अस्त्र उस उत्तराके गर्भपर गिरेगा जिसको
 कि तुम रक्षा किया चाहतेहो । ७ । श्रीभगवान् बोले कि उस परम अस्त्रका गिरना
 सफलहोगा और मगदुष्टा गर्भ जीकर बड़ी अवस्थाको पावेगा सब ऋषिलोग
 तुम्हको नीचपुरुष पापी और चारम्बार पापकर्मवाला और बालकके जीवन कानाश

CHAPTER XVI

Vaishampayan said, "Shri Krishna was pleased when he knew the fate of Ashwathama's weapon, and he said to him, 'Formerly, a vow observing Brahman said to Uttara the wife of Arjuna's son, 'Thy son will be born after the destruction of the Kauravas and will be named Parikshit.' The words of this sage will be let us for Parikshit will be the perpetuator of the line of the Pandavas." Ashwathama was much enraged at this remark and said "This cannot be, lotus-eyed Krishna! Your words are biased. It shall be as I have predicted: my weapon shall fall in the womb of Uttara whom you wish to protect." Shri Krishna said, 'It is true that the weapon shall do its work, but the dead child will be brought back to

स्थातु कापुरुषं पापं विदुः सर्वं मनीषिणः । असकृत्पापकर्माणं
 तस्मात्स्य पापस्य कर्मणः फलमाप्नुहि ॥ ९ ॥ प्राणि वर्षसहस्राणि, चरिष्यन्ति
 मिमां । अप्राप्नुवन् कश्चित् । काशित् समिधं जातु केनचित् ॥ १० ॥
 हायस्वदेशान् प्रविचरिष्यसि । मघित्री ग द्वि ते द्रुम जनमधेपु संस्थितिः ॥
 प्यशोणितगन्धी च दुर्गकान्तारसंभयः । विचिन्वासि पापात्मन्
 ॥ ११ ॥ वयः प्राप्य परिक्षितु वेदव्रतमवाप्य च । कृपाच्छारद्वताच्छरः
 प्यथे ॥ १३ ॥ विदित्वा परमास्त्राणि कृत्रघ्नं व्रतेस्थितः । षष्टि वर्षाणि जामांसा
 पालयिष्यति ॥ १४ ॥ इतश्चोर्षे महाबाहुः कुदराजो भविष्यति । परिक्षिन्नाम
 दुर्मते ॥ १५ ॥ अहंते जीवयस्वामि दुग्धं शशोर्गतेजसा । पश्यमे तपज्जोषीर्ष्य
 मराधम ॥ १६ ॥ व्यास उवाच । यस्मादनादृत्य कृतं त्वयास्माद् कर्म दारुणम
 णस्य सतश्चैव यस्मात्ते वृतमीदृशम् ॥ १७ ॥ तस्माद्यदेवकीपुत्र उक्तवानुत्तम वयः
 करनेवाला जानेंगे उस कारणसे तुम इस पापकर्म के फलको पाकर
 दिग्घ्न वर्षतक इस पृथ्वीपर घूमोगे तुम एकाकी कहीं कुछ न पाते और
 किसीके साथ परस्पर वात्सलाप न करते निर्जन देशों में घूमोगे हे नीच
 निवास मनुष्यों में नहीं होगा । ११ । पीप और रुधिरकी गन्धि से युक्त
 महावनों में निवास करेगा हे पापात्मा सब बीमारियों से संयुक्त होकर
 । १२ । शूरपरीक्षित अवस्था और वेदव्रतको पाकर कृपाचार्य से सब अस्त्रों
 पावेगा । १३ । फिर परमअस्त्रों को पाकर क्षत्रिय व्रतमें नियत
 साठवर्षतक सृष्टिकी रक्षा करेगा । १४ । इसके पीछे वह महाबाहु
 हे दुर्बुद्धी तेरे देखते परीक्षितनाम राजा होगा । १५ । मैं उस शशकी अग्नि से
 हूये को अपने तेज से जिलाऊंगा हे नीच मेरे सत्य और तपके बलको देखो
 जी बोले जो तुमने ह्मकी अनादर करके यह भयकारी कर्म किया और तु
 सत्पुरुष ब्राह्मणका ऐसा चलनहुआ इनदोनो कारणों से श्रीकृष्णजी ने जो

life and will live long. All the nobis will call you sinful and slaye
 of infants, and as a punishment of your wickedness you will roam fo
 three thousand divine years. You will be shunned by all men and
 will pass your days in desolate places out of the reach of man, 11
 Your wound will give forth a bad smell and you will be leaset with
 all sorts of diseases. Valiant Parikshit will live long and will learn
 the use of weapons from Kripacharya. He will rule the earth for
 sixty years as king of the Kauravas and you will see him, 15. I
 shall resuscitate the burnt child by my glory and you shall see
 the power of my truth and asceticism." 16. Vyas said,
 "Because you did this dreadful deed in spite of us, and bore a
 conduct like this, you will be reduced to the condition fore told

किंशयस्ते तज्जावि क्षत्रधर्मस्त्वयाधितः ॥ १८ ॥ अश्वत्थामावाच । सर्वेव भवता
 कृत्यं स्यात्स्वामि पुरुषेभ्यश्च । सत्यवतास्तु भगवानप्यस्य पुरुषोत्तमः ॥ १९ ॥ वैश
 पायन उवाच । प्रादायाथ मणिं द्रौणिः पाण्डवानां मशामनाम् । उगाम विमनास्तेषां
 चैवा, पद्भता वनम् ॥ २० ॥ पाण्डवाञ्छावि गोविन्दं पुरस्कृत्य हतद्विषः ॥ कृष्णं द्वेषा
 न्मन्वेव नारदश्च महामुनिम् ॥ २१ ॥ द्रोणपुत्रस्य सहजं मणिमावाय सत्यराः ।
 त्रिपदीमप्रधायन्न प्रायोपेतां मनस्विनीम् ॥ २२ ॥ वैशम्पायन उवाच । ततस्ते पुरुष
 राज्ञाः क्वद्वैरनिलोपमैः । अभ्ययुः सहदाशाहं शिवरं पुनरेव हि ॥ २३ ॥ अवतीर्थे
 याञ्चान्तु स्वरपाणा महारथाः । दृष्टशुद्धौपदीं कृष्णामार्त्तामार्थतराः स्वयम् ॥ २४ ॥
 आमुपेत्य निरागन्दां दुःखशोकसमन्विताम् । परिवार्यं व्यतिष्ठन्त पाण्डवाः सहके
 रथाः ॥ २५ ॥ ततो राक्षस्यनुज्ञातो मीमत्सेनो महाबलः । प्रददौ तं मणिं दिव्यं वचन
 चैवमब्रवीत् ॥ २६ ॥ अयं अद्र तव मणि पुत्रहन्ता जितः स ते । उक्तिष्ठ शोकमुच

वचन कहाहै निस्तन्देह वहीदशा तेरी होनेवाली है तुम क्षत्रियधर्ममें नियतहो ॥ १८ ॥
 अश्वत्थामा बोले है ब्राह्मण मैं इसलोकके मनुष्यों में आपके साथ नियत हूंगा यह
 भगवान् पुरुषोत्तम सत्यवक्ताहै ॥ १९ ॥ वैशम्पायन बोले कि फिर उदासमन होकर
 अश्वत्थामा महात्मा पाण्डवों को माण्ड देकर उन सबके देखते हुये वनको गये
 २० । और जिनकेशत्रु मारेगये वह पाण्डव गोविंदजी और व्यासजी महामुनि
 नारदजीको आगे करके ॥ २१ ॥ और अश्वत्थामा के शरीरके साथ उत्पन्न होने
 वाली मणिको शीघ्रही उस मनस्विनी और शरीर त्यागनेके निमित्त नियम
 करनेवाली द्रौपदीकी ओर दौड़े ॥ २२ ॥ वैशम्पायन बोलेकि इसके अनन्तर वह
 पाण्डव श्रीकृष्णजी समेत वायुके ममान शत्रु । उच्चम घोटोंके द्वारा फिर
 दौड़को गये ॥ २३ ॥ आप पीड़ावान् और शीघ्रता करनेवाले महारथियों ने रथों
 से उतर कर मसन्न मनवाली द्रौपदीको पीड़ावान् देखा ॥ २४ ॥ वह पाण्डव केशव
 जी समेत उस अपसन्न और दुःखशोकसे युक्त द्रौपदी के पास जाकर उस को
 धरकर बैठगये ॥ २५ ॥ इसके पीछे राजाकी आज्ञानुसार महाबली मीमत्सेन ने उस
 मणिको दिया और माण्डकर यह वचन कहा ॥ २६ ॥ हे कलयाणी मीपह
 मणिहै और वह तेरेपुत्रों का मारनेवाला विजय किया गया शोकको छोड़

by Krishna. You have become a khatrya." Ashwathama said,
 "I would stay in the world with you but Shri Krishna is truthful."
 The Vaishampayana said that with a dejected mind, Ashwathama gave the
 Pandavas his jewel and went away to the forest in the presence of all.
 20 The Pandavas being rid of their enemies, ran towards Draupadi,
 led by Govind, Vyas and Narad, and with the jewel got from Ashwa-
 thama. They rode their swift cars and went to their camp. They
 found Draupadi in great distress and sat round her. 25. Then by
 the permission of the king, brave Bhishma presented the jewel to Draupa-

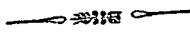
एव्य क्षत्रधर्ममनुस्मर ॥ २७ ॥ प्रयाणे वासुदेवस्य शमाद्यंसितेक्षणे ।
 स्वया भीरु वाक्प्रानि मधुघानिनि ॥ २८ ॥ नैव मे पतय सन्ति न पुत्रा ज्ञातरो न
 नैव स्थिति गोविन्द शममिच्छति राजनि ॥ २९ ॥ उक्त्वत्यसि साध्वानि
 पुरुषोत्तमम् । क्षत्रधर्मानुरुपाणि तानि स्वस्मर्तुमर्हसि ॥ ३० ॥ इतो
 राज्यस्य परिपन्थिक । वृःशासनस्य रुधिरं पीते विश्फुरतो मया ॥ ३१ ॥ धैरस्य
 मानृष्यं न स्म वाक्या विवृताम् । जित्वा मुक्तो द्रोणपुत्रो माह्वग्याद्वीरवेणच ॥ ३२ ॥
 यशोऽस्य पातितं देवि शरीरभ्रवशोपितम् । वियोजितश्च मणिना ॥
 ३३ ॥ द्रौपद्युवाच । केवलाभृण्यमासाधिम गुरुपुत्रो गुरुर्मम । शिरस्येत मणिं ।
 प्रतिघटनात् भारत ॥ ३४ ॥ तं गृहीत्वा ततो राज्ञा शिरस्येवाकरोत्तदा ।
 मित्त्वेन द्रौपद्या वचनात्तपि ॥ ३५ ॥ ततो दिव्यं मणिधर शिरसा धारयन् प्रभु-

करउठा आर क्षत्रियधर्मका स्मरणकर । २७ । हे श्यामलाचन सन्धिकेअर्थ
 देवजीके यात्राक्रमेपर तुमनेजो यहवचन उनभीकृष्णजीसे कहेवे किहे
 राजाका सन्धिका अभिलाषी होनेपर मेरेपति पुत्र भई और तुम चांशोंमें से
 नहींहो । २९ । तुमने क्षत्रियधर्मके योग्य वीरताके बचन पुरुषोत्तमसे कहेथे
 स्मरण करनेको योग्यहो । ३० । राज्यका शत्रुपापी दुःखोपधन मारागयो मैने
 कटेहुये दुःशासनका रुधिर पिया । ३१ । शत्रुताकी अश्रुणताको पाया
 लापकरनेके अभिलाषी पुरुषोंकी निन्दाके याग्यनहींहैं अश्वत्यामा पराजितहोकर
 द्राक्षणावर्षकी दृष्टतासे छोड़ागया । ३२ । हेदेवी उसको वह पतितहुआ शरीरशेष
 उसकोमणिले जुझाकिया और उमके सवशस्त्रभी पृथ्वीपर गिरपड़े । ३३ । द्रौपदी
 बोली हेनिर्दोषमैन अश्रुणताको पायागुरुका पुत्रमेरागुहई भरतवंशी राजापुधिष्ठिर
 इस मणि को शिरपर बांधे । ३४ । तबराजा युधिष्ठिरन यह समझकर कि गुरुपुत्र
 की धारण कीहुई यह वस्तु है और द्रौपदीका बचनहै ऐसाजानकर उसमणिको

He, saying, " This is your jewel, good woman. The slayer of your
 sons has been conquered. Give up your sorrow and rise up, remem-
 bering the kshatriya duty. When Vasudev was going to the mission
 of peace, you said to him, " Don't make peace with them as long as
 you and my husbands, sons and brothers are alive. " You spoke then
 like a kshatriya woman and must remember it. 30 Our enemy Dur-
 yodhan has been slain and I have drunk Dushasan's blood. We have
 made an end of the enemy and are not to blame. Ashwathama has
 been defeated and is no longer a brahman. He has been excommu-
 nicated. The jewel has been taken away from his person and his wea-
 pons have fallen. " Droupadi said, " I have had my revenge. The
 guru's son is my guru. Tie this jewel on your head, King. " Yud-
 hishthir, knowing that it was a thing used by his preceptor's son and

शुभ्रुमे स नदा राजा सचन्द्र इय पर्यतः ॥ ३६ ॥ उत्सस्यो पुत्रशोकात्ततः कृष्णा
मनस्विनी । कृष्णञ्चापि महाबाहुं परिप्रच्छधर्मराट् ॥ ३७ ॥

हाते साँसिकपर्वणि ऐपिकपर्वणि दौपदी सान्त्वने शोडपोध्यायः १६ ॥



वेशम्पायन उवाच । हतेषु संसैन्येषु सौप्तिके ते रथेस्त्रिभिः । शोचन् युधिष्ठिरो
राजा वाशाद्दिग्भ्रमन्धीव ॥ १ ॥ कथं तु कृष्ण पापेन क्षुद्रणाकृतकर्मणा । द्रौणिना
निहताः सर्वे मम पुत्राः महारथाः ॥ २ ॥ तथा कृतास्त्रा विक्रान्ताः । सहस्रशतयेधिभः ।
द्रुपदस्यात्मजाश्चैव द्रोणपुत्रेण पानिताः ॥ ३ ॥ यस्य द्रोणां भ्रष्टेषासो न प्रादादावपे
मुक्षम् । निजन्ने रथिनां भ्रष्टं घृष्टपुम्नं कथं तु सः । ४ ॥ किं तु नेन कृते कर्म तथायुक्तं
लेकरशिरपरं पारणकिया । १५ । इसके पीछे दिव्यमाणिक्यो धारण करता हुआ मनु
राजः युधिष्ठिर चन्द्रमासेयुक्त पर्वतकेतमान शोभायमान हुआ । १६ । फिर पुत्रों के
शोकसे पीड़ित मनस्विनी द्रौपदी उठ खड़ाई और महाराज धर्मराजने भी श्रीकृष्ण
जीसे पूजा ३७ ॥

अध्याय ॥ १७ ॥

वेशम्पायनवाले कि जो रात्रिके युद्धमें उनतीनों रथियों के हाथसे सबसेना के
छाँगों के मरने पर शोच करतेहुये राजा युधिष्ठिरने श्रीकृष्णजी से यह बचनकहा
। १ । कि हे श्रीकृष्णजी इसपापी नीच और निष्कर्म कर्मज्ञाने अश्वत्थामा के
हाथ से मेरे सब महारथी पुत्र कैसे मारेगये । २ । उसीपकार अहम्न महापराक्रमी
छात्रों से युद्ध करनेवाले द्रुपदके पुत्र अश्वत्थामाके हाथसे गिराये गये । ३ । बड़े
धनुवधारी द्रोणाचार्य ने जिसके युद्धमें मुल नहीं किया उस रथियों में भ्रष्ट
घृष्टपुम्नको उसने कैसे मारा । ४ । हे नरोत्तम उत्तने इसपकारका कौनसा योग्य

that Draupadi requested him to wear it, put the jewel on his head.
Having worn it on his head, Yudhishtir looked glorious like a hill
over which the moon shines. Full of sorrow for her sons' grief, Drau-
padi stood up and Yudhishtir thus addressed Shri Krishna. " 37,

CHAPTER XVII

-Vaishampayan said, "At the slaughter of all the warriors by the
three heroes, Prince Yudhishtir, in great grief, said to Shri Krishna,
"How were all my brave sons slain by despicable Ashwathama the
sinful wretch who did that useless deed? Similarly, the sons of Drau-

भरतर्षभ । यदेकः समरे सर्वानवधीतो गुरोः सुतः ॥ ५ ॥ भगवानुवाच । नूनं स देवदेवानामीश्वरेऽश्वरमवपयम् । लगाम शरणं द्रौणिरिकल्लेनावधीद्वह्व ॥ ६ ॥ प्रसन्ना हि महादेवो दद्याद्भूमरतामपि । धीर्येष्वच गिरिशो दद्याद्येनेन्द्रमपि छातयेत् ॥ ७ ॥ धेदाहं हि महादेवं तत्पेन भरतर्षभ । यानि चास्य पुराणानि कर्माणि विचित्रानि च ॥ ८ ॥ आदिरेष हि भूतानां मध्यम-लक्ष्य भारत । विचष्टने जगत्पदे सर्वमस्यैव कर्षणा ॥ ९ ॥ एषं सिसृक्षुर्भूतानि ददर्श प्रथमं विभुः । पितामहो मधीक्येन भूतानि एष मा विरम ॥ १० ॥ हरिकेशस्तपत्युक्त्वा भूतानां दोषदर्षिवात् । दधिक्कालं तदस्तेपे मन्वोऽस्मसि महातपा ॥ ११ ॥ सुमहान्तं नतः कालं प्रतीक्ष्येन पितामह । ज्ञष्टारं सर्वभूतानां कसर्वं मसापयम् ॥ १२ ॥ सोऽब्रवीत् पितरं दृष्ट्वा गिरिशं सुप्तमम्भ किं यदि मे नाश्रयो

कर्म किया जो अरुले हरुपुत्रने हमारे सब पुत्रादिकोंको युद्धमें मारा ॥ ५ ॥ श्रीभगवान् बोले कि निश्चय करके! अश्वत्थामा उस अविनाशी शिवजी के अरण्य में गया जोकि वड़े देवताओंके ईश्वरों काभी ईश्वरहै उग हुंभे अकेलेने बहुतोंको मारा । ६ । महादेवजी प्रमथहोकर देवभागशो भी देसक्ते हैं और उसपराक्रमकोभी वह गिरीश देसक्ताहै जिसके द्वारा इन्द्रकोभी नाशकरे । ७ । हे भरतर्षभ मैं महादेवजी को मुख्यमेंत जानताहूँ और उनके जो नानाप्रकार के प्राचीन कर्म हैं उनको भी श्रेष्ठ रीतिसे जानताहूँ । ८ । हे भरतर्षभ यह शिव सब जीवमात्रोंका आदि मध्य और अन्तैह और सब संसार इनी के प्रताप से वेष्टा करता है । ९ । इस प्रकार सृष्टिकी उत्पत्ति करनेके अभिलाषी समय त्रिगुणात्मक ईश्वरने सबके आदि तमोगुणरूप रुद्रजी को देखकर कहाकि जीवोंकी उत्पत्ति में विलम्ब न करो १० तब वड़े तपस्वीजीवोंके दोष जाननेवाले शिवजीने अङ्गीकार करके जलमें डूबकर बहतकालतक तपकिया इस तपेपछे ईश्वरने बहुतकालपर्यन्त उनकी प्रतीक्षाकरके सब जीवोंकेस्वामी रजोगुणरूप प्रजापतिको मनमें उत्पन्न किया । १२ । वह जलमें

pad who could slay hundreds of thousands, were destroyed by him How could he slay Dhrishtadyumn whom even Drona could not oppose! By what deed he had power over my soul and others." Since Bhagwan (Krishna) said, "Surely, Ashwathama sought the protection of immortal Saiv the lord of gods, and was therefore able to slay so many. Mahadev, when pleased, can give godhood. He can give a prowess capable of destroying Indra. I know Mahadev and his deeds done in the days of yore. He is the beginning, the middle and the end of all creation. All the world lives by his glory. Desirous of creating the world the almighty Ishwar asked Rudra to create all beings without delay. 10. Saiv took the work on himself and remained long merged in water to perform asceticism. Ishwar waited long for him and then created Prajapati from his thought.

स्यन्वक्षतः अस्याम्बहं प्रजाः ॥ १३ ॥ तमब्रवीत् पितानास्ति स्वदन्य. पुत्रोप्रजः ।
 स्यात्पुरेव जले मग्नो विभ्रन्धः कुरु वैकृतम् ॥ १४ ॥ स भूगान्यसृजत् सप्त दक्षादींश्च
 प्रजापतीन् । वैरिमं व्यकरोत् सर्वं भूतप्रामं चतुर्विधम् ॥ १५ ॥ ताः सृष्टमात्राः क्षुधिता
 प्रजाः सर्वाः प्रजापतिम् । विमश्लयिषयो राजन् सहसा प्रादघक्षदा ॥ १६ ॥ स भय्य
 माणाङ्गाभ्यर्थां पितामहमुपाद्रवत् । आश्वो मां भगवांश्चातु वृत्तिरासां विधीयताम्
 ॥ १७ ॥ ततस्ताश्वो ददावज्जमोषधी. स्याथराणि च । जहमानि च भूतानि दुर्धळानि
 वडीवक्षाम् ॥ १८ ॥ विहिताग्नाः प्रजास्तास्तु जग्मुः सृष्टा वधागतम् । ततो वपुधिरे
 राक्षन् प्रीतिमत्यः स्वर्गोनिपु ॥ १९ ॥ भूतप्रामे विवृषे तु तुष्टे लोकगुरावपि । उदति
 वृक्षकापेठः प्रजाभेमा ददर्श नः ॥ २० ॥ बहुरूपाः प्रजाः सृष्टा विवृशाम् स्वते

हूवेहुये क्षिपर्जाको देखकर अपने पितासे बोलाकि जां घुम्तसे प्रथम उत्पन्न होने
 बाका दूसरा नहीं है इसहेतुसे मैं सृष्टिको उत्पन्न करताहूँ । १३ । ब्रह्माग्निने कहा
 तेरे शिवाच दूसरा पुरुष प्रथमसृष्टि नहीं है यह शिबजी जलमें हूवेहुये हैं विश्वास
 करनेवालीसृष्टिको उत्पन्नकरो । १४ । उसने दक्षादिसात प्रजापतियोंको उत्पन्न किया
 और सवधीवोंकोभी उत्पन्नकिया जिनकेद्वारा इसचारप्रकारकी खानवाले जीव
 समूहोंको उत्पन्न किया । १५ । हे राजा तबवह सवसृष्टि उत्पन्नहोतेही क्षुधासे
 महाभय कोकर प्रजापति के प्रक्षुण करनेकी इच्छासे दौड़े । १६ । वह प्रजापति
 अपनी रक्षाके निमित्त पितामह के पासगया और कहा कि हे भगपन् उनलोगोंसे
 मेरी रक्षाके लिये उनकी जाविका विचारकरो । १७ । इसकेपीछे पितामहनेउनकी
 क्षीयिका के लिये अन्न औषधी और स्याथरजीवदिये और बलबाम छोगोंके अर्थ
 वेष्टाकरनेवाले और निर्बल जीवदिये । १८ । वह उत्पन्न होनेवाली सृष्टि जिनके अर्थ
 अन्न विचार क्षियागयाया अथमे स्थानों को गई हे राजा इसकेपीछे अपने उत्पत्ति
 स्थान माता और पिता आदिक में प्रीति करनेवाले वह प्रजापति लोग घृद्धियुक्त
 हुये फिर जीवसमूहों के वृद्धिपाने और लोकगुरुके भी असन्नहोनेपर वह महापुरुष
 जलमेंउठे और उन सृष्टियों को देसा । २० । बहुत रूपवाली सृष्टिके लोग उत्पन्न

Seeing Shiv merged in water, he said to his father, "Because I am
 the first-created being, I shall bring forth all creatures." Brahma said,
 "Really there is no other being born before you, for Shiv is merged in
 water; you may bring forth all creatures. So he brought forth the seven
 Prajapatis, Daksh and others, who brought forth creatures of four
 sorts. 15, All the creatures, as they were born, became oppressed
 with hunger and ran towards the Prajapati to eat him up. He sought
 protection of Brahma and asked him to provide them food. Then the
 grandfather created food, medicines and other plants as well as weaker
 creatures for the use of the stronger. Having got food, they went to
 their own places. The Prajapatis loving their parents, multiplied in

अस्य । क्रुद्धोऽधःमगधाप्रपौ लिङ्गं स्वच्छात्-विष्यत ॥ २१ ॥ ततः प्रविश्यं तथा समो
 तथैव प्रत्यतिष्ठत । तमुच्चाञ्छादयथो ब्रह्मा वचोभिः शमयन्निव ॥ २२ ॥ किं कृतं सलिले
 सर्वं निरकालविषयेन ते । किमर्थं त्वं दमुत्पाद्य लिङ्गं समो प्रवेदितम् ॥ २३ ॥ सोऽप्र
 धात् जातसंरम्भस्तथा लोकगुरुमुदस । प्रजाः सृष्ट्याः परेणेमाः किं करिष्याम्यनेन वै
 ॥ २४ ॥ तपसाधिगतं चान्ते प्रजार्थं मे पितामह । अपश्य पविषसेऽनन्वयेयं सततं
 प्रजाः ॥ २५ ॥ एवमुक्त्वा स सक्रोधो जगाम विमता भवः । गिर्यमुञ्जवतः पार्श्वं तप
 स्स्थु महातपाः ॥ २६ ॥

इति श्री सांस्कृतदर्शनि पौर्वकपर्वाणि कृष्णयुधिष्ठिर संवादे सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥



होकर अपने तेजसे वृद्धियुक्तये तब भगवान् रुद्रजी क्रोधयुद्धये और अपने किंगको
 भीकाटकर पृथ्वीपर इसनिमित्त गिराया । २१ । वह जैसेदृष्टा उत्पीनकार पृथ्वीपर
 नियतदृष्टा वचनोंसे शान्त करते अबिनाशी ब्रह्माजी बोले । २२ । हे रुद्रजीवहुव
 काल पर्यन्त अपने जलमें निवास करके क्या किया और किसनिमित्त इसलियेकी
 उल्लाहकर पृथ्वी में नियत किया है । २३ । वह लोकगुरु महाक्रोधित होकर गुरु
 से बोले कि यह सब सृष्टि उत्पन्न होगई है अब मैं इसलिये क्या करूंगा । २४ ।
 हे पितामह मेरे तपने प्रजाके निमित्त, अन्न प्राप्तहुआ और आपसी सदैव अपने
 रूपान्तरको करती हैं गी जिससे कि सृष्टि सदैव होतीरहे । २५ । वह विमता
 और क्रोधयुक्त बड़े तपशी रुद्रजी इसप्रकारसे कहकर मुजबत पराहके सपीप
 तपकरनेको गये २६ ।

large numbers. When the creatures were thus increasing and Brahma was pleased in his mind, Shiv came out of water and saw the creation
 20 He saw the world full of creatures and being much enraged cut
 asunder his male organ and dropped it on the earth. It stood up
 erect as soon as it was cut down. Then wishing to appease his wrath
 Brahma said, "What have you done by staying so long under water
 and why have you cut and erected this organ of yours?" Then Shiv
 gave him the following reply in anger, "The world has been created
 (in spite of me). What shall I do with this thing? The food has been
 created by my own asceticism and medicinal herbs will continue to change
 forms and give nourishment to the world." Having said this, the great
 ascetic, dejected in mind, went to perform asceticism near Munjvat

भगवानुवाच । ततो देवयुगेतीति देवा वै संमकल्पयन् । यत्र वेदप्रमाणेन विधिषु
 दुमत्सवः ॥ १ ॥ कल्पयामासुरथ ते साधनानि हवींषि च । भागार्हा देवताश्चैव
 यिं द्रव्यमेव च ॥ २ ॥ ता वै रुद्रमजानन्वो याथातथ्येन देवताः । नाकम्परन्त
 स्य स्थाणोर्भागं नराधिप ॥ ३ ॥ साऽकल्प्यमानेभागे तु कृत्तिषासा महेऽमरेः ।
 साधनमन्विच्छन् धनुरादौ ससज्जह ॥ ४ ॥ लोकयज्ञ क्रियायज्ञो गृहयज्ञ
 आत्तन । पञ्चभूतमयोयज्ञो नृगज्जन्मेषपञ्चमः ॥ ५ ॥ लोकयज्ञैर्नृपज्ञैश्च कपर्दी विदधेधनुः ।
 मृष्टमभूत्तस्य पञ्चकिष्कुप्रमाणतः ॥ ६ ॥ वपटकारो मघज्ज्यातुघनुपत्तस्य भारतायज्ञा
 नि च पत्वारि तस्य सगहनेऽभवन् ॥ ७ ॥ सतः क्रुद्धो महादेवस्तदुपादाय कार्मु
 ष । साज्जगामाथ तत्रैव यत्र देवाः समीजिरे ॥ ८ ॥ मतात्तकार्मुकं हृष्ट्वा ब्रह्मणा
 णमथयम् । विष्यथं पूर्णधी देवी पर्वताश्च चकम्पिरे ॥ ९ ॥ न वधौ पवनश्चैव नाग्नि

अध्याय १८ ॥

श्रीभगवान् बोले कि सतयुगके अन्त होनेपर विधिके पूजनकरनेके अभिलाषी
 देवताओं ने वेदके प्रमाणमे यज्ञको विचार किया । १ । फिर उन्होंने सत्र साधनों
 को घनेशों को भागके योग्य देवताओं को और यग्यकी द्रव्योंको कल्पना किया
 । हे राजः मूलसमेत रुद्रजी को न जाननेवाले उन देवताओं ने देवता रुद्रजी
 के भागको विचार नहीं किया । २ । यज्ञमें देवताओंसे भागका विचार न करने पर
 त्रिभुक्तिके नाशको चाहनेवाले उन रुद्रजीने प्रथम धनुषको उत्पन्न किया । ४ । लोक
 यज्ञ, क्रियायज्ञ, गृहयज्ञ, पञ्चभूत नरयज्ञ, इन चारप्रकार के यज्ञों में यहसब जगत्
 नियत है । ५ । रुद्रजीने लोकयज्ञ और नरयज्ञों से धनुषको तैयार किया उनका
 उत्पन्न कियाहुआ धनुष मार्गिमें पांच हाथहुआ । ६ । हे भरतवंशी उसधनुष की
 मत्स्यंका वपटकार मत्स्यके वातनारूपहुआ यज्ञोंके चारों अंग उसकी हृदयारूपहुआ ।
 सतः पर्वत पीछे क्रोधयुक्त महादेवजी उसधनुषको लेकर वहां गये जहांपर कि देवता
 लोग यज्ञ कररहेये । ८ । उस धनुष उड़ानेवाले अग्निनाशी ब्रह्मचारी को देखकर
 हृष्ट्वा देवी पीढ़ेव हुई और पर्वत कम्पायमान हुए । ९ । वायु नहीं बली और

CHAPTER XVIII

Shroo Bhagwan said, ' At the end of Satyug the gods intended
 to perform a sacrifice according to the Vedic rites in honor of
 Brahma. They collected all materials and set apart gods' portions.
 Not knowing Rudra well, they dedicated nothing to him. At this,
 Rudra created the bow to destroy the sacrifice of gods. The world
 exists by four sorts of Sacrifices known as Lok-yagya, kya-yagya,
 Griha-yagya and Panchbhut nar-yagya. 5. Rudra prepared the
 bow from lok and nar yagya. It was five cubits in length. Its
 string was made of Vashatkar and it was exceedingly strong. Armed
 with that bow Rudra went to the place of sacrifice. The earth and
 mountains shook at the sight of that immortal Brahmin armed

एतज्ज्वाल वैधितः । व्यभ्रमञ्चपि स्वीयन् दिवि नक्षत्रमण्डलम् ॥१०॥ न चमो मास्कर
 श्यापि सोमः श्रीमुक्तमण्डल । तिमिरे नाकुलं तर्पमाकाशञ्चाभवद्गतम् ॥११॥ अग्नि
 भूतास्ततो देवा विषयाप्त प्रजापिरे । न प्रत्यभाञ्च यज्ञः स देवतास्त्रेसिरे तथा ॥१२॥
 ततः स यज्ञं विष्याद्य रौद्रेण हृदि पणिजा । अपप्रान्तस्ततो यज्ञो मृगो भूत्वा सपा
 धकः ॥ १३ ॥ स तु तेनैव रूपेण दिग् प्राप्य प्यराजत । अग्निपमानौ रद्रेण युक्ति
 छिद नमस्तले ॥ १४ ॥ अपक्रान्तो गतो यज्ञे । सज्ञा न प्रत्यभात् सुराम् । न हस्तैषु
 दैवेषु न प्राणायति किञ्चन ॥ १५ ॥ प्यराजत । तद्वितुर्धाह भगस्य तयने तथा । पूज्यस्य
 दशनान् कुक्षो धनुष्कोट्या व्यशातय ॥ १६ ॥ प्राद्वयन् ततो देवा यज्ञांगानि च
 सर्वशः । केचिच्चत्रैश्च घूर्णन्तो गतासन्न इवाभवत् ॥ १७ ॥ स तु विद्राव्य तत्सर्वं शिति
 षण्ठो बहस्पद्य । अजप्य धनुष्कोटिं दशोद्य विबुधास्ततः ॥ १८ ॥ ततो वागमरैवका

ट्टियुक्त अग्नि ज्वलित नहीं हुई और स्वर्गमें व्याकुल नक्षत्रमण्डल भ्रमण करने
 लगे । १० । सूर्य और शोभायमान चन्द्रमण्डल भी मकाशमान नहीं हुये तबमाकाश
 अन्धकार से व्याप्त हुआ । ११ । इसके पीछे अनाकुल देवताओंने दिपयोंको नहीं
 जानीं सब वह यज्ञ गुप्तहुआ औरदेवता भयभीत हुये । १२ । इसके पीछे उन्होंने
 यज्ञको रुद्रवाणसे हृदयपर घायकिया इसके पीछे वहयज्ञ मृगरूप होकरअग्निसे
 भागगया । १३ । हेयुधिष्ठिर फिरवह अशिरपमे रश्मियों पाकर आकाशमें शोभाय
 मान हुआ फिर कालात्मः रुद्रनेते पीछा किया हुआ वह यज्ञ फलके भोगके पीछे
 स्वर्गसे पतित हुआ १४ इसके पीछेयज्ञके भागनेपर देवताओंका ज्ञान भ्रष्ट नहीं
 हुआ और देवताओंके अचेत होनेपर कुछनहीं जानागया १५ अत्यक्त परमेश्वरने
 सविता अर्थात् यज्ञ करनेवाले के शरीर की धुजाओंको और भगके नेत्रोंको पूषाके
 दाँतोंको पूर्वोक्त धनुषकी काँटि से गिराया १६ । इसके पीछेदेवता और यज्ञोंके
 सब अङ्गभाग और कितनेही यज्ञ घूमतेहुपनिर्जायके समान हुये । १७ । इन रुद्रजी
 ने उस सब यज्ञको अङ्गोंसेभग भगाकर ईसकर धनुषकी काँटिको निष्कर्ष करके
 देवताओंको रोका अर्थात् लोक और शरीरकी प्रीतिसे प्रयत्नकिया । १८ । इसके

with bow. The wind did not blow, fire ceased to burn and stars
 began to turn round restlessly. 10. The sun and the moon lost
 their splendour and the sky became dark. The gods did not know
 what to do in their terror-stricken state and the sacrifice vanished.
 Rudra pierced the sacrifice with his arrow and it fled away with a
 in the likeness of a deer. It stood in the sky in that shape, chased
 by Rudra it fell down again at the lapse of its merits. The gods lost
 their senses and did not know what to do. Parmeshwar cut the arms
 of Savita, the eyes of Bhrigu and the teeth of Pusha with the point
 of his bow. 16 The gods scampered in terror, while some became
 motionless like manmade things. Saiv with a smile checked the
 and removed his bow and departed from the string the bow

वर्षा तस्य धनुस्तोच्छिन्नत् । अथ तत् सहस्रा राजान् । १९ ॥ ततो
 विद्युन्मं देवा द्रवश्रेष्ठमुपागतम् । शरणं सह यद्देन प्रसादञ्जाकरोत्प्रभुः ॥ २० ॥ ततः
 ब्रह्मणो भगवान् स्थाप्य कोपं जलाशये । स जलं पायको भूया शोषयत्यनिशं प्रभो
 ॥ २१ ॥ भगस्य नयते ज्यै वाहू च भवितुना ग । प्रादात् पूषणश्च दशानात् पुनर्यज्ञांश्च
 पाण्डव ॥ २२ ॥ ततः सुस्थमिदं सर्वं यभूव पुनरेव हि । सर्वाणि च हवींष्यस्य देवा
 मागमकलयन् ॥ २३ ॥ तस्मिन् शुद्धे सवत् सर्वमस्थस्त्वं भुवनं प्रभो ॥ प्रसन्ने च पुनः
 स्वस्थं प्रलक्षोस्य च वीर्यवान् ॥ २४ ॥ ततमे निदताः सर्वे तव पुत्रा महारथाः ।
 जन्वे च वहवः शूरः पाञ्चालाः सपदाशुगाः ॥ २५ ॥ न तन्मनसि कर्त्तव्यं न च
 वैद्रीणिगां कृतम् । महादेवस्तादः स कुर्वन्मनन्तमम् ॥ २६ ॥

इति सौप्तिकपर्वणि ऐषिकपर्वणि, कृष्णयज्ञीष्टरसंवादे अष्टादशोध्यायः १८ ॥

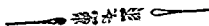
पीछे देवताओंकी कहीहुई क्षणीने उनकेधनुषकी प्रत्यञ्चाको जुदाकिया हेराजा
 फिर प्रत्यञ्चासे जुदा वह धनुष अकस्मात् कुछ चलायमानहुआ । १९ । इसके
 पीछे यज्ञीमेत सब देवता उस देवताओं में श्रेष्ठ और धनुषमे रहित ईश्वरकीशरण
 में गये और प्रभुने कृपाकरी । २० । इसकेपीछे भगवानक्रोध त्रिगुणरूपको समुद्र
 प्रज्ञानचित्तमें निपतकरके प्रसन्नहुये हेतुमर्थ प्रकरोः । अस्मान् अग्निहोकर जलको
 पान करताहै । २१ । हे पाण्डव फिर भग देवताके मन्त्रों को और सविताकी
 ० को पूषा के दांतोंको और यज्ञीकी दिवा अर्थात् सात्विकयज्ञ जारीहुआ
 १२१उमके पीछे यह सब जगत् फिर स्निग्ध हुआ और देवताओंने सब हृष्यो
 को उसका भाग निपत किया अर्थात् सब कर्म ईश्वरार्पण किये गये । २३ । हे
 ० धृषिष्ठिर उसके क्रोधयुक्त होनेपर सब संसार व्याकुलहुआ और प्रसन्न होनेपर
 फिर स्थिर हुआ वह पराक्रमी दिवजी उसके ऊपर प्रसन्नहुये । २४ । उस कारण
 से आपके वह सब महारथी पुत्र और धृष्टद्युम्न के पीछे चलनेवाले बहुतमे अन्यत्र
 ० र मारेगये । २५ । वह चित्तमें नहींधारण करना चाहिये उसको अश्वत्यामाने
 नहीं किया । अर्थात् सब ईश्वरके आधीनहै शोक न करना चाहिये महादेवजी की
 प्रसन्नतासे निस्तन्देह शीघ्रतापूर्वक करकेके योग्य वधोंको करो । २६ ॥

suddenly jumped a little Then all the gods with the sacrifice sought
 refuge of Shiv and he was merciful. 20. Then he placed his anger in
 the ocean of ignorant mirde. It eats the mind as fire does water.
 Then he restored the limbs of gods and the sacrifice began. Then the
 world became satisfied and the gods set apart his share. The world
 was agitated with his anger and was restored to equilibrium at his
 pleasure. Shiv was pleased with Ashwathama and therefore he
 would slay Dhrishtadyumna and your sons. It was not the work of
 Ashwathama but that of Shiv and therefore you should not be
 sorry. " 26.



महाभारत

॥ अथ जलप्रादानिकपर्व ॥



नारायण नमस्कृत्य नरञ्चैव नरोत्तमम्
देवीं सरस्वतीञ्चैव ततो जपमुदीरयत् ॥

जनेमजय उवाच हते दुर्योधने चैव हते सैन्ये च सर्वश । धृतराजो महाराज
श्रुत्वा किमकरोमुने ॥ १ ॥ तथैव कौरवो राजा धर्मपुत्रो महामना । कृपप्रभृतयश्चैव
किमकुर्वन्ते ते त्रय ॥ २ ॥ अश्वत्थाम्न श्रुत कर्म शापादन्योन्यकारितात् । वृत्तान्त
मुत्तरं ब्रूहि यद्मानव सञ्जय ॥ ३ ॥ वैशम्पायन उवाच । हते पुत्रशते दीन छिन्न

अथ स्त्रीपर्व ।

अध्याय ॥ १ ॥

श्रीनारायण और नरोत्तम नर को आर सरस्वती देवीको नमस्कार कर के
फिर जयनाम इतिहास को वर्णन करता हूँ जनेमजय बोले कि हे मुनि
दुर्योधन के मरने और सब सेनाके नाश होजाने पर महाराज धृतराष्ट्र ने सुनकर
क्या किया । १ । उसीप्रकार धर्मपुत्र राजा युधिष्ठिर ने और उन कृपाचार्यादिक
वीरों ने क्या किया । २ । आपके कहने से अश्वत्थामा का कर्म सुना परस्पर
शाप देनेमे पीछिका जो वृत्तान्त संजय ने कहाँ उसको आप मुझे वर्णन कीजिये
। ३ । वैशम्पायन बोले कि सौ पुत्रों के मरने पर दृष्टी शाखाओं के वृत्त ममान

STRIPARY

CHAPTER I

Having bowed down to Narayana, Nar the best of male beings and goddess Saraswati, let us undertake the history of the great victory. Janmejaya said, "What did Dhritrashtra do at the death of Duryodhan and the destruction of all the army? What did Yudhishtira and the three warriors, Kripacharya and others do? I have heard of the deed of Ashvathama, what was the state of things after he was cursed?" Vaishampayan said "At the death of his hundred sons,

शाक्यमिव दुग्धम् । पृथ्वीकान्निभस्तान्धं धृतराष्ट्रं मञ्जीपातिम् । ध्यानसूक्ष्मत्वमापन्नं
 चिन्तया तामिच्छुः ॥ ४ ॥ अस्मिन्मय महा प्राक् रंजयो धापयम
 ब्रवीत् । किं शोचति महाराज नान्ति शोके सहायता ॥ ५ ॥ अक्षौ
 द्विषो हताघाटी वश धैव विशाम्पने । निजर्त्तनेयं धरुमती शूभ्या संप्रीति केशला ॥ ६ ॥
 नानादिग्ध्य समागम्य नानादेश्या नराधिपाः । साहिताल्लघ पुत्रेण सर्वे वै निषण्णताः
 ॥ ७ ॥ पितृणां पुत्रोन्नाणां शतीनां सुहृदान्तयाम्गुरू माञ्चानुपूर्वेण भेतकाचार्याणि कारय ॥ ८ ॥
 वैशम्पायनं वधात् । हतपुत्रो हतामात्यो हतसर्वसुहृज्जनः पपातमुधिदुर्धपो घाताहतश्च
 हुम् ॥ ९ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । हतपुत्रो हतामात्यो हतसर्वसुहृज्जाः । पुत्री नृगं मधिष्यामि
 विचरन् पृथिवीनिभाम् ॥ १० ॥ किन्तु वन्धुनिहीनस्य जीवितेन मयाच वै । ह्यनपक्षस्य
 इष मे जगज्जीगंस्य पक्षिणः ॥ ११ ॥ हृतराज्यो हतसर्वान् चक्षुश्च वै तदा । नन्नाजप्ये

दुखी और पृथ्वीक से पीड़ावान् ध्यान मीनना युक्त चिन्तामें हृदयमें पृथ्वी के
 स्वामी महाराज धृतराष्ट्र के पाप जाकर संजयने यह वचन कहा हे महाराज क्या
 शोचने हो शोकमें महायता नहीं होनक्ती है । ५ । हे राजा अठारह अक्षौहिणी
 सेना मारी गई अब यह पृथ्वी सेना के लोगों से और राजाओं से रहित होकर
 मित्रों से विहीन है । ६ । क्योंकि नानादेशके राजाओं ने बहुत दिशाओं से
 आकर सजने आपके पुत्र के साथ नाशतो पाया । ७ । अब आप अपने पुत्र
 पौत्र ज्ञाति सुहृद् और सब कौरवोंके क्रिया कर्मकी कराइये ८ वैशम्पायनबोले कि
 पुत्र पौत्रदिकों के मरने से पीड़ावान् बड़ा अजेय धृतराष्ट्र उम शोक कारी वचन
 को सुनकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जेभोके यापुसे तडित दृक्ष गिरपड़ताहै । ९ ।
 धृतराष्ट्रबोलेकि जिनके पुत्र मंत्री और सब सुहृज्जनमारोगये ऐसा मैं होकर सम्पूर्ण
 पृथ्वीपर विचरूंगा १० अथकटे पक्षबाले पक्ष के समान मुक्तद्व दशासे दुर्बल
 बांधवोंसे रहित के जीवन से क्या प्रयोजनहै हे महाभाग राज्य सुहृज्जन और नेत्रों
 से रहित मैं ऐसा शोभित नहींहूंगा जैसेकि विना किरण वाला सूर्य अशोभित

Dhritrashtra, full of grief, like a tree destitute of all branches, was sitting in deep meditation and silence Sanjaya came to him and said, "What are you thinking about, Emperor? Grief can be of no help. 5. Eighteen akshauhinis have been destroyed and the earth has become destitute of warriors, prince and friends. Princes of different lands came here and were destroyed with your son. You have now to perform the funeral rites of your sons, grandsons and other Kauravas." Dhritrashtra fell down on the earth like a tree uprooted by wind and said, "I shall now roam on the earth destitute of sons, friends and advisers. 10. What is the use of living like a featherless bird in my old age? Destitute of kingdom, friends and eyes, I shall look in glorious like the sun without his rays. I did not act upon the advice

हाप्राप्त क्षीणरश्मिरिवांशुमान् ॥ १ । न कर्तं सुहृदां वाक्यं जामदग्न्यस्य जल्यनः ।
 नरदस्य च देवर्षेः कृष्णद्विपायनस्य च ॥ १३ ॥ स्वभामध्ये च कृष्णेन यत् धेयोभिहितं
 तम। बले वैरेण पे राजन् पुत्र संनृह्यतामिति । तन्न वाक्यमरु वाहं भूशं तप्यामि
 दुर्मतिः ॥ १४ ॥ न हि श्रोतास्मि मांस्मस्य धर्मयुक्त प्रमथितम् । दुष्टोचनस्य च तथा
 वचनस्येय नर्हतः ॥ १५ ॥ तुःनासमयधुं श्रुत्वा कर्णस्य च विपर्ययम् । द्राण सूर्य
 परामञ्च हृदयं मे विदीर्यते ॥ १६ ॥ न स्मर म्यात्मनः किञ्चित् पुरा सञ्जय दुष्क
 तम् । वस्येह फलमद्येह मया मूढेन मुञ्चते ॥ १७ ॥ नूनं व्यपकृतं किञ्चिन्नमया पूर्वेषु
 जन्मसु । येन मा तु जन्मगेषु घाता कर्मस्य युक्तवाम् ॥ १८ ॥ परिणामश्च घयसः सर्व
 वाञ्छयेद्य मे । सुहृन्मिप्रविनाशश्च देवयोगादुपागत । कोन्वदि बुःखिततरो मत्तोऽन्यो
 हि पुमाश्च भुवि ॥ १९ ॥ तन्मामद्यैव पश्यन्तु पाण्डवास्तिशितव्रतम् । विवृत्तं ब्रह्मलोकस्य
 शिष्यवशात्मास्थितम् ॥ २० ॥ वैशम्पायन उवाच । तस्य लालप्यमानस्य बहुशोकं

होताह १२ परशुरामजी देवऋषिनारदजी और व्यासजी इन शुभचिन्तकोंके कहे
 हुये वचनोंको नहींकिया । १३ । सभाके मध्येमें गा कृष्णजीने मेरेकल्याणका कर
 ने बाछा यह वचन कहाथा कि हेराजा शत्रुताकोत्यागो और अपने पुत्रको बन्धन
 में करो उनके वचनोंको भी न करके मैं दुर्बुद्धी अव कठिन दुःखको पाताहूँ और
 धर्ममे संयुक्त यीष्मजी केभी वचनको मुझअभागे ने नहींसुना राजाओंमें दुष्टों
 वनका नाश बुझासन का मरण कर्णका विपरीत मरण और द्रोणाचार्यरूप सूर्य
 के ब्रह्मको इनकममेरा हृदय फटा है । १६ । हेसंजय पूर्वसमयके कियेहुये
 अपनेकुछ वापों को नहींमानताहूँ जिसके किफनको अब मैं दुर्भागी भोग
 रहाहूँ । १७ । निश्चय कर के मैंने पूर्व जन्मों में वड़े पाप किये है जिसके कारण
 ते ईश्वर ने मुझको दुःख ब्रह्म करनेवाले कम्मों में प्रवृत्त किया । १८ । मेरी
 अवस्थाका अन्तिम भाग पुत्र पौत्रादिकों का नाश और सुहृद वंधुओं का मरना
 देवयोगधे है धूमरी रीतिते नहीं है इस ले कमें मुझे अधिक दुखी दूमरा कौन
 पुरुष है । १९ । हे नेजमत यह सब पाण्डव लोग मुझको उम व्रतचोक के मित्ने
 और बड़े मार्गमें नियमहुये को देखेंगे । २० । वैशम्पायन बोले सञ्जयने उम

of Parashurata, Narad and Vyas, my w'll wisher. Krishna told me
 to give up enmity and to casta my son in prison, but I did not act up
 on his advice and have fallen into this trouble. I did not give ear
 even to the advice of Bhishm. My heart breaks to hear of the death
 of Duryodhan, Dushasan, Katan and D... 16 I donet know for
 what sins of my previous life I am being punished. Surely I have
 committed grievous sins for which I have fallen into this misery. The
 great destruction of Iustman and fierds in my old age could not be
 caused but by I ate Who can be more full of misery than me? The
 Pandavas will now see me preparing for the next world." 20 Vai-

वितन्वतः । शोकापद् नरेन्द्रस्य सङ्ग्रयो वाङ्मत्तवीत् ॥ २१ ॥ शोकं
 गान्धर्व्यपनुद भुतास्ते घेदनिश्चयाः । शास्त्रागमाश्च विविधा वृद्धेभ्यो नृपसत्तम ।
 स्वर्ज्ये पुत्रशाकांत यद्बुद्धिमुनयः पुग ॥ २२ ॥ यथा यौवनजं दर्पमास्थिते ते मुते
 नृप । न त्वया सुहृदां वाच्यं ब्रह्मनाम पचारितम् । सार्धं च न हृतः कश्चिदलुब्धेन फल
 गृहिणा ॥ २३ ॥ असिनेषैकवारैण स्वयुद्धेषा तु, विभेष्टिदम् । प्रायशोऽवृत्तसम्पत्ताः
 संततं पर्युपासिताः ॥ २४ ॥ यस्य दुःशान्तो मन्त्री राधेषश्च दुरात्मवान् । शकुनि
 श्येव दुष्टात्मा चित्रसेनश्च दुर्मतिः । अन्यश्च येन धर्मं शल्यभूतं हृतं जगत् ॥ २५ ॥
 कुठुब्धस्य भीष्मस्य गान्धार्थो विदुरस्य च । द्रोणस्य च महाराज कृपस्य च शरद्वजः
 ॥ २६ ॥ कृष्णश्च च महाराजो नारदस्य च भीमता । प्रथीणाश्च तथान्येषां व्यास
 स्या मिततेजसः । न ह्यन तेन वचनं तव पुत्रेण भारत ॥ २७ ॥ अत्र बुद्धिरहंकारी

विज्ञाप करनेवाले और अनेक प्रकारसे शोकके विस्तार करनेवाले राजाधृतराष्ट्र के
 शोकका दूर करनेवाला वचन कहा कि (२१) हे राजा शोकका दूर करो तुमने
 बहुतने धर्मके निश्चय मुनेहैं हे राजाओं में श्रेष्ठ तुमने दृष्टों से भी अनेक प्रकारके
 शास्त्र मुने हैं कि पूर्वसमयमें बुनके शोकसे राजासृञ्जय के पीढ़ावान् होनेपर मुनि
 योने जो कहा । २२ । और अिसप्रकार तरुणता के अहंकारमें आपके पुत्रदुर्षोधन
 के नियत होनेपर आपियोने जोकहा उसको भी सुना । २३ । जोतुमने वांचांलाप
 करनेवाले अपने शुभचिन्तकोंके वचनोंको नहीं अंगीकार किया रोनी और हतबुद्धी
 होकर तुमनेकोई अपना प्रयोजन नहींकिया । २४ । आपनेकेवल एकधाररखनेवाली
 तलवार के समान अपनी ही बुद्धिसे सभ कर्मकिये और बहूधा दुराचारी लोगोंको
 सलाहकार करने के निमित्त समीप बैठाया २५ दुइशासन दुर्बुद्धी कर्ण बड़ा दुष्ट
 त्या शकुनी दुर्मति चित्रसेनऔर शल्य किसके मन्त्रीहैं अिस शरभने सभ जगत्को
 भालरूप किया । २६ । हे महापाहु महाराज भरतवंशी धृतराष्ट्र आपके उस पुत्रने
 कौरवोंके दृढभीष्म पितामह, गान्धारी, विदुर, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, श्रीकृष्णजी
 बुद्धिमान् नारदजी और बहूतेजस्वी व्यासजी आदिअन्य २ आपियोका भीवचन
 नहींकिया जोकि निर्बुद्धी अहंकारी सदैव युद्धको कषता निर्दोष अजेयपराक्रमी

shampayan said, that Sanjays consoled the monarch in the following
 words:—" Cease your grief, king You have heard many religious
 precepts from old men as well as that which the munis said to Srinjaya
 who was oppressed with grief for his son. You also heard the talk
 of the sages about your son Duryodhan's pride. You did not attend
 to the advice of your well wishers and have therefore thrown your-
 self into misery. Like an edged sword you were self-willed and kept
 company with wicked men like Dus'asan, Karan, Shakuni, Chitra-en
 and Shalya the the n of the world. Your son gave no ear to the
 advice of old Bhishm, Gandhari, Drona, Krija, Sbri Kriahr, wise
 Narad, glorious Vyas and ot/ or sages. He was unwise, proud, war-

स्य युद्धमिति भुवन् । क्रूरो दुर्मयंजो नित्यमसत्पुत्रश्च धीर्यवान् ॥२८॥ श्रुतवानसि
 वाची सत्यवाञ्छिव निर्यदा । न मुह्यन्तीदृशा सन्तो भवाद्दशाः ॥ २९ ॥ न धर्मं सत्
 त्वं कश्चिन्निर्यथं युद्धमिति भुवन् । दायिता, द्वित्रियाः सर्वे शत्रूणां घर्षितं यथा ॥३०॥
 ष्यस्वो हि स्वमप्यासीर्नक्षत्रं त्रिदिव्यदुक्तवान् । युद्धेरेण त्वया मारदतुलया न समं
 तः ॥ ३१ ॥ आदविव मनुष्येण घर्षितव्यं यथाक्षमम् । यथा नातीतमर्थं वै पश्चात्ता
 नं पुज्यते ॥ ३२ ॥ पुत्रगृह्यत् त्वया राजन् प्रिय तस्य चिकीर्षितम् । पश्चात्तापमिमं
 म तौ न त्वं शोषितुमर्हसि ॥ ३३ ॥ मधु यः केवलं हृष्टः प्रपाति तानुपदयति । स
 ह्यो मधुलोमेन शोषत्येवं यथा भवान् ॥ ३४ ॥ अर्थात् शोचन् प्राप्नोति न शोचन्
 विन्दते फलम् । व शोचन् द्विप्राप्नोति न शोचन् विन्दते परम् ॥ ३५ ॥ स्वयमुत्पाव
 क्तिर्वाग्निं बल्लेण परिवेष्टयन् । दह्यमानो मनस्तापं भजते न स पण्डितः ॥३६॥ त्वयैव

और सदैव अशान्ततासे असंतुष्टया । २८ । तुम सदैव शास्त्रज्ञ और शास्त्रके रमरण
 रखनेवालेबुद्धि के स्वामी और सत्यवक्ताहो ऐसे आप सरीखे बुद्धिमान सन्तलोग
 बोहको नहींपातेहैं । २९ । सदैव युद्धको कहनेवालेने कोई उत्तम और शुभकर्म नहीं
 किया सब क्षत्रियोंका नाशकिया और शत्रुओंका पशवड़ाया । ३० । तुमभी सबके
 मध्यस्थहूये परन्तु कोई उचितवात नहींकही हे अजेय तुमने स्नेह और प्रीतिकी तुला
 कोसमान नहीं रक्खा । ३१ । मारम्भमेंही मनुष्यको उचितकर्म करना इसनिमित्त
 योग्यहै जिससे किभूतकालका प्रयोजन पश्चात्तापसे युक्त नहोय । ३२ । हेराजा
 तुमने पुत्रकी प्रीति से पुत्रका हित और प्रिय करना चाहताथा फिर पीछेमें इस
 दुःखकोपाया तुम शोचने के योग्य नहींहो । ३३ । जोपुरुष केवल शहदको देखकर
 अपने गिरनेको नहीं देखता है वह शहदके लोभसे निराहुआ ऐसे शोचता है जैसे
 किआप शोषतेहैं । ३४ । शोचताहुआ पुरुष न मनोरथको पाताहै न फलको पाता
 है न करवाणकोपाताहै और न ब्रह्मको पाताहै । ३५ । जोपुरुष अपनेआप अग्निको
 उत्पन्न करके बल्लसे दकता और जलना हुआ चित्त के दुःखको धारण करताहै वह
 पण्डित नहींहै । ३६ पुत्रकेसाथ तुम्हारे वचनरूपवायुने प्रेरित लोभरूपी धृतसेसीचा

loving, invincible, brave and unsatisfied. You are learned, wise and
 truthful. People like you need not be fatuous. He loved fighting
 and never did any good. He caused the destruction of warriors and
 increased the fame of enemies. 30 You presided the councils, but
 never said what was proper. Your words were always biased on
 account of fondness. One should always do what is proper from the
 outset in order to avoid the pangs of remorse. You have fallen into
 misery because you were so fond of your son and are therefore not
 worth pitying. An avaricious man, who climbs up a tree for the
 sake of honey and falls down from a great height, feels remorse like
 you. Such a one reaps no account or religious benefit. 35 He is

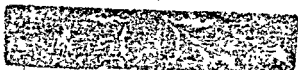
समुत्तेनायं वाक्पवायुतदीरितः । तोमारयेन च संतिष्ठो ज्मलितः पार्थपावकः ।
 तस्मिन् समिद्धे पतिताः शशाभा इव ते जुनाः । तन्म धे शशगिनिर्दृष्ट्वात्र त्वं
 तुमहंसि ॥ ३८ ॥ पक्ष्वाश्रुपातात् फलिलं वदनं पक्षे मृप . अशः कृदष्टमेतद्धि न
 सन्ति वषिष्ठतः ॥ ३९ ॥ विस्फुकिङ्गा इव होतान् दक्षन्ति किलमानवाद् जहन्ति
 बुद्ध्या वै धारयात्मानमात्मना ॥ ४० ॥ एवमापवाहितस्तेन सञ्जयेन
 विदुरो भूय एवाह वृद्धे पर्य परन्तप ॥ ४१ ॥

इति श्रीपर्वीय जलपादानिकपर्वणि धृतराष्ट्राश्वांसने प्रथमोध्यायः ॥

इआयड पायडवरूप आग्निरूप प्रज्वलित हुआ है । ३७ । उस अत्यन्त
 अग्निमें आपके पुत्र शलभनाम पक्षियोंके समानांगरें तुम वाणोंकी अग्निसे
 कर उनपुत्रोंके शोचकरनेको योग्य नहींहै । ३८ । हेपशु जोतुम अश्रुपातों
 मुलको धारणकरतेहो यहशास्त्रके विपरीतहैपाण्डितज्ञेय इनकीप्रशंसा
 निश्चयकरके यह आँसू अग्निके स्फुल्लिङ्गों के समान् मनुष्योंको भस्मकरतेहैं यहाँतुम
 बुद्धिसे शोकको त्यागकरके अपने चित्तको रवाधीन करो । ४० । वैशम्पायन बोले
 किउस महात्मा संजय से इसप्रकार विश्वास दियागया इसके पीछे बुद्धिसे युक्त
 विदुरजी यह वचन बोले ॥ ४१ ॥

— ❀ —

not a wise man who himself makes fire and is burnt by it as he hides
 it with his cloth. The wind of your affectionate words, to your son
 fed by the ghee of your avarice, caused the inflammation of the fire of
 Pandavas. Your sons fell down in its rising flames like moths and
 were burnt. You need not feel any sorrow for them. Your washing
 the face with tears is irreligious and unpraiseworthy. Surely these
 tears burn people like flames of fire. curb your grief by your wisdom
 and control yourself." Vaishampayan said, " Thus consoled by San-
 jaya, the king was thus addressed by Vidur in the following words:—



वशम्पादन लवणम् । ततोऽमृतमर्षीषयेह्लादयन् पुरुषपदंभम् । धौञ्जिद्वीर्यं
 वुरो वटुधानं निवृत्तं तत् ॥१॥ विदुर उवाच । उद्विष्ट राजम् किं क्षिपे धारणात्मा
 तस्मत्ता । एतं वै लवणं स्थातां लोकेऽपरं परा गति ॥ २ ॥ सर्वक्षयास्ता निश्चयाः
 क्रान्ता समुत्थया मरणं विप्रयोगात्ता मरणान्तश्च जीवितम् । ३ ॥ यदा धृष्टक
 किञ्च यत् क्षयति तत् क्षयं न किं न योऽस्यति हि ते क्षत्रिया क्षत्रियवंशम् ॥ ४ ॥
 लुप्तमर्षं क्षिप्रं मृतं प्राणं क्षयति । काठ प्राच्य महाराज न कश्चिदातव संते
 ता ॥ ५ ॥ प्रसादीय भूयति भावमध्यानि भारत । अभावमिपनायव तत्र का परिदे
 ता ॥ ६ ॥ न होत मृतं गति न शोचन् क्षियते नर । एव सांसीदिक लोके किमर्थं
 मुशांवासि ॥ ७ ॥ पदं वदन्ति भूतानि सर्वाणि विविधांस्तुत । न कालस्य प्रियः

अध्याय ॥ २ ॥

मैक्ष्णायक बोले अमृतरूपी वचनों से पुरुषोत्तम धृतराष्ट्रकां प्रसन्न करते विदु
 षी ने क्रोध हुआ जो तने । १ । विदुरजीवाले हेराजा उठो क्यों सोतेहो बुद्धिसे
 नकं... जीविका यही निश्चय है । २ । किस्व सृष्टिसमूह
 कर्म न जहेनेवाले मर जयरोनेवाने ऐश्वर्य अन्तमें पतनहोनेवाले है । मितने
 प्राणे अन्तमें दुष्टेनेवाले मर जीवन्धी अन्तमें मरशरखनेवाला है । ३ । हे भरत
 वशी लष यमराज सुन्दर और भयभीतोंहो आर्कषण करता है तो हेनत्रियोंमें भेष्ट
 कर पद क्षत्रिय मर नहीं पृष्ट करते है । ४ । युद्धको न करता मरता है और लडता
 जा जीवता रहता है हे महाराज कालको पाकर कोई उमको उल्लंघन नहीं करता
 । ५ । हे भरतवशी सषजीन म रम्भमें ही अभावरूप है मध्य में भावरूप है और
 मरनेपर अभावरूप है ऐसे स्थानपर कौन विलाप है । ६ । शोचताहुआ
 मृतक के पीछे नहीं जाना है शोचताहुआ मनुष्य नहीं मरता है इस
 प्रकार लोकमें किम निमित्त शोच करतेहो । ७ । हेकौरवोंमें भेष्ट यहकाळ नाना
 प्रकारके सबजीवोंको आर्कषण करता है कासका कोई प्यारा है न शत्रु है । ८ । हे

CHAPTER II

Vaisampayan said, " Consoling Dhritrashtra with his nectar like
 words, Vidur said, " Rise up, king why do you sleep ? Control your
 self, for this is the goal of all beings Every created being dies and
 every rise has a fall Those who meet have to suffer separation, and
 life ends in death. Why should kshatryas shun war when death
 overtakes the bold and the coward ? A nonfighting man dies, while
 fighting man lives, who can escape death 5. Why all the beings
 do not exist in the beginning and end, and only exist in the middle,
 why then should we weep for them ? Why do you lament when you
 knew that one who laments does not follow the dead. Death over-

कान्धिष्वेहभ्यः कुरुक्षेत्रम् ॥ ८ ॥ यथा धातुस्तृणाप्राणि सर्वेषुपति सर्वशः ।
 कालवशा यान्ति मृतानि भरतर्षभ ॥ ९ ॥ एकसायप्रयातानां सर्वेषां तत्र
 वसव कालः प्रचात्यमे तत्र का परिदेवना ॥ १० ॥ न चाप्येतान् इतान् युद्धे राज्ञ
 तुमर्हसि । प्रमाणं यदि शास्त्राणि गतास्ते परमां गतिम् ॥ ११ ॥ सर्वे
 सर्वे च चरितप्रताः । सर्वे चाभिमुखाः क्षीणास्तत्र का परिदेवना ॥ १२ ॥
 पतिता पुनश्चादर्शनं गताः । न ते तप न तेषां त्वं तत्र का परिदेवना ॥ १३ ॥
 धमते स्वर्गं हृत्वा च लभते यथाः । उमयं नो धदुगुणं नास्ति निष्फलतारणे
 कामदुर्घालोकानिन्द्र सङ्कल्पविष्यति । इन्द्रस्थातिथयो ह्येते भवन्ति
 न यद्देक्षणावर्जिनं ततोभिर्न विद्यया । स्वर्गं यान्ति तमा मर्यां यथा शूरा
 ॥ १६ ॥ शरीराग्निप शूराणां ह्यहुसुस्ते शराहुतीः । ह्यमानाञ्छराञ्छ्वेव

भरतर्षभ जसेकि वायु सवतृणकी नोकोंको उलटपलटकरता है उसी
 कालके आधीन होतेहैं । ९ । एकसाय आनेवाले आरं वहां जानेवाले
 मध्यमें त्रिसके आगे कालजाताहैं उसमें कौन विलाप करताहै । १० । हेराजा
 मृतकहूये इनवीरोंके शोचकरनेकोभी योग्यनहींहो इसमें शास्त्रकां प्रमाणहै ।
 परमगतिकोपाया सब वेदपढ़नेवाले और सब अच्छे प्रकारसे व्रतकरनेवाले
 सम्मुखहोकर विनाशवानहूये इसमें किसबातका विलाप करनाहै । ११ । दृष्टिमें
 आनेवाले व्रतसे उत्पन्नहूये और फिर उसी दृष्टिमें न आनेवालेको पाया यह
 आपकेहैं न आप उनकेहैं तब कैसा विनापहै । १२ । मृतकभी स्वर्गको पाताहै
 मरकरभी जिसको पाताहै हमलोगोंको वहदोनो बहुतगुणवालेहैं युद्धमें
 नहीं है । १४ । इन्द्र देवता उनके मनोरथों के प्राप्तकरनेवाले लोकोंको विचार
 गे हेपुरुषोत्तम यह सब शूरवीर लोग इन्द्रके अतिथीहोतेहैं । १५ । मनुष्य
 वालेयज्ञ तप और विद्या से उस प्रकार स्वर्गको नहीं पातेहैं जैसे किपुद्ध में
 उन शूरवीर तेजस्विगों में पापाहै जिन्होंने शरीररूपी आग्नियोंमें बाणरूप

takes all. He has no friends or enemies. All beings are upset
 death like the blades of glass by the wind. Why do you gr
 all men have to die? 10. You need not lament those who died
 war, for according to our religious books they have gone to
 Those who read the Vedas and observe vows have to die; what
 therefore to lament for? They came from eternity and were
 in Brahm. They and you did not belong to one another; why do
 you weep then? Both those who die or are slain in war are alike
 us; there is nothing disadvantageous is fighting. Indra will decide
 the fate of the warriors, they are to be his guests. 15. Not ev
 those who perform sacrifices with donations, get such regions as
 obtained by those who die fighting. A kshatrya has no easier way

१७ ॥ एवं राजसंज्ञया चक्षे स्वर्गपन्थानमुत्तमम् । न युद्धादाधिकं किञ्चित् क्षत्रिय
 विद्म विद्यते ॥ १८ ॥ क्षत्रियास्ते महात्मानः शूराः समितिशोभनाः । आशिषं परमाप्राप्त
 शाच्याः सर्वे एव हि ॥ १९ ॥ आत्मानमात्मनाभ्यास्य मानुषः पुरुषर्षभ । नाद्य लोका
 जन्मतस्त्वं कार्यमुत्सृष्टुमर्हसि ॥ २० ॥ माता पितृसखाणि पुत्रदारशतानि च । संसा
 र्थमुत्सृताति कस्य ते कस्य वा घयम् ॥ २१ ॥ शोकस्थानसहस्राणि भयस्थानशतानि
 च । दिवसे दिवसे मूढमाविशन्ति न पण्डितम् ॥ २२ ॥ न कालस्य प्रियः कदिचन
 केषुः कुरुसत्तम । न मध्यस्यः पवञ्चित् कालः सर्वं कालः प्रकर्षति ॥ २३ ॥ कालः
 पश्यति मृतं न कालः सहस्ते प्रजाः । कालः सुप्तेषु जागर्ति कालो हि दुरतिक्रमः
 ॥ २४ ॥ अनिरथ यौवने रूपं जीविनं द्रव्यसञ्चयः । आरोग्यं जियसम्पासो गृभ्येदेषु न
 परिहृतः ॥ २५ ॥ व जानपादिकं दुःखमेकः शोचितुमर्हसि । जप्यभावेन युज्येत तच्छास्य

शोक शोभा और परस्पर होमेहुये वाणोंको सहा । १७ । हेराजा व प्रकार
 से स्वर्गके उत्तम मार्गको तुमसे कहताहूँ इसलोकमें क्षत्रियका कुछ कर्म युद्धसे अधि
 क नहीं वर्त्तमानहै । १८ । युद्धमें शोभायमान उन महात्मा शूर क्षत्रियोंने बड़े अभीष्ट
 कर्मको पाया सवही शोकके अयोग्य है । १९ । हे पुरुषोत्तम तुम ज्ञानसे अपनेको
 विश्वासदेकर शोचमकरो शोकसे विजय कियेहुये तुम करनेके योग्यकर्मके छोड़ने
 को योग्य नहींहो । २० । हजारों माता पिता और सैकड़ों पुत्र स्त्री संसारमें प्राप्तकिये
 वह किसके और हम किसके । २१ । प्रति दिन शोकके हजारों स्थान और
 आनन्द के सैकड़ोंस्थान अज्ञान में प्रवेश करतेहैं । २२ । हे कौरवोत्तम कालका कोई
 प्याराहै न शत्रुहै वह काल किसी स्थानपरभी मध्यस्य नहींहै काल सवको खँचताहै
 । २३ । काल जीवमात्रों को पकाताहै और कालही सृष्टिको मारताहै
 । २४ । तरुणाईरूप वृद्धता वनसमूह और निरोगतापूर्वक निवास यहसब विनाश
 वानहैं परिहृत इनमें प्रवृत्त नहीं होताहै । २५ । अकेले तुम सब दुनियाभरे के दुःख

heaven than dying in battle All the warriors slain have got good
 regions and are not worth lamenting for. Donot give yourself up to
 grief, but do what is necessary. We make thousands of fathers,
 mothers, sons and wives in this world and then sever our connection
 from them. A foolish man is beset with thousands of pleasures and
 pains every day. Death observes neither friendship nor enmity, but
 overtakes all. Time makes all beings ripe and then kills them. He
 is awake when all beings are asleep and is difficult to be overcome.
 Youth, age, wealth and health are all perishable; a wise man does not
 set his mind on any one of them. You need not feel sorrow for all
 the world, for one who dies never comes back to us. We should
 not feel sorry for those who have died bravely; it is better not to

न निवर्त्तते ॥ २६ ॥ अशोचन् प्रतिशुर्वीत यदि पश्येत् पराक्रमम् । भैषज्यमनन्दुःखस्य
 पदैतस्मानुच्चिन्तयेत् ॥ २७ ॥ चिन्त्यमानं हि व ज्येति भूयथापि प्रथयेत । अनिष्टसंप्रयो
 गात्त्र विप्रयां गात् प्रियस्य च ॥ २८ ॥ मनुष्या मानसैः दुःखैर्युज्यन्ते येऽहंपितृव्यः तपो
 न धर्मो न सुखे यद्वत्तदनुसोचति ॥ २९ ॥ न च नापैति कार्यायात्प्रिवगात्सुखे द्विषते
 अन्ध्यामर्ष्या धनादर्या प्राप्य वैशेषिका नराः ३० ॥ असंतुष्टाः प्रमुह्यन्ति सतोषं बान्ति
 पण्डिताः । प्रयाया मानसे तु ख हृद्यान्हारोममौषधैः । एतज्ज्ञानस्य सामर्थ्यं न धात्रेः
 संप्रतामियात् ॥ ३१ ॥ शयानज्जानुशेत् हि निद्रन्तं चानुतिष्ठति यत्तु वाद्ये धावन्तं कर्मपूर्वं
 कृतं नम् ॥ ३२ ॥ यस्यापस्यामव स्यायायत्करोति शुभाशुभमतिस्थीतस्यामदस्यायात्फलं
 समुपादनुते ॥ ३३ ॥ येन येन शरीरेण दृष्टत् कर्म करेति यः । तेन तेन शरीरेण तत्तत्
 फलमुपादनुत् ॥ ३४ ॥ आत्मैव ह्यात्मनो मित्रमारुध गिणारमनः । आत्मैव ह्यात्मनः

के शोचनेके योग्य नहीं होजो अभाव से मिलताहै उसका वह फिर लौटकर नही
 आताहै । २६ । जोपराक्रम मे नाशकी पावे उसको शोचताहुआ मनुष्य उसको
 चिकित्नाको नहीं करता है दुःखका यह इलाजहै जो उसको न विचार करे । २७ ।
 चिन्ता कियहुआ दूर नहीं होताहै और फिर फिर अधिक बढ़ताहै अभियके मिलने
 और प्रियके विनागमे । २८ । वह आदमी बड़े २ चित्त के दुःखसे संयुक्तहोताहै
 जोकि निर्बुद्धो है यह न अर्थहै नधर्महै न सुखहै जोतुम शोच करेहो । २९ । वह
 करनेके योग्य प्रयोजनके जुदाहोता है और धर्मअर्थ काम इनतीनों ३गोसे क्युतहोता
 है मनुष्य अन्य २ मुख्य धनादिक दशाको पाकर । ३० । इस
 में असंतुष्ट लोग मोहको पाते हैं पण्डित सन्तोपको पातेहैं चित्तके दुःखको ज्ञानसे
 और शरीरके दुःखको औषधोसे दूरकरना चाहिये यही ज्ञानकी सामर्थ्य है और
 किसीप्रकार की कोई सामर्थ्य नहींहै । ३१ । पूर्वजन्ममें कियाहुआ कर्म सोतेहुये मनुष्य
 केसायसोताहै और बैठनेवालेके पासनियत बैठोहोताहै और दौड़तेहुयेकेपीछेदौड़ता
 हैं । ३२ । जिस जिम दशामें जिम शुभाशुभ कर्मको करता है उसी उसी दशा में उस
 फलको पाताहै । ३३ । जो जीव जिस शरीर से जिस २ कर्मको करताहै उसी
 शरीर से उस उस कर्मके फलको भोगताहै । ३४ । आत्मामें अत्माही उसका मनु

think of them. Grief does not abate by brooding over it; it increases if we think of our dear ones. The fool is beset with many sorrows; your sorrow is useless and irreligious. It deters us in our duties and deprives us of all ends. A dissatisfied man is avaricious, while a learned man is satisfied. We should remove mental griefs with wisdom and maladies with medicine 31. An act done in a former life sleeps, sets and runs with the doer. We reap the fruit of our deeds in the same conditions as when we did them. We suffer the punishments of our deeds in bodies like those in which we did them.

आसी कृतस्यापहतस्य च ॥ ३५ । शुभेन कर्मणा सौख्यं दुःख पापेन कर्मणा । कृतं
 भवति सर्वत्र नःकृतं भुज्येत कश्चित् ॥ ३६ ॥ न हि एतद्विरुद्धेषु बहुपापेषु कर्मसू ।
 रूपातिषु सज्जन्ते बुद्धिमन्तो भवद्विधाः ॥ ३७ ॥

इति स्त्रीपर्वणि जलदादानिकपर्वणि धृतराष्ट्राध्यासने द्वितीयोध्यायः ॥ २ ॥



धृतराष्ट्र उवाच । सुभाषितैर्महाप्राज्ञ शोकोयं विगतो मम । भूय एषतु वाक्यानि
 श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः ॥ १ । अनिष्टानां संसर्गादिदृशानाञ्च विषयर्जनात् । कथं हि
 मानसैर्दुःखैः प्रमुच्यतेषु पण्डिताः । २ ॥ विदुर उवाच । यतो यतो मनो बु क्तं मुखाद्वा
 विप्रमुच्यते । ततस्ततो निपश्येतच्छान्तिं विन्देत वै बुधः ॥ ३ ॥ अशाश्वतमिदं सर्वं
 है और आत्माही आत्माका शत्रु है आत्माही आत्माके शुभ शुभ कर्मोंका साक्षी है
 । ३५ । शुभकर्मसे सुखको और अशुभकर्म से दुःखको सर्वत्र पाता है किसी स्थान
 में भी विनाशके हृये को नहीं भोगता है । ३६ । आपकी समान बुद्धिमान् मनुष्य
 नकर्मोंमें प्रवृत्त नहीं होते हैं जोकि ज्ञानके विपरीतगद्दत पापरखनेवाले और मोक्षके
 शकरनेवाले हैं ३७ ॥

अध्याय ३ ॥

धृतराष्ट्राले हे बड़े ज्ञानी बुम्हारे इन उत्तम बचनों से मेरा शोक निवृत्त हुआ
 । तनु हेनिष्पाप मैं ब्रह्मसमेत इनबचनों को फिर सुना चाहता हूँ । १ । पण्डितलोगसे
 शपिषके योग और प्यारोंके वियोगसे उत्पन्न होनेवाले चित्तके दुःखों से कैसे
 हटते हैं । २ । विदुरजी वाले-कि जिस जिस उपायसे दुःख अथवा सुखसेभी निवृत्त
 होता है पुद्धिमान् मनुष्य उसीउपायसे इस चित्तको स्वाधीन करके शान्ती को पावे
 । ३ । ऐगरोपम यह सब जो ध्यानमें आता है विनाशानैह यह संसार केलेके
 समान है इसका सार पदार्थ वर्त्तमान नहीं है । ४ । जब ज्ञानी और मूल धनी और

The soul is its own friend, enemy and witness. 35. It gets happy
 as a result of good deeds and sorrow for wicked ones. One can
 not suffer without doing. Wise men like you do not engage in doing
 foolish, sinful and wicked deeds that debar the door from
 heaven. " 37.

CHAPTER III

Dhritrashtra said, " My grief is gone away by your good words,
 wise man. I wish to hear your words once more in detail. How
 can wise men get rid of the unpleasant feeling arising out of the meet-
 ing of enemies and separation of friends? " Vidur said, " A wise man
 should alienate his mind from the things which cause pleasure or
 pain. The world we see round us is mortal; it has no kernel like

विश्वमानं नश्यम । कदलीसन्धिभो लोकः सारोहास्य न विद्यते ॥ ४ ॥ यदा प्राणाश्च
 मूढारश्च धनधन्यांश्च निन्दना । सर्वे प्रितुषन् प्राप्य स्वपन्ति विगतज्वराः । निर्मोक्षैरस्थि
 भ्रयिष्ठैर्वाग्निः स्नायुनिवन्धनैः ॥५॥ कं विशेषं प्रपश्यन्ति तत्र तेषां परेजना । येन प्रत्यक्ष
 गच्छन्तुः कुलरूपविशेषणम् । वस्मादन्योन्यमिच्छन्ति विप्रलब्धिधियो नराः ॥७॥ ब्रह्मा
 णीव हि मर्यातामाहुर्देवानि पण्डिताः । कालेन विदियुज्यन्ते स्वप्नेकन्तु-शाश्वतम्
 वधातीर्णमजीर्णं वा वस्त्रं स्वप्नवासु पूरयः । अन्यत्रोच्यते ब्रह्ममेधं देहाः शरीरिणाव
 ॥ ९ ॥ वैश्वित्रोच्यं सार्धं हि दुःखं वा यदि वा सुखम् । प्राप्नुवन्तीहि भूतानि स्वह
 तेनैव कर्मणा ॥ १० ॥ कर्मणा प्राप्यते स्वर्गः सुखं दुःखञ्च भारत । ततो वहति तं भार
 मयशः स्वयशोऽपि वा ॥ ११ ॥ वधा च मृण्मयं भाण्डं चक्राकृष्टं विपद्यते । किञ्चित्
 प्रक्रियमाणं वा कृत्रमात्रमथापि वा ॥ १२ ॥ छिन्ने वाप्यवरोप्यन्तमवतीर्णमथापि वा

निन्दनी कालसे मरणको पाकर तापसे रहित होतेहैं उस स्नानपर दूसरे मनुष्य
 निर्मात अथवा बहुत आस्परिखनेवाले भगनाड़ी और बन्वनोंमे अधिककिस वस्तुको
 देखतेहैं जो उससमय कुल और रूप विशेषणको नहीं पावें वहकुल करनेवालेमनुष्य
 किसहेतुसे परस्पर इच्छाकरते हैं ॥ ७ पण्डितोंने शरीर धारियोंके देहको ग्रहों के
 समान कहाहै वहकालसे भित्ततेहैं अर्थात् नाशकोपातेहैं केवलएकजीवात्माही अधिना
 शीहै । ८ । जिसप्रकार मनुष्य पुराने कपड़ेको त्यागकरके नवीन कपड़ेको अङ्गी
 कार करताहै इसी प्रकार शरीरधारियोंके शरीर हैं । ९। हेधृतराष्ट्रसब मनुष्य अपने
 कियेहुये कर्मसे मिलने के योग्य दुःख अथवा सुखको पातेहैं । १०। हे भर्तृभंशी सब
 सुख और दुःख अपने कर्म से प्राप्त होतेहैं उसहेतुसे यह स्वतन्त्र अथवा अस्वतन्त्र
 भी उस भारको उठाताहै । ११ । और जैभमट्टीकापात्र रूपको पाकर टूटताहै कोई
 वनता कोई वनाहुआ । १२। अवेपर रक्ताहुआ वा अवेसे गिरकर टूटनेवाला आर्द्रव
 थूक वा पकताहुआ । १३। अवेसे उताराहुआ उठायाहुआ वा काममें लायाहुआभी
 टूटनाताहै इसी प्रकार शरीर धारियोंके शरीरहैं । १४। गर्भमें निवत जन्म, लेनेवाला

plantain. When the wise and fool, wealthy and poor meet in death, we find nothing left of them except a heap of bones. Family greatness and beauty are of no avail after death; why should people desire to gain their object by deceit. Wise men say that the bodies of men are like constellations which come together at times and then disappear; the soul alone is immortal. Bodies are like clothes which we cast off when old and put on new ones. Our pleasures and pains are the results of our actions. 10. Man is not independent when he has to suffer pleasure or pain as a result of his former deeds. Our bodies are like earthen pots which assume shapes and break down in the course of preparation, after preparation and at all other stages. They break down after being burnt in a kiln, in transit or in use

इं वाप्यथ वा शुष्कं पच्यमानमथापि वा ॥ १३ ॥ अथतार्थ्यमाणमापाकादुद्धृतञ्चापि
 त । अर्थो परिभुज्यन्तस्त्रेण देहाः शरीरिणाम् ॥ १४ ॥ गर्भस्थो वा प्रसूतो वा प्यथ
 दिवसांतरः । अर्द्धमासगतो वापि मासमात्रगतोपिवा ॥ १५ ॥ सप्तत्सरगतो वापि
 संवत्सर एव वा । यौवनस्थोऽथ मध्यस्थो वृद्धो वापि विपद्यते ॥ १६ ॥ प्रादुर्भूत
 स्तु भूतानि मबन्तिन मबन्तिचास्यं सांसिद्धिके लोके निमर्थमनुत्पत्से ॥ १७ ॥ यथातु
 लेलेराजन् श्रीहार्थमनुसन्तरेद्राउन्मज्जेच्च निमज्जेच्च किञ्चित् सत्त्वंग्राह्यपि ॥ १८ ॥
 । संसारगहने सन्मज्जननिमज्जने । कर्म भोगेन पच्यन्ते विद्वन्ते येऽहपहुज्यः
 १९ ॥ ये तु प्राज्ञाः स्थिताः सत्त्वे संसारानुगतेपिणः । सभागमन्ना भूतानां ते यागित
 र्मां गतिम् ॥ २० ॥

इति स्त्रीपर्वणि जलपादानिकपर्वणि धृतराष्ट्रशोकापनोदने तृतीयोऽध्यायः ॥ ३



॥ थोड़ी अवस्थावाली अर्द्धमास एकमास ॥ १५ ॥ एकवर्ष वा दोवर्षकी अवस्था रख
 वाला तरुण मध्यस्थ और वृद्धभी नाशको पाताहै ॥ १६ ॥ सबजीव अपनेपिछले
 गर्भोंके कर्मोंसे उत्पन्न होतेहैं और नाशको पातेहैं इसरिति के स्वाभाविक धर्मरख
 नेवाले लोकमें किसहेतुसे दुःखी होतेहैं ॥ १७ ॥ हेराजा जैसेकि कोई जीव क्रीडाके
 निमित्त जलमें नूपताहुआ डूबता और उल्लताहै ॥ १८ ॥ उसी प्रकार मर्षालोग अपने
 बड़े ज्ञानकेद्वारा उसप्रकार के दुर्गम संसार से पारहुये जोकिडूबना उल्लाना इनदो
 गुणोंका रखनेवालाहै ॥ १९ ॥ जो जीवोंकी उत्पत्तिक जाननेवाले संसार के अन्तके
 भोजनेवाले सब ज्ञानी नियतहैं वह परम गतिको पातेहैं ॥ २० ॥



So our bodies die in womb, after birth, at the age of a fortnight, a month, a year, two years, in youth, middle, or old age. 16. People die and are born again as a result of their own deeds; why should we be sorry for those who are naturally mortal. Sages and rishis cross the ocean of the world like an animal which floats or sinks down in water at pleasure. Those wise men who seek to know the beginning and end of the world, reach the sublime goal." 20



विश्रममानं नरपंस । कक्षलीसशिमो लोकः सारांहास्य न विद्यते ॥ ४ ॥ यदा
 मृदाश्च धनधन्तांश्च निन्दता । सर्वे प्रियुषन् प्राप्य स्वपन्ति विगतज्वराः ।
 भ्रियिष्ठार्थैः स्नायुनिवन्धने । ५ ॥ क विशेषं प्रपश्यन्ति तत्र तेषां परेजना । येन
 गच्छन्त्युः कुलरूपविशेषणम् । ६ ॥ स्मादन्योन्यमिच्छन्ति विप्रलब्धिघणो नराः ॥ ७ ॥
 पीब हि मर्यातामाद्भुदेषानि पाण्डवाः । कालेन विधियुज्यन्ते सत्त्वमेकन्तु ।
 कथाशीर्णमजीर्णं वा वस्त्रं त्यक्त्याशु पूरव । अन्धद्रोच्यते प्रपन्नमेवं वेदाः ।
 ॥ ९ ॥ वैचित्र्यं शिर्यं साध्यं हि दुःखं वा यदि वा सुखम् । प्राप्नुवन्तीहि भूतानि स्वह
 तेनेव कर्मणा ॥ १० ॥ कर्मणा प्राप्यते स्वर्गः सुखं दुःखञ्च भारत । ततो वहति तं भार
 मवशः स्वयशोऽपि वा ॥ ११ ॥ कथा च मृगमयं माण्ड्यं चकारुषं विपद्यते । किञ्चिद्
 प्रक्रियमाणं वा कृत्रमात्रमथापि वा ॥ १२ ॥ लिन्न चाप्यवरोप्यन्तमवतीर्णमर्थापि वा

निन्दनी कालसे मरणको पाकर तापसे रहित होतेहैं उस स्थानपर दूसरे मनुष्य
 निर्मास अथवा बहुत आस्थिरस्मनेवाले अंगनाडा और बन्वनोंमे अधिककिस वस्तुको
 देखतेहैं जो उससमय कुल और रूप विशेषणको नहीं पावे वहछल करनेवालेमनुष्य
 किसहेतुसे परस्पर इच्छाकरते हैं ॥ ७ पाण्डवोंने शरीर धारियोंके देहको प्रहों के
 समान कहाहै वहकालसे मिततेहैं अर्थात् नाशकोपातेहैं केवलएक जीवात्माही अविनाश
 शीहै । ८ । जिसप्रकार मनुष्य पुराने कपड़ेको त्यागकरके नवीन कपड़ेको अङ्गी
 कार करताहै इसी प्रकार शरीरधारियोंके शरीर हैं । ९ । हेधृतराष्ट्रव मनुष्य अपने
 कियेहुये कर्मसे मिलने के योग्य दुःख अथवा सुखको पातेहैं । १० । हे भरतवंशी ।
 सुख और दुःख अपने कर्म से प्राप्त होतेहैं उसहेतुसे यह स्वतन्त्र अथवा अस्वतन्त्र
 भी उस भारको उठाताहै । ११ । और जेबेमट्टीकापात्र रूपको पाकर दूताहै कोई
 वनता कोई बगाहुआ । १२ । अवेपर रक्ताहुआ वा अवेसे गिरकर दूटनेवाला आर्ष
 शुष्क वा पकताहुआ । १३ । अवेसे उताराहुआ उठायाहुआ वा काममें छायाहुआभी
 दूटजाताहै इसी प्रकार शरीर धारियोंके शरीरहैं । १४ । गर्भमें नियत जन्म, लेनेवाला

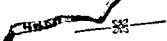
plantain. When the wise and fool, wealthy and poor had rest in
 death, we find nothing left of them except a heap of bones. Family
 greatness and beauty are of no avail after death; why should people
 desire to gain their object by deceit. Wise men say that the bodies
 of men are like constellations which come together at times and then
 disappear; the soul alone is immortal. Bodies are like clothes which
 we cast off when old and put on new ones. Our pleasures and
 pains are the results of our actions. 10. Man is not independent when
 he has to suffer pleasure or pain as a result of his former deeds. Our
 bodies are like earthen pots which assume shapes and break down
 the course of preparation, after preparation and at all other
 They break down after being burnt in a kiln, in transit or

॥ अथ वा शुभं पश्यमानमथापि वा ॥ १३ ॥ अथ तावद्यमाणमापाकादुद्धृत्यापि
 । अथर्वो परिभुज्यन्तस्तेन देहाः शरीरिणाम् ॥ १४ ॥ गर्भस्थो वा प्रसूतो वा प्यथ
 ... । अर्द्धमासगतो वापि मासमाश्रमतोपि वा ॥ १५ ॥ संवत्सरगतो वापि
 ... एव वा । यौवनस्थोऽथ मध्यस्थो वृद्धो वापि विपद्यते ॥ १६ ॥ प्राङ्गर्भ
 भूतानि मचन्तित मचन्तित्वात्सं सौसिद्धिके लोके किमर्थमनुत्पद्यते ॥ १७ ॥ यथा तु
 ... श्रीडार्धमनुसन्तरदाउन्मज्जेच्च निमज्जेच्च किञ्चिच्च सर्वंगरात्रिणः ॥ १८ ॥
 । अरगहने उन्मज्जननिमज्जने । कर्म भोगेन घट्ट्यन्ते दिग्दृश्यन्ते येऽहंपदुज्यः
 ॥ ये तु प्राज्ञाः स्थिताः सर्वे संसारानुगतधिणः । समागमज्ञा भूतानां ते याति
 गतिम् ॥ २० ॥

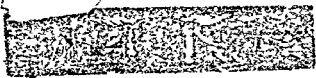
ति श्रीपर्वणि जलमादानिकपर्वणि धृतराष्ट्रशोकापनोदने तृतीयोध्यायः ॥ ३



श्रीः अथस्याराली अर्द्धमास एकमास ॥ १५ ॥ एकवर्ष वा दोषवर्षकी अथस्था रस
 तरुण मध्यस्थ और वृद्धी नाशकी पाताहै ॥ १६ ॥ सबजीव अपनेपिछले
 कर्माँसे उत्पन्न होतेहै और नाशकी पाँतेहै इसरीति के स्वाभाविक धर्मरस
 लोकमें किसहेतुसे दुःखी हाँतेहै ॥ १७ ॥ हेराजा जैसेकि कोई जीव श्रीडाके
 जलमें डूबताहुआ डूबता और उछलताहै ॥ १८ ॥ उसी प्रकार मर्षीलोग अपने
 निकेद्वारा उत्पन्नकार के दुर्गम संसार से पारहुये जोकिडूबना उछलना इनदो
 ॥ रसनेवालाहै ॥ १९ ॥ जोडीवोंकी उत्पत्तिक जाननेवाले संसार के अन्तके
 से सब ज्ञानी नियतहै वह परम गतिको पातेहै ॥ २० ॥



our bodies die in wombs, after birth, at the age of a fortnight, a
 month, a year, or two years, in youth, middle, or old age. 16. People
 and are born again as a result of their own deeds; why should we
 sorry for those who are naturally mortal. Sages and rishis cross
 ocean of the world like an animal which floats or sinks down, in
 at pleasure. Those wise men who seek to know the beginning
 end of the world, reach the sublime goal." 20.



विश्वामाने नरर्वभ । कदलीसभिभो लोक साराष्ट्रस्य न विद्यते ॥ ४ ॥ यद्
 मूढाण्य धनधन्तोष निन्दना । सर्वे प्रिसृष्यन् प्राप्य स्वपन्ति विगतज्वरा ।
 अथिष्ठैर्भाषै स्नायुनिधन्वने ॥ ५ ॥ क विशयं प्रपश्यन्ति तत्र तेषां परेजना । येन
 गच्छयु कुलरूपविशेषणम् । समाद्व्यान्पमिच्छन्ति विप्रकृष्यधिषो नरा ॥ ७ ॥
 जीव हि मर्यातामाहुर्द्वैतानि पाण्डवा । कालेन विद्वियुज्यन्ते सत्त्वमेकसु ।
 यथातीर्णमजीर्णं वा वस्त्रं त्यक्तवानु पूर्णम् । अथप्रोचयते ब्रह्ममेव देहा ॥ ९ ॥
 वैचित्र्यैर्यथै साध्यं हि दुःखं वा यादृ यो सुखम् । प्राप्नुवन्तीहि भूतानि स्वकृ
 तेनैव कर्मणा ॥ १० ॥ कर्मणा प्राप्यते स्वर्गं सुखं पुण्यं च भारत । ततो वदति त भार
 मधरा स्वयशोऽपि वा ॥ ११ ॥ यथा च मृगमय भाण्डं चक्राकृष्ट विपद्यत । किञ्चिद्
 प्रक्रियमाणं वा कृत्रमात्रमयापि वा ॥ १२ ॥ छिन्नं वाप्यवरोप्यन्तमवतीर्णमयापि वा

निन्दनी कालसे मरणको पाकर तापसे रहित सोतेहैं उम स्नानधर दूसरे मनुष्य
 निर्मास अथवा बहुत आस्थिरत्ननेवाले अंगनाडी और बन्वनोंसे अधिककिस बस्तुको
 देखतेहैं जो उससमय कुल और रूप विशेषणको नहीं पावें वहछल करनेवालेमनुष्य
 किसहेतुसे परस्पर इच्छाकरते हैं ॥ ७ परिदृष्टोने शरीर धारियोंके देहको प्रहो
 समान कहाहै वहकालसे मिनतेहैं अर्थात् नाशकोपातेहैं केवलएक जीवात्माही अबिना
 शीहै । ८ । जिसप्रकार मनुष्य पुराने कपड़ेको त्यागकरके नवीन कपड़ेको
 कार करताहै इसी प्रकार शरीरधारियोंके शरीर है । ९ । हेधृतराष्ट्रस्य मनुष्य अपे
 कियेहुये कर्मसे मित्रने के योग्य दुःख अथवा सुखको पातेहैं । १० । हे भरतवंशी स
 सुख और दुःख अपने कर्म से प्राप्त होतेहैं उसहेतुसे यह स्वतन्त्र अथवा अस्वतन्त्र
 भी उस भारको उठाताहै । ११ और जैसेमट्टीकापात्र रूपको पाकर टूटताहै को
 वनता कोई वगाहुआ । १२ । अथेपर खलाहुआ वा अथेसे गिरकर टूटनेवाला आर्ष
 शुष्क वा पकताहुआ । १३ । अथेसे उताराहुआ उठायाहुआ वा काममें छायाहुआर्ष
 टूटनाताहै इसी प्रकार शरीर धारियोंके शरीरहैं । १४ । गर्भगे नियत जन्म, लेनेता

plantain When the wise and fool, wealthy and poor had res
 death, we find nothing left of them except a heap of bones. For
 greatness and beauty are of no avail after death, why should pe
 desire to gain their object by deceit. Wise men say that the bo
 of iron are like constellations which come together at times and th
 disappear, the soul alone is immortal. Bodies are like clothes whic
 we cast off when old and are put on new ones. Our pleasures and
 pains are the results of our actions. 10. Man is not indepent when
 he has to suffer pleasure or pain as a result of his former deeds. Our
 bodies are like earthen pots which assume shapes and break down in
 the course of preparation after preparation and at all other stages.
 They break down after being burnt in a kiln, in transit or in use.

॥ रिरत्तन्ति ये ध्यानपरिनिष्ठिता ॥ ९ ॥ अयं न बुध्यते तावद्यमलोकमथागतम् ॥
 मृत्युं कालेन गच्छति ॥ १० ॥ वाग्धीनस्य च यन्मात्रमिष्टानिष्टं कृतं
 ह्यध्यातमानात्मानं वध्वमानमुपेक्षते ॥ ११ ॥ अहो विनिष्ठतो लोको लोभेन च
 लोभकोधमयोन्मत्तो नात्मानमवबुध्यते ॥ १२ ॥ कुलीनत्वे च रमते बुद्धु
 विकुरसयन् । घनद्वयेण ह्यनश्च ददित्वात् परिकुत्सयन् ॥ १३ ॥ मूर्खानिति परा
 समवेक्षन् । द्वेषान् श्रितिति चान्धेषां नात्मानं शास्त्रमिच्छति ॥ १४ ॥ यदा
 मूर्खश्च घनयन्तोथ निन्देताः । कुलीनाश्चाकुलीनाश्च मनिनोषाप्यमानिताः
 सर्वे पितृवत् प्राप्ता स्वपन्ति विगतज्वराः । निर्मासैरिस्थसूयैष्टर्गात्रैः श्नायु
 ॥ १६ ॥ कंशद्योय प्रपश्यन्ति तत्र तेषां परे जना । येन प्रत्ययगच्छेयु कुलरूप
 ॥ १७ ॥ यदा सर्वसंन्यस्ताः स्वपन्ति घरणानले । कश्मादन्यायेमिच्छन्ति

म कर्मों को करता है और उनका स्वागनेवाला नहीं होता है इसी प्रकार
 रूप ईश्वरके ध्यानमें प्रवृत्त है वह अपने को तबतक चारों ओरसे रक्षा करता है
 यह जीव मिलनेवाले यमलोक को नहीं जानता है यमदूतों से आकर्षित
 मृत्युको पाता है । १० । उस मौनका जो पाप पुण्य है वह दूसरे के
 मुखमें किपाट्ट आ होता है फिरभी विषयोंमें आसक्त होकर अपनेको पतन हुआ
 ११ । आश्चर्य है कि गहंसार नीच लोभके आधीनतामें वर्तमान क्रोध
 और धनके मदसे अचेत होकर आत्माको नहीं जानता है । १२ । दुष्ट कुलवालोंकी
 अपने कुलकी प्रशंसा करता हुआ रमता है दरिद्रियोंकी निन्दा करता
 गर्वमें अहंकारी है । १३ । दूसरों को मूर्ख कहना है और अपनेको अच्छीरीति
 देखता है दूसरोंको शिक्षा करता है परन्तु अपनेको शिक्षा करना नहीं चाह
 १४ । जब ज्ञानी और मूर्ख धनी और निर्दनी कुलीन अकुलीन अहंकारी
 निरहंकारीभी सब पितृवत् (यमलोक) में वर्तमान विगत ज्वर होकर सोते हैं
 वहाँपर दूसरे मनुष्य उन्हेंके निर्मास बहुत से आस्थिवाले अंग और नाडीवन्ध
 अधिक कुल नहीं देखते हैं और जो कुल और रूपकी मुख्यताको नहीं पाते हैं
 । जब वह सबभो शरीरत्याग क्रियेहुय पृथ्वीपर मोते हैं तब दुर्बुद्धी मनुष्य इस

Then he is in danger of evil desires and other calamities.
 with so many difficulties, he is not satisfied with anything and
 good and evil deeds. But those who meditate on God, protect
 selves from all sides as long as they are not summoned by death.
 One fallen low on account of evil desires, does not see his fall.
 a wonder that people forget themselves on account of avarice
 de, anger and other passions. They give themselves praise and
 others, they speak ill of the poor in the pride of their wealth.
 call others fools and do not look towards themselves, they preach-
 and themselves remain in the dark. Great and lowly, proud and
 humble all go to the region of Yam and nothing is left of them but a

धृतराष्ट्र उवाच । कृष्ण संसारगहनं विद्वेषं घदतांवर । एतदिच्छाम्
 माख्याहि पृच्छतः ॥ १ ॥ विदुर उवाच । जन्मप्रभ्रति मृतानां
 पूर्वमेवेह कलते घसते किञ्चदन्तरम् । ततः स पञ्चमेतीते मासे वा
 ॥ २ ॥ ततः सर्वागसंपूर्णो गर्भो धै स तु जायते । अमेध्यमध्ये घसति
 पने ॥ ३ ॥ ततस्तु वायुवेगोऽङ्घ्र्यादौ ह्यत्र शिराः ॥ योनिद्वारमुपागम्य घह्व
 समृच्छति ॥ ४ ॥ योनिसंधिहनाश्चैव पुनर्कर्मभिरन्वितः । तस्मान्मुक्तः स
 स्यात् पश्यत्युपद्रवान् । शृङ्खलमुपगच्छन्त सारमेया इवामियम् ॥ ६ ॥ ततः
 काले व्याधयश्चापि तं तथा । उपसर्पन्ति जीवन्तं वक्ष्यमानं वक्ष्यममिः ॥ ७ ॥
 मिन्द्रियैः पाशैः सङ्गस्थानुभिरावृतम् । व्यसनान्यपि घस्यन्ते विधिघानि
 वाध्यमानश्च तैर्मथो तैश्चतुर्विधैः सः । तदा नाथेति चैवायं प्रकुर्वन्

अध्याय ॥ ४ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे वक्ताओं में श्रेष्ठ किस रीति से यह संसाररूपी बन
 के योग्य है मैं इसको सुना चाहता हूँ आप मुझसे वर्णन कीजिये । १ ।
 बोले कि जन्मसे लेकर जीवधारियोंकी सब क्रिया दिखाई देती हैं इसलोक में
 कलल अर्थात् एकरात्रि निवास करनेवाले गर्भमें जीवात्मा निवास क
 परन्तु कुछ अन्तर है । २ । इसके पीछे पाँचवर्षा मास व्यतीत होनेपर उस च
 प्रादुर्भाव विचार किया अर्थात् एकरात्रि निवासमें चैतन्यकी सत्तामात्र होती है
 पाँचवें महीने में उसका पूर्ण प्रादुर्भाव होजाता है मांस रुधिरसेलित अपवित्र
 निवासकरता है । ३ । फिर वह अपानरूप वायुकी तीव्रतासे ऊंचेपर नीचे
 योनिके द्वारको पाकर बड़े कणों को पाता है । ४ योनीकी पीड़ा और
 से युक्त उस द्वारसे छूटकर संसारके दूसरे उपद्रवों को देखता है । ५ । और
 उसके पास एसे आते हैं जैसे कि मांसकेपास कुत्ते आते हैं । ६ । हे शत्रुसंतापी
 पीछे अभीसमय रोगभी उसकेपास आते हैं इसीसे जीवताहुआ
 होता है । ७ । हे राजा इन्द्रियोंके पास बन्धनों में बंधेहुये संग और
 संशुक्त उमजीव धारीके पास नानाप्रकारके व्यसन अर्थात् आपालियाँ
 मानहोती हैं । ८ । फिर उन सबसेपीडित होकर वह जीवतृप्तिको पाता है

CHAPTER IV

Dhritrashtra said, " How can we know the wilderness of the
 Pray tell me all about it." Vidur said, " From the beginning we
 cern the work of living beings. They live for some time in the
 and are then surrounded by impurities of flesh and blood. They
 there with their heads downwards and their feet up and are
 miserable plight till they come out of the womb. Coming out of
 difficulty, they have to encounter others in the world. Evils
 on him as dogs do a piece of flesh. Diseases come to him during

परिरक्षति ये ध्यानपरिनिष्ठिता ॥ ९ ॥ अथ नृबुध्वने ताव यमलोकमथागतमा
 धिकुर्ष्यश्च मृत्युं कालेन गच्छति ॥ १० ॥ वाग्धीनस्थ च यग्मात्रिमिष्टानिष्टं कृतं
 भूय यथात्मनात्मानं वध्यमानमुपेक्षते ॥ ११ ॥ अहो विनिकृतो लोको लोभेन च
 । लोभक्रोधमयोन्मत्तो नात्मानमवबुध्यते ॥ १२ ॥ कुलीनत्वे च रमते दुष्कु
 विकृतसयन् । धनद्वेषेण ह्यत्रश्च दरिद्रान् परिकुत्सयन् ॥ १३ ॥ मूर्खानिति परा
 समवेक्षन् । देवान् श्रिति चान्धेदां नात्मानं शास्नुमिच्छति ॥ १४ ॥ यदा
 मर्खाश्च धनवन्तोप निर्देनाः । कुलीनाश्चाकुलीनाश्च भानिनोधाप्यमानिनः
 सर्वे पितृवनं प्राप्त्वा स्वपन्ति विगतज्वराः । निर्मूसैरिस्थभूयैष्टगात्रैः श्नायु
 ॥ १६ ॥ कं वद्ये च प्रपश्यन्ति तत्र तेषां परे जना । येन प्रत्यघगच्छेयु कुलरूप
 ॥ १७ ॥ यदा सर्वसमं भवता । स्वपन्ति धरणीतले । कस्माद्वन्याभ्यामिच्छन्ति

कर्मों को करता है और उनका त्यागनेवाला नहीं होता है इसी प्रकार
 ष्व ईश्वरके ध्यानमें प्रवृत्त है वह अपने को तबतक चारों ओरसे रक्षा करत है
 यह जीव मिलनेवाले यमलोक को नहीं जानता है यमदूतों से आकर्षित
 पृत्युको पाता है । १० । उस मौनका जो पाप पुण्य है वह दूसरे के
 मुल्ये किराहू आ होता है फिरभी विपर्षोंमें आसक्त होकर अपनेको पतनहुआ
 ध्यानकरता है । ११ । आश्चर्य है कि यहाँसार नीच लोभके आधीनतामें वर्तमान क्रोध
 और धनके मदसे अचेत होकर आत्माको नहीं जानता है । १२ । वृष्ट कुलवालोंकी
 अपने कुलकी प्रशंसा करता हुआ रमता है दरिद्रियोंकी निन्दा करता
 गर्भे अहंकारी है । १३ । दूरों को मूर्ख कहना है और अपनेको अच्छीरीति
 देखता है दूसरोंको शिक्षा करता है परन्तु अपनेको शिक्षा करना नहीं चाह
 । १४ । जब ज्ञानी और मूर्ख धनी और निर्दानी कुलीन अकुलीन अहंकारी
 निरहंकारीमी सब पितृवन (यमलोक) में वर्तमान । यगत ज्वर होकर सोते हैं
 वहाँपर दूसरे मनुष्य उन्होंके निर्मास बहुत से आस्थिवाले अंग और नाडीबन्ध
 अधिक कुछ नहीं देखते हैं और जो कुल और रूपकी मुख्यताको नहीं पाते हैं
 । जब वह सबभो शरीरत्याग क्रियेहुय पृथ्वीपर मोते हैं तब दुर्बुद्धी मनुष्य इस

ime. Then he is in danger of evil desires and other calamities.
 with so many difficultier, he is not satisfied with anything and
 good and evil deeds. But those who meditate on God, protect
 selves from all sides as long as they are not summoned by death.
 One fallen low on account of evil desires, does not see his fall.
 a wonder that people forget themselves on account of avarice
 anger and other passions. They give themselves praise and
 others, they speak ill of the poor in the pride of their wealth.
 call others fools and do not look towards themselves; they preach
 and themselves remain in the dark. Great and lowly, proud and
 ble all go to the region of Yam and nothing is left of them but a

प्रलब्धमिह दुर्युधाः॥१८प्रत्यक्षञ्च परंल्लेख्यगोनिशमम श्रुतिं त्विमात्र। अद्युवे
स्मिन् यो धर्ममनुपालयन् । जन्मप्रभृति वसेत् प्राप्नुयात् परमां गतिम् ॥ १९ ॥
सर्वं विदित्वा वै यस्तस्वमनुवर्त्तते । स प्रमोक्षयते सर्वान् पन्थानो मनुजाधिप ॥ २० ॥
धृतराष्ट्र उवाच । यदिदं धर्ममहन बुद्ध्या समनुगम्यते । एतद्विस्तारयः सर्वं ३।

इति क्लीपर्वणि जलमादानिकपर्वणि धृतराष्ट्रोकोपनोपने चतुर्थोध्यायः ॥ ४ ॥

मार्ग प्रशंस मे ॥ १ । विदुर उवाच । अत्र ते वर्त्तयिष्यामि नमस्कृत्या स्वयम्मुखे ।
संसारगहनं यद्गति परमर्षयः ॥ २ ॥ कश्चिन्महति संसारे वर्त्तमानो द्विजः किञ्च
यत्तुर्गमनुपासो मन्त्रकृत्यादत्ते ह्यलम् ॥ ३ ॥ सिद्धयः साक्षात्परं रतिघोरं महात्
लोक में किस हेतु से परस्पर लडाकिया चलते हैं । १८ । यथात देवीगार मुने
जो इस श्रुतिको सुनकर इस विनाशवान् जीवलोकमें धर्मकापालन करताहुआ जन्म
लेकर मर्त्य कर्म करताहै वह परमगतिको पाता है जोकीइसप्रकार सबकोजान्
कर जलाने लाता करता है । २० ।

अध्याय ५ ॥

धृतराष्ट्रको किजो यह दुष्पाप्य धर्मवर्तिकद्वारा अच्छेमकाररे प्राप्त होताह
इमहेतुने अब बुद्धिमार्गको व्योरे समेत मुझसे कहो । १ । विदुरभी बोले किइस
स्थानपर ब्रह्माजी के अर्थनमस्कार करकेपर किया तुममें कहताहूँ जेगं कि महर्षि
लोग इस संसारकरी घन घनको सरने हैं । २ । निश्चयतःके इस बड़े संसार मेंकोई
द्विज मांसभक्षी जीवों ने पूर्ण उस दुःगम्य घनमें पहुँचाजो किबड़े शब्दवाले भयानक
रूप मांसभक्षी महाभयकारी सिंह व्याघ्र हाथी और रीलोकसमूहोंसे चारोंभोरको व्याप

—३३—

heap of bones. Why should foolish men practise deceit with their fellow creatures when they see that so many men endowed with wealth and beauty be dead on earth. We see and hear that he who leads a virtuous life in this mortal world, gains the highest goal. Who knows all this is a worshipper of Brahmā." 20.

CHAPTER V

Dhritrashtra said, "Because this difficult dharma can be known by wisdom alone, pray tell me the way to wisdom." Vidur said, "Having bowed down to Brahmā, I shall tell you how great sages cross the vast forest of the world - A man entered a forest full of trees

मन्त्रान् संपरिक्षिप्तं यत् स्म दृवा त्रसेद्यम् ॥ ४ ॥ तदस्य हृष्टवा हृदयमुद्वेगमग
 त परम । अत्युच्छ्रयश्च रोषा वै विक्रियाश्च परतप ॥ ५ ॥ स तद्वनं व्यनुसरन् संप्र
 बाधनितस्तत । वीक्षमाणो दिश सर्वा शरण पथ भवेदिति ॥ ६ ॥ स तेषां छिद्रमन्वि
 ष्णन् प्रदत्तो भयपीडितः । न च निर्याति वै दूरं न च तैर्विप्रयुज्यते ॥ ७ ॥ अथापश्य
 दनं चोरं समस्ताद्वागुरावृतम् । चाहुभ्यां सपरिक्षिप्तं स्त्रिया परमघोरया । ८ ॥ पश्य
 शीर्षघोरनामै शैलेरिव समुद्रतैः । नभस्पशैर्भ्रष्टाघोरैः परिक्षिप्तं महाधनम् ॥ ९ ॥ यत्र
 मध्ये च तत्राभूवुदपान समावृतः । यत्प्रीभस्त्वृणलज्जाभिर्दंढामिरभिसवृतः ॥ १० ॥ यत्र
 पपात क द्विजसत्र निगूढे सलिलाशये । विलग्नश्चाभवत्तस्मिन् लतासन्तानसंकुले
 ॥ ११ ॥ पवनस्व यथा जातं वृन्तधञ्ज महाफलम् । स तथा लभ्यते तत्र ह्यूर्ध्वपादो
 ष्च शिराः ॥ १२ ॥ अथ तत्रापि चान्योस्य भूयो जान उपद्रव । रूपमध्ये गद्दनागम

मत्युकाभी भयका रीथा । अस्तको देखकर इमका हृदय महाव्याकुल हुआकम्पभौर
 रोमांचोसे शरीर व्याप्त हुआ । ५ । वह उस वन में अचछेपकार घूमनाहुआ
 इधर उधर को दौड़ा और मव दिशाओं को देखाया कि मेरा शरास्थान कहाँ
 होगा । ६ । इमप्रकार वह भयसे पीड़ावान् छिद्रों को देखता भागावह नतो दूर
 जाता ॥ न इनसे वचता थाइमके पीछेउसनेचारों ओरको पाश युक्त घोर वनको देखा
 वह पाश वहीघोररूप स्त्रीकीशुजाओं से पकड़ा हुआथा ८ । और वहवन पांच शिर
 रखनेवाले पर्वतों के समान ऊंचे सपोंसे और आकाशको स्पर्श करनेवाले बड़ेदृष्टों
 से चारों ओरको संयुक्तया । ९ । उस वनके मध्य में एक कूप अन्वकार से पूर्ण
 मृणसे ढकी हुई हृदयल्लियोंने संयुक्तया वह द्विज उस गुप्त कूपमें गिरपड़ा और
 लताओंके फंशवमे पूर्ण उस कूपमें छिपगया । ११ । जेमे किटन्न वंशमें उत्पन्न
 बिरवाला बड़ा फल आखा में लगाहुआ होताहै उमी प्रकार वह द्विज ऊंचेपैर नीचे
 बिरवाला होकर उतैमे लटका । १२ । फिर उमी प्रकारसे उसका दमरा उपद्रव

beasts of prey, where lions, tigers, elephants and bears were present
 in large numbers sufficient to terrify even death His heart was much
 troubled at the sight of them and the hair of his body stood on end 5
 He ran in all directions to seek a place of refuge in the forest. He
 ran on much terrified looking for holes. He did not go far out of the
 place, for he saw a dreadful not spovid all round and held by a dread-
 ful woman. The place was full of five headed serpents huge as moun-
 tains and tall trees touching the sky. There was a dark well in the
 middle of the forest covered with grass and creepers. 10. He fell
 down in that well and was hid under creepers like a fruit among the
 branches of a tree He lay suspended there head downwards He
 met another calamity there, for at the bottom of it there was a power

पश्यत महाबलम् । कूपधीनाह्वेलायामपश्यतमहागजम् ॥ १३ ॥ पृथ्वकर्त्रं
 ण्येव द्विपटुकपदचारिणम् । क्रमेण परिसपन्नं वन्कीचुक्षसमावृतम् ॥ १४ ॥ तस्य
 प्रशान्त्यासु वृक्षशाखापलम्बितः । नानारूपा मधुकरा घोररूपा भयावहाः । आकृते म
 संवृथ्य पूर्णमेव कानिजा ॥ १५ ॥ भूयो भूयः समीहन्ते मधूनि भरतर्षभ । स्वाधी
 यानि भूतानां यैर्वाको त्रिप्रकुप्यते ॥ १६ ॥ तेषां मधूनां बहुधा धाराः प्रस्रवतांस्तदा ।
 आलम्बमानः स मान् धारां पिबति सर्वदा ॥ १७ ॥ न चास्य कृष्णा विरता पिबमानस्य
 सङ्कटे । असीमनि तदा नित्यमृत्युः स पुनः पुनः ॥ १८ ॥ न चास्य जीविते राज्ञ
 निबन्धः समज यत् । तत्रैव च मनुष्यस्य जीविताशाः प्रतिष्ठिताः । कृष्णा ह्वेलाश्च तं
 वृक्षं कुट्टयन्ति च मूषिका ॥ १९ ॥ इयलैश्च वन्दुगान्तेस्त्रिया च परमो भवा ।

भी उत्पन्नहुमा किंकूपके मधुपमं बड़ बलवान् सर्पको देखा और मुखवन्दनकर
 किनारपर पेठेबड़े हाथीको देखा ॥ ११ ॥ जोकिष्ठःमुखवान्ना और वारह चर
 वाला श्वेत श्यामवर्ण क्रमसेचलनेवाला सैरुडोंदृष्टेऔर बालिघोसे बकाहुआवा ॥ १४ ॥
 इस के पीछे बड़ी शाखाओं पर लटकनेवाले नाना प्रकार का
 रूपरखनेवाले श्वेतवर्ण घोर और बड़ेभयके उत्पन्न करनेवाले
 मधुमयी घवनाकर सन्तानके द्वारा वृद्धि पानेवाले भौरे शहदको इकट्ठ करके
 निवास करतेहैं । १५ । हेभरतर्षभ यह भौरे वारम्बार जीवधारियों के क्वादिहरतों
 की इच्छाकरतेहैं जिन्होंसे बालक आकर्षण कियेजातेहैं । १६ । उन रसोंकी बड़ी
 धारा सदैव गिरतीहै तब लटकताहुआवह जीव सदैव धाराओं को पानकरताहै । १७
 संकटमें भी इस पानकरनेवाले की इच्छापूर्णनहींहुई वह अतृप्तहोकर सदैव वारम्बार
 उनको चाहताहै । १८ । हेराजा जीवन में उसकी अभीति नहीं उत्पन्नहुई उसमें
 मनुष्य के जीवनकी आशा नियतहै श्वेत कृष्ण रंगवाले चूरे (रात्रि दिन) उस
 वृक्षरूपी आपुर्हाको काटतेहैं । दुर्गम्य वनकेपास बहुतसे सर्प और बड़ी उग्रस्त्री
 (चूदाबस्या) और कूपके नीचे सर्प (मृत्यु) और कूपके मुखपर हाथी (पूंख-

ful serpent, while at the mouth of it he saw a huge elephant with six
 mouths, twelve feet, black and white colour and covered with trees
 and creepers 14. Then he saw hanging on a large low a hive of
 humming bees which gathered in large numbers and multiplied, mak-
 ing honey. 15. They sit on tasty things such as please children.
 A stream of sweet matter dropped from the hive and the man sus-
 pended there drank of it. Fallen in such trouble he remains unsatisfied.
 He is not tired of life and is yet hopeful, White and
 black mice, day and night, are gnawing away the roots of the tree of
 his life. There are numerous serpents in the forest, with the dreadful
 woman, the serpent below at the bottom of the well, and the elephant
 at the mouth. 20. There is a great fear of the fall of the tree on

तास्य मागेन बीनाहं कुञ्जरेण च । २० ॥ वृक्षप्रताताञ्च भयं मूर्खिभ्यश्च पञ्च
 म् । मञ्जुलोमान् धुकरैः वष्टमाहुर्महद्भयम् ॥ २१ ॥ एवं स वसते तत्र क्षिप्तः संसार
 नागरे । न चैष जीवितशियां निर्धेदमुपगच्छति ॥ २२ ॥

इति ब्रह्मपत्रीण जलप्रादानिकपर्षशि धृतराष्ट्रशोकापनोपने पंचमोऽध्यायः ॥ ५॥

धृतराष्ट्र उवाच । अहो खलु महदु खं कृष्णप्रासन्न तस्य ह । कथं तस्य रन्तित्र
 मुषिषां वदताम्बर ॥ १ ॥ स ईशः क्व नु यथासौ वसते धर्मरुद्धटे । कथं वा स धिमु
 ब्वेत नरस्तस्मान्महाभयात् ॥ २ ॥ एतन्मे सर्वमाचक्ष्य साधु ब्रह्मणे तदा । कृपामे
 नदती जाता तस्याऽप्युद्धरणेन हि ॥ ३ ॥ विदुर उवाच । उपमानमिदं राजन् मोक्षवि
 दिदशाददम् । कुर्वते दिग्दते येन परलोके पु मानः ॥ ४ ॥ उच्यते यश्च कन्तारं महास
 र्षे) और वृक्षके गिरने से भय है और लूटते पांचवां भय है और शहदके लोभसे
 छरेनबकां कहा है । २१ । इसप्रकार संसार सागरमें पहाडूआ यह जीव वर्तमान
 होश है और जीवनकी आशामें धैराग्यको नहीं पाता है ॥ २२ ॥

अध्याय ६ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि बड़ा आश्चर्य है कि निधय बड़ा दुःख है और उसकी स्थिति
 भी दुःख रूप है हेयकाश्रमों श्रेष्ठ वसमें उसकी मीति और वृत्ति किसप्रकार से है ?
 वरदेन कहा है जिसमें यह जीव धर्मसंकटमें निवास करता है और वह मनुष्य उस
 वदे भयसे कैसे छूटेगा । २ । यह सभ मुझे कहां यह बहुत अच्छा है तब हमकाम
 में लावेंगे निधय वसते कृष्णके लिये में ऊपर यही कृपा उत्पन्न हुई है । ३ ।
 विदुरजी बोले हे रागा मोक्ष चाहनेवाले पुरुषों ने यह दृष्टि बर्यो न किया है जिस
 से कि मनुष्य परलोक में सुन्दर गतिको पाता है । ४ । जो वह महावन कहा जाता

account of the mice and the consequent loss of the stream of honey.
 Thus lies man in the ocean of the world and yet he does not sever his
 mind from the hope of life ' 22.

CHAPTER VI

Dhritrashtra said, "I am much amazed to hear that man, although
 he is beset with so many troubles does not like to sever his connection
 from the world. Pray explain this. Where is the place the soul
 lives in and how can man get rid of the fear? Pray tell me all. It is

पश्यत महायत्नम् । कूपधीनाहवेलायामपश्यतमहागजम् ॥ १३ ॥ पृथ्वक्त्रं
 णैव द्विपट्टकपदधारिणम् । क्रमेण परित्पन्नं वल्कीवृक्षसमावृतम् ॥ १४ ॥ तस्य
 प्रशास्यासु वृक्षशाकापलीम्बितः । नानारूपा मधुकरा घोररूपा भयावहाः । आश्रिते म
 संप्रथ पृथिव्ये केशनिजा ॥ १५ ॥ भूयो भूयः समीहन्ते मधूनि भरतर्षभ । स्थादीनि
 यानि भूतानां वैद्यान्तो विप्रकुप्यते ॥ १६ ॥ तेषां मधूनां बहुधा धाराः प्रस्रवतांतादा ।
 आलम्बमानः स मान् धारां पिबति सर्वदा ॥ १७ ॥ न चास्य तृष्णा विरता विवमानस्य
 सङ्कुटे । अगीष्मनि तदा नित्यमृत्युः स पुनः पुनः ॥ १८ ॥ न चास्य जीविते राजद
 निषेदः समज यत । तत्रैव च मनुष्यस्य जीविताशाः प्रतिष्ठिताः । कृष्णा श्वेताश्च तं
 वृक्षं कुट्टयन्ति च मूषिका ॥ १९ ॥ व्यालैश्च वनदुर्गान्तेस्त्रिया च परमोमवा ।

पी उत्पन्नहुमा किंकूपके मधुमं वड़ बलवान् सर्पको देखा और मुखबं कूप
 किनारपर ऐसे वड़े हाथीको देखा ॥ १३ ॥ जोकि छः मुखवाला और बारह चर
 वाला श्वेत श्यामवर्ण क्रमसे चलनेवाला सैरुडोंटने और वल्लेहोसे ढका हुआ था ॥ १४ ॥
 इस के पीछे बड़ी शाखाओं पर लटकनेवाले नाना प्रकार का
 रूपरखनेवाले श्वेतवर्ण घोर और बड़ेभयके उत्पन्न करनेवाले और
 प्रथमही घबराकर सन्तानके द्वारा वृद्धि पानेवाले भौरे शहदको इकट्ठ करके
 निवास करते हैं ॥ १५ ॥ हे भरतर्षभ वह भौरे बारम्बार जीवधारियों के स्थादीहूतों
 की इच्छा करते हैं जिन्होंसे बालक आकर्षण किये जाते हैं ॥ १६ ॥ उन रसोंकी बड़ी
 धारा सदैव गिरती है तब लटकता हुआ वह जीव सदैव धाराओं को पान करता है ॥ १७
 संकटमें भी इस पान करनेवाले की इच्छा पूर्ण नहीं हुई वह अतृप्त होकर सदैव बारम्बार
 उनको चाहता है ॥ १८ ॥ हे राजा जीवन में उसकी अप्पत्ति नहीं, उत्पन्न हुई उसीमें
 मनुष्य के जीवनकी आशा नियत है श्वेत कृष्ण रंगवाले चूहे (रात्रि दिन) उस
 वृक्षरूपी आयुर्दाको काटते हैं । दुर्गम्य वनके पास बहुतसे सर्प और बड़ी उग्रस्त्री
 (वृद्धावस्था) और कूपके नीचे सर्प (मृत्यु) और कूपके मुखपर हाथी (पूर्ण-
 ful serpent, while at the mouth of it he saw a huge elephant with six
 mouths, twelve feet, black and white colour and covered with trees
 and creepers 14. Then he saw hanging on a large low a hive of
 humming bees which gathered in large numbers and multiplied, mak-
 ing honey. 15. They sit on tasty things such as please children.
 A stream of sweet matter dropped from the hive and the man sus-
 pended there drank of it. Fallen in such trouble he remains unsatisfied.
 He is not tired of life and is yet hopeful, White and
 black mice, day and night, are gnawing away the roots of the tree of
 his life, There are numerous serpents in the forest, with the dreadful
 woman, the serpent below at the bottom of the well, and the elephant
 at the mouth, 20. There is a great fear of the fall of the tree on

एष नमो नो नो ह्ये कुञ्जरेण च ॥ २० ॥ वृक्षप्रताताञ्च मयं सूविकेभ्यश्च पञ्च
 प्र । मकुलोमान्धुकरैः पृथमाहुर्महद्भयम् ॥ २१ ॥ एवं स वसते तत्र क्षिप्तः संसार
 गरे । न चैव जीविताशायां निधेदमुपगच्छति ॥ २२ ॥

वि स्नापणीण जसप्रादानिकपर्वणि धृतगण्डूशोकापनोपने पंचमोऽध्यायः ॥ ५॥

धृतराष्ट्र उवाच । अहो यत्तु महदु खं कृणुयासञ्च तस्य ह । कथं तस्य रन्तित्र
 विधिं वदताम्बर ॥ १ ॥ स वंशः क्व नु यथासौ वसते धर्मरूढते । कथं वा स विमु
 च्चेत नरस्तस्मान्महाभयात् ॥ २ ॥ पतन्मे सर्वमाश्रय साधु जंष्टामहे तदा । कृपामे
 नदती जाता तस्याऽयुद्धरणेन हि ॥ ३ ॥ विदुर उवाच । उपमानमिदं राजन् मोक्षवि
 दिदृष्टव्यम् । कुर्वते सिद्धते येन परलोकेषु मानवः ॥ ४ ॥ उच्यते यत्र कर्तारं महास
 र्प) और वृक्षके गिरने से भय है और वृक्षोंसे पांचवां भय है और शहदके लोभसे
 उल्लेखको कहा है । २१ । इसप्रकार संसार सागरमें पड़ा हुआ यह जीव वसंतमान
 होता है और जीवनकी आशामें वैराग्यको नहीं पाता है ॥ २२ ॥

अध्याय ६ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि बड़ा आश्चर्य है कि निश्चय बड़ा दुःख है और उसकी स्थिति
 भी दुःख रूप है हेयक्ताश्रमोंमें श्रेष्ठ उसमें उसकी प्रीति और तृप्ति किसप्रकार से है ?
 वह देश कहाँ है जिसमें यह जीव धर्मसंकटमें निवास करता है और वह मनुष्य उस
 वृद्धे भयसे कैसे डरेगा । २ । यह सत्य सुझावे कहां यह बहुत अच्छा है तब हमकाम
 में लावेंगे निश्चय इसमें कृपामे के लिये मेरे ऊपर बड़ी कृपा उत्पन्न हुई है । ३ ।
 विदुरजी बोले हे राजा मोक्ष चाहनेवाले पुरुषों ने यह दृष्टांत क्यों किया है जिस
 से कि मनुष्य परलोक में सुन्दर गतिको पाता है । ४ । जो वह महावन कहा जाता

account of the mice and the consequent loss of the stream of honey.
 Thus lies man in the ocean of the world and yet he does not sever his
 mind from the hope of life " 22.

CHAPTER VI

Dhritrashtra said, "I am much amazed to hear that man, although
 he is beset with so many troubles does not like to sever his connection
 from the world. Pray explain this. Where is the place the soul
 lives in and how can man get rid of the fear? Pray tell me all. It is

सार एव सः । वनं दुर्गं हि प धेते १ ससारगहनं हि तत् ॥५॥ ये च ते कथिता इवांता
 व्याघ्रपत्न प्रकीर्तिताः । या सा नारी वृहत्काया अश्विनिष्ठानि तत्र वै ॥६॥ तामाहुस्तु
 जराप्राज्ञा वर्णरूपविनाशिनाम् । यस्तत्र कूपो नृपते स तु देवः शरीणिनाम् ॥७॥ बलत्र
 वसतेऽघस्तामहाहि काल एव सः । अन्तकः सर्वभूतानां देहिनां सर्वहाय्वरसी ॥ ८ ॥
 कूपमध्ये तु या जाता पत्नी यत्र च मानवः । प्रताने लम्बने लग्ना जीविताशा शरीरि
 णाम् ॥ ९ ॥ स यस्तु क्रूरवीनाहे त इक्षुं परितर्पति । बह्वक्षत्रः कुञ्जरो राजन् स तु
 संदत्सरः स्मृतः ॥ १० ॥ पशुमुक्ताः ऋषो माताः पादा द्वादश कीर्तिताः । ये तु वृक्ष निष्ठ
 भवन्ति मुषिकाः पञ्चमास्याः ॥ ११ ॥ राश्यहानि तु ान्याहुर्भूतानां परिश्रितकाः । ते
 ये मधुकरास्तत्र कामास्ते परिकीर्तिताः ॥ १२ ॥ वास्तु ता वहुतो धाराः लवन्ति मज्जि

है वही महा संसार है और जो यह दुर्गमवन है वही संसारघन है । ५ । जो सर्व
 तुमसे वहीरोग है वहां बड़े शरीरवाली जो स्त्री निवास करती है । ६ । उसकी
 ज्ञानियोंने वर्णरूपकी नाश करनेवाली वृद्धावस्था कहा है हे राजा वहांजो कूपहै
 वह शरीरधारियोंका शरीरहै । ७ । और जो वडासर्प उस कूपके भीतर निवास
 करताहै वहीकाल है यह सब भूतोंका नाशकरनेवाला और धीवात्माओंका हरने
 वालाहै । ८ । और कूपकेमध्य में जीवन्ती चरपन्नहुई वह मनुष्य उसके विस्तार
 में लटकताहै वही शरीरधारियोंके जीवनकी आशा है । ९ । और कूपके मुखपर
 जोछाः मुन्ववाला हाथी वृक्षकी शाखाओं के चारोंओर चेष्टा करताहै वहीपूर्ण वर्षहै
 । १० । उस के छा मुखऋतु और बारह चरण महीने कहें उसी प्रकार जो छूटे
 वृक्षको काटतेहैं । ११ । उनको विचारवान् पुरुषों ने दिन रात्रि कहाहै उसमें जो
 यह भौर है वह नाना इच्छा कहीहैं । १२ । और जोवह शहदकी बहुतसी धारा

good to hear and beneficial." Vidur said, "This precept is given by those who wish to gain salvation and a good state in the next world. The forest mentioned above is the world. 5. The serpents are diseases, the large-nosed woman is the old age which removes beauty of person; the wall is the body and the large serpent at the bottom is Death which destroys all. The creeper in the middle of the well, supporting the man, is the hope of life. The six-headed elephant moving round the tree is the year. 10. Its six mouths are the seasons; the twelve feet are the months; the mico which eat away the roots of the tree a e days and nights and the black bees are the worldly desires. The stream of honey is the esp of desires in

॥ सांस्तुकात्तरसात् विद्यामत्र तज्जन्ति मानवा ॥ १३ ॥ एवं संसारचक्रस्य परि
विदुर्बुधाः । येन संसारचक्रस्य पाशाश्चिन्दन्ति वै बुधाः ॥ १४ ॥

॥ स्त्रीपर्वणि जलप्रादानिकर्षणीं धृतराष्ट्रोकापनेने पद्मोध्यायः ॥ ६ ॥



धृतराष्ट्र उवाच । गदोऽभिहितमाख्यानं श्रवता तत्तदर्शिता। भूय' एव तु मे हर्षः
भूत्वा धाममृतं तव । १ ॥ विदुर उवाच । शृणु भूय प्रवक्ष्यामि मार्गस्येतस्य विलसाम्।
दृष्ट्वा विप्रमुच्यन्ते संसारेभ्यो विरक्षणम् ॥ २ ॥ यथा तु पुरुषो राजन् दीर्घमध्वान
शस्थितः। क्वचित् क्वचिच्छ्रमाच्छ्रान्तः कुरुते धाममेव च ॥ ३ ॥ एव संसारपथ्याये
गर्भवासेसु मारत । कुर्वन्ति दुर्बुधा वास मुच्यन्ते तत्र पण्डिता ॥ ४ ॥ तस्मादध्वानमेवै
पिरतीहै उनको काम रसजानो जिसमें मनुष्य डूबतेहै । १ । जिन्होंने इसप्रकार संसार
चक्रकी गतिकोजानाहै निषय करके बहमनुष्य संसार चक्रके पाशाको काटते हैं १४।

अध्याय ७ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे पद्ममातलदर्शी आपने मोक्ष देनेवाली कथा कही उसको
आप फिर मुष्यना ममेत कदो मैं सुनना चाहता हूँ । १ । विदुरजी बोले सुनो मैं
फिर उक्त मार्गके क्रमको कहताहूँ जिसको सुनकर ज्ञानीलोग संसारसे छूटतेहैं । २।
हे राजा जैसे कि बड़े मार्गमें नियत मनुष्य, जहाँ तहाँ थककर निवास करता है
। ३ । हे भरतवंशी उमीप्रकार अज्ञानी मनुष्य संसारमें सृष्टिरूप गर्भ में वारम्बार
निवास को करताहै । ४ । और ज्ञानीलोग शीघ्र जातेहैं इस हेतुसे शास्त्रज्ञ लोगो



which men are drown-1 Those who know the course of the wheel
of the world, cut away the bonds " 14



CHAPTER VII

Dhritrashtra said, " You have pointed out the way to salvation
Pray explain it once more I wish to hear of it." Vidur said,
" Hear once more the account of the way leading to salvation. A
foolish man stays in various births like one staying at different stages
whom tired in a journey One endowed with gyan crosses this dense
forest of the world sooner. Wise men have the desire to cross it

तमाहुः सास्त्रविदो जनाः । तत्तत् संसारगहनं वनवाघुर्मनीषिणः ॥ ५ ॥ सोऽयं
समावर्त्तो तर्ह्यानां मरतर्धम । चराणां स्याधरणाणः न मृध्वत्तत्र पण्डित ॥ ६
शारिरा मानसाश्चैव मर्मानां ये तु व्याधयः । प्रत्यक्षाश्च परोक्षाश्च ते
कथितायुवैः ॥ ७ ॥ क्लिश्यमानाश्च तैर्मित्थं चार्यमाणश्च भारत ।
महाव्याधैर्द्विजन्त्यल्पबुद्धयः ॥ ८ ॥ यथापि तैर्मिमुच्येत व्याधिभिः पुरुषोऽनृप ।
णोत्येष संपञ्चाज्जरा रूपधिनाशिनी । ९ ॥ शब्दरूपसरूपशैर्गन्धैश्च विविधैरपि
मज्जमानं महापङ्के निरालम्बे समगततः । १० ॥ संघटसरत्तं वै मात्साः
कथः क्रयेणास्योपयुञ्जन्ति रूपमायुस्तथैव च ॥ ११ ॥ एते कालस्य निवृत्तो
जानन्ति दुर्बुधाः । चात्रामिलिखितान्याहुः सर्वं भूतानि कर्मणा ॥ १२ ॥ रथः
भूतानां सत्त्वमाहुस्तु सारथिम् । इन्द्रियाणि हयानाहुः कर्म बुद्धिश्च रथमयः ॥ १३

ने इसको मार्गो कहा है और जिन ज्ञानियों ने जिन संसारको वनवन कहा है
पुरुषोत्तम यह इर स्थावर और जङ्गमजीवोंका चलायमान चक्र है पण्डित
इच्छा नहीं करता है । ६ । शरीरधारियों के शरीर और चित्तसे सम्बन्ध
वाले जो रोग हैं उनको ज्ञानी लोग गुप्त और प्रकट रूप सर्प कहते हैं । ७ ।
भरतीं बड़ी निर्बुद्धी मनुष्य वन्दोंने दुःखपातवाले और धायल होकरभी अपने
रूपी सर्पोंसे व्याकुलताको नहीं पाते हैं हे राजा जब मनुष्य उन रोगोंसेभी छूटा है
तब उस पुरुषको रूपकी विनाश करनेवाली जराभवस्था दवालेती है । ९ । जोके
शब्द, रूप, रस, स्पर्श और नानामकार की गन्धियोंसे भी निराधार बड़ी कीर्षमें
चारोंभोरसे दृवाहृथा है पूर्ण वर्ष छःऋतु पारह महीने दोनों पक्ष दिनरात और
उनकी सन्धियां यह सब क्रमपूर्वक उसके रूप और भवस्थाको चीण करतें हैं । ११ ।
यह कालकी निधि है दुर्बुद्धी लोग उनको नहीं जानते हैं सब जीवोंको उनके कर्म
से इश्वरका लिखाहुआ कहा है । १२ । शरीरधारियोंका देहरथ है चिन्ता सारथी
है इन्द्रिय घोड़े हैं और कर्मबुद्धी उस रथकी वागदोर है । १३ । जो पुरुष उन
कनेवाल घोड़ोंके पीछे दौड़वाड़े वह इस संसारचक्रमें चक्रके समान घूमता है । १४ ।

the wheel which moves the living and lifeless creatures. The diseases
which attack living beings have been called serpents by the wise.
The fool, though attacked by them is not distressed in his mind, and
when he is freed from such diseases, old age overtakes him. He is
stuck in a deep mire, and days, nights, fortnights, seasons and years
decrease the period of his life. 10. Foolish men do not know the
treasure of time. It is said that God gives beings the reward of their
deeds. The body of beings is a car; anxiety is its driver; organs of
senses are its horses and wisdom is its trace. He who runs after the
horses, turns round with the wheel. He who curls them with wis-

हयानां यो धेगं घावतामनुघाघति । स तु संसारचक्रेस्मिन् चक्रवत् परिवर्त्तते
 ॥ १५ ॥ यस्मात् संयमते बुद्ध्या संयतो न नियन्ते । स तु संसारचक्रेस्मिन् चक्रवत्
 परिवर्त्तते ॥ १५ ॥ यं तु संसारचक्रेऽस्मिन् चक्रवत् परिवर्त्तते ।
 प्रथमाणा न । मुह्यन्ति संसारे न भ्रमन्ति ते । संसारे भ्रमतां राजन ! दुःख
 मोक्षं ज्ञापते ॥ १६ ॥ तस्मादस्य निवृत्त्यर्थं यत्नमेव धरेद्बुधः । उपेक्षा नात्र कस्तन्य
 घतशास्त्रः प्रवर्त्तते ॥ १७ ॥ यतेन्द्रियो नरो राजन् क्रोधलोभनिराकृतः । सन्तुष्टः
 सत्यवादी यः । सांशान्तिमीधगच्छति ॥ १८ ॥ याश्चमाहूं रथं ह्येन मुह्यन्ते येन बुध्या
 बुतपुलमेवेतद् बुधं भवति भारत ॥ १९ ॥ साधुः परमदुःखानां बुद्धिभैषज्यमाचरेत्
 तिनोपघमधाप्येह वृत्तपरं महौषधम् । २० ॥ न विक्रमो न चाप्यर्थो न मित्रं न सुहृ
 व्रतनः तथोन्मोचयते दुःखाद्यथात्मा स्थिरसंयमः ॥ २१ ॥ तस्मान्मैत्रं महास्थाय शील

जितेन्द्रिय उनको बुद्धिसे आर्धान करताहै बड़चक्रके समान घूमनेवाले इस संसार
 चक्रमें लौटकर नहीं आताहै । १५। वह संसार में भी घूमते हैं परन्तु घूमतेहुये मोहको
 नहीं पाते हैं वही दुःख संसार के घूमनेवालों के लिये भी उत्पन्न होताहै । १६ ।
 हम हेतुसे ज्ञानीको उचितहै कि इस संसार से छूटनेका उपायकरे इसमें, कर्मभूल
 और देर नकर नी चाहिये नहींतो सैकड़ों शाखावाला वृक्ष वृद्धिको पाताहै । १७।
 हे राजा जो पुरुष जितेन्द्रिय क्रोध लोभसेरहित सन्तोषी और सत्यवक्ताहै वहशांति
 को पाताहै । १८ । हे भरतवंशी यहभी कहाहै कि पश्चात्ताप करनेमें दुखहोवाहै
 ज्ञानी वड़े दुखोंकी औपधी ज्ञानको ही समझे । १९ । इसलोकमें: जितेन्द्रिय मनुष्य
 वही दुष्प्राप्य ज्ञानरूपी महाऔषधीको पाकर बुखरूपी बड़ेरोगको उससे काटे
 । २० । घोर दुःखसे वैसे नरो पराक्रम छुडाताहै नधन मित्रऔर सुहृद्वरण छुडातेहैं
 जैसे कि जितेन्द्रियात्मा छुडाताहै । २१ । हे भरतवंशी इसकारण से । सबजीवोंकी
 प्रीतिमें नियत होकर सुन्दर प्रकृतिको पाकर जितेन्द्रियपन, त्याग और सावधानीको
 प्राप्तकर यह तीनोवृक्षके घोड़ेहैं । २२। हेराजा! जोपुरुष मृत्यु के भयको त्यागकरके

dom, does not come back. 15. He turns with the wheel, but does
 not lose senses with it. A wise man should try to release himself
 from the world without idleness and mistake or there shall be raised
 from it a tree having hundreds of branches. He who has control over
 senses, who is free from avarice, and who is satisfied and truthful, gets
 peace of mind. Remorse gives pain and gyan is the medicine of all pains. One
 having control over organs, having got the great medicine of gyan,
 should cut away all disease with it. 20. Neither prowess, nor wealth or
 friend give relief from trouble as does the control over senses. Let
 one therefore love all the world with control of senses, resignation and
 carefulness which are the horses of Brahm. He who gives up all fear

मापद्य भारत । द्वास्त्यागोऽप्रमादश्च ते त्रयो ब्रह्मणो ह्याः ॥ २२ ॥ २१
 युक्तः स्थितो यो मानसे रथे । त्यक्त्वा मृत्युभयं राजन् ब्रह्मलोकं न गच्छति ॥
 अमयं सर्वभूतेभ्योऽयो ददाति महीपते । स गच्छति परं स्वानं विष्णोः
 ॥ २४ ॥ न तत् कथुसदृशं नोपवायेश्च नित्यश । अमयस्य हि दानेन सत् फल
 पात्ररः ॥ २५ ॥ नह्यात्मनः प्रियतरं किञ्चित् भूतेषु निश्चितम् । अनिष्टं
 मरणं नाम भारत । तस्मात् सर्वेषु भूतेषु दया कार्या विपश्चिता ॥ २६ ॥
 मायुक्ता बुद्धिजालेन संवृताः । असूक्ष्मदृष्टयो मन्दा भ्राम्यन्ते तत्र तत्र ह ।
 एषो धीरा ब्रजन्ति ब्रह्मसारमताम् ॥ २७ ॥

इति श्रीपरांषि जलपादानिकपर्वाणि धृतराष्ट्रशोकापनोदने सप्तमोध्यायः ॥

शीतल किरणोंसे युक्त चित्तरूपी रथर नियतै वह ब्रह्मलोकको पाताहै ।
 और जो परम सबजीवों को निर्भयता देताहै वह सर्वव्यापी परमेश्वर के उस
 स्थायी गंत है जो क्रियायुक्तों उपाधियों से रहित है । २४ । मनुष्यजो
 देने की कलपाताहै वह हजारों यज्ञ और सदैव तपोंके भी करने से नहीं पासकाहै
 जीवोंमें आत्मा से अधिक कोई प्यारा नहींहै देवतवंशी सबजीवोंका अभिष
 नामहै इसहेतुसे ज्ञानीको सबजीवोंपर दयाकरना चाहिये । २६ । नाना प्रकारके
 युक्त भ्रमज्ञान के जालसे ढकेहुये अल्पदृष्टी निर्बुद्धी मनुष्य जहांतहां घूमतेहै
 सूक्ष्मदृष्टिवाले ज्ञानी सनातनब्रह्मको पातेहैं ॥ २७ ।

of death and stands on the car of mind with cold rays gets the reg
 of Brahm. He who believes others from fear, goes to the region of
 the Omnipresent who is free from all blemishes. A merit which
 a man gets is not obtainable by thousands of sacrifices and vows.
 25 Nothing is dearer than self, and nothing is more averse than
 death, therefore one should be merciful to all. Foolish men, in the
 Meshes of ignorance roam here and there, while gyanis obtain the
 region of Brahm " 27



वैशम्पायन उवाच । विदुरस्य तु तद्वाक्यं निशान्य कुरुसत्तमः पुत्रशोकामित्सन्तः
 श्रुत्वा श्रुत्वा मूर्च्छितः ॥ १ ॥ तं तथापीतं भूमौ निःसङ्गं प्रेक्ष्य - वा-घ-भा- । कृष्णद्विपाय
 श्रुत्वा च विदुरस्तथा । सञ्जय- सुहृदश्चान्ये दाःस्था वे चास्य सम्मताः ॥ २ ॥
 श्लेषे मुखशीतेन तालवृन्तैश्च मारत । रसपशुश्च करैर्गात्रं गीज्यमानाश्च घ्नततः ।
 आम्बाश्च तु चिरं कालं घृतराष्ट्रं तथागतम् ॥ ४ ॥ अथ दीर्घस्य कालस्य लज्जसंशो
 महीपतिः । विललाप चिरं कालं पुत्राविभरमिच्छुः ॥ ५ ॥ धिगस्तु खलु मानुष्यं
 कामुष्यं च वरिष्ठमम् । यतो मूलानि दुःखानि सर्वान्ति सुहृसुहृ ॥ ६ ॥ पुत्रनाशोऽर्थ
 नाशे च ज्ञातिसम्बन्धिनामय । प्राप्यते सुमद्दुःखं विद्याग्निप्रतिमं विभो ॥ ७ ॥ येन
 वृक्षमि गात्राणि येन प्रेक्षा विगद्यति । येनाग्निभूतं पुरुषो मरणं बहु मन्यते । ८ ॥
 तदिदं व्यसंतं प्राप्तं मया भाग्यविपर्ययात् । पस्यान्तं न विगच्छ मिच्छेते प्राणविय

अध्याय । ६ ।

वैशम्पायन बोले किराजा घृतराष्ट्र विदुरजी के इसवचनको सुनकर पुत्रशोक से
 दुर्खा और मूर्छावान होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा । १ । सब वाञ्छव व्यामजी विदुरजी
 सजगद अग्य सुहृद् द्वारपान और जोर उसके अङ्गीकृत थे उन सबने उस प्रकार
 पृथ्वीपर पड़ेहुये अचेत उस घृतराष्ट्र को देखकर सुखदाई शीतल जलसे छिड़का
 और पंखोंसे हवाकरी और उपायों से चैतन्य करतेहुये उन लोगोंने हाथोंसे शरीर
 को स्पर्श किया इसके पीछे उसदशावाले घृतराष्ट्रको बहुत देरतक विद्वत्सकगय
 । ४-१ फिर बहुत देरके पीछे सचेतताको पानेवाले वह पुत्रशोक से युक्त राजा
 घृतराष्ट्र बहुत देरतक विलाप करनेवाला हुआ । ५ । निश्चय करके मनुष्योंमें जन्म
 को और नरलोकों में परिग्रहको धिक्कारेहै जिसमें कि दुखकामूल वारम्बार उत्पन्न
 होताहै । ६ । हे सर्वव पुत्र घन ज्ञानवाले और नानेदारों का भी नाश होताहै । ७ ।
 जिनसे सबअंग भस्महोकर बुद्धिकाभी नाशहोताहै और जिनसे भयभीत मनुष्य
 मरणको बहुत मानताहै । ८ । सोयह दुख प्रारब्धके विपरीततासे माने पायाहै प्राण
 त्यागके सिवाय उमक अन्तको अन्य किसी प्रकारसे नहींपावाहै । ९ । मैं उसी
 प्रकारकरुणा हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ व्यासजी देखो उसघृतराष्ट्र ने बड़े ब्रह्मज्ञानी महात्मा

CHAPTER VIII

Vaishampayan said, "Having heard the words of Vidur, Dhritrashtra
 fell down on earth senseless for the grief of his sons. All the kinsmen
 with Vyas, Vidur, Sanjaya and other friends sprinkled cold water
 over him and fanned him. They tried their best to bring him to
 consciousness and touched his body with their hands, consoling him
 all the while. Then coming to consciousness, he lamented long the
 death of his sons. 5 'Fire on me and on my manhood,' cried he,
 'for all this is a source of trouble. The destruction of sons, wealth
 and kinsmen is like poison or fire. Limbs of the body burn with

दर्शयाम् । ९ ॥ तन्वैराहं कतिपयमि अथै । क्षिप्तमगम ॥ इत्युक्त्वा तु महात्मानं
 विगदं प्रह्लादिभ्यः ॥ १० ॥ धृतराष्ट्रोऽनघमदः शोकञ्च परमं गतः । अभूत्तथै
 राजासौ घ्याषयानो मदीपने ॥ ११ ॥ तस्य तेहृत्वनं श्रुत्वा कृष्णद्वैपायनः प्रभुः । पुत्र
 ह्योक्तांभसन्ततं पुत्रं वचनमप्रयीत् ॥ १२ ॥ व्यास उवाच । धृतराष्ट्र महाबाहो
 यस्त्वं वक्ष्यामि तत्शृणु । श्रुत्वा नासे मेवाधी धर्मार्थकुमलः प्रभो ॥ १३ ॥ न तेस्त्वपि
 दिने किञ्चिद्विदुष्य परन्तप । अनित्यतां हि मावाप्तां विजानासि न संशयः ॥ १४ ॥
 अधुये जीवलोकं च स्थाने चाशं दवने सति । अग्निने मरणान्ते च कस्याच लोचसि
 भारत ॥ १५ ॥ प्रपक्षं तव रात्रेन्द्र धैरस्यास्यैः समुद्रवः । पुत्रं ते कारणं कृत्वा काल
 योगेन कारितः ॥ १६ ॥ अवश्यं भवितव्ये च कुरुणां वैशते नृप । कस्मात् शोचसि
 तान् शूरान् गतान् परमिकां गतिम् ॥ १७ ॥ ज्ञानताञ्च महाबाहो विदुरेण महात्मना ।

पितासे यह कहकर अचेतनाको पाकेवहे शाकको पापा अर्थात् वह राजा तरा
 ध्यानकरताहुआ मौनभोगया । ११ । प्रभु व्यासजी उमके उतवचनको सुनकर
 पुत्रशोकसे दुखी अपने पुत्रसे यह वचन बोले । १२ । हेमहाबाहु धृतराष्ट्र जोपिकहं
 उतको सुनो तुम शास्त्र और शास्त्रोंके स्मरण रखनेवाले बुद्धिके स्वामी औरधर्म
 अर्थमें भी कुशलहो । १३ । हे शत्रुभोंके तपानेवाले तुझे कोई बात अज्ञात नहीं
 है हे वहे ज्ञानी तुम जीवधारियों की अनित्यताको जानते हो हे भरतवंशी इस
 बिनाशवान् जीवलोकमें बिनाशवान निवास स्थान के होनेपर जीवन और
 मृत्युमें किस निमित्त शोचते हो । १४ । हे राजेन्द्र इस शत्रुता की प्रवृत्तता
 आपके दृष्टिगोचर है कालयोगसे आपके पुत्रका कारण बनाकर सधमारेक्ये । १५ ।
 हेराजा कौरवोंको अवश्य भावी नाश होनेपर उनपरपगाने पानेवाले वीरों को किस
 हेतुसे शोचतेहो । १६ । हेमहाबाहु राजाधृतराष्ट्र मैंने और बुद्धिमन्त्र विदुरने भी
 सवप्रकार से सन्धिमें उपाय किया । १७ । बहुतकाळतक उद्योग करनेवाले किसी
 जीवसेभी देवका रचाहुआ मार्ग भेरेमामे बन्दकरने के योग्यनहीं है । १९ । मैंने
 अपने नेत्रों के समक्षमें देवताओंका जोकार्य सुना मैं उनको उसी प्रकारसे कहताहूँ
 जिससे कि तेरी स्थिर बुद्धिहोय । २० । यकावट से रहित मैं एरुममय बड़ी शीघ्र

grief and wisdom is destroyed, causing one to desire for death. I
 have got through all this trouble by the vicissitude of Time and see
 no relief except in death. I shall die, Vyas." 10 Having said this
 to Vyas, Dhritrashtra again fainted and became silent. Vyas was
 much affected with his sorrow and said, "Hear me, Dhritrashtra,
 for you are learned and wise and have experience of the world.
 Nothing is hidden from you, destroyer of foes. You know the
 mortal nature of beings. Why do you grieve at death? 15. You knew of the
 enmity. All men were slain on account of your son. But the destruction of

बलिं सर्वपरमेन शमं प्रति जनेश्वर ॥ १८ ॥ न च देवपुत्रो मागः शफ्यो मृतने केन
 चिन् । अतश्चि चिरं कालं भियन्तुमीत मे भतिः ॥ १९ ॥ देवतनां हि यत् कार्यं
 मया प्रत्यक्षतः द्युतम । तत्तेह सप्रयक्ष्यामि कथं स्थैर्यं भवेत्तव ॥ २० ॥ पुराहं त्वरि
 तोवातः समामैर्द्धीं जितफलम् । अपश्यं तत्र च तदा समवेतान् दिर्घावस २१ नारद
 प्रकृत्यापि सर्वं देवपयोगघ । तत्र चापि मवा ह्मत्वा पृथिवी पृथिवीपेत ॥ २२ ॥
 काथ्यार्हमुपकृप्राप्ता देवतानां समीपत । उपगम्य तदा चाभी देवाम ह समागतान्
 ॥ २३ ॥ अत् कार्यममपुष्पाभिर्ग्रहणं सद्मे तदा प्रतिज्ञात महाभागाल्लब्धं संविधीय
 तात् ॥ २४ ॥ तस्यातद्वचनं श्रुत्वा विष्णुलोकमस्कृतः । उवाच चाप्य प्रहसन् पृथिवीं
 देवस्यसदि ॥ २५ ॥ धृतराष्ट्रस्य पुत्राणां यस्तु ज्येष्ठ शतस्य वै । दुर्योधन इति स्यात् । स
 ते कार्यं करिष्यामि ॥ २६ ॥ तत्र च प्राप्य महीपाले हतकृत्वा भविष्यामि । तस्यां पृथि

ताके इन्द्रजीवभा में गया और सब इकट्ठेहुये देवताओंको देखा । २१ । हेराजा
 वहापर मैंने नारदादिक सब देवमृषियों को और पृथ्वीकोमी देखा । २२ । यह
 सब निश्चर अपनेकार्यके निमित्त इन्द्रादिक देवताओंके सम्मुख धर्ममानहुये तब
 पृथ्वी ने समीपजाकर उन इकट्ठे देवताओंसे कहा । २३ । कि हेमहाभग देवता
 कोबो आप लोगोंने ब्रह्मलोकमें निम मेरेकार्य करनेकी प्रतिज्ञाकी है उसको शीघ्र
 करो । २४ । लोकपूजित विष्णुजी देवसभामें उसके समवचनको सुनकर हँसतेहुये
 सब पृथ्वीसेयह वचन बोले । २५ । धृतराष्ट्र के ती बेटोंमें बड़ा बेटादुर्योधन नामसे
 भविष्यहै वहेकरा कार्य करेगा । २६ । उस राजाको पाकर अभीष्ट प्राप्तकरगी
 उसके धीकेदुष्टेत्रमें इकट्ठेहोनेवाले और हठवात्रोंसे प्रहार करनेवाले राजालोग पर
 २७ नारद हे देवी इन्के पीछेबुद्ध में तेरे नारकानाशहोगा । २८ । हे शोभा
 वान क्षीघ्र अरेनेस्थानको जावो और सृष्टिको धारण करो । २९ । हेराजाओंमें

the Kauravas was unavoidable, why do you grieve for those who have
 got good regions? I as well as Vidur tried our best to make peace.
 The decrees of Fate cannot be annulled by any human effort. For
 your satisfaction I tell you what I myself saw in the assembly of
 gods. 20. Once I went to the court of Indra without being tired.
 There I saw Narad and other rishis as well as our Earth. All the
 gods were assembled there for their respective businesses. She then
 approached the gods and thus addressed them, "Make haste, O gods,
 to fulfil the promise you made regarding me in the region of Brahm.
 Vishnu, respected by the world, said to her with a smile, "Duryo-
 dhan the eldest son of Dhritrashtra will do thy work. 26 You
 will gain your object through him: the assembled kings will fight at
 Kurukshetra and shall relieve you of your burden. Go to your place
 and keep on supporting the world." Your son Duryodhan was born

धीपालाः क्रुद्धेभ्ये भ्रमगताः ॥२७॥ अन्योन्यं घानविष्यान्नि दृष्टैःशस्त्रैः महारिणः । ततले
 विद्विंदे दधि भारहथशुधि नादानम् ॥ २८ ॥ भट्टंशंशं स्वकं स्थानं लोकं
 घारय शोभने ॥२९॥ ययत् ते सुतो राजन् त्वावसंसारक रणात् । कलेरंशः समुत्पन्नो
 गान्घाथ्या जठरे नृप ॥ ३०॥ अमर्षा चपलदृष्टापि क्रोधनो दुष्प्रसादनः । देवभोगात्
 समुत्पन्ना भ्रातरश्चास्य तापताः ॥ ३१॥ शकुनिर्मातुलञ्चैव कर्णदक्ष परमः सखा ।
 समुत्पन्ना विनीशार्ये पृथिव्यां संहिता नृपाः ॥ ३२ ॥ अश्नो जयन्त राजा तादृशोत्प
 जनां गच्छेत् । धर्मो घर्मात्पाति स्वामि भेद्यार्मिको मधेत् ॥ ३३ ॥ स्थामना गुण
 दोषाभ्यां भृत्याः स्युर्नाम संशयः । दुष्टं राजनमासाद्य गतास्ते तनयानृप ॥ ३४ ॥ यत्
 मर्थं महाबाहो गारदां धेक्ष सत्त्वधित् । नात्मापराधात् पुत्रास्ते विनष्टाः पूर्वाधीपते । ना
 तान् शोचस्व राजेन्द्र न हि क्षीकेऽस्ति कारणम् ॥ ३५ ॥ न हि ते पाण्डवाः स्वस्वभ
 पराध्यन्ति भारत । पुत्रास्त्रयपुरात्मानो धैरिणं चातिता महीः ॥ ३६ ॥ नारदेन च नृपते

श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र संसारके नाशके कारण से वह तेरापुत्र कलिपुत्र अथ गान्धारी
 में उत्पन्न हुआ था । १० । जोकि घशान्त चपल क्रोधका अभ्यासी और दुसरे
 पराजय होनेवाला था देवभोगते उसकेभाईभी उनी प्रकारके उत्पन्न हुये । ११ ।
 और मामा शकुनी और वैद्योंनिजकर्ण और बहुतने राजालोग संसारके नाशके नि-
 मिष उत्पन्नहुये । १२ जैसा राजा उत्पन्न होताहै उसीप्रकार के उलकेभाईभी भी
 उत्पन्नहोतेहै जास्वामी धर्मका अभ्यासी होताहैउस दशमं अथर्म भी धर्मताको
 पाताहै । १३ । स्वानिषोंके दृष्ट दोषों से निस्सन्देह उसीप्रकार के नाकर चाकर
 हमें हेराजा तेरे पुत्र दुष्टराजाको पाकर इस संसार दुसरेमे हे महात्राहु नारदभी
 इसप्रयोजनको मुरुगता समेत जानतेहैं देभरतवंशी तेरे पुत्र अपने अपराधसे नष्टहुए
 उनका शोचमतकर । ३५ । पाण्डव धोदाभी अपराध नहींकरते जिन्हींकेहाथसेमेह
 सब संसार मारागया । ३६ । तेरा भलाहोय प्रथमही राजसूययज्ञमें नारदजीने दु-
 धिष्टिरकी सभामें वर्णन कियाथा । ३७ । कि हे कुन्तीकेपुत्र बुधिष्ठिर कुछकाल पीछे
 कौरव और पाण्डव परस्पर सम्मुख होकर नाशको पावेंगे जो तेरे करने के योग्य

of Kali and Gandhari to destroy the world 30. He was dissatisfied,
 rash and invincible. His brothers too, were of his mind. His uncle
 Shakuni, his friend Karan and other princes too were born to destroy
 the world. The Subjects are like him, while, they speedily take to his
 bad habits. Thy sons departed from the world for the fault of thy
 son who was their king Narad knows this well. Thy sons were
 destroyed by their faults Be not grieved for them, 35 The Pandavas
 have committed no fault in destroying the world Narad had fore-
 told it at the Rajsuya sacrifice of Yudhishtir that the Kuravas and

शिव न शयः । युधिष्ठिरश्च समितौ राजसूये निवेदितम् ॥ ३७ ॥ पाण्डवा-
 र्वाशुषैश्च समासाद्य परस्परम् । न भविष्यन्ति कांतेषु घटो हृत्ये तदाश्वर ॥ ३८ ॥
 रक्षस्य वचः श्रुत्वा तदाशोचन्त पाण्डवा । एवं ते सर्वमायुषान् देवगुह्यं जनातनय
 ३९ ॥ कथं ते शोकनाशं दद्यात् प्राणः च दद्यात् प्रभो ॥ स्तद्वेदश्च पाण्डुपुत्रेण हारदा
 बहून् विधिम् ॥ ४० ॥ एष व्याघ्रो महाबाहो पूर्वमेव मया श्रुतः । कश्चिन्नो घर्मराजश्च
 ज्ञान्ये कृतस्ते ॥ ४१ ॥ पतितं घर्मपुत्रं मया श्रुत्वा निवेदिते । अग्निं ह्ये कारवाणां
 बन्तु बलवत्तरम् ॥ ४२ ॥ जगन्नि क्रमजीवो द्वि विधी राज्ञश्च कथयन् । कृतान्तस्य
 सुतेन द्यावरेण जलेन च ॥ ४३ ॥ भवान् घर्मपरो पत्रं युधिष्ठेष्ठ्य भारत । मुह्यते
 ऋषिणां क्रात्या गतिप्रागतिमेव च ॥ ४४ ॥ त्वान्तु शोकेन सन्तप्तं मुह्यमानं मुहुर्मुहुः ।
 क्रात्या युधिष्ठिरो राजा प्राणानपि परित्यजेत् ॥ ४५ ॥ कृपालुर्मित्यशो धीरतिर्घम्योनि
 गतेष्वपि । स कथं त्ववि राजेन्द्र कृपां ये न करिष्यति ॥ ४६ ॥ मम वैष निवोगेन विधे
 आप्तिनिवर्त्तनात् । पाण्डवानाश्च कारुणात् प्राणान्धारय भारत ॥ ४७ ॥ एवं ते घर्त्तना

है उसको कर । ३८ । तब पाण्डवोंने नारदजी के बचनको सुनकर शोचि क्रियापट्ट
 देवताओंकी गुप्त और सनातन बातें मैंने तुम्हसे कहीं । ३९ । अबतू अपने प्राणों
 पर दया और पाण्डवोंपर प्रीतिकर जिससे कि देवके कर्मको जानकर तेरा शोक
 दूरहोय । ४० । हेमहानाह पहनात मैंने प्रथमही सुनीधी जो कि घर्षराजके उत्तम
 राजसूयवह मैं कही गई थी । ४१ तुम्हसे गुप्त बातके कहनेपर घर्मके पुत्रने कौरवों के
 मुद्द नहाने में सपाय किसे परन्तु देव बड़ा प्रबल है । ४२ । हेराजा कालकी रची
 हुई जो सनातन विधि है वह इमलोकमें किमी जीवपारी से उल्लंघन करने के योग्य
 नहीं है । ४३ । हे भरतवंशी घर्मात्मा आप प्राणियों की गति और अगतिपोंको
 भी जानकर इनमें अचेत होतेही घर्मात्मा । ४४ । राजा युधिष्ठिर तुपको शोक
 से दुखी और बारबार अनेन डेनवाला जानकर अपने प्राणोंको भीन्याग करसक्ता
 है । ४५ । वह घर्मवान सदैव पशु पक्षियोंपरभी दयाका करनेवाला है हेराजेन्द्र वह
 तुम्हपर कैसे कृपानहीं करेगा । ४६ । हे भरतवंशी मेरी आज्ञासे देवके उल्लंघन न
 होने से और पाण्डवोंकी दयासे प्राणों को धारण करो । ४७ । इसमकार लोक में

the Pandavas would be destroyed by the hand of each other, and the
 Pandavas were sorry for it I have told you that secret of gods
 Now feel mercy on your own life and love the Pandavas so that your
 grief may abate by the knowledge that it was the work of God 40 I
 was already aware of the words told at the Rajsuya sacrifice of
 Yudhishtir. Knowing this secret from me, Yudhishtir tried to
 make peace, but the working of Fate is powerful. It can not be
 annulled by any one. You lose your senses, though you know the
 course of living beings. Knowing you in such distress of mind,
 Yudhishtir may lose his life 45. He is merciful to beasts and

नस्य लोके कीर्तिर्मविष्यति । धर्मार्थः सुमहांस्तान तप्तं स्याच्च तपश्चिरात् ॥ ४८ ॥
 पुत्रशोकं समुत्पन्नं हुताशं ज्वलितं यथा । महाभस्ता महाराज विर्यापय
 ॥ ४९ ॥ वैशम्पायन उवाच । तत् श्रुत्वा तस्य वचनं व्यासस्यामिततेजसः ।
 समनुध्याय धृतराष्ट्रोऽभ्यभाषत ॥ ५० ॥ महता शोकजालेन प्रणुन्नोऽस्मि द्विजोत्तम ।
 नात्मानमपबुध्यामि मुह्यमानो गुरुर्मुमुक्षुः ॥ ५१ ॥ इदं तु वचनं श्रुत्वा तत्र देवविषोम
 जम् । धारयिष्याम्यहं प्राचात् घटिष्ये न तु शीघ्रितुम् ॥ ५२ ॥ एतत् श्रुत्वा च
 व्यासः सत्यवतीमुतः । धृतराष्ट्रस्य राजेन्द्र तत्रेवान्तरधीयत ॥ ५३ ॥

इति स्त्रीपर्वणि जलप्रादानिकपर्वणि धृतराष्ट्रशोकापनोपनेष्टमोध्यायः ॥ ८ ॥

— ❦ —

तुझ वर्तमान रहनेवाले ही कीर्तिहीनो और हेतात पड़ा धर्म और बहुतकालतक
 तपाहुआ तप प्राप्तहोगा । ४८ । हेमहाराज ज्वलितरूप आग्निके समान चल्न होने
 वाले पुत्रशोकको शानरूपी जलसे शान्त करनेके योग्यहो । ४९ । वैशम्पायन बोले
 कि धृतराष्ट्र उन बड़ेतेजस्वी व्यासजी के इस वचनको सुनकर एकें मुहूर्त्त अन्धे
 प्रकार ध्यानकरके कहा । ५० । किहे द्विजोत्तम मैं बड़े शोक जालसे कठिन बकाहुआ
 धारम्बार अचेत होता सचेतता में नहीं आताहूँ । ५१ । देवकी आज्ञासे उत्पन्न
 होनेवाले आपके इसवचनको सुनकर मैं प्राणोंको धारण करूंगा और शोच करनेमें
 मद्यत्त नहीं हूंगा । ५२ । हेराजेंद्र सत्यवती के पुत्र व्यासजी धृतराष्ट्रके इसवचनको
 सुनकर वसीस्थानमें अन्तर्धान होगे । ५३ ॥

birds, why should he not be kind to you ? Having regard to my
 words, the power of Fate and pity towards the Pandava, you should
 sustain your life. You will thus be famous in the world and will
 attain great merit. You should quench the fire of your grief by the
 water of wisdom." Vaishampayan said that having heard the words
 of glorious Vyas, Dhritrashtra thought for some time and said, 50 " I
 am too much pressed by grief and again and again lose my senses, but
 I shall live to obey you and shall not plunge in grief." Having heard
 these words, Vyas disappeared then and there." 53



जनमेजय उवाच । गते भगवति व्यासे धृतराष्ट्रे महीपतिः । किमचेष्टत विप्रं
 ये व्याख्यातुमर्हसि ॥ १ ॥ तथैव कौरवो राजा धर्मप्रेो महामनाः । कृपप्रभृतय
 किमकुर्वन्ते ते जयः ॥ २ ॥ अदघाटान्नः श्रुतं कर्म शापस्यान्योन्यकारितः । घृष्टां
 श्वरं मृष्टि यद्भापत सन्नयः ॥ ३ ॥ वैशम्पायन, उवाच । हते दुर्योधनेचैव हते
 स्ये च सर्वशः । सञ्जयो विगतप्रेो धृतराष्ट्रमुपस्थितः ॥ ४ ॥ सञ्जय उवाच ।
 तागम्य नानादेशेभ्यो नानाजनपदेश्वराः । पितृलोकं गता राजन् सर्वे तव सुतैः सह
 ॥ ५ ॥ पुत्राणामथ पौत्राणां पितृणाञ्च महीपते । आनुपूर्व्येण सर्वेषां प्रेतकार्याणि
 कारय ॥ ६ ॥ वैशम्पायन उवाच । तच्छ्रुत्वा वचनं घोरं सञ्जयस्य महीपतिः । गता
 विरिव निश्चेष्टो न्यपतत् पृथिवीनले ॥ ७ ॥ तं शवानमुपागम्य पृथिव्यां पृथिवीपतिमा
 विदुरः सर्वधर्मज्ञ इदं वचनमब्रवीत् ॥ ८ ॥ उत्तिष्ठ राजन् किं शेषं मा शुचो भारतर्षभः ।

अध्याय ९ ॥

जनमे जय बोले हे ब्रह्मर्षि भगवान् व्यासजी के जानेपर राजा धृतराष्ट्र ने
 क्या किया वह मुझमें कहनेकी योग्यहो । १ । उसीप्रकार धर्मपुत्र बड़े साहसी
 राजा युधिष्ठिर और कृपाचार्यादिक तीनोंने क्या किया २। अश्वत्थामा का कर्ममुना
 और परस्पर दियाहुआ शाप सुना अब आप उस पूर्व वृत्तान्तको कहिये जिसको
 सञ्जयने कहाहै । ३ । वैशम्पायन बोले कि दुर्योधन के और सब सेनाके मरनेपर
 अचेतःसञ्जय धृतराष्ट्र केपास आये । ४ । हे राजा सब राजा नाना देशोंसे आकर
 अपनेपुत्रों समेत पितृलोकोंको गये । ५ । हेराजा पुत्र पौत्र और पिता आदिक
 जो रणभूमि में मरें उनसब के कर्मोंको क्रमपूर्वक करावो । ६ । वैशम्पायन बोले
 हेराजाधृतराष्ट्र सञ्जयके उसघोर वचनको सुनकर निर्जीवके समाननिश्चेष्टहोकर
 पृथ्वीपर गिरपड़ा । ७ सब धर्मोंके ज्ञाता विदुरजी उस पृथ्वीपर सनेवाले राजाके
 पास आकर इस वचनको बोले । ८ । हे भरतर्षभ लोकिश्वर राजाधृतराष्ट्र उठाशोच

CHAPTER IX

Janmejaya said, " What did Dhritrashtra do at the departure of Vyas ! Pray tell me all that he as well as brave Yudhishtir and the three warriors, Kripacharya and others did. I have heard the exploits of Ashwathama and the mutual curses, pray tell me what happened next as you heard it from Sanjaya." Vaishampayan said, " At the destruction of Duryodhan and his army Sanjaya came to Dhritrashtra and said, " All the princes who had come here from various countries have gone to the region of Yam; perfrom the obsequies of your sons, grandsons and elders who died in the war." Vaishampayan says that on hearing the heart rending words of Sanjaya, Dhritrashtra fell down on the earth like and inanimate thing. 7. Vidur the virtuous came to him and said, " Rise up Dhritrashtra and be not grieved. This is the

एषा वै सर्वसत्त्वानां लोकेश्वरं परा गति ॥१॥ क्षत्रियास्ते महात्मान शूराः
 भना । आशिषं परमां प्राप्ता न शोच्याः सर्व एव हि ॥ १० ॥ आत्मनात्मानमाश्वास
 मा शुचः पुरुषर्षभ । नाद्य शोकाभिभूतस्त्वं कार्य्यमुत्सृष्टुर्हसि ॥ ११ ॥

इति स्त्रीपर्वणि जलपादानिकपर्वणि धृतराष्ट्रशोकाप्रबोधने नवमोऽध्यायः ॥ ९

वैशम्पायन उवाच । विदुरस्य तु तद्वाक्यं श्रुत्वा तु भरतर्षभ । युज्यतां याक्मि
 त्युक्त्वा पुनर्वचनमब्रवीत् ॥ १॥ क्षिप्रमानय गान्धारीं सर्वांश्च भरतस्त्रियः । बधू
 मुपादाय याश्चान्यास्तत्र योषितः ॥ २ ॥ पथमुक्त्वा स धर्मात्मा विदुरं धर्मवित्तमथ ।
 शोकपिप्रदतश्चानो यानमेवान्यपद्यत् ॥ ३ ॥ गान्धारी पुत्रशोकार्तां मर्तुं वचनकोदितान्
 सह कुन्त्या यतो राजा सह स्त्रीभिरुपाद्रवत् ॥ ४ ॥ ताः समासाद्य राजानं

मनकरो सब श्रीवधारियों की यही परमगति है । ९ । उन महात्मा शूर और युद्धको
 शोभा देनाले क्षत्रियों ने परमगति को पाया वह सब शोकके योग्य नहीं है १०
 हे पुरुष, तम इन्द्र मे चित्तको विश्वास देकर शोच मतकरो अब शोकमें बूढ़ेहुयेतुम
 करण है योग्य जलदानादिक क्रियाके त्यागनेके योग्य नहीं है । ११ ॥

अध्याय १० ॥

वैशम्पायन बोले कि पुरुषोत्तम धृतराष्ट्र विदुरजी के उस वचन को सुनकर
 गवारी तैयार करो यह कहकर फिर वचनको बोला । १ । बधू कुन्ती आदि अन्य
 सबस्त्रियोंको लेकर गान्धारी समेत सब भरतवंशीयों की स्त्रियों को शश्रिनाभा
 । २ । वह धर्मात्मा शोकमें हतचित्त बुद्धिमान धृतराष्ट्र बड़े धर्मवान् विदुरजी से
 इस प्रकार कहकर सवारीपर सवार हुये । ३ । पाति के वचनमें चलायमान शोकसे
 पीड़ित गान्धारी कुन्ती और अन्य सब स्त्रियों समेत वहां गयीं जहां राजा धृतराष्ट्र
 । ४ । अत्यन्त शोकयुक्त वह स्त्रियां राजाको पाकर परस्पर वार्त्तालाप करके चलीं
 end of all the living beings. The great warriors, who have gone to
 heaven, are not worth sorrow. Curb yourself with wisdom and be
 not grieved. Do not leave the obligations undone on account of your
 grief " 11



CHAPTER X.

Vaishampayan said that on hearing the words of Vidur, Dantidhata ordered his men to make carriages ready and to bring karts and other women with Gandhari and the women of the family.

(७१७७)

शोकसमन्विताः । आश्रयस्थानं बोधोऽन्वमीयुः स्त भृशमुच्छ्वसन्तुस्ततः ॥५॥ ताः समादवा
 लयन् शशा ताश्चञ्चलतरः स्वयम् । जभ्रकण्ठीः समागत्य ततोऽसौ निर्ययौ पुरात्
 ॥ ३ ॥ ततः प्रजादाञ्जले सर्वेषु क्रुद्धेदमपु । आकुमारं पुरं सर्वमच्छोककपितम्
 ॥ ७ ॥ जहृदपूर्वा वा नाय्यः पुरा देवगणैरपि । पृथग्जनेन दृश्यन्ते तास्तदा निहनेद्वराः
 ॥ ८ ॥ प्रकीर्य्य केनात् सुनुमान् भूषणान्यथमुच्यथ । एकवस्त्रवरा नाय्यः परिपेतुर
 लयत् ॥ ९ ॥ श्वेतपर्वतरूपेऽश्वो गृहेऽयस्यास्तयपाक्रमत् । गुहाश्च इव शैलानां
 पूषयो हतयूषपः ॥ १० ॥ तान्युकीर्णानि नारीणां तदा वृन्दान्यनेकजः । शोकार्त्तान्वय
 प्राजन् किशोरीणामिवाङ्गने ॥ ११ ॥ प्रगृह्य बाहून् क्रौरान्वयः पुत्रान् भ्रातॄन् पितॄन्पि ।
 वशयन्तीव ता इ स्म युगान्ते लोकसंक्षयम् ॥ १२ ॥ विलपन्त्यो वदन्त्यश्च धावमाना

और बड़े उच्चस्वर से पुकारतीं । ५। उन स्त्रियोंसे अधिक पीड़ावान् उन विदुरजी
 ने आंसुओं से पूर्ण उन स्त्रियों को अच्छी रीति से विश्वास कराया और पादोंके
 थों में बैठाकर बाहरचले । ६। इमके पीछे क्रौरवों के सब स्थानों में बड़ाशब्द
 उत्पन्न हुआ और सब नगर लहकों से बढ़तेक शोकसे पीड़ावान् हुआ । ७। पूर्व
 समयमें जो स्त्रियां देवसमूहों से भी नहीं देखीगई थीं वह सब विधवा स्त्री अन्य
 मनुष्यों से भी देखीगई । ८। शिरके वालोंको फैलाकर और सुन्दर भूषणों को
 उतार कर एक बल रखनेवाली स्त्रियां अनाथ के समान बाहर निकलीं वह स्त्रियां
 श्वेत पर्वतों के समान गृहों से ऐसे निकलीं जैसे कि पहाड़ों की गुफाओं में
 ऐसी हिरणी निकलें जिनके कि यूषप हिरण मारेगये हों । १०। हे राजा तब उन
 स्त्रियों के बड़े समूह शोकसे पीड़ावान् ऐसे चले जैसे कि घोड़ियों के बच्चे
 मैदान में निकलते हैं । ११। भुजाओं को पकड़ कर पिता भाई और पुत्रों को
 भीपुकारती हुई मलयकालीन संसार के नाशकी दिखानेवाली हुई । १२। विलाप
 करते रते जहां तहां दौड़ते शोकसे हतज्ञान उन स्त्रियोंन करने के योग्य कर्मको

After this he mounted his car. Summoned by Dhritrashtra,
 Gandhari, Kunti and other women came there. The sorrowful
 women went on talking and crying. 5. More full of grief than
 those women and with tears in his eyes, he consoled them and made
 them ride on palanquins. There were great lamentations in the
 houses of the Kuravas and the city people, young and old, showed
 signs of grief. The women, who were not visible even to gods, came
 out in the presence of all men in their widows' weeds. They went on
 with dishelved hair, destitute of ornaments, with only one cloth on
 the body, like those having no guardians. They came out of their
 white houses like a herd of female deer whose stag is slain. 10 They
 went on crying like foals. Calling out the names of fathers, brothers
 and sons, they made a great noise. Crying out and running hither

सतततः । शोकेनाऽप्राप्तज्ञानाः कलन्य न प्रजन्तिरे । १३ ॥ अत्रिंशत् जम्मुः पुरा वाः स्म
 सखीनामपि योषित । एकवत्त्राश्रयं निलज्जा इवभूणां पुरतोऽभवन् ॥ १४ ॥ परस्परं
 सुदुःखेषु शोकेऽप्राशयासंयस्तदा । ता शोकविह्वला राजप्रवेशन्त परस्परम् ॥ १५ ॥
 ताभिः परिहृतो राजा रुदतीभिः सहस्रशः । निर्ययो नगराद्दानस्तूर्णमायोधनं प्रति । १६ ॥
 शिन्धितो वणिशो वैश्य सर्वे कर्षोपजीविनः । ते पार्थिवं पुरुस्कृत्य निर्ययन्गताः हि
 । १७ ॥ तासां विक्रोशमानानामार्त्तानां कुरुसंक्षेपे । प्रादुरासीन्महान् शत्रोः व्यथयन्
 भुवनान्युत ॥ १८ ॥ युगान्तकाले संप्राप्ते भूतानां दह्यतामिव । अभावः स्याद्यं प्राप्त
 इति भूतानि भेनिरे । १९ ॥ भृशमुद्विग्नमनसस्ते पौराः कुरुसंक्षेपे । प्राक्रोशन्त महा
 राज स्वनुरक्तसदा भृशम् । २० ॥

इति स्त्रीवर्षाणी जन्मप्रदं निरुपार्थिणि सखीकघृतराष्ट्रस्य पुरान्निर्घाणे दशशोध्यायः १०

— ३३ —

नहीं जाना । १३ । पूर्वोक्तमय में जिन स्त्रियों ने सखियों की भी लज्जाको पायाया
 वह एक वस्त्र रखनेवाली बिना परदेवाली स्त्रियों सासों के आगे खड़ी । १४ ।
 हेराजा जिन्होंने बहुत थोड़े शाकों में परस्पर विश्वास कराया तब उन शोकसे
 व्याकुल स्त्रियों ने परस्परदेखा । १५ । उन रोनेवाली हजारों स्त्रियों से विगडुभा
 महा दुखी घृतराष्ट्र नगरसे चलकर शीघ्रही मैदानमें गया । १६ । शिल्पी व्यापारी
 वैश्य और सब कर्मों से निर्वर्द्ध करनेवाले वह सब राजाको आगे करके नगरसे
 बाहर निकले । १७ । कौरवोंके नाशमें उन पीड़ावान् और दुकारनेवालों के बड़े शब्द
 सब भवनोको पीड़ावान् करते प्रकटहुये । १८ । जैसे किमलयकाल वर्त्तमान होनेपर
 भस्महोनेवाले जीवोंका नाशहोताहै, उमीप्रकार इस नाशका भीहोना जीवोंने माना
 । १९ । हेमहाराज इस कौरवोंके नाशहोनेपर अत्यन्त व्याकुल बित्त बड़े प्रीतिमान्
 वह पुत्रवासी कठिततासे पुकारे ॥ २० ॥

and thither, they did not know what to do. Those women who were
 abashed even before their playmates, now went on unveiled before
 their mother-in-law. They who were companions in their grief now
 looked at one another. 15. Surrounded by thousands of weeping
 women, Dhritrashtra went out in open air. Artisans, merchants,
 tinders and others followed their king. Lamenting the destruction
 of the Kauravas, their noise was heard far and wide. They thought
 that the great destruction of the warriors had been like that of pralaya.
 The citizens lamented the great destruction of the Kauravas and cried
 with a great noise." 20.

वैशम्पायन उवाच । क्रोशमात्रं ततो गत्वा बृहशुलाः महारथान् । शारद्वतं कृप
 णि कृतवर्मोण मेव च ॥ १ ॥ ते तु दृष्ट्वैव राजानं प्रभाचक्षुरमीश्वरम् । भञ्जुकण्ठा
 निवृत्तश्च रुद्रमतिदमश्रुयन् ॥ २ ॥ सुतस्तत्र महागज कृत्वा कर्म सुदुष्करम् । गत
 ण्ण्यसौ राजपुत्रकलोकं महिपतिः ॥ ३ ॥ वुर्योधनयत्नान्मुक्ता वयमेव प्रयो रथाः ।
 विभ्रम्यद्द परिक्लीणं सैन्यं ते भरतर्षभ ॥ ४ ॥ इत्येवमुक्त्वा राजानं कृपः शापद्वनस्ततः ।
 गन्धारी पुत्रशोकार्त्तामिदं वचनमब्रवीत् ॥ ५ ॥ अर्मीना युध्वमानास्ते घनन्तः शत्रुग
 ण्य बहून् । वीरकर्मणि कुर्याताः पुत्रास्ते निघ्नं गताः ॥ ६ ॥ धुवं सनाप्य शोकास्ते
 नैकाश्च कस्यनिर्विजितात् । भास्वरं देहमास्थाय विधरन्त्यमरा इव ॥ ७ ॥ न हि कं क्षि
 ष्यन्तां युध्वमान परांगुहकः । शस्त्रेण निघ्नं प्राप्तो न च पश्चित् कृताञ्जलि
 ८ ॥ यत् तं क्षत्रियस्नाहुः पुराणाः पुरमां गनिष्य । शस्त्रेण निघ्नं संख्ये तत्र शोचि

अध्याय । ११ ।

वैशम्पायन बोले कि फिर एककोश जाकर उन कृपाचार्य अश्वत्यामा और
 अश्वथामा महाराथियोंकोदेखा । १ वह शोकके अश्रुओंसे पूर्णकराठ से रोदन करतेज्ञान
 रूप नेत्र रत्नवाले अपनेस्वामी राजाको देखतेही बहुत श्वास लेकर गहवचन बोले
 । २ । हेमहाराज राजाधृतराष्ट्र आपका पुत्र बड़े कठिन कर्मको करके साथियों
 समेत इन्द्रलोकको गया । ३ । हेभरतर्षभ दुर्योधनकी सनामें से हम तीन रथीवचहै
 अपसव आपकीसेना नाशहो गई । ४ इसके पीछे शारद्वत कृपाचार्य राजासे यह
 करफर पुत्र शोकसे पीडावान् गन्धारी से यह वचन बोले कि निर्भय युद्ध करने
 वाले शत्रुओं के बहुत समूहोंको मारनेवाले वीर लोगोंके कर्मों को करके तेरेपुत्रोंने
 मरणकोपायाशिक्षिष्य व करकेबृहशुलासे विजयकोपहुये निर्मल लोकोको पाकर और
 मकालमान शरीरमें निय तहोकर देवताओंदे समान विहारकरतेहै । उनशूरोंमें कोईशूर
 वीर मुझफेरनेवाला नहीं हुआ किन्तु शस्त्रों से मरणको पाया और हाथ
 जोड़कर किसीने भी नाश को नहींपाया । ८ । मर्चीन वृद्धों ने

CHAPTER XI

Vaishampayan said, "After going away a mile, Kripacharya, Ashwathama and Kritvarma met one another. With their voices choked with tears, they saw the blind king and said to him with sighs "Your son, O king, has gone to the region of Indra along with his companions. Out of that large army we three are only alive, the rest are destroyed." Then Kripacharya said to sorrowful Gandhari, "Thy sons died after doing brave deeds and slaying many foes. Surely they have got pure regions and roam there in luminous bodies like gods. - None of them turned back from fight. They all died by weapons and none supplicated for life. Such kind of death has been called the best by the wise and therefore you should not be grieved

तुमर्हसि । ९ । न चापि शत्रुदस्तेवासुष्यस्ते राक्षि पाण्डवा । धृगु वर कृपमस्मानि
 रक्षयामपुरोगमैः ॥ १० ॥ अथर्षेण हते अथाभिमसमेन ते कुतम् । सुप्तं शिबिरम्
 विषय पाण्डुं वदन्तं कृतम् । ११ ॥ पाण्डवाला निहताः सर्वे धृष्टद्युम्नपुरोगमाः । इष
 दस्वामज्जाश्लेष द्रौपदेयाश्च पानिना ॥ १२ ॥ तथा विशसन्तं कृपा पुत्रशत्रुगणस्य वे
 प्राद्रघाम रणे स्थानुं न हि शक्यामहे प्रथः ॥ १३ ॥ ते हि क्षूण मवेत्वासाः क्षिणे
 पन्ति पाण्डवाः । अमर्षप्रशमापजा येनं प्रतिजिहीर्षवः ॥ १४ ॥ राजस्त्वमनुजानीहि
 धैर्यमतिष्ठ बोधमम् । निष्ठान्तं पश्य चापि त्वं क्षात्रं वर्मस्य केवलम् ॥ १५ ॥ इत्येष
 मुक्त्वा राजानं कृत्वा चाभिप्रदक्षिणम् । कृपश्च कृतवर्मा च द्रौणकुत्रश्च आसत् ॥ १६ ॥
 अवेक्षमाणा राजानं घृणपापुं मनीषिणम् । अहामनुमहात्मानस्तूणमद्वयानचोदयत् ॥ १७ ॥

ने इसप्रकार युद्धमें शत्रुओं से क्षत्रिय के मर्गको बरसगि कहा है इत
 हेतुमें वह शोचकरके वाग्य नहीं हैं । हे राजा उन्हेंके शत्रु पाण्डवभी शक्तिबुद्ध
 नहीं हैं अथत्यामा आदिक हमलोगों ने जो किवा उमको सुनो । १० । अथर्षके
 साथ भीमसन्तके हाथ से तेरे पुत्रको घराहुआ छुनकर हमलोगों ने सोवेहुये लोनों
 से युक्त डेरको पाकर पयदवीष शूरवीरोंका नाश किवा । ११ । सब पाण्डव
 जिनका अग्रर्षी धृष्टद्युम्नथा उन सबको मारा राजाद्रुपद के और द्रौपदी के
 सब पुत्रोंको भी मारा । १२ । इसरीति से हम युद्ध में तेरेपुत्र के शत्रुसमूहों
 का नाश करके जाने हैं इस हेतुसे हम तमिों यहां नियत होने को समझ नहीं है
 । १३ । वह शूरवीर पाण्डव महाबलपुत्रवारी क्रोधके आधीन शत्रुनाका बदला लेने
 के अजिलापी हमारी खेज में धीमता से भाते हैं । १४ । हे राजा तुम आह्लादी
 और बड़े धैर्य में नियत हो मारब्ध के अन्तपर होनेवाली मृत्युको और युद्ध
 क्षत्रिय धर्मको भी बिचारो । १५ । हे भरतवंशी कृपाचार्य कृतवर्मा और अथ
 त्यामा इन तीनों ने इत प्रकार राजा से कहकर और बदक्षिणा करके । १६ ।

for them. Their enemies the Pandavas too, are not increasing. Hear
 what we did to them. 10. Hearing that your son was unjustly
 slain by Bhim, we destroyed the camp of the sleepers. All the
 Panchals headed by Dhrishtadyumna, all the sons of Drupad and
 Draupadi were slain by us. Having slain the enemies of your son,
 we have fled from before them and therefore can stay here with you
 no longer. The Pandavas seek revenge and are coming after us.
 Let us go, king. Be comforted, thinking of death and the holy
 duties of kshatryas " 15 Having said this, the three warriors went
 round the king and then moved their horses towards the Ganges,
 looking again and again at the king. 17. Going far away from that

स्य तु तेराजन् सर्वे, एव महारथाः । आमन्त्रयान्योन्यनुद्धिग्नस्त्रिधा ते प्रययुस्तदा
 : ॥ जगाम हास्तिनपुरं रूपः शाक्यस्तदा । स्वमेव राष्ट्रे, हास्तिनपुरे प्रौणिष्मोक्षा
 यथै ॥ १९ ॥ एवं ते प्रययुर्द्विरा वीर्यवानाः परस्परम् । मर्षायाः पाण्डुपुत्राणाम् ।
 प्रथा महात्मनाम् ॥ २० ॥ क्रमेण वीरा राजानं तदात्वनुदिने रथैः । द्विप्रजम्मुर्महा
 वषेच्छक्रमाग्निदमाः ॥ २१ ॥ समासाद्य वै, प्रौणि वि पाण्डुपुत्रा महारथाः ।
 त्वन्त रणे राजन् विक्रम्य तदन्तरम् ॥ २२ ॥

इति श्रीपर्वानी जलपादानिकपर्वणि एका दशोध्यायाः ॥ ११ ॥

इमाने राजाभूतराष्ट्र को देखते अपने बंधों को गंगाजी की ओर चलायमान
 था । १७ । हे राजा तब वह महारथी दूर जाकर परस्पर विदाहोकर व्याकुल
 हो गये । १८ । उनमें से शारद्वत कृपाचार्यः हास्तिना
 पुरी की ओर कृतवर्मा अपने देशकी ओर अश्वत्थामाव्यासजी के आश्रम की ओर
 १९ । इसीरूपसे वह वीर उन महात्मा पांडवोंका अपराध करके भयसे पीड़ावान
 परस्पर देखने हुये चलादिये । २० । वह शत्रुबेजयी महात्मा वीर सूर्योदयसे
 पूर्व ही इच्छानुसार चलादिये । २१ । हे राजा कृतवर्मा और कृपाचार्यसे अश्व
 थामा के जुद्धोत्तरेपर उनमहारथी पांडवों ने शोभाचार्य के पुत्रको पाकर और
 वारक्य करके युद्धमें विजय किया २२ ॥

place, the three warriors took leave of one another, Kripacharya
 going towards Hasthinapur, Kritvarma to his own country and
 Ashwathama to the hermitage of Vyas. Thus they went away in
 different directions for fear of the Pandavas whom they had so offend-
 ed. They went on their way before day break. On the separation
 of Kripacharya and Kritvarma from Ashwathama, the Pandavas
 met the son of Drona and conquered him."



वैशम्पायन उवाच । एतेषु तेषु सैन्येषु धर्मराजो युधिष्ठिरः । शृश्रुवे पितरं
 निर्यान्तं नागसाह्वयात् ॥ १ ॥ सोऽङ्गपयात् पुंशोकात्तः पुत्रशोकपरिप्लुतम् । शोच
 गानं महाराज भ्रातृभिः सहितस्तदा ॥ २ ॥ अन्वीयमानो धीरेण दाशार्हणे महात्मना ।
 युयुधानेन च तथा तथा चैव युयुत्सुना ॥ ३ ॥ तमन्वयात् सुदुष्पार्तां द्रौपदी शोकक
 पिता । सह पाञ्चालयोषिद्धिर्वास्तप्रासन्न समागताः ॥ ४ ॥ स गङ्गामनुवृन्दानि
 भरतसत्तम । कुररीणामिषात्तानां क्रोशन्निनां दृदर्श च ॥ ५ ॥ तामिः परिहृतो
 क्रोशन्तीभिः सहस्रशः । ऊर्ध्वबाहुभिरात्तानी रुदतीभिः प्रियाभिः ॥ ६ ॥ क्व नु
 क्षता राह । क्व नु सत्यानुशंसता । पदावधीत् पितृन् भ्रातृन् गुरुन्पुत्रान्
 धांतयित्वा कथं द्रोणे भविष्यत् । पि पितामहम् । मनस्वेऽभूमहाबाहो हत्वा भ्रापि
 प्रथम ॥ ८ ॥ किं नु राज्येन ते कार्ष्ण पितृन् भ्रातृन् पश्यतः । अभिमन्युश्च

अध्याय १५ ॥

वैशम्पायन बोले कि सब सेनाओं के मरनेपर धर्मराज युधिष्ठिरने
 पुरसे निकलेहुये अपने दृद्रापिताको सुना । १ हे महाराज सब पुत्रशोकसे
 वह युधिष्ठिर भाइयों समेत उन पुत्रशोक से पूर्ण वही चिन्तावाले घृतराष्ट्र
 औरचला । २ । महात्माधर धीरुष्णजी सात्यकी और युयुत्सु इनतीनों समेत
 चला । ३ । और वड़े दुःखनेपीड़ित शोकमें डूबीहुई द्रौपदी पांचादीलोंकी बनसियों
 समेत जो वहां आतीथी उनके पीछे चली । ४ । हे भरतर्षभ हमने गंगाजीके समीप
 कुररी पक्षी के समान पीड़ितहोकर पुकारती हुई स्त्रियों के समूहों को देखा । ५ ।
 उन पुकारनेवाली ऊरको हाथ महापीड़ित इनमिय अभिय, क्वचनों समेत रोनेवाली
 हजारों स्त्रियों से वह राजाघृतराष्ट्र विराहुआ था कि अब राजा युधिष्ठिरकी वह
 दया और धर्मज्ञता कहां है जो पिता भाई भिन और गुरुओं के पुत्रोंको भिभारा
 । ७ । हे महाबाहु द्रोणाचार्य भविष्यतामइ और जयद्रथको भी मरवाकर तेराचिप
 कैसाहुआ । ८ । हे भरतवंशी पिशा भाई और द्रौपदी के पुत्र और अजेय अभि-

CHAPTER XII

Vaishampayan said, "At the destruction of the armies Yudhishtir heard that old Dhritrashtra had come out, and himself distressed with grief, he went towards him, with Shree Krishn, Satyaki and Ynyutsu. Merged in excessive grief, Draupadi followed the Panchal women. She saw the group of women crying like a foal near the Ganges. Dhritrashtra was surrounded with the women who were thus lamenting - "Yudhishtir has slain fathers, brothers, friends and preceptor's sons; where is his justice gone? 7. How does he rule when fathers, brothers, and the sons of Draupadi and Abhimanyu are no more?" Yudhishtir entered the bery of those lamenting

७३८३

पितृव्यांश्च भारत ॥ ९ ॥ अतीत्य ता महाबाहुः क्रोशन्तीः कुरुरीरिव । वधमे पितरं
 श्रेष्ठं धर्मराजो युधिष्ठिर ॥ १० ॥ ततोऽभिधाद्य पितरं धर्मेणामित्रकर्षणाः न्यवेद्यत
 ।मानि पाण्डवास्तेपि सर्वशः ॥ ११ ॥ तदात्मजात्करणं पिता पुत्रवधार्हितः । अग्रिय
 ः शोकात्तः पाण्डवं परिपश्यज ॥ १२ ॥ धर्मराजं परिपश्य्य सान्त्वयित्वा च
 भारत । दुष्टात्प्रा भीमसेनं च्छन्नं द्विच्छुरिष-पावकः ॥ १३ ॥ सकोप्य । वकस्तस्य शोक
 बायुसमीरितः । भीमसेनममं दावं दिद्यक्षु रिष हृदयतो ॥ १४ ॥ तस्य संकल्पमाश्राय भीम
 प्रयशुभं हरिः । भीमप्राक्षिष्य पाणिभ्यां प्रवदौ भीममायनम् ॥ १५ ॥ प्रांगव तु महा
 श्वाशुभं वा तस्येक्षितं हरिः । स्मिन्निधानं महाप्राज्ञस्तत्र चक्रे जगद्गनः ॥ १६ ॥ तं शूरी
 त्विव पाणिभ्यां भीमसेनमयस्मयम् । वमञ्ज चलवप्राजा मन्थमानो वृकोदरम् ॥ १७ ॥
 भागायुतवलप्राणः स राजा भीमगायसन् । अंशुवा धिमधितोरस्कः सुघ्राव वधिरं
 मन्पुको न देखनेवाले दुष्टको राज्य से कौनमयोजन है । ९ । हे महाबाहु धर्मराज
 युधिष्ठिर ने कुरुरी पक्षी के समान पुकारनेवालीउन स्त्रियोंको उल्लंघन करके ताऊ
 जीको दयहवतकरी । १० । इसके पीछे शत्रुओं के विजयकरने वाले ने नमस्कार
 करके अपने नामको कहा और उनसब पांडवोंने भी अपना नाम बर्णन किया
 । ११ । पिता और पुत्रोंके मरनेसे पांडावान और अपतश शोकदुःखी धृतराष्ट्र
 अपने पुत्रोंके नाश करनेवाले उसयुधिष्ठिर से स्नेह पूर्वक मिला । १२ । हे भरत
 धर्मा धर्मराजमे मिलकर और विश्वास देकर फिर जलानेवाले अग्निसे समान
 दुष्टत्मान भीमसेनको चाहा । १३ । शोकरूप बायुमे चलायमान उसके क्रोधकी
 वह आग्नि भीमसेनरूपी वनको जलाने की अभिलाषिणी दिखाई पड़ी । १४ । हे
 राजा हरिने भीमसेनके विषय में उसके अशुभ संकल्पको जानकर प्रथमही सुगमकर्मा
 भीकृष्णजी ने वह मूर्ख भंगालीथी । १५ । बड़े बुद्धिमान श्रीकृष्णजीने प्रथमही
 उसकीचष्टासे प्रकट होनेवाले वृत्तान्त को जानकर और भीमसेनको हाथोंसे रोककर
 लोहेका भीमसेन धृतराष्ट्र के हाथ में दे दिया । १६ । उस लोहेके भीमसेन को
 हाथोंसे पकड़ कर उसको भीमसेन मान कर बलवान् राजा ने तोड़ डाला । १७ ।
 साठ हजार हाथी के बल समान उस बलवान् राजाने लोहे के भीमसेन को तोड़

ladies and prostrated himself before Dhritrashtra a. 10. He announc-
 ed his own name and so did the other Pandavas. Grieved for the
 death of his sons unhappy Dhritrashtra received Yudhishtir the
 destroyer of his sons affectionately. After embracing him, the en-
 raged prince desired to embrace Bhim. Fanned by the wind of grief,
 the fire of his rage seemed to consume the forest of Bhim's body
 Being aware of his evil intention, wise and easy-working Krishna had
 already sent for an iron statue. 15. Knowing what was going to
 happen, wise Shri Krishna held Bhim back with his hands and gave the
 iron Bhim into the arms of Dhritrashtra. Thinking the statue to be

मुखात् ॥ १८ ॥ ततः पपात मेदिण्यां तथैव रुधिरोक्षिनः । प्रपुष्पिताप्रशिक्षरः ।
 इव द्रुमः ॥ १९ ॥ प्रत्यगृह्लाण तं विद्वान् मृतो गाव्यगणितदा ।
 शमयन् सान्त्वयन्निव ॥ २० ॥ स तु कांपं ममुस्त्वज्य गतमन्युर्गहात्मना । हा हा
 तिभ्रुक्रोश नृपः शोकममन्यतः ॥ २१ ॥ तं विदित्वा गतक्रोधं भीमसेनवचार्दितम् ।
 वासुदेवो धरः पुंसामिदं पचनमप्रधीत् ॥ २२ ॥ मा शुचो वृनराष्ट्रं त्वं नैव भीमस्वपा
 धतः । आयसीप्रतिमा क्षेपा त्वया राजेजिपातिता ॥ २३ ॥ त्वां क्रोधवशमापकं विदित्वा
 मरतर्यम । मयापकृतः कौन्तेयो मृत्योर्ह्यन्तरं गतः ॥ २४ ॥ न हि ते राजशास्त्रं वृत्ते
 तुर्व्योऽस्ति कश्चन । कः सदेत मदावाहो पाएयोधिद्रुहणं नरः ॥ २५ ॥
 प्राप्य जीवन् कश्चित् मनुष्यते । एवं घातवन्तरे प्राप्य तय जीवेत्र कश्चन ॥ २५
 पुत्रेण या तेसौ प्रतिमा कारितावसी ॥ भीमस्य संप्य कौरव्य तथैवोपहृता मया ॥ २७

कर घायल छातीने मुख से रुधिरको गिराया । १८ । इस के पीछे इसी
 रुधिरसे भराहुआ पृथीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि प्रफुल्लितनोक झाखा
 पारिजातनाम वृक्ष गिरता है । १९ । तब बुद्धिमान संजय ने उसको
 और शक्तिपूर्वक विश्वास कराताहुआ उसमे बोला कि इस प्रकार मत करो । २० ।
 फिर यह यद्वा सादृशी क्रोधसे पृथक् और रहितशेकर शोकसे पुक्त राजा
 भीमसेन यह शब्द कहके पुकारा । २१ । उसको भीमसेनके मारनेसे पीड़ावान
 और क्रोधमे रहित जानकर पुरुषोत्तम वासुदेवजी इस वचनको बोले । २२ । हे
 समर्थ भृतराष्ट्र शोचमत करो यह भीमसेन तुम्हारे हाथसे नहीं मारागया तुमने यह
 लोहेकी मूर्त्तिगिराई है । २३ । हे भरतर्यम तुमका क्रोधके वशीभूत देखकर
 की डाह में गयाहुआ भीमसेन मैंने खैचा । २४ । हे राजाओं में श्रेष्ठ कोई तेरे
 समान बलवान नहीं है हेमदानाहू कौन मनुष्य तेरी भुजाओं के पकड़ने को सह
 सकता है । २५ । जैसे कि मृत्युको प्राप्त होकर कोई जीवता नहीं छूटता है इसीप्रकार
 तेरी भुजाओं के मध्यको पाकर कोई जीवता नहीं रहसक्ता है । २६ । हे कौरव
 जिस हेतुमे आपके पुत्रो भीमसेन की जो यह लोहेकी मूर्त्ति वनवाई वही मूर्त्ति मैंने
 तेरे मांस बर्चमान करी । २७ । हे राजेन्द्र पुत्रशोक से दुखी तेरा चित्तवर्ष से

Bhim, the powerful king broke it into pieces, though in doing so he
 cut his breast and dropped blood from the mouth. He fell down on
 earth bleeding like a blooming tree. Wise Sanjaya held him, saying
 gently. "You should not do so." 20. The brave king, when his
 anger was gone, was filled with remorse for slaying Bhim. Seeing
 that he was no longer in an angry mood but felt grief for Bhim,
 Vasudev said, "Be not grieved, Dhritrashtra. You have not slain
 Bhim and only broken an iron statue. Seeing you in angry mood, I
 dragged Bhim out of the jaws of death. You are unequalled in
 strength; none could come out safe from the grasp of your arms. - 25.

अशोकमिसस्तापासुर्मादृष्टं मनः । तद्वाराजेन्द्र तेन त्वं भमिसेनं जिघांससि
२८ ॥ न त्वेतत् क्षमं राजन् हन्यास्त्वं यववृकोदरम् । न हि पुत्रा महाराज जीवियुस्ते
। २९ ॥ तस्माद्यत् कृतमस्य भिर्नन्धमानैः शमं प्रति । अनुमन्यस्व तत् सर्वं
॥ अशोकमनः कृपाः ॥ ३० ॥

इति श्रीपर्वणि जलपादानिकपर्वणि आयसमीमभेद्वादशो ध्यायः १२



वैशम्पायन उवाच । तत एवमुपातिष्ठन् शौचार्यं परिचरि काः । कृतशौचं पुनश्चैनं
मौवाच मधुसूदनः ॥ १ ॥ राज्ञजघीता वेदास्ते शास्त्राणि विविधानि च । श्रुतानि च
पुत्राणानि राजघर्माश्च केवलाः ॥ २ ॥ एवं विद्वान् महाप्राहः समर्थः सन् धलाबले ।
आत्मापरात् कश्चरारं कृतये कोपरीडयन् ॥ ३ ॥ उक्तवाक्त्वा तदैवाह भीष्मद्रोणौ

पृथक् दुभाया उभ हेतुसे तुम भीमसेन को मारना चाहते थे । २८ । हे राजा यह
आपको बोम्प नहीं है जो तुम भीमसेन को मारा चाहतेहो क्योंकि आपके पुत्र
आयुर्हार्पूर्ण होमानके कारण से किमी दशा में भी जीवते नहीं रहसक्ते थे । २९ ।
इस हेतुसे सन्धिको भंगीकार करनेवाले हम लोगों ने सन्धि के विषय में जो कर्म
क्रिया उस सबको ध्यान करो शोकमें चित्तमें मतकरो ३० ॥

अध्याय १३ ॥

वैशम्पायन बोले कि इस के अनन्तर नौरस्रोग स्नान कराने के निमित्त इस
के पास आकर वर्त्मान हुये मधुसूदनजी इस स्नानमें निवृत्त होनेवाले राजा
से बोले कि हे राजा तुम ने वेद और नाना प्रकार के शास्त्र पड़े पुराणों समेत
शुद्ध राजघर्मा को घुना । २ इस प्रकार पंडित और बड़े ज्ञानी बलाबल में समर्थ

Non e can scape with life from your deally clutches. I made use of
the iron statue of Bhim made by Duryodhar. Grieved for your son
you had deviated from the path of right and wished to slay Bhim
This was not worthy of you, for your son had his days numbered
and could live no longer. Think of our exertions, which we did in
brn ging about peace, and grieve no more." 30.



CHAPTER XIII

Vaishampayan said, "Then servants came to Dhritrashtra to help him
in bathing, and when he had done bathing, Shri Krishna thus addressed
him, " You have learnt religious books and learnt the duties of king.

व भारत । धिपुः सज्जगश्च त्वन्तु राजप्र तत् रुपाः ॥ ४ ॥ स वाच्यमानो नःस्मा
कमकार्षीर्वञ्चने तदा । पाण्डवानधिकं जानन् बले शौर्ये च कौरव ॥ ५ ॥ राजा
दि यः स्थिरप्रदः सद्यं द्यावानपेक्षते । देवाकलत्रिमागञ्च पटं अथः
स चिन्दति ॥ ६ ॥ उच्चमानस्तु ध धृत्यो गृष्णाने न द्विताहिने । आपद्ः समनुपाव
स शोचत्यग्रे स्थितः ॥ ७ ॥ ततोऽगृष्णमारानं समवेक्ष्य भारत । राजस्त्व ह्यधि
धयात्मा दुर्योधनदने स्थिः ॥ ८ ॥ आन्भापगंधादांपन्नस्यत् किं भीमं जिघांससि ।
तस्मात् सद्यच्छ कां त्वं स्वमनुस्मृत्य दुःश्रुतम् ॥ ९ ॥ यस्तु तां सद्यं या धृष्टः बांश
लीमानपत् सभाम् स हनो भीमसेनेन धैरं प्रतिजिहीषिता ॥ १० ॥ आत्मनोऽर्तकर्म
पश्य पुत्रस्य च दुरात्मन । गन्तव्यमि पाण्डूनां परिव्रागः परस्तप ॥ ११ ॥ वैशम्पा
यन उवाच । एवमुक्तः स कृष्णेन सर्वं सत्यं जन विप । उवाच देवकीपुत्रं धृतराष्ट्री
महीपतिः ॥ १२ ॥ ए गेत्तगाह्वानाहो यथा वदन्ति माधव । पुत्रस्नेहश्च घर्मोऽत्मन् जैषांसा

होकर तुम अपने अपराधने ऐसे क्रोधको हिन गीमत्त करनेहो हे भरतवंशी तभी मैंने
भीष्मने द्रोणाचार्यने और संजयने भी तुमसे कहाथा परन्तु हेराजा तुमने उस
वचनको नहीं किया । ४ । हे कौरव उमसमय पांडवोंको बल और वीरतामें अधिक
जनत और वारम्बार निषेध कियेहुये भी तुमने हमारे वचनको नहीं किया । ५ । जो
नियत बुद्धि राजा आप दोषों समत देशकालके विभागको विचारता है वह
परम कल्याण को पाता है । ६ । हित अनहित में समझाया हुआ जो पुत्र कल्याण
वचनको अंगीकर नहीं करता है वह अनीतिमें नियत आपत्तिका पाकर आवता
है । ७ । हे राजा इस हेतुमें विपरीत चरनेवाले अपने को देखो दृष्टोंके कर्णों
से विपरीत चित्तवाले तुम दुर्योधन की आधीनता में नियत हुये । ८ । और अपनेही
अपराधमें आपत्ति में फँसे सो तुम भीमसेनको क्यों मारना चाहतेहो इस हेतुमें
तुम अपने क्रोधको दूरकरो और अपने दृष्ट कर्मोंको स्मरण करो । ९ । जिस भीष
ने ईर्ष्या से उस द्रौपदी को सभा में बुझाया वह शत्रुता को बढ़ता लने के अधि
लापी भीमसेन के हाथ से मारागया । १० । अपनी और अपने दुरात्मा पुत्रकी अप
रादगी को देखो जो तुमने निरपराधी पांडवों को त्याग किया । ११ । वैशम्पा
यन वाले हेननमेजग श्रीकृष्णनी के इमकार के सत्य वचनों सुनकर उस राजा
धृतराष्ट्र ने देवकी नन्दनसे कहा । १२ । कि हे महाबाहु माधवजी जो आप कहते हैं

Being so learned and powerful, you should not have indulged in anger.
You did not act upon the advice given you by Bhishm, Drona, Sanjaya
and myself. You knew the great strength of the Pandavas and yet
you were obdurate. 5. Happy is the king who acts according to
the requisition of time and place, but he who does not mind the advice
of his faithful friends, falls into trouble. You acted wrongly in as
much as you disregarded the counsel of old men and were controlled by
Duryodhan. You brought misery on yourself. Why do you wish to

बन्धुलपत् ॥ १३ ॥ दिष्ट्या तु पुत्रपदवाधोषलान् स्तयश्चिक्रमः । त्वद्गुप्तो नागतत्
 प्य भीमोवाह्वन्तरे मम ॥ १४ ॥ इदानीन्तरहोषागो गतमन्सुर्गन्ध्याः । त्वयमं
 त्वद्वन्धुर्वादे स्वपुत्रमिच्छामि माघव ॥ १५ ॥ इतेषु पार्थिवेन्द्रेषु पुत्रेषु गितेषु वै । पाण्डु
 तेषु वै त्वमं विहितश्चाप्यवतिष्ठते । २१॥ इतः स गीः च धनञ्जय माह्वयाश्च पुत्रो
 वेपथुर्वीरो । परशर्मा गात्रे । प्रवदन्तु गैशानाश्वस्व वल्ल्याद्यमुवाच सैनान् ॥ १८ ॥

वि श्रीवर्षणि कलमादानिकर्पाणि हृतगाष्ट्रकोपादिमोघने प्रपादशाः ध्यायः ॥ १३ ।



इस सब बर्बाद है परन्तु सुटा बलवान् पुषकी श्रानि ने मुझको धर्यसे पृथक् कर
 दिया । १३ । हे श्रीकृष्णजी मारुपकी नातई कि तुमने रक्षित बलवान् सत्य
 पराक्रमी भीमसेन ने मेरी सुजाके मध्यको नहीं आया । १४ । हे माघवजी अ
 मानवत्त्व तो मे रक्षित विशतम्बर मैं मझले वीर पाण्डवको देखा चाहत हू महा
 राजाओं के और पुषों के अग्नेष्वर मेरे सुख और प्रीति पांडवों में नियत छाने हैं
 । १५ । इहकोषाके सङ्गत रोतेहुये उस राजा ने उन सुन्दर अंगनाने भीमसेन
 बलवान् और पुत्रों ने वहे वीर नकुल और सहदेव को भी अर्गों से स्पर्श किया
 और उन्हेंको विश्वास देकर करवाण के वचन कहे १७ ॥

slay Bhim ! Remove your anger and recall your wicked deeds. Bhim
 only revenged the wrong done to Draupadi in the court by that dis-
 picable son of yours. 10. Look at your transgressions and those of
 your son in ousting the Pandavas. Vaisampayan says that on hear-
 ing the words of Shri Krishna, Dhrishtrachtra thus addressed him, " You
 are right, Madhav, but it was the paternal love which took away my
 constancy. It was by good luck that you guarded Bhim and saved
 him from coming within the grasp of my arms. I am now quite free
 from anger and wish to see him. At the fall of the kings and sons my
 love is concentrated in the Pandavas." Then with tears in his eyes,
 the king touched the bodies of Bhim, Arjun, Nakul and Sahadev.
 He spoke to them kindly and blessed them " 17

वैशम्पायन सभाष । धृतराष्ट्रस्य मुखात्कृतं तस्मै कुरुवृद्धाः । अस्मिन्पूर्वातर । ७
 गान्धारा स्तदकेशवाः ॥ १ ॥ ततो ज्ञात्वा ह्यतामित्रं चर्मतां पुत्रिद्विरम् । गान्धारी
 पुत्रशोफार्तां च तुनच्छदनिन्दिता ॥ २ ॥ तस्याः चापमाभ्यां विदित्वा पाण्डव
 प्रति । क्रुधिः सरथवः पुत्रः आगतः सप्तपुत्रम् ॥ ३ ॥ स गङ्गावामुत्सवः पुत्रगान्धारी च
 शुचिः । तं देवमुपभेदे परं चिंताम् ॥ ४ ॥ दिव्येन चक्षुषा पश्यन् मनस्तापुम् ।
 च । सर्वं प्राणमृता मायं स तत्र सप्तपुत्रम् ॥ ५ ॥ सस्युगमप्रवीरः काञ्चन कल्पवादी
 महातपः । शपकात्मयाज्ञिष्य शमाकालमुदरिष्व ॥ ६ ॥ तकोरः पश्यन् कान्धारी
 गान्धारी शममाप्नुदि । यथो निवृत्तगमेतत् स्रगु चेदं यथो मनः ॥ ७ ॥
 उकास्पष्टादशाहानि पुत्रेण जयमिच्छता । शिवेमाशंसन् वै मातुषुष्यमानस्य कुरुमिः

अध्याय । १४ ।

वैशम्पायन बोले कि इसके पीछे धृतराष्ट्र से ज्ञाता लेकर वह क्रौरव पाण्डव
 भाई केशव नी समेत गान्धारी के पास गये । १। इनके पीछे पुत्रों को शोकसे पीड़ा
 बान निर्दो गान्धारी ने उन मृतक शत्रुबाले युधिष्ठिर को पास आया हुआ
 जानकर क्षाप देना चाहा । २। ज्ञानश्रुति मथमही पांडवों के विषयमें उसके पाप
 रूप चित्तके विचारको जानकर सावधानहुये । ३। और चित्त के समान शीघ्रगामी
 होकर वह मंथरी श्रीमंगायत्री के परिवेश और सुगन्धित जलमें स्नान आचमनकरके
 उस स्थानपर आ पहुंचे और दिव्य नेत्रशुक्त आंखे चिंतिते देखते उस श्रुति
 ने वहां सब जीवों के चित्तके वृत्तान्तको जाना । ४। क्षापके समदंको निरादर
 करके कालकी शान्तिको बर्णन करते वह महातपस्वी कल्पवादी श्रुति पुत्रपथ
 से बोले । ६। कि हे गान्धारी पांडव के ऊपर क्रोध न करना चाहिये अपने क्षाप
 वचनभो रोककर इस मेरे वचनको सुनो । ७। अठारह दिनतक विप्रबके अभिलाषी
 पुत्रने कहाई कि हे माता शत्रुओं के साथ मुझ बृद्ध करनेवाले को मुन आशीर्वाद

CHAPTER XIV

Vaishampayan said, " Then by Dhritrashtra's permission the Pan-
 dar brothers, with Keshav, went to Gandhari. Distressed with grief
 for her sons, she intended to curse Yudhishtir. Knowing of her evil
 intention towards the Pandavas, Vyas made haste, after bathing in
 and sipping the water of the Ganges, he came there. With his divine
 eye he saw through the minds of those who were present there. 5. Speak-
 ing ill of curses and recommending peace of mind, he said to Gandhari,
 " Donot let your anger fall on the Pandav. Donot curse him, but hear
 me; during the eighteen days of war, your son desirous of victory asked
 you to bless him, but on all occasions you said that victory should
 fall on the side of dharm. I can never think that your words to him

॥ सा तथा भक्ष्यमाना एवं काले काले जयविणा । उक्तवत्यासि गान्धारि यतो
 स्ततो जय ॥ १ ॥ चाप्यतीतां गान्धारि वाचं ते वितथामहम् । स्मरामि गायमाणा
 लया प्राणिहिता ह्यसि । १० ॥ विप्रो तुमुले रावण गत्वा परमसंशयम् । जिते पाण्डु
 नेयुद्धे नूनं धर्मस्ततोऽधिक ॥ ११ ॥ क्षमाशीला पुरा भृत्या साद्य न क्षमसे कथमपी
 धर्मजहि धर्मज्ञे यतो धर्मात्ततो जय ॥ १२ ॥ स्थञ्ज धर्मं परिस्मृत्य नच चोका मन
 खनि । क्रोप संयच्छ गा-धारि गैर्धर्म-स्तीयवादिनि ॥ १३ ॥ गणेशाद्युवाच । भगव
 नाभ्यसूयामि नैतानिच्छामि नश्यत । पुत्रशोकैत तु घला-मनो विह्वलतीव मे ॥ १४ ॥
 यैव कुन्वा-कौटिल्या रक्षितव्यास्तथा भूयात्तथैव धृतराष्ट्रेण रक्षितव्या यथा मया
 । १५ ॥ बुदयोऽवनापराधेन शकुने सौधलस्य च । कर्णे दुशासनाभ्याश्च वृत्तोऽयं
 कुत्सक्षय ॥ १६ ॥ नापराध्यति विभक्तुर्न च पार्थो वृकोदर । नकुल सहदेवो धा

दे । ८ । हे गान्धारी—उम् विजया, भिलाषी से समय २ पर प्रार्थनाकरी हुई
 तुमने कहा है कि जियर धर्म है उधरही विजय है । ९ । हे गान्धारी मैं पूर्व समय
 में तुम्ह दुर्योधन के, शुभ-आशीर्वाद-से प्रसन्न करनेवाले के कहेहुये वचन-को
 विध्या स्मरण नहीं करताहूँ तुम उस प्रकारकी, समाधि धारण, करनेवाली, हो । १० ।
 इसी से राजाओं क कठिन युद्ध में पारको, पाकर पांडवों मे युद्ध में निस्सन्देह
 विजयको प्राया निश्चय करके उधरही धर्म अधिक है । ११ । पूर्वसमय में, ऐसी
 क्षमावान होकर अर किस हेतुधे, वृत्तमा नहीं करती है हे धर्मकी जाननेवाली अर्धम
 को, त्यागो-जिधर धर्म है, उधरही विजय है । १२ । हे मनस्विनी सत्यवक्ता गान्धारी,
 अपने धर्मको और, कहेहुय, वचनको स्मरण, करके क्रोधकोरोको और, इस दशा
 वाली मतहो । १३ । गान्धारीने कहा हे भगवन मैं गुणमें दोषनहीं, लगातीहूँ, और
 ननका नाशवान होना नहीं चाहतीहूँ । १४ । परन्तु पुत्रशोकसे मेराचित्त अत्यन्त
 पाकुल होताहै । १५ । जिप्रमहार पांडव कुन्तीसे रक्षा के योग्य है, उसीप्रकार मुझ
 में भी हैं और जैसे मुझमे रक्षा के योग्य हैं उसीप्रकार धृतराष्ट से हैं । १६ । दुर्योधन
 शकुनी कर्ण और दुःशासन के अपराधसे यह कौरवों का नाश हुआ । १६ । इस

were wrong 10. The Pandavas were victorious, 'no doubt, 'accord'
 ing to thy predictions and dharm must be on their side. Being ever
 merciful, why do you withhold your pardon? Give up injustice.
 Victory has fallen on the side of justice. Remembering your own
 words, you should not behave thus, truthful Gandhari, "sha-sa d,
 " I do not find fault, where there is none, and do not want their destruc-
 tion. My mind however is distressed with grief for my sons. They
 deserve as much protection from me as from Kunti. The Pandavas
 equally deserve protection from Dhritrashtra 15 The great destruction
 of the Kauravas was brought about by Duryodhan, Shakuni, Karan
 and Dushasan. The Pandavas have done no wrong. The Kauravas

दिव जानु युधिष्ठिरः १२७ । सुरयमानसि कौरव्याः कृतगतापरस्परम् । निहताः सदि
 ताश्चान्यैश्च न नास्यामेव गम ॥ १८ ॥ किन्तु कर्माकरोद्भ्रामो वासुदेवस्य पश्यतः ।
 दुर्योधनं समाहूय गदायुद्धे महाभयाः ॥ १२ ॥ शिक्षयाऽपि किं ज्ञाया चरन्तं बहुवा
 रणे । अघो नाऽवा प्रहृषान् तस्मै कोपमयञ्जयत् ॥ २० ॥ कथं नु धर्म धर्मके । समु
 दिष्ट महारमणि । स्वययुवाहये शूराः प्राणहेतोः कथञ्चन ॥ २१ ॥

इति स्त्रीपर्वणि जन्मपादानिकपर्वणि गान्धारीसान्त्वनायां
 चतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

में अर्जुन भीमसेन नकुल सहदेव और युधिष्ठिरका भी कुछ अपराध नहीं है । १७
 यह परस्पर युद्ध करनेवाले अहंकारी कौरव एकसाथ अन्य २ लोगोंके हाथ से
 मारेगये वह मेरा अभिय नहीं है । १८ परन्तु वासुदेवजी के देखते हुये भीमसेन
 ने कैसा कर्पकिया कि वड़े साहसी ने गदायुद्धमें दुर्योधनको बुलाकरके और
 शिक्षामें अधिक जानकर युद्धमें अनेक रीतसे घूमनेवाले को । २० । नाभिकेनीचे
 घायल किया इस बातको सुनकर मैंने क्रोधको बढ़ाया । २१ । वह शूरवीर युद्धमें
 प्राणों के अर्थ किसी दशमें भी धर्मको नहीं त्यागता है जाँके धर्मज्ञ महात्माओं
 से उपदेश किया गया है ॥ २२ ॥

fell down fighting in the pride of their power. But why did Bhim do
 such a deed in the presence of Vasudev? He challenged Duryodhan
 to fight with the mace and then struck him below the navel. This
 was the cause of my anger. A well-advised warrior never sets aside
 justice under any circumstances." 21.



वैशम्पायन उवाच । तदुक्त्वा वचनं तस्या भीमसेनोप भीतवत् । गांधारी प्रायु
 धावैर् बभूवः सानुनयं तथा ॥ १ ॥ अतर्पो यदि वा धर्मप्रासासत्र मया कृतः । आत्मानं
 आनुकामेन तन्मे स्वं क्षन्तुमर्हसि ॥ २ ॥ मे हि धर्मेण पुत्रस्ते पतितोसौ महाबलः । न
 शक्यः केनचिद्भ्रतुमती । विषममाचारश्च ॥ ३ ॥ अधर्मेण जितः पर्वे तेन चापि युधिष्ठिरः ।
 र्भक्तिवाञ्छ सदैव शन ततो विषममाचरम् ॥ ४ ॥ सैन्यस्वेको वशिष्टोऽयं गदायुद्धेन वीर्यं
 बान् । मां हत्वा न हरेद्राज्यामिति व तत् कृतं मया ॥ ५ ॥ राजपुत्राञ्च पाञ्चालीमेक
 वस्त्रा रजस्वलाम् । भवत्या विदिं सर्वमुक्तं गन् यत् सुतलव ॥ ६ ॥ दुर्योधनमसं
 श्रुत्वा न शक्या भूः असांगताः । केवला भोक्तुमस्माभिरतश्चैतदुक्तं मया ॥ ७ ॥ तथाप्य
 प्रियमस्माकं पुत्रस्ते समुदाचरत् । द्रौपद्या यत् समामर्ष्य सव्यमूकमदर्शयत् ॥ ८ ॥
 सदैव बध्यः सोऽस्माकं दुराचारोऽयं ते सुतः । चरित्वाजया चैव स्थिताः स्म समयेतदा

अध्याय १५ ।

वैशम्पायन बोलीक तब भीमसेन उसके उत्सव वनकौ सुनकर भयभीतके समान
 भ्रता के साथ गांधारी से यह बचनबोला । १ । हे माता धर्महीन वा अधर्महीन
 अपने शरीरकी रक्षाके अभिलाषी मैंने मय से धर्मा ऐसाकिया आपउसमेरे अपराध
 को क्षमाकरने के योग्यहो । २ । यह बड़ा बलवान् आपका पुत्र धर्म युद्ध केद्वारा
 किसी के साथ लड़ने के योग्य नहींया इस हेतुसे मैंने विपरीत कर्म किया । ३ ।
 पूर्व समयमें उस दुर्योधन ने अधर्म के द्वारा युधिष्ठिर को विजय किया और हम
 सदैव ठगोगये इस कारण से मैंने विपरीत कर्मकिया । ४ । सेना के मध्यमें अकेला
 शेष बचाहुआ यह पराक्रमी कदाचित् गदा युद्धसे मुझको मारकर राजपको नक्षेले
 इस हेतुसे मैंने यह कर्मकिया । ५ । आपको सब विदित है कि आपके पुत्रने एका
 वस्त्रा रजस्वला राजपुत्री द्रौपदीसे जो वचन कहाया इसमें दुर्योधनको बिनापारे
 हुये सानरो समेत निष्कण्टक पृथ्वी हमसे भोगने के योग्य नहींथी इन बातोंको
 विचार कर मैंने यह कर्मकिया । ७ । उमीधकार आपके पुत्र ने हमारे अभियक्तो
 भी किया जो समाके मध्यमें द्रौपदीको वामजाया दिसलाई । ८ । तबही वह

CHAPTER XV

Vaishampayan said, that on hearing the words of Gandhari, Bhishm
 humbly spoke to her, saying, " Whether it be justice or injustice, I
 did it in self-defence, and I ask your pardon, mother. Your powerful
 son could not be overcome in a just fight and therefore I did an
 unjust deed. Formerly Duryodhan conquered Yudhishtir unjustly
 and we were cheated again and again; this was the reason of my
 acting against rule. I did it lest he might slay me and take our king-
 dom, in spite of the destruction of all his army 5. You know well
 how Duryodhan dragged Draupadi and we did not think it worth
 our while to enjoy the kingdom without slaying him. He had dis-

इत्ता नृशतोऽहं तव देवि युधिष्ठिरः । शापार्हः पुत्रिणीनाञ्च हेतुर्ह्य । शरद्वयमात्र
 न हि मे जीविनेषां न राजयेन धनेन वा । तारुण्यं सुदंशो हृद्यं सूडं शक्यं सुद
 द्रुह ॥ २७ ॥ तमेव धायेनं भीत सन्निकर्षगतं तदा । नोवाच क्लिबिबद्धान्धारी निषेवा
 सगरममूढाम ॥ २८ ॥ तस्यायततदेहस्य पादयोर्विपतिष्यतः । युधिष्ठिरस्य नृपेर्धर्मका
 दीर्घदशिनो ॥ २९ ॥ अंगुष्ठेष्वाणि वदशे देवि पट्टान्तरेण सा । ततः स कुन्ती भूतो
 दशनीयनखो नृपः ॥ ३० ॥ तदहृष्ट्या चाजुनोऽगच्छद्वासुदेवस्य पृष्ठतः । एवं सन्नेह
 मानास्तन्नितश्चेतश्च भारत । गान्धारी भिगतक्रोधा साम्प्रयामास प्रावृत्त ॥ ३१ ॥
 तथा ते समनुज्ञाना मानस गिरमातरम् । अश्रमण्डुत सहिनाः पृथो पृष्ठलक्ष्मणः
 ॥ ३२ ॥ चिरस्य हृष्ट्या सा पुत्रान् पुत्राभिभिरिणयञ्जना । वाह्यमाहारयदेवी बलेना
 वृष्य वै मुक्तम् ॥ ३३ ॥ ततो वासो ममूःस्तुत सद् पुत्रेण वै पुथा । अश्रयदेतान् शक्यो

नाशका मूल निर्दयी होकर शापके योग्य हू मुझको शाप दे । २६ । उस प्रकार
 के सुदृजनों को मारकर मुझ अज्ञानी सृष्टियों में शत्रुता करनेवाले को जीवन और
 राज्यमें कौन प्रयोजन है तब कठिन श्वापा लेनेवाली गान्धारी उम इस प्रकार
 बोलने वालं भयभीत समीप पहुंचनेवाले से कुछ नहीं बोली । २८ । इस
 दूरदर्शी देवीने उस कूके शरीर चरखों में गिरने के अभिलाषी राजा युधिष्ठिर
 की हाथ की उँगलियों की नोक को पट्टान्तर के भीतर से देखा उस से
 दर्शन के योग्य नख बाला वह राजा युधिष्ठिर कुन्ती होगया । ३० । अजुन
 उमको देखकर वासुदेवजी के पीछे चलाना है भरतवंशी इस प्रकार इपर
 उभर स चेष्टा करनेवाले उन पांडवों को क्रोधसेरहित गान्धारी ने माता के समान
 विज्ञास कराया । ३१ । उमहेतुसे आज्ञा पायेहुये वह बड़े वल्लरस्यलवाले पांडव
 एक साथी उस बीरों को उत्पन्न करनेवाली कुन्तीमाता के पास गये । ३२ ।
 पुत्रों के विषयमें चिन्तने स्वेदयुक्त उस देवी ने बहुत कालके पीछे अपने पुत्रोंको
 देखकर बल से मुलको दककर अश्रुपान किये ३३ । इसकेपीछे कुन्तीने पुत्रोंसमेथ

a trembling body went to her and said in a sweet voice, "Here I am, Yudhishtir the destroyer of our sons and the root of the destruction of the world. Curse me, for I deserve it. 26. Having destroyed friends, why should I live to rule the kingdom?" Heaving deep sighs, Gandhari gave no reply to Yudhishtir who had approached her in great fear. She looked from behind her veil at the finger nails of Yudhishtir, who was kneeling at her feet, and the beautiful nails were destroyed. 20 At the Ajun crept behind Shree Krishna, Gandhari curbed her anger and consoled the terrified Pandavas like a mother. They took leave of her and went to Kunti. Seeing her sons after a long time, distressed Kunti covered her face under cloth and wept. With eyes full of tears, she saw them covered with scars of

विदुषापरिविहृतान् ॥ ३४ ॥ सा साकेकशः पत्राम् संस्पृशन्ती पुनः पुनः । भग्धशो
 नत तु आर्त्ताद्रौपदीय इतात्मजाम् । उद्वृती मघ पाषाली ददर्श पतिना भुवि ॥ ३५ ॥
 त्विषुवाच । आर्य्ये पौत्राः क्व ते सर्वे सौभद्रसहिता गताः । न त्वां तेषामिगच्छन्ति
 त्वेरे ह्यपुत्रा तपस्विनीम । किन्तु राज्येन ये कार्य्ये विहीनाया सुतैर्मम ॥ ३६ ॥ तां
 ज्जाहवासायामास वृथा पृथुललोचनाम् । उरपाय यावत्सेनी तु श्वती शोककर्मिताम्
 । ३७ ॥ तथैव सहिता चापि पुत्रानुगता नृप । अस्त्रयगच्छत गान्धारी मार्त्तमास्ततया
 स्वयम् ॥ ३८ ॥ तामुवाचाय गान्धारी सह वध्या यदास्विनीम् । मैथं पुत्रीति तु आर्त्तां
 पश्य मामपि दुःखिताम् ॥ ३९ ॥ मन्वे लोकविनाशोऽयं कालपट्यायर्थादितः । भवदय
 ज्जायी संप्रातः स्वभावालोमहर्षण ॥ ४० ॥ इदं तत् समनुप्राप्तं विदुरस्य वचो महत् ।
 अविद्यामनये कृष्णेयवधाञ्च गन्धारी ॥ ४१ ॥ तस्मिन्कप-विहायैर्धे इयमेतिव विशेषतः । मा

अनुप्राप्तों को करके उनको शस्त्रमूहा से बहुतप्रकार करके घायन देता । ३४ ।
 उन पुत्रों को पृथक २ स्पर्शकरते दुःखसे पीड़ावान उस कुन्तीने मृतक पुत्र वाली
 द्रौपदी को बोचा और पृथ्वीपर पड़ी रोवतीहुई द्रौपदीको देखा । ३५ । द्रौपदी
 बोली हे आर्य्ये तेरे सब अभिमन्यु समेत पौत्र कहांगये अब वह बहुत काल से
 तुम तपस्विनीको देखकर तेरे पास नहीं आते है मुझ पुत्रों से रहित को राज्य
 से कौनता प्रयोजन है । ३६ । द्रौपदी के इस वचन को सुनकर बड़े नेत्र वाली
 कुन्ती ने उसको विश्वास कराया अर्थात् उस शोक पीड़ित रोदन करनेवाली
 द्रौपदी को उठाकर उसको और सब पुत्रों को साथनेकर बड़ी पीड़ावान कुन्ती
 गान्धारी के पास गई । ३८ । वैशम्पायन बोले कि तब गान्धारी तब वह समेत
 जानेवाली कुन्ती से बोली हे बेटा इस प्रकार न करना चाहिये तू मुझ दु खीको
 भी देख मैं मायतीहूं कि यह संसारका नाशमयकी विपरीततासे प्रकटहुआ है
 । ४० । और रोवाच लड़ा करनेवाली अवश्य दोनहार स्वभाव से वर्तमान हुई यह
 विदुरजी का वह बड़ा वचन सम्मुखआया । ४१ । जिसको कि उस बड़े
 बुद्धिमानने श्रीकृष्णकी शिवा से निष्फल होनेपर कहाया इस अपारिहाय्यार्थमें

wounds She touched them one by one and was grieved for Draupadi
 whom she saw lying on earth. 35. Draupadi said, "Where are
 Abhimanyu and other grandsons of yours? They have come to see
 you. What shall I do with the kingdom without my sons?" Having
 heard the words of Draupadi, large-eyed Kunti consoled her. She
 took her sons and Draupadi to Gandhari. Vaishampayan says that
 Gandhari thus spoke to Kunti and her daughter-in-law—"You
 should not do so daughter. Let at me I think this great des-
 truction was brought about by the vicissitude of time. 40. All this
 was sure to happen as Vidur had foretold when he saw Shri Krishna's
 counsel go for nothing Donot be sorry for that which was inevit.

गजिरे वृषीराजामद्भुतं लोमहर्षणम् ॥ ४ ॥ अस्थिकेशपरिलीर्णं शोणितौघपरिल्लु
 म् । शरीरैर्वेपुसाहन्नधिनिर्कीर्णं समन्ततः ॥ ५ ॥ गजाश्चरयवोधानामावृते रुधिरा
 किः । शरीरैरशिरस्कैश्च । पदेर्दृश्य शिरोगणैः ॥ ६ ॥ गजाश्चतस्तरिणां निस्वनैरभि
 लुप्तम् । भृगालवककाकोलककुकानिवेषितम् ॥ ७ ॥ रुद्रसां पुरुपादानां मादन्तं कुर
 गकुलम् । अविद्याभिः शिवाग्निश्च नदिदं गृध्रसेवितम् ॥ ८ ॥ ततो व्यासाऽप्यनुज्ञातो
 ब्रह्मपुत्रो महीपतिः । पाण्डुपुत्राश्च ते सर्वे युधिष्ठिरपुरोगमाः ॥ ९ ॥ वासुदेवं परस्करय
 त्कुरुक्षेत्रं ताः स्त्रियो निहतेश्वराः । अपश्यन्त हतास्तत्र सारुं पुत्रान् पितान् पतीन्
 ॥ ११ ॥ ऋष्याभिमहेश्वरमानान् च गोमांयुवलावायसैः । भूतैः पिशाचै रत्तोभिर्विविधैश्च
 निशाचरैः ॥ १२ ॥ रुद्राक्रीडनिम् हृष्ट्वा तदा विशसनं स्त्रियः । महाहृष्योयं यनिभ्यो

रोमहर्षण करनेवालाथी देखा। धर्मार्थत अस्थिकेश मधनासे युक्त रुधिर समूहसे पूर्ण
 इतारों शरीरों से चारोंओरकी आच्छादित । ५ । हाथी घांटे रथ और सवारों के
 रुधिर समूह से युक्त शरीरों से घृष्यु शिरोंके समूहसे पूर्ण । ६ । हाथी घोड़मनुष्य
 और स्त्रियोंके शब्दों से व्याप्त शृगाल, बक, काकोल, कंक और कागों से सेवित
 । ७ । मनुष्य के खानेवाले राक्षसोंकी प्रसन्न करनेवाली कुररनाम पत्नियों से
 सेवित शृगालों के अशुभ शब्दों से शब्दायमान और गिद्धों से सेवितथी । ८ ।
 इसके पीछे व्यासजी से आज्ञा पाया हुआ राजा धृतराष्ट्र और वह सब पाण्डव
 जिनका अग्रवर्ती युधिष्ठिरथा । ९ । वासुदेवजी को और जिसके बन्धु मारेगये उस
 राजाको आगेकर सब कौरवीय स्त्रियों को साथ लेकर युद्धभूमि में गये । १० । वहाँ
 विधवा स्त्रियों ने कुरुक्षेत्रकी पाकर उन मनुक भाई पुत्रपिता और सुहृदोंको देखा
 । ११ । जोकि कृषे मांस खानेवाले शृगाल, काग भूत, पिशाच, राक्षस और
 नानामकार के निशाचरों से खायेहुये थे । १२ । रुद्रजी के क्रीडास्थान के समान

mind's eye the fatal field of battle lying far from that place. She saw
 covered with bones, hair, fat, blood and thousands of corpses, with
 elephants, horses, cars and the blood of horsemen whose head were cut
 asunder. Full of the cries of elephants, horses, men and women,
 abounding in jackals, crows and vultures, pleasing to the man-eating
 rakshases; resounding with the sounds of the birds of prey and jackals.
 Then by the order of Vyas, king Dhritrashtra and the Pandavas led
 by Yudhishtir, with Vasudev and the women went to the field of
 battle. 10. The widowed women saw there the slain brothers, sons,
 fathers and friends eaten by jackals, crows, rakshases and night-rovers.
 Seeing the place like the pleasure ground of Indra, the crying women
 came down from their cars. The women of the family of Bha. ag.

विक्रोशन्वो निपेतिरे ॥ १३ ॥ महत्पूर्वं पश्यन्त्यो दुःखार्ता मन्तव्यः ।
 स्त्रलज्जया म्यततश्चापराभुधि ॥ १४ ॥ आन्तानाञ्चापयान्यासां नासीत्
 चेतना । पाप्यालकुर्व्यावाणां कृपणं तदसूम्नहत् ॥ १५ ॥ दुःखोपहतचित्तानिः
 न्तादनुनादितम् । इन्द्रायोभनमत्युग्रं धर्मवा सुवत्तारंमजा ॥ १६ ॥ ततः सा
 काक्षमामन्दय पुरुषोत्तमम् । कुरुणा पैशसं इष्ट्वा दुःखाह्वननमधीत् ॥ १७
 पश्येताः पुष्परीकाक्ष स्तुपा मे निहतैश्चराः । प्रकीर्णकेश्यः क्रोशन्वः क्रुद्धं
 माधव ॥ १८ ॥ अमृत्त्वानिस्समागम्य स्मरन्त्यां भरतवर्मान् । यूयशो ह्यभ्यभावत्
 ज्ञातुन् पितुन् पतीन् ॥ १९ ॥ पीरन्भिर्महाबाहो दनपुत्राभिरावृतम् । कश्चिदप्य
 पत्नीभिर्दत्तविराभिरावृतम् ॥ २० ॥ शोभितं पुरुष्याभिर्मोक्षकर्णाभिमन्युभिः ।
 पद्भ्याश्चैव क्वलन्निरिव पावकैः ॥ २१ ॥ काञ्चनैः कवचैर्हिद्यैर्भणिभिश्च महात्मनाम्

निवास स्थानको देखकर पुकारती हुई स्त्रियां बहुमूल्य सकारेया से उभरी ।
 भरतवंशियों की स्त्रियां दुःख से पीड़ितान् पूर्वं में कभी न देखेंदुये
 देखकर कोई शरीरों पर गिरीं और कोई पृथ्वीपर गिरनेवालीहुई । १४ ।
 और कौरवोंकी वन अनाथ और धकीहुई स्त्रियों को कुछ चेतनहीं रहा यह
 दुःख हुआ । १५ । यह घृष्य पाण्भारी युःक्षितचित्त स्त्रियों से चारोंओरको
 शब्दायमान बड़ी भयानकरूप युद्धभूमिसे देखकर । १६ । फिर पुरुषोत्तम श्री
 कृष्णजी को सपक्ष में करके इत पचन को घोली १७ । हे कमललोचन
 जी इन विषवा शिरके वालों को फैलानेवाली कुररी के समान पुकारनेवाली मेरी
 पुत्रवपुर्भों को देखो । १८ । यह स्त्रियां पृथक् २ पुत्र भाई पिता और सुहृदोंको
 मिलती पतियों के सुणोंको याद करती पृथक् २ दौड़नेवाली हैं । १९ । हे
 महाराज यह रणभूमि वीरोंके उत्पन्न करने वाली और वृत्तक पुत्रवाली स्त्रियों से
 संयुक्त है कहीं जनवीरों की स्त्रियों से संयुक्त है जिनके कि वीर भर्त्ता मारेगये
 । २० । कहीं ज्वलित अग्नि के समान पुरुषोत्तम कर्ण, भीष्म अगिमन्यु द्रोणा
 चार्थ, द्रुपद और शल्य से शोभायमान है । २१ । महात्माओं के स्वर्णवपी
 कवच निष्कमणि वाजुवन्द केयूर और मालाओं से अलंकृत । २२ ।

much distressed at the unwonted scene of destruction fell down on the
 corpses or bare earth. The helpless women of the Panchals and
 Kauravas lost their senses with the excess of grief. 15. Virtuous
 Gandhari seeing the ground made dreadful by the presence of the cry-
 ing women thus addressed Shri Krishna:- "Look at my widowed
 daughters-in-law crying loud with dishevelled hair. They are
 lamenting for their sons, brothers, fathers, kinsmen and husbands.
 The field of battle is full of women whose sons and husbands are dead.
 Here and there are lying glorious Karan, Bhishm, Abhimanyu, Drona,
 Drupad and Shalya. The golden armours, ornaments, diadems and

रंलकेपरैः स्रग्मिभ्यः समलंकृतम् ॥ २२ ॥ वीरयातु निवृष्टाभिः शक्तिभिः परिधि
 सङ्गोऽथ विविधैस्तीक्ष्णैः शशरैश्च शरासने ॥ २३ ॥ प्राच्यादसंचैः सहितैस्त्रिण्डि
 विः क्वचित् । क्वचिद्दंष्ट्रीदमानैश्च शयानैरपरैः क्वचिद्य ॥ २४ ॥ एतदेवयिष्ये
 संप्रदायोचनं विभो । पश्यमाना हि दृष्टामि शोकेनाहं अनाहंन ॥ २५ ॥ पांडवा
 ः कुण्डलाश्च विनाशे मधुसूदन । पञ्चानामिष भूतानामहं वधमचिन्तयम् ॥ २६ ॥
 सुपर्णाश्च गृध्राश्च विकर्षणैश्चमुक्षिनान् । निवृत्त कपचेयमा मक्षयति म्वहस्रशः
 ॥ २७ ॥ जयद्रथस्य कर्णस्य तथैव द्रोणभीषमयो । धनिमन्याोर्विमादाश्च कश्चिन्तयि
 र्दति ॥ २८ ॥ शत्रनान्युविताः सर्वे मूर्ध्नि धिमलानि च । विपन्नालेष्ट-वसुधा विवृ
 मविशेरते ॥ २९ ॥ इति दुःखतरं । के तु केशव प्रतिभाति मे । नृमाचारितं पापं मया
 क्षु जन्मम् ॥ ३० ॥ या पश्यःमि क्षतान् पुत्रान् पीनान् स्रग्भूश्च केशव । एवमाचार्यो
 लपनी दक्षशो निहतं सुखम् ॥ ३१ ॥

इति खीपर्वणि स्त्रीविलापपर्वणि स्त्रीण इन्द्रो ररुडेरो ह्युशोऽध्यायः १६ ॥
 शेरोंकी भुजाओं से छोड़ी हुई शक्ति परिये और नानामकार के
 शस्त्र सद्ग बाणों समेत धनुषों से मुशोभित हैं । २३ । मसचचित्त कहीं साथ
 निवास करनेवासे कहींक्रीड़ा करनेवाले कहीं सोनेवाले और कहीं मांसभक्षी राजसों
 से संयुक्त है । २४ । हे समर्थ वीर श्रीकृष्णजी इसप्रकार की रणभूमि को देखामें
 इसको देखकर शोकसे भस्महुई जाती हैं । २५ । हे मधुसूदनजी मैंने पांडवा
 और कौरवों के नाशमें पाचो तरकोंके भी नाशको ध्यान कियाहै । २६ । रुचिरसे
 भरे मलह और गिद्ध उनको खेंचने हैं और इंद्रारों गिद्ध चरणोंमें पकड़कर उनको
 भक्षय करते हैं । २७ । कौन मनुष्य जयद्रथ, कृण, द्रोणाचार्य, भीष्म और
 अभिमन्यु से नाशकी चिन्ताकरने के योग्यहै । २८ । जो सब पूर्वसमय में कोमल
 शबनों पर सोते थे अब वह मृतकहोकर इसविस्तृत भूमि पर सोते हैं । २९ ।
 इससे अधिक कौनसा दुःख मुझको दिखाई देताहै निश्चय करके विदित होता है
 कि मैंने पूर्व जन्ममें पाप कियाया । ३० । हे माघवजी जो मैं पुत्र धाई और पिता
 भोंको शतक देखतीहूँ इसप्रकार पीड़ावान् विलाप करनेवालीने मृतकपुत्रकोदेखा ३१
 garlands of the warriors are lying pell mell with the spears, clubs,
 swords, arrows and bows. 23 Those who lived, played and slept
 together are now surrounded by birds of prey. I am burning with
 grief at the sight of this battle field. 25 I see the destruction of
 the five elements with that of the Kuravas and Panchals. Vultures
 and gaururs are dragging the blood stained bodies and eating their
 flesh (Wh) could think of the slaughter of Jayadrath Karan, Droha,
 Bhishm and Abhimanyu! Those who slept on soft beds are now ly-
 ing dead on bare earth What trouble can be greater to me than
 this! Surely I committed a sin in my former birth that I see sons,
 brothers and fathers lying dead here." Thus lamenting she saw the
 dead body of her son 31.

वैशम्पायन उवाच । ततो दुर्योधनं हृष्ट्वा गान्धारी शोकमूर्छिता । सहसा
 तद्गमौ लिङ्गं कदली घने ॥१॥ सा तु लब्धा पुनः संज्ञा विक्रुध्य च पुनः पुनः ।
 घनमभिप्रेक्ष्य शोयानं रुचिरोक्षितम् ॥ २ ॥ परिष्वज्य च गान्धारी कृपणं पर्यवेष्टयत् ॥
 हा हा पुत्रेति शोकात्तां विललापाकुलीन्द्रया ॥ ३ ॥ वारिणा नेत्रजेनोर
 शोकतापिता । समीपस्थं हृषीकेशमिदं यत्वनममवधीत् ॥ ४ ॥ उपस्थितेऽस्मिन्
 क्षातीनां सक्षये विभो । मामयप्राह घाष्णीय प्राञ्जलिर्नृपसत्तमः । अस्मिन्
 ख्ये अयमग्वा वधीतु मे ॥ ५ ॥ इत्युक्ते जानती सर्वमह स्वव्यसनागमम् । मन्त्रं
 म्पाद्य यतो धर्मस्ततो जय ॥ ६ ॥ इत्येवमब्रुवं नैनं पूर्वं शोचाम्यहं सुतम् । धृ
 शोमि कृपण हतवान्धवम् ॥ ७ ॥ नमर्षण युधां श्रेष्ठ कृतास्त्र युद्धदुर्मवम् ।
 धारदायने पश्य माधव मे सुतम् ॥ ८ ॥ पाऽयं मूर्खाभिविक्तानामग्रे धाति

अध्याय १७ ॥

वैशम्पायन बोले कि शोकसे पीड़ावान गान्धारी दुर्योधनकीमातृ हृष्टा
 अकस्मात् ऐसे पृथ्वीपर गिरपड़ी जैसे कि वनमें टूटाहुआ केलेका वृक्षहोता है ।
 फिर उसने सनेतताको पाकर पुकारकर और विछाप करके उस पृथ्वीपर
 रुचिने लिप दुर्योधनको देखकर । २ । हृदयसे लगाया और दुःखका
 किया शोकसे पीड़ावान् महाव्याकुल चित्त हायपुत्र हायपुत्र इसरीतिसे विछाप
 नेकी । ३ । अपनी छातीको नेत्रोंके जनसे साँचती महादुःखी उस
 समीप वर्तमान श्रीकृष्णजी से यह वचन कडा । ४ । कि हे समर्थ इस युद्धके और
 जातवालों के नाशके वर्तमान होनेपर इस शय जोडनेवाले महाराज दुर्योधनने
 मुझसे यह कहा कि हे माता जानवालों के युद्ध में मेरी विजयको कहो । ५ । हे
 पुरुोत्तम उसके ऐसा कहनेपर मैं अपने सब दुःख के आगमन को जानतीहुई बोली
 कि भिषर धर्म है उरही विजय है । ६ । हे प्रभु मैंने पूर्वं समय में इस प्रकार
 कहाया मैं इसको नहीं शोचती हूँ मैं धृतराष्ट्रका शोच करनी हूँ जो दीन और
 वांधव रहित है । ७ । हे माधवजी इस अशान्त और अस्त्र युद्ध दुर्षद और गुर
 वीरों में श्रेष्ठ मेरे पुत्रको धीरों के शयनपर सोता देखो । ८ । जो यह शत्रुनेत्रापी

CHAPTER XVII

Vaishampayan said, " Seeing the corpse of Duryodhan, Gandhari fell down on earth with grief like a plantain tree cut down in a forest. When she regained consciousness, she wept bitterly and embraced the blood stained corpse of Duryodhan, lying in great grief and saying " Alas son! " Washing her breast with tears of grief, she said to Krishna, ' At the commencement of the great war, Duryodhan asked me blessing with joined hands to gain victory over his kinsmen. ' I knew the great grief which was in store for me and replied that

कोपं पांशुषु शेतेऽद्य पदस्य कालस्य पर्ययम् ॥ ९ ॥ युधं दुर्योधनो धीरो गतिं न सुल
 भागत । तथा ह्यविमुखः शेते शयने वीरसंघिते ॥ १० ॥ एव शेते महाबाहुर्बलवान्
 सत्यविक्रमः । सिंहेनैव द्विप संख्ये भांगसेनेन पातितः ११ ॥ विदुरः ह्यवमन्स्य पित
 रश्चैव मन्दभाक् । बालो वृद्धाघमानेन मन्दो मृत्युवश गतः ॥ १२ ॥ इव कृच्छ्रं तैर पश्य
 त्रस्यापि बध नमः । यदिमा पर्युपासने हतान् शूरान् रणे स्त्रियः ॥ १३ ॥ फय तु
 पश्या नन्द इदं मम दीर्यते । पदपन्त्या निहतः पुत्रः पुत्रेण सारितः रणे ॥ १४ ॥
 यदि चाप्यग्भा सन्ति यदि वा भ्रूयस्तदा । भ्रूय लोकानवाप्नोऽय नृपो बाहु
 क्त्वादिजितान् ॥ १५ ॥

इति श्रीपर्वणि श्रीविलापपर्वणि गान्धार्या दुर्योधनदर्शने

सप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

माराजाम्रो के भी अग्रवर्ती होकर चलताथा अथ वह इस पृथ्वीकी रजमें सोता
 है संगयकी विपरीतताको देखो ॥ ९ ॥ निश्चय करके वीर दुर्योधनने दुष्पाप्यगतिको
 पाया इस प्रकार मम्मुख वीरों से सेवित शयनपर सोता है । १० । युद्धमें भीम
 सेनके हाथमें निरापाहुआ यह सत्य पराक्रमी बलवान् महाबाहु ऐसे सोताहै जैसे
 कि सिंहेके हाथमें माराहुआ हाथी सोताहै । ११ । यह अभाग्य अहान निर्वृद्धी
 विदुरजी समेत पित्राकोभी अपमानकरके वृद्धोंकी अवज्ञासे मृत्युके आघिनहुआ । १२ ।
 पुत्रके मरनेमेंभी अधिक इस मरे दुःखको देखो जो यह स्त्रियां युद्धभूमि चारोंओर
 से मत्कशूरोंके पास नियत हैं । १३ । युद्धमें पौत्र समेत मरेहुये अपने पुत्रको मृक्त
 देखनेवाली का यह हृदय कैसे सँटुकेडे नहीं होताहै । १४ । जो शास्त्र और
 श्रुतिपां सत्य हैं तो निश्चय करके इस राजाने अपने भ्रजवलों से प्राप्त लोगों
 को पाया । १५ ।

victory should fall on the side of Dharma. I said this before and
 therefore I do not grieve for him. I grieve for Dhritrashtra who is
 helpless and has lost all his kinsmen. This dissatisfied prince, brave
 in war and best of warriors, my son lies here in the field of battle.
 This great destroyer of foes, who used to lead kings, now sleeps on
 dust. Look at the change of time. Surely brave Duryodhan has
 secured regions unattainable by others, and now lies here before me
 on the bed of war. 10. Slain by Bhim, this great warrior of
 true prowess sleeps like an elephant slain by a lion. This unfortunate
 and unwise fool disregarded the advice of Vidur and his father, and
 met his death for disobeying his elders. A grief greater than that
 of my son's death overwhelms me, when I see the women round the
 bodies of the dead warriors. Why does my heart not break into a
 hundred pieces at the sight of my son and grandson lying dead to-
 gether? Surely this prince has got good regions with the strength of
 his arms, if our religious books and the Vedas are right " 15.

गन्धार्दुवान् । पश्य माधव पुत्रान्मे ज्ञातसंख्यानं जिनकलमान् । गदया भीमसे-
नेन मूर्ध्नि निहताग्रजे ॥ १ ॥ इदं दुःखतरं मेघ यद्विना मुत्तमूर्च्छजाः । हतपुत्रारणे
पालाः परिधावन्ति मे स्तराः । २ ॥ प्रासादतल्लवा रियश्चरधैर्भवणान्धितैः । आपवा
वत्स्पृशन्तीमा कश्चिद्गर्दी वसुश्चराम् ॥ ३ ॥ नृध्यानस्तारय त्यश्च तथा गोमासुबाव
सान् । शोकैनात्ता विवर्णन्त्यो मत्ता इव चरन्त्युन ॥ ४ ॥ हन्तुवा मे पार्थिवसामेता
रक्षमणमातरम् । राजपुत्रो महाबाहो मनोत ह्युस्ताम्पति ॥ ५ ॥ अन्वाञ्छापहृतं
कायाघातकृण्डलमुग्रसं । स्मस्य वन्धोः शिरः कृष्ण गृहीत्वा पश्य तिष्ठतीम् ॥ ६ ॥
पूर्वं ज्ञातिहृष्टं पापं मन्थे नाल्पमिवानघ । एताभिरनयद्यामिभया जेवात्तमेधवा ॥ ७ ॥
कुल्लभप्रकाशानि पुण्डरीकाक्ष योषिताम् । अनघयानि चक्राणि तापयत्येव रश्मि
वान् ॥ ८ ॥ पर दुःशासनः शैते शूरेणामिन्नम निना । पीतशोजितसर्वाङ्गो भीमेन बुधि
पातितः ॥ ९ ॥ गदया भीमसेनेन पश्य माधव मे स्तरम् । ज्ञातकलेशाननुस्मृय द्रौपद्या

अध्याय १८ ॥

गन्धारी बोली है मारती पुढमें ररिश्चने रहित भरे सौ पुत्रों को भीमसे
की गदाने कठिन घायल हुये देखो । १ । अब यह मेरा बड़ा दुःख है जो सुखे
केश मृगक पुत्रवाली मेरी पुत्रधू बाला युद्ध भूमिमें मेरे चारों ओर दौड़ती है
। २ । भूषणों से अलंकृत चरणों से महलोंमें फिरेवाली स्त्रियां अपनी आपासमें
फँसकर इस कश्मिर से आर्द्र पृथ्वीको स्पर्श करती हैं यह कठिनतासे उनके ऊपर
बैठहुये गिद्ध भ्रूगल और काकोंको उड़ातीं हैं और दुःखसे पीड़ावान मगवासों के
समान घूमती हैं । ४ । हे महाबाहु इन राजपुत्री रक्षमण की माताको देखकरमेरा
चित्त शान्तीको नहीं पाताहै । ५ । हे श्रीकृष्णजी शरीर सेजुदे सुन्दर कुशदसऔर
बेणी रखनेवाले अपने बाँवके शिरको पकड़कर नियत होनेवाली अन्य स्त्रियोंको
देखा । ६ । हे निष्पाप इन निर्दोष स्त्रियोंसे और सुझ निर्बुद्धी से पिछले जन्ममे
क्रिया हुआपाप छोटा नहीं है । ७ । कमललोचन स्त्रियोंके मुख जोकि फूले कमल
के समान और निर्दोष हैं उनको दुःख रूप सूर्य संतप्त कर रहा है । ८ । शत्रुओं
के मारनेवाले शूर भीमसेनके हाथसे युद्धमें गिरायाहुआ कश्मिर से लिप्त सर्वाङ्ग

CHAPTER XVIII

Gandhari continued, " Look at my hundred sons destroyed by
Bhim's mace O Madhav, My youthful daughters in-law running on
the field of battle with dishevelled hair enhance my grief. They who
used to tread the palace ground with their ornamented feet, touch the
bloody soil of the field of battle, and unable to keep away the jackals
and crows, they are running a mad race. My mind is deprived of
peace at the sight of Lakshman's mother. 5. Other women are hold-
ing up the jewelled heads of their kinsmen. These innocent women
and I have committed no small sin in our former life. The lotus like

विहिते च ॥ १० ॥ उकाह्यनेन पाश्चाली समाया घृतनिर्दिजता । प्रियं विविर्पता
 त्पु कर्गक्ष्य च जनार्दन ॥ ११ ॥ सहैव सहदेवेन गफुनेनाशुनेन च । दासभार्यासि
 ष्वाकि क्षिप्रं प्रविश मो गृहम् ॥ १२ ॥ ततोऽहमत्र कृष्णत्वा दुष्योघनं नृपम् ।
 शिवाशपरिक्षिप्तं शकुनिं पुत्रं धर्जय ॥ १३ ॥ एष तु शासन शेत विक्षिप्य विपुलौ
 द्वौ । निहतो भीमसेनश्च सिंहेनेव महागज । १४ ॥ अत्यर्थमकरोद्द्रौपं भीमसेनोऽस्य
 श्रेण । इ शासनस्य पत्न कृशोऽपि वृष्णिहमाहवे । १५ ॥

इति श्रीविलापपरंगि गान्धारी विलापे अष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

यह दुःश्मामन सोचाई । ९ हे माधवजी घृतके दुःख को स्मरण करके द्रौपदी की
 मेरुणापूर्वक भीमसेन की गदा से मृतक हुये मेरे पुत्रको देखा । १० । हे जनार्दनजी
 कर्णका और माई दुर्पोषन क मिय करनेका अभिनायी इस दुःशामन ने सभाके
 मध्य में खूब में पराजित द्रौपदी से यह वचन बहे ११ । कि हे द्रौपदी तू सह
 देव नकुल और अर्जुन समेत दासीहुई शत्रु हमारे घरों में प्रवेश करो । १२ । हे
 श्रीकृष्णजी इस समय मैंने रामा दुर्पोषन से कहा कि हे पुत्र मृत्युकी फांसी में बंधे
 हुये प्रायणिको निषेध करो । १३ । जैसे कि बड़ाहाथी सिंहसे माराजाताई उभी
 मकार भीमसेनके हाथमें घृतक यह दुःशामन सुजाओं को फैलाकर सोताई । १४ ।
 अत्यन्त क्रोधहृत् भीमसेन ने बड़ा भयकारी कर्म किया जो कोषयुक्तने युद्धमें
 दुःशामन से कधिर जो पान किया १५ ।

faces and eyes of these innocent women are being burnt by the sun of
 grief. Slain by Bhim the destroyer of foes and bleeding in all the
 parts of his body, Dushasana lies here. He was killed by the mace of
 Bhim who remembered the wrongs done to Draupadi at the occasion
 of gambling. Desirous of pleasing Karan and Duryodhan he said to
 Draupadi who was won in gambling, You as well as Sahadev, Nakul
 and Arjun are made slaves. Nake hasto to go in to our house, 12. I then
 warned Duryodhan to keep back Shakuni who was tied in death's string.
 Dushasana lies here with outstretched arms like a huge elephant
 slain by a lion. Bhim did a very cruel deed in his anger as he drank
 Dushasana's blood in the field of battle ' 15

गान्धारीवृषाच्च । एव माधव पुत्रो मे विकर्णं प्राज्ञसम्मतः । भूमौ विनिहत शत
 भीमेन शतधा कृत ॥ १ ॥ गजमध्येह्य शोते विकर्णो मधुसूदन । नीलमेघ पारोक्षिण
 शरद्वीच निशाकरः ॥ १ ॥ अरुम भ. व्यर्था मिय प्रेप्सून् वृध्नानेता स्तपस्विनी । वारयम्
 निश वाला न च शक्याति माधव ॥ २ ॥ युधा वृन्दारकः शूरो विकर्णः पुरुषर्षभ ।
 सुखोपित सुखाद्भ्य शोते पांशुषु मामथ ॥ ३ ॥ कार्णिनालीकनाक्षिर्धम्ममर्मणामाहवे ।
 मघाणि न अहात्येनं लक्ष्मीर्मरतसत्तमम् ॥ ५ ॥ पथ संप्रामशूरेण प्रतिज्ञां पालाधिप्यता
 दुर्मुखांमिमुख शोते ततो गिगणधा रणे ॥ ६ ॥ वर्यादवमुभे न्यैव स्याता नैवोपपद्यते ।
 स कथं दुर्मुखांमिप्रैहंतो विषुषलोकाजित् ॥ ७ ॥ विप्रसेनं ॥ ८ ॥ सुमौ शयानो मधुसूदना
 घाचरंराष्ट्रामिमं वदथ मतिमानं चमुपाताम् ॥ ८ ॥ तश्चिजमान्याभरणं युवत्यः शोकक
 र्थिताः कन्यादसंघे सहिभ रुदत्यः पर्युपासते ॥ ९ ॥ युधा वृन्दारको निशं प्रवर

अध्याय १९ ॥

गान्धारी बोली है माधवजी यह ज्ञानियोंका अङ्गीकृत भीमसेनके हाथसे सैकड़ों
 खण्डकिया हुआ मेरा पुत्र विकर्ण मृतक पृथ्वी पर सोता है १ । हे मधुसूदनजी
 वह विकर्ण मेरे हृदये हाथियों के मध्य में ऐसे सोता है जैसे कि नीले बादलों से घिरा
 हुआ शरदश्चतुका चन्द्रमा होता है । २ हे माधवजी उसकी तपस्विनी वाला भार्य
 मांसके अभिलाषी गिद्ध और कार्गोंको हटाती है परन्तु हटाने को समर्थ नहीं होती
 है । ३ । हे पुरुषोत्तम माधवजी तरुण देवतारूप शूरीर सुखपूर्वक निवास कर ने
 वाला विकर्ण पृथ्वीकी धूलपर सोता है । ४ । युद्धमें करणी नालीक और नाराय
 नाम वाणोंसे दूटे मर्मस्थलोंवाले भरतर्षभ इस विकर्णको अवभी शोभानहीं छोड़ती है
 । ५ । युद्धमें शत्रुओंके सन्मुखोंका मारनेवाला सम्मुख रहनेवाला वह दुर्मुख उस युद्ध
 भीममें वीरभीतज्ञा पूरी करने के अभिलाषी भीमसेन के हाथमे मृतक होकर सोता है
 । ६ । हे स्वामी युद्धके सुखपर जिमकी सम्मुखता करनेवाला कोई नहीं वह देव

CHAPTER XIX

Gandhari continued, " He lies, O Madhav, wise Vikarn cut into
 hundreds of parts by Bhim. He lies slain among elephants like the
 the winter moon surrounded by clouds. His good youthful wife is
 trying to keep away crows and vultures from his body, but finds it
 a difficult task to perform. The youthful godlike warrior Vikarn,
 who lived a life of ease, sleeps on dust. The wealth of beauty does
 not leave him, although he has received arrow wounds in all his vital
 parts. 5, Valiant Durmukh the destroyer of foes fell a prey to the
 brave vow of Bhim. How was invincible Durmukh, the winner of
 divine regions, slain by foe? Look at the dead figure of the great
 archer Chitrasen lying on the ground. The lamenting women and a
 troop of flesh eaters are standing by his body decked with garlands

वतः । विधिभक्तिरसौ दोमे ध्वस्तः पांशुषु माधव ॥ १० ॥ शरसंछत्तवर्माणं
 वशसेने हतम् । परिवार्यारोने मृश्राः परिविशद्विविंशतिम् ॥ ११ ॥ प्रविश्य
 वीरः पाण्डवानामनीकिनीम् । स वीरशयने शेते पुनः सत्युत्सङ्घिते ॥ १२ ॥
 स्येतदाभाति शरीरं संवृणं शरैः । गिरिरात्महृद्-कुल्लैः कर्णिकारिधिघट्टनः
 ॥ शतकौम्भ्या स्त्र्याभ्यामि क्षययेन च भास्वता । अग्निनेव गिरिः श्वेतो मया
 दुःसहः ॥ १४ ॥

इति स्त्रीपर्वणि स्त्रीविलापपर्वणि गान्धारीविलापे

एकोनविंशोऽध्यायः १९ ॥

कका विजय करनेवाला दुर्मुख किसप्रकार शत्रुओंके हाथसे मारा गया । ७ । हे
 सुदनजी इस धृतराष्ट्रके पुत्र धनुषधारी पृथ्वीपर सोनेवाले चित्रसेनकी मृतक
 शिकी देखो । ८ । शोकसे पीड़ित सोनेवाली स्त्रियां मानभक्तियों के ममूहों समेत
 मण्डाऊ माला और भूषण रखनेवाले चित्रसेनके पास नियत हैं । ९ । हे माधवजी
 कृष्ण सदैव उत्तम स्त्रियोंमें संविव देवतारूप विविंशतीधूलमें पड़ासोता है । १० ।
 श्रीकृष्णजी देखो कि गिद्ध इस बाणों से टूटकेनच वीर विविंशति को बड़ी
 भाषामें घेरकर बंटे हैं । ११ । बहसूर युद्धमें पाण्डवों की सेनामें प्रवेश कर के
 कर्णियोंके योग्य वीरसट्ट्या परसोता है । १२ । दुस्महका यह शरीर बाणोंसेयुक्त
 ऐसा शोषायमान है जैसे कि अपने ऊपर वर्तमान कर्णिकार के पुष्पोंसे व्याप्त पर्वत
 होना है । १३ । यह मृतकभा दुःखसे सहने के योग्य रवणमाला और प्रकाशित
 कवचसमेत ऐसे प्रकाश मान है जैसे कि अग्निसे श्वेतपर्वत प्रकाशितहोता है । १४ ।



and other ornaments. The youthful Yivishati of god like form, who
 always enjoyed the society of good women, lies here on dust. 10,
 Vultures are standing round his body of which the armour is broken
 asunder by arrows, Having entered the Pandav army, that great
 warrior lies dead on the warlike bed. The body of Dusesh, pierced
 through by arrows, looks glorious like a hill overgrown with the bloom
 ing Karnikars. With his gold garland and bright armour his body
 looks glorious like a white hill illumined by fire. " 14.

गान्धाव्युषा च । अथर्वदेवगुणमाहुर्यं वल्ले शौर्ये च केशव । पित्रा स्वया च ।
 एतं सिद्धपिवोत्कटय ॥ १॥ यो विभेव चमूमेको मम पुत्रस्य दुर्भिवाम् । समूवा
 रथेषामये मृत्युशो गतः ॥ २ ॥ तस्योपलक्ष्ये कृष्ण कार्श्येरीमततजसः ।
 हंतस्वयापि प्रभा नैधोमशाम्बति ॥ ३ ॥ एषा विराटकुहिता स्तुषा ...
 आर्त्तां चाला पतिं धारं हृत्वा शोचन्त्यनिन्दता ॥ ४ ॥ तमेवा हि समासाद्य
 भर्त्सयन्तिके । विराटकुहिता कृष्ण पतिं वा परिमाज्जति ॥ ५ ॥
 कर्षन्ति दुःखिताम् । उत्तरां मोक्षस्तुल्यां तस्वराजकुलस्त्रियं ॥ ६ ॥
 नामार्त्तामार्त्तराः स्वपय । विराटं गिरातं हृत्वा क्रोधाग्निं धिलपन्ति च ॥ ७ ॥
 कश्चरसंरुचं शयान रुचिनेक्षिताम् । विराटं धिनदन्त्येते गृध्रगोमायुषापसा ॥

अध्याय २० ।

— गान्धारी बोली हे यादव केशवजी जिम अहंकारी और सिद्धके समान
 मनुष्यको घल पराक्रम में पिना अर्जुन और युमते भी द्यूँहाकहा है । १ ।
 ने मेरे शत्रुकी सेनाको गोरक काटतामे चीरनेके योग्यथी चिरा वह दूसरोंका
 रूप होकर आपही कालके आधीनहुश । २ । हे श्रीकृष्णजी मैं देखती हूँ कि
 अर्जुन के पुत्र बड़े तेजस्वी मरेहुये अभिमन्यु का तेज नाशका नहीं पाता है ।
 यह विराटकी पुत्री और अर्जुनकी पुत्रवधु निर्दोष और पीड़ानात्र इस व.
 वीरपति को देखकर शोचकरती है । ४ । हे श्रीकृष्ण यह विराटकी
 भार्या समीपमे उसपतिको मिल्कर हाथोंने साफ करती है । ५
 राजा विराट के कुलकी स्त्रियां एते कहेनेकी मद्दाहुस्त्री निष्फल संक
 इस उत्तराको हटाती हैं । ६ । आपनी मदापीडिय यह स्त्रियां इस अत्यन्त की
 उत्तराको हटाकर मरेहुये विराटको देखकर पुकारती हैं विलाप करती हैं
 द्रोणाचार्य के अस्त्र और वाणों मे टूटे अरु रुचिनेक्षिता सोनेवाले विराटको
 गिद्ध शृगाल और काग काटत हैं । ८ । श्यामवधु पीडावान् स्त्रियां च

CHAPTER XX.

Gandhari said, "Proud and lion-like Abhimanyu, who in strength and prowess was reported to be superior to his father Arjun and self, who alone entered the impregnable army of my son, that death of foes lies dead here. I see, Krishna, that Arjun's son Abhimanyu is still glorious in death. Virat's daughter, - Arjun's daughter-in-law is lamenting the death of her youthful husband. She goes to him and wipes his body with her hands. The women of Virat's household try to remove her from the place. Those women in distress, see the dead body of Virat and lament his death. Pierced and cut by Drona's weapons, Virat's body is being eaten by jackals and crows. Seeing it thus destroyed by birds, the black

यमानं विहगैर्विगाटनतिनेक्षणाः । न शक्यमथनि विवम्बा विवर्षयितुमातुराः ॥९॥
 च्चामिनम्युञ्ज-काभ्यांअञ्च सुवृक्षिभू । शिशूने गद्द हतान् पश्य तदमणञ्च
 येनम् । आयोधनशिरामध्ये शयानं पश्य माधव ॥ १० ॥

इति स्त्रीपर्वाने स्त्रीविनापपर्वणि गान्धारीवाक्ये विशोध्यायः २० ॥



गान्धार्युवाच । एष यैकसैनः शोते महेष्वासो महानलः । अलितानलवत् संख्ये
 तातः पाधेतजसा ॥ १ ॥ पश्य यैकसैनं कर्णं निहत्यतिरयान् बहून् । शोणितौघप
 ङ्गं शयानं पलितं भुनि ॥ २ ॥ अमर्षी दीर्घगोपद्य महेष्वासो महारथः । रणे विनि
 पस्य होते विराटको देहकर पलियां के हटानको मर्ष नहीं होती हैं । १ ।
 धर, अभिमन्यु कांबोज, सुदक्षिण और सुदक्षिण दर्शन लक्ष्मण इन सब मृतक
 लिकोंको देखो हे माधवजी इन सब को युद्धभूमि में सोता हुआ देखो १० ॥



अध्याय २१ ॥

गान्धारी बोली यह बड़ा धनुषधारी महारथी कर्ण सोताहै यह अर्जुन के तेज
 युद्धमें ज्वलित आगिके समान द्यात होगया । १ । बहुतसे राधियोंको मारकर
 धृषीपेर पड़ा सोताहै और रुधिरसेलल शरीर मर्षके पुत्र वर्णको देखो । २ । यह
 अशांतचित्त महाक्रोधी बड़ा धनुषधारी पशुपतीशुर युद्धमें अर्जुन के हाथ से मारा
 हुआ सोता है । ३ । मेरे महारथी पुत्र पांडवोंके भयसे जिसको अग्रवर्त्ती करके
 women try to scare them away, but their attempt is futile. Look at
 Utar, Abhimanyu, Camboj, Sudakshin and beautiful Lakshman. All
 these youthful boys are lying dead, O Madhav." 10.



CHAPTER XXI

Gandhari said, " Here lies the great archer Karan, quenched like
 fire, slain in battle by Arjun. Look at the blood stained body of
 Karan the son of Surya who lies dead on earth after slaying many
 warriors. There lies slain by Arjun he who led the Kauravas to
 fight like an elephant chief leading his herd, He was slain by Arjun

हृतः शेते शूरो गाण्डीवघन्वना ॥३॥ ये स्म पाण्डवमन्त्रासान्मम पुत्रा महारथाः
 ध्वन्त पुरुस्कृत्य मातङ्गा इव यूथपम् ॥ ४ ॥ शार्ङ्गलागिवा सिंहेन धमरे
 मातङ्गमिव मत्तेन मातङ्गेन निपातितम् ॥ ५ ॥ समेताः पुरुषव्याज निहतं शूरमाह्वे
 प्रकीर्णमूर्च्छजाः पर-यो रुदग्नयः पर्युपासते ॥ ६ ॥ उद्विग्न सततं यस्मात्
 युधिष्ठिर । त्रयोदशसुमा निद्रां चिन्तयथाध्वगच्छत ॥७॥रुभूत्वा करुणं क्षीरो वा
 भूत्स्य माधव । भूमौ विनिहवः शेते वातरुग्न इव दुमः ॥ ८ ॥ परस कर्णस्य पत्नी
 नृपसेमस्य मातरम् । तालप्यमानां करुणं रुदती पतितां सुधि ॥ ९ ॥ आचार्यशापे
 गतो भुव्ये त्वां यदन्नसन्त्यक्तनिर्यं धरा ते । ततः शरे पापहतं शिरसे
 यमुमध्ये ॥ १० ॥ हा हा धिगेषा पतिता विसंज्ञा स्वकीय जागृत दसद्वक्षयम् ।
 महाबाहुमदीनसखं सुषेणमाहा रुदती भशात्ता ॥ ११ ॥ सा वर्त्तमाना पतिता
 सुस्थाप दीना पुनरेव त्रैपाकर्णाय वधत्रं परिजिघ्रमाणारोरुयते पुत्रवधामितता
 इती स्त्रीपर्वणि स्त्रीविलापपर्वणि गान्धारी वाक्ये एकविंशोऽध्यायः २१ ॥
 अच्छे प्रकार ऐसे युद्ध करनेवाले हुये जैसे कि हाथी अपने प्रधान हाथी को
 बर्बाद करके उत्तम युद्ध करते हैं । ४ । वह युद्ध में अर्जुन के हाथ से
 गिरायागया जैसे कि सिंहे से शार्ङ्गल और मातङ्गले हाथी से मतङ्गलाहाथी गिरा
 जाता है । ५ । हे पुरुषोत्तम यह विश्वेर्दुषेकाल रोदन करती इकट्ठी किर्या
 युद्ध में मरेहुए शूरके चारोंओर नियत हैं । ६ । सदैव जिससे व्यादल
 और चिंता करके धर्मराज युधिष्ठिष्ठाने तेरह वर्षतक निद्रा को नहीं पाया । ७
 वहहीर दुर्बोधनका रक्षाश्रयहोकर ऐसेमराहुआ पृथ्वीपरसंताहै हेमाश्वजैसेकि
 दृष्टाद्गुआच्छन्न होताहै । ८ । तुम कर्णकी स्त्री वृषसेनकीमाता पृथ्वीपर गिरी रोदन
 करतीहुई और शोककीवात्ता कम्बेवाली को देखो । ९ । निश्चय करके शुरुका
 शाप तुम्हको प्राप्तहुआ जो पृथ्वी ने इस तेरे रथचक्रको दवालिया इससे
 युद्धका शोभा देनेव ल अर्जुन के बाण से तेगाशर काटागया । १० । हायरे
 यह रोदन करती अत्यन्त पीड़ावान् शूर्मनकी माता इस सुवर्ण के वाजुवन्दते
 असंलुत बड़े पराक्रमी महाबाहु कर्णको देखकर अचेत पड़ी है । ११ ।
 पृथ्वीपर पड़ीहुई महादुःखी उठकर कर्णके मुखको सूंघती पुत्रके मरण शोकसे
 दुःखी होती है । १२ ॥

like a tiger slain by a lion or an elephant slain by an elephant. In-
 venting women, with dishevelled hair, surround him. 6. He by
 whose fear Yudhishtir found no repose by day or night for thirteen
 years, lies here like a tree struck down by the wind. Look at Karan's
 wife, Vrishasan's mother, lamenting, crying and lying down on earth.
 Surely it was the preceptor's curse which made the earth grasp thy
 car wheel and Arjuna's arrows to cut off thy head. 10. Alas! Shuren's
 mother lies insensible at the sight of Karan. She smells Karan's
 mouth and weeps for the death of her son. 12.

गान्धार्युवाच । आवन्त्य भीमसेनेन गक्षयन्ति निपातितः । गृध्रगोमायवः शूरे
 वृत्रघ्नमन्धुवत् ॥ १ ॥ तं शृगालाश्च वल्गुश्च क्रव्यादाश्च पृथग्विधा । तेन तेन
 वेकर्षन्ति पश्य कालस्य पर्ययम् ॥ २ ॥ शयानं वीरशयने वीरमाक्रन्दकारिणम् ।
 नावन्त्य सहिता नार्यो यदन्त्य पदुपासते ॥ ३ ॥ प्रातिपथं महेश्वासं हतं भल्लेन
 शङ्खिलम् । प्रसुप्तामिष शार्ङ्गं पश्य कृष्ण मनस्विनम् । ४ ॥ अतीव मुखदर्शोऽस्य
 निहतस्यापि शोभते । सोमस्वेवाभिपूर्णस्य पौर्णमास्यां समुद्यतः ५ ॥ पुत्रशोकामि
 तप्नेन प्रतिज्ञां परिरक्षता । पाकशासनिना संख्ये वार्द्धक्षत्रिर्निपातितः ६ ॥ एकादश
 चभूमिस्त्वा रक्ष्यमाणं महात्मना । सत्यं चिकीर्षतापश्य हतमेतं जयद्रथम् ७ ॥ सिन्धु
 सौवीरभर्तारं वर्षपूर्णे मनस्विनम् । गक्षयन्त्यश्रुवा गृध्रा जनाईनं जयद्रथम् ८ ॥
 यथा कृष्णमुपादाय प्राद्रव्य फेकथैः सह । तद्वै घष्य पाण्डुनां जनाईनं जयद्रथम् ९ ॥

अध्याय २२ ।

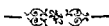
गान्धारी बोली कि गिद्ध और शृगाल भीमसेनके गिराये हुये राजा अवंतीको
 जोकि शूरवीर और बहुत बान्धव रखनेवाले भाइयों से रहितके समान सातेई । १ ।
 शृगाल कंक और काकआदिक अनेक मांसभक्षी उसको खंचतेहैं समयकी विपरीत
 ताको देखो । २ । युद्ध करनेवाले शूरवीर शय्यापर सोनेवाले राजा अवंतीके पास
 सोनेवाली खिवां निपत हैं । ३ । हे श्रीकृष्णजी इस बड़े धनुषधारी और भल्ल से
 मृत्कर्मणीपवंशी वाह्लीक को शार्ङ्गके समान सोताहुआ देखो । ४ । इन मरेहुये
 काभी मुखका वर्ण ऐसा शोभादेताहै जैसे कि पूर्णमासकी पूर्ण चन्द्रमाहोताहै । ५ ।
 पुत्रशोकसे दुःखी और प्रतिज्ञाको पूरा करनेवाले इन्द्रके पुत्र अर्जुन से युद्धमें जय
 द्रय गिरायागया । ६ । प्रतिज्ञाको सत्य करनेके अभिलाषी अर्जुनने ग्यारह अनौ-
 ढिणी सेनाको इटाकर महात्मासे रक्षित इस जयद्रथको मारा । ७ । हे जनार्दनजी
 देखो इस सिन्धुसौवीर देशके स्वामी अहंकारी साहसी जयद्रथको शृगाल और
 गिद्ध खानेहैं । ८ । हे जनार्दनजी जब यह जयद्रथ केरुप देशियों समेत द्रौपदीको

CHAPTER XXII

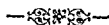
Gandhari continued, "Vultures and jackals are eating the dead body of the prince of Avanti. Jackals and birds of prey drag his body. This is the change of time! Women are weeping by the dead body of the prince. The great archer Vahlk of the family of Pratip sleeps like a tiger. His face looks like the full moon. 5. Jayadrath lies slain by Arjun, who slew him to fulfil his vow while he was protected by eleven akshauhinis. Look at Jayadrath's body which is being dragged by jackals and vultures. He deserved death at the hands of the Pandavas, when he, in company, with the people of Kaikaya, seized Draupadi. They spared his life then out of their

॥ ९ ॥ दुःशला मानयन्निस्तु तदा मुक्तो जयद्रथ । कथमद्य न ता कृष्ण मानयन्तिस्म
 ते पुन ॥ १० ॥ सैषा मम सुता बाला विलम्बन्ती सुदुःखिता । प्रमापयति स्वात्मानमा
 क्लोशति च पाण्डवान् ॥ ११ ॥ किं न दुःखतरं दृश्य परम भविष्यति । यत् सुता
 विधवा बाला स्तुवाश्च निहतैर्दवरा ॥ १२ ॥

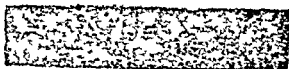
इति स्यापर्वणि स्त्रीविनायपर्वणि गान्धारीवामथ द्वाविंशोऽध्याय २२ ॥



पकड़ कर भागतभी पाएवोंके हाथसे मारने के योग्यथा । ९ । उस समय दुःशला
 के माननेवाले पाएवों के हाथसे जयद्रथ बचाया है श्रीकृष्ण अब उन पाण्डवों ने
 उस वहनोईको कैभे नहीमाना । १० । वह मेरी पुत्री बालक दुखी विलाप करती
 और पाण्डवोंका पुकारती आन अपने शरीरको प्रायल करती है । ११ । हे श्रीकृष्ण
 जी इमसे अधिक मेरा और कौनसा दुःख होगा जो बालक पुत्री विधवा, वृत्क
 पति वाली है । १२ ।



regard for Dushala [Gandhari's daughter married to Jayadrath].
 Why did they not spare him this time? My young daughter is weep
 ing for him and wounding herself. What grief can be greater to me
 than the sight of my widowed daughter? 12.



गान्धार्युवाच । एष शल्यो हतः शैते साक्षात्कुलमातुलः । धर्मतन सहा तात
 धर्मराजेन संश्रुगे ॥ १ ॥ एस्तवपा स्पर्शते नित्यं सर्वत पुरुषवभ । स एष निहतः शैते
 मद्राजो महारथः ॥ २ ॥ येन संगृह्यता तात रथमाधिरथेर्युधि । जयार्थं पाण्डुपुत्राणां
 तथा तेजोवधः कृतः ॥ ३ ॥ हा हा धिक्पथ्य शल्यस्य पूर्णसुन्दरदर्शनम् । मुखं पथा
 पलाश्याक्षं फाकिरादृष्टम्रणम् ॥४ ॥ युधिष्ठिरेण निहतं शल्यं समितिशोशनम् । रुद्रस्य
 पर्वुपास्वते मद्राजहल्लेखियः ॥ ५ ॥ एष सैलालयो राजा मगदत्तः प्रतापवान् । गजां
 कुशधरः श्रेष्ठः शैते भवि निपातितः ॥ ६ ॥ एतेन किल पार्थस्य युद्धमासीत् सुदार
 णम् । लोमहर्षणमाथर्थं शक्रस्येवाहिना यथा ॥ ७ ॥ बोधयित्वा महाबाहुरेव पार्थ धन
 उज्ज्वम् । संश्रयं गमनित्याच कुन्तीपुत्रेण पातितः ॥ ८ ॥ एष्य मास्ति समो लोके

अध्याय २३ ॥

गान्धारी बोली है तात युद्धमें धर्मज्ञ धर्मराजने मार-दुष्ठा साक्षात् नकुलका
 मामा यह शल्य सोता है । १ । हे पुरुषोत्तम जो कि सदैव सर्वत्र तेरेसाथ ईर्षाकर
 ताथा यह बड़ों बलवान् पराक्रमी मद्रकागजा सोता है । २ । युद्धमें कर्णके रथको
 पकड़नेवाले जिन शल्यने पांडवोंकी विनय के निमित्त कर्णके तेजको क्षीणिकिया
 । ३ । दुःशका स्वानहै और धिक्कार है कि शल्यके मुखको फाकोंसे काटा हुआ
 देखो जोकि पूर्ण चन्द्रमाके समान सुन्दर दर्शन कपल पनास के समान नेत्रधारी
 और स्पष्टवा । ४ । राजा मद्रके कुलकी रोदन करनेवाली क्रियां इस युधिष्ठिर
 के हाथसे मरेहुये युद्धके शोभादेनेवाले शल्यके चारोंओर नियत हैं । ५ । यह पहाड़ी
 श्रीमान प्रतापवान् मगदत्त इधीका अंकुश हाथमे रखनेवाला और पृथ्वीपर पड़ा
 हुआ सोता है । ६ । निश्चय करके हमकेसाथ पांडवोंका युद्ध बहहुआ जो किवड़ा
 अपकारी अत्यन्त कठिन रोंझांवांका लड़ा करने वालाथा और इन्द्र औरवृषामुरके
 युद्ध के समान था । ७ । यह महाबाहु पांडव अर्जुन से युद्ध कर के और
 संश्रयको उत्पन्न करके कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिरसे गिरायागया । ८ । लोकमें जिसकी

CHAPTER XXIII

Gandhari said; "Slain by Yudhishthir, here lies Shalya the mater-
 nal uncle of Nakul. The valiant king of Madra who always bore
 enmity towards you, is dead. He who drove Karan's car and diminish-
 ed his glory for the sake of the Pandavas, has been slain. It is
 matter of great grief that crows are eating away his beautiful face. The
 women of his family are lamenting his death. 5. Bhagadatta the
 glorious hill king elaps with elephant's hook in his hand. His battle
 with the Pandavas was like that of Indra and Vritrasur. Having
 fought with Arjun, he was slain by Yudhishthir. Here lies Bhishm

शौर्यं धैर्यं च कश्चन । स एव दिव्यः श्रेणे भीष्मो भीष्मकुराहणे ॥९॥ पश्य शान्त
 एन कृष्ण शयानं सूर्यवच्च सम । सुगन्त इव कान्तिन पतितं सूर्यममथरात् ॥१०॥
 एव तपश्चा रणे शत्रून्लखनापंत धैर्यवान् । नरसूर्योऽस्मिप्रथोति सूर्योऽस्मि केशव
 ॥११॥ शरतल्पगनं धीरं धर्मं देवादिना समम् । शयानं धीरशयने पश्य शरानिधेविते
 ॥१२॥ अतूत्पूर्णगांगयस्त्रिभिर्धामैः समन्वितम् । उपधापोपधानाप्रद्यं दत्तं गाण्डीव
 चम्बना ॥१३॥ पालवानः पितु शारासूक्ष्मेरता महापशाः । एव शान्तनवः शोते
 मावधायतिभो युधि ॥१४॥ धर्मात्मा तत्र धर्मज्ञः पारुषर्षेण निर्णवे । अमर्ष्य इव
 मर्ष्यः सश्रेय प्रणानधारयत् ॥१५॥ स्वयमेतेन शूणेण वृच्छयमगेन पाण्डवैः । धर्मज्ञ
 नाह्ये मृगुराख्यातः सत्यवादिना ॥१६॥ धर्मेषु क्रुधः के तु-परिग्रहयन्ति माधव ।

शूरता और चलपराक्रमके समान कोई नहीं है युद्धमें भयकारी कर्म करनेवाले वह
 भीष्मजी आसन्नमृत्यु होकर सोतेहै । ९ । हे श्रीकृष्णजी इससूर्यके समान तेजस्वी
 सोनेवाले भीष्मजी को ऐसे देखो जैसे कि मलयकाल में कालसे भरित आकाश तं
 गिराहूआ सूर्य होताहै । १० । हे केशवजी यह पराक्रमी नररूप सूर्य युद्ध में
 शत्रुओंके तापसे शत्रुओंकी सन्तप्तकरके ऐसा अस्तगत होताहै जैसे कि अस्ताचलपर
 वर्तमान सूर्य होताहै । ११ । इस वीरको च्युत न करनेवाले अजेय शरशय्यापर
 वर्तमान शूरवीरों से सेवितस्त्रीरशय्यापर सोनेवाले भीष्म को देखो । १२ । यह
 नङ्गाजी के पुत्र रंडित रहित तीनवाणों से बने अर्जुन के दियेहुये तकियेको शिरके
 नीचे धरकर । १३ । पिताके आज्ञानुसारि ब्रह्मचारी महातपस्वी युद्ध में अनुपम
 भीष्मजी सोते हैं । १४ । हे तान सष दातों के जाननवाळे नररूप होकर इस
 धमात्माने ब्रह्मज्ञानके बलसे देवताओंकेसमान प्राणोंको धारणकियाहै पाण्डवोंसे पूछे
 हुये इस शूरधर्मवान् सत्यवक्ता ने आप अपनी मृत्युको युद्धमें बतलादिया । १५ ।
 हे माधवजी इस देवताके समान नरोत्तम देवदत्त भीष्म के स्वर्गपासी हानेपर कौरव
 लोग धर्मों के विषय कितसे पूछेंगे । १६ । शोक अर्जुनका भिनेता और सातपत्नी

the matchless warrior of the world. He is lying here like the sun
 fallen down at Pralaya. Having slain numerous warriors, he declines
 like a setting sun. 11. He is lying on the field of battle slain
 by Arjun. He observed a vow of celibacy and asceticism for his father's
 sake. His wise and virtuous being is sustaining his life by the power
 of the knowledge of Brahm, like a god. 15. Asked by the Pandavas,
 this truthful man pointed them out the manner of his death. Whom
 will the Kauravas consult in the matter of dharma, when Devnabr
 Bhishm is dead? Look at Dronacharya, the preceptor of Arjun, Satyaki
 and all the Kauravas, lying on earth. He was master of the knowledge

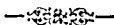
गते देवव्रते स्वर्गं देवकल्पे नरर्षभे ॥ १७ ॥ अर्जुनस्य धिनेतारमाचार्यं सान्त्वकेलया
 तं पश्य पतितं द्रोणे कुरूणा द्विजसत्त्वपम ॥ १८ ॥ अस्तं चतुर्विधं वेदं यथैव शिष्यो
 म्भर. । भार्गवो वा महावीर्य्यस्तथा द्रोणोऽपि माधव ॥ १९ ॥ यं पुराघाय कुरुव साहव
 वन्ते स्म पाण्डवान् । सोऽयं राजप्रसां श्रेष्ठो द्रोण राज्ञे परिक्ष्वन, ॥ २० ॥ चतुर्मुष्टि
 शीर्षंश्च हस्तावापश्च माधव । द्रोणस्य निहतस्यापि दृश्यते जीवितो यथा ॥ २१ ॥ देहा
 वश्माकच चत्वारः, सर्वांश्चाजि च केशवा अनपेतानि वै शूराद्यथैवादौ प्रजापतेः ॥ २२ ॥
 वन्दनाहंविभौ तस्य वन्दिगिर्वन्दितां शुभो । गोमायवो विकर्षन्ति पादौ शिष्यगणा
 र्चिचतौ ॥ २३ ॥ द्रोणे ह्युपदुष्वेण निहतं मधुसूदन । रुषी कृपणमन्वास्ते दुःखोपहत
 चेतना ॥ २४ ॥ तां पश्य पतितामर्चा मुक्तकशीमश्रोमुखीम् । इतं पतिमुपासन्ती
 शीर्षं शस्त्रमृताम्बरम् ॥ २५ ॥ अग्निमाहृत्य विधिवच्चितां प्रज्वाल्य सर्वशः । द्रोण

का मुखै उसकौरवां के उत्तमगुरु द्रोणाचार्य को पृथ्वीपर पड़ाहुआ देखो । १८ ।
 हे माधवजी जैसे कि देवताओं के ईश्वरइन्द्र और बड़े पराक्रमी भार्गव परशुराम
 जी चारोंप्रकारके अस्त्रोंके ज्ञाताथे उसीप्रकार द्रोणाचार्य भी जानतेथे । १९ । कौर-
 वोंने जिसको अत्रवर्ती करके पांडवों को बुलाया वह पृथ्वीपर मराहुआ ऐसे सोता
 है जैसे कि निजर्बलित अग्नि होती है । २० । हे माधवजी मृतक द्रोणाचार्य की
 धनुषकी मुष्टि और युद्धके इततक्षण विना जुदेहुये, रणभूमि में ऐसे दिखाई पड़ते
 जैसे कि जीवतेहुये के होते हैं । २१ । हेकेशवजी चारों वेद और सब अस्त्र जित
 शूरते ऐसे पृथक् नहींहुये जैसे कि आदिमें प्रजापति जीसे जुदेनहीं हुयेथे । २२ ।
 उनके उन दोनों नरगणोंको शृंगाल विचने हैं जोकि दंडवत् के योग्य और वन्दी-
 जनोसे स्तूपमान प्रतिग्रम होकर सैकड़ों शिष्योंसे पूजितथे । २३ । हे मधुसूदनजी
 यह दुःखसे घातितमुष्टि कृपी उन पृष्टयुष्मके हाथ से मृतक द्रोणाचार्य के पास
 पड़ाहुआ नियत है २४ । उनरोदन करनेवाली पांडवान् खुलेकेश नीचाशिरकिये
 शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ अपने पति द्रोणाचार्य के समीप नियतको देखो । २५ ।
 सागम ब्राह्मण विधिपूर्वक अग्निपर्वोंको धारण करके सब ओरसे चत्वारों अग्निमे
 प्रज्वालित करके द्रोणाचार्यको उनमें रखकर मापवेदके तीनमन्त्रोंको गातेहैं । २६ ।

of weapons like Indra or Parashura in II, under whose leadership the
 Kauravas challenged the Pandava, lies on earth like quenched fire.
 20 Holding his bow in his gutted hand, he looks like one living.
 The four Vedas and the weapons did not leave him as they did not
 leave Prajapati. His feet, venerated by hundreds of disciples and
 praised by birds, are being dragged by jackals. Krip, much distressed
 laments the death of Drona slain by Dhrishtadyumna. She is standing
 by him with downcast head and dsh. r. Having put the body
 of Dronacharya on the funeral pile, the Brahmins set fire to it with

माघापगापन्तिश्रीणि सामानि सामगाः ॥२६॥ सामभिक्षिभिरन्तस्यैतनुशंखानि चापरो
अग्नावग्निभिवाधाय द्रोणे हुत्वा हुताशने ॥ २७ ॥ गच्छन्वभिमुखा गंगां द्रोणशिष्य
द्विजातयः । अपसव्यां श्वातिं कृत्वा पुरस्कृत्य कूर्पों तदा ॥ २८ ॥

इती स्त्रीपर्वणि स्त्रीविलापपर्वणि गान्धारी राक्ये त्रयोविंशोऽध्यायः २३ ॥



गान्धार्युवाच । सोमदत्तसुतं पश्य युयुधानेन पानितम् । विद्युत्मानं विहगैर्घृष्ट
भिमोक्षघातिके ॥ १ ॥ पुत्रशोकामिसन्तप्त सोमदत्तो जनार्दन । युयुजात्रं पश्येत्पार्श्व
गर्हणीप्रथ इदमते ॥ २ ॥ असौ हि भूरिश्रवसो माता परमदुःखिता । आश्वासयति

शिष्य अभिमं अग्निको नारण्य करके और द्रोणाचार्यको अग्निमें हवनकरके अन्तमें
निपत होकर तीन सामन्तोंको गातेहैं । २७ । द्रोणाचार्यके शिष्य यह ब्राह्मण
चित्ताको दाक्षिण्य करके और कृपीको आग करके भीतंगाजके सम्मुखजातेहैं २८ ॥



अध्याय २४ ॥

गान्धारी बोली हे माधवजी सम्मुखही सात्यकी के हाथ से दियेहुये और
बहुत से पक्षियों से घिरेहुये सोमदत्त के पुत्रको देखो । १ । हे जनार्दनजी पुत्रशोक
से दुःखी सोमदत्त मानों बड़े अनुपवारी सात्यकी की निन्दाकरता हुआ देखताहै
। २ । यह भूरिश्रवाकी मत्ता निर्दोष दुःखसे पूर्ण अपने पति सोमदत्त को माने
विश्वास करातीहै । ३ । कि हे महाराज मारुत्य से इस भरतवंशियों के भयानक

*the hymns of the Samved Other disciples pour libations into fire and
sing the three hymns of the Samved in the end. Having burnt his
body, his disciples follow Kripa to the Ganges."* 28.



CHAPTER XXIV

Gandhari continued, "Yonder lies Somdatta's son slain by Satyaki and surrounded by numerous birds. The great archer Somdatta is looking as if in contempt of Satyaki. Bhurishrava's mother is lamenting as though she were consoling Somdatta her husband in these words - "It is lucky, King, that you do not see the great des

रं सोमदत्तमनिन्विता ॥ ३ ॥ दिष्ट्या नैनं महाराज वारुण भरतक्षयम् । कुय
 वने घोरे युगान्तमनुपश्यासि । ४ ॥ दिष्ट्या यूपध्वजं धीरं पुत्रं भूरिश्वरदम् ।
 षक्तुपश्वानं निहतं नाथ पश्यासि ॥ ५ ॥ दिष्ट्या स्नुवाणामाक्रुद्ये घोरे विलापिने
 । न भ्रूणोवि, महाराज सारस्वीनामिवाणवे ॥ ६ ॥ शलं विनिहतं संख्ये भूरिध्वजस
 ष । स्नुवाश्च विधवाः सर्धां दिष्ट्या नाद्येह पश्यासि ॥ ७ ॥ एता धिलप्य यहल
 : शोकेन कर्षिताः । प्रतप्यमिमुस्था भूत्रौ कृपणं तव केशव ॥ ८ ॥ वीमन्मुनिधी
 र्त्तं कर्मदमकरोत् कथम् । प्रमत्तस्य यद्वच्छेसिद्वाहु शरस्य यद्वचन ॥ ९ ॥ ततः पापतरं
 । कृतवानपि सात्याकिः । यस्मात् प्रायोपधिष्ठस्य प्राहाशीत् संसितारमनः ॥ १० ॥
 नु वदवासि संसत्सु, कथासु च जनार्दन । अर्जुनस्य महत् कर्म स्वयं वा स शिरी
 त् ॥ ११ ॥ गान्धारराज, शकुनिर्जलवान् सत्यनिक्रमः । निहतः सहद्वेतेन भागिने
 । मातुलः ॥ १२ ॥ यः पुरा हेमदग्नाश्र्या व्यजनाश्र्यां स्म वीज्यते । स एष पश्चिभिः
 । शयान वपवीज्यते ॥ १३ ॥ मायया निहनिप्रसो जितवान् यो युधिष्ठिरम् । समायां

शको और कौरवों के घोर प्रलयकाल के समान रोदन करने को तुम नहीं
 जतेहो । ४ । और मारुणसे इन हजारों दक्षिणा देनेवाले बहुत यज्ञोंसे पूजन
 देनेवाले यूप ध्वजाधारी मृतक पुत्रको नहीं देखते हो । ५ । हे महाराज मारुणसे
 णभूमि में इन पुत्रवधुओं के घोर विलापको ऐसे नहीं देखतेहो जैसे कि समुद्रपर
 सरिसियों के शब्द होते हैं । ६ । अब यहां युद्धमें मृतक भूरिभवा और शरध्वको
 और पुत्रवधुओं को नहीं देखतेहो । ७ । हे केशवजी दुःखकी बातहै कि पतिशोक
 ने पीड़ावान यह स्त्रियां दुःखका विलाप करके सम्मुख पृथ्वीपर गिरती हैं । ८ ।
 हे अर्जुन तुमने वीभत्सुनामहो यह निश्चितकर्म कैसे किया जो यज्ञकरनेवाले अचेत
 धुरकी मुनाको काटा । ९ । सात्याकिने भी उससे अधिक पापकर्म किया कि
 शरीर त्यागने के निमित्त नियम करनेवाले तीक्ष्णयुद्धिका शिरकाटा । १० । हे
 जनार्दनजी सत्युरुषोंके मध्य में और कथाओं में अर्जुन के इस बड़े कर्मको क्या
 कहोगे अथवा आप अर्जुनही क्या कहेंगा । ११ । यह बलवान और सत्यपराक्रमी
 शकुनी गान्धारदेशका राजा मामा अपने भानजे सहद्वेद के हाथसे मारागया । १२ ।
 जोकि पूर्वशय में स्वर्ण दण्डवाले पंखोंसे वायुकिपाजाताथा वह अब सोता

truction of the Kuravas and a weeping and crying like that of pralaya.
 It was by good luck that you did not see the death of your warrior
 son who had performed many sacrifices with large donations 5. It
 is by good luck that you donot hear the lamentations of your daughters-
 in-law crying like cranes. You donot see the dead bodies of Bhuri-
 shtrava and Shalya and the women weeping over them. It is very
 hard to see the widowed women fall on earth with grief. Arjun is
 called Bilhatau and yet he committed the grievous sin of cutting the
 arm of an insensible and non-observng warrior, Satyaki did a greater

विपुलं राज्यं च पुनर्जीवितं जितः ॥ १४ ॥ यथैव मम पुत्राणां लोकाः शक्यजिता
विभोः पपमश्यापि दुर्गुणैः लोकाः शक्येण मे जिताः ॥ १५ ॥ कथञ्चनायं तत्रा
पुत्रान्मे भ्रातृभिः सह । विरोधयेद्भ्रज्यमानवृज्जुर्मज्जुर्द्वय ॥ १६ ॥

इति स्त्रीपर्याये स्त्रीविलापपर्याये गान्धारीदान्तये चतुर्विंशोऽध्यायः २४ ॥



हुआ पक्षियों के पंखों से वायु किया जाता है । १४ । जिन छत्तीने सभा में माघ
से जीवते युधिष्ठिर को और बड़े राज्यको विजय किया अन्त में वह पराजित
। १५ । हे मञ्जु जन्म कि मेरे पुत्रों के लोकशत्रुओं से विजय हूये उसी प्रकार हे
दुर्गुणोंकेभी लोकशत्रुओंसे विजय होगये । १६ । हे मनुजुन्दजी यह कुटिलबुद्धि
वहाँ भी मेरे सत्य बुद्धिशाले पुत्रोंको कहीं भाइयों समेत विरोधी न करे १६ ॥



fault in as much as he beheaded the wise warrior who had resigned
himself to death. 10. What will you say, Vasudev, about this dee
of Arjuna's in the assemblies of good men? This powerful Shakuni
true prowess, the king of Gandhar was slain by Shikhand the son
his sister-in-law. He who was served with gold handled fans, is no
being fanned by the wings of birds. He who deceitfully won Yuc
hishthit and his great kingdom, was at last conquered. He wa
good regions by means of arms like my sons. I fear he will sprea
quarrel among my well-meaning sons in the other world too." 61.



गांधार्युषाश्च । काम्बोज पश्य दुर्ध्वं काम्बोजास्तरणोक्षितम् । शयानमृग
 वर्षकाश्च हतं पाशुपु माघव ॥ १ ॥ पश्य शतजसन्दिग्धो बाह्वचन्दनकपितौ । अवेक्ष्य
 कृपणं माधवो विलपत्यतिदुःखिता ॥ २ ॥ शयानमभितः शूरं कालिङ्गं मधुसूदन । पश्य
 शिप्लो गन्द्युगप्रतिपद्य महाभुजम् ॥ ३ ॥ गागधानां मधिपतिं जयत्सेन जनार्दन । परि
 कर्ष्यं प्रकृदिता मागधयः पश्य योषितः ॥ ४ ॥ अस्य गात्रगतान् बाणान् कार्णिषाद्
 बल्लोपिताद् । उद्धरत्यसुखाविष्टा मूळुंमानाः पुनः पुनः ॥ ५ ॥ आलां सर्वानघघा
 ताम्भतपेभ परिभ्रमात् । प्रम्लाननलिनानामानि भान्ति वपत्राणि माघव ॥ ६ ॥ द्रोणेन
 निहताः शूरा शेरते कचिरागदा । धृष्टद्युम्नसुतासर्वे शिशवो हेममालिनः ॥ ७ ॥
 तत्रैव निहताः शूराः शेरते कचिरागदाः । द्रोणेताभिमुत्वाः सर्वे भ्रान्तः पञ्च केकयाः
 ॥ ८ ॥ द्रोणेन दुपर्वं संख्ये पश्य माघव पातिनम् । महाह्रियमिवारण्ये सिंहेन महता
 अध्याय २५ ॥

गांधारी बोली है माघवजी इस मृतरु और पृथ्वीकी धूलपर सोनेवाले
 काम्बोज के राजा को देखो जोकि अनेक उत्तम रुक्न्वयुक्त होकर काम्बोज देशी
 १५ पुरुषों के योग्य है । १ । वह माधवों जिनकी कथिरी भरी चन्दन से लित
 ना को देखकर महादुःखी होकर दुःखता विलाप करती है । २ । हेमधुसूदनजी
 र सोनेवाले शूरवीर राजा कलिङ्ग को चारों ओर से देखो जिसकी बड़ी भुजा
 काशित बाजूबन्दों के जाड़े से अनंकुत है । ३ । हे जनार्दनजी स्त्रियां सब ओरसे
 स जयत्सेन राजा मागधको घेरकर अत्यंत रोदन करती हुई व्याकुल है । ४ ।
 १६ बारम्बार अचेत और दुःखसे पूर्ण स्त्रियां अभिमन्यु के भुजबलसे गारे और
 उसके अंगों में लगे हुये बाणोंको निकालती हैं । ५ । हे माघवजी इन सब निर्दोष
 स्त्रियोंके मुख धूप और परिश्रम से ऐसे दिखाई पड़ते हैं जैसे कि कुम्हछाये हुये
 कमल होते हैं । ६ । धृष्टद्युम्न के सब पुत्र बालक सुवर्णकी माळा और सुन्दर
 बाजूबन्द रखनेवाले शूरवीर द्रोणाचार्य के हाथसे मरे हुये सोते हैं । ७ । उसी प्रकार
 सुन्दर बाजूबन्द रखनेवाले कैकयदेशी पाचों शूर भाई सम्मुखतामें द्रोणाचार्य के
 हाथसे मरे हुये सोते हैं । ८ । हे माघवजी युद्धमें द्रोणाचार्य के हाथसे गिराये हुये

CHAPTER XXV

Gandhari said, " Look at the king of Camboj who is lying dead
 on dust O Madhav. He was an excellent warriors of broad shoulders
 like the good soldiers of Camboj. His wife is weeping at his bleed-
 ing arm pasted with sandal Look O Madhusudan, at the dead
 warrior king of Kaling whose long arms are decked with a brilliant pair
 of armlets. Women are weeping round Jayatsen, the king of Magadh
 and extract the arrows shot by the powerful arms of Abhimanyu all
 through his body. 5. The faces of all these women look like with-

हतम् ॥ ९ ॥ पाञ्चालराज्ञो विमलं पुष्करिकाक्ष पाण्डुरम् । आतपत्रं समाभाति शरही
 वनिशाकरः ॥ १० ॥ हनास्तु दु पदे हृत् स्तुवा भार्या सुदुःखिता । दग्धा गच्छन्ति
 पाण्डवास्वै राजानमपसम्पतः ॥ ११ ॥ धृष्टकेतुः महेश्यासं वेदिपुंगवमन्वजाः । द्रोणेन
 निहतं शूरे हरन्ति हतचेतसः ॥ १२ ॥ दाशार्हपुत्रकं धीरं शयानं सत्यविक्रमम् । अरो
 प्योके रुद्रस्येनाभेदिराजं वरांगनाः ॥ १३ ॥ बिम्बानुविन्वाबावस्तौ वतितौ पश्य
 केराव । हिमान्ते पुष्पितौ शाली मरुता गलिताशिव ॥ १४ ॥ अवध्याः पाण्डवाः कृष्ण
 सर्वे पय स्वया सह । ये मुक्ता द्रोणमीश्वराणां कर्णात् वैकर्षनात् कृणात् ॥ १५ ॥ दुर्वा
 घनात् द्रोणमुगात् सैत्रवाच्च महारथात् । सोमदत्तदिकर्णाच्च शूराश्च हतवर्मावः
 ॥ १६ ॥ ये ह्यस्युः शस्त्रवेगेन वेधानीप नरवर्माः त इमे निहताः सर्वे पश्य काष्ठस्य पर्व
 यम् ॥ १७ ॥ तथैव निहताः कृष्ण मम पुत्रास्तरिस्थिनः । यदेवाकृतकामस्तवपुत्रपुत्रवर्ध

द्रुपद को ऐसे देखो जैसे कि वनमें बड़े सिंहसे मारे हुये बड़े हाथी को देखते हैं । ९ ।
 राजा द्रुपद का श्वेन निर्मल छत्र ऐसे प्रकाशमान है जैसे कि शरदऋतुमें चन्द्रमा
 होता है । १० । यह दुःखी भार्या और पुत्रवधू पांचालके वृद्ध राजा द्रुपदको दाह
 देकर दाहिनी ओरसे जाती है । ११ । अचेत स्त्रियां द्रोणाचार्य के हाथसे मारे हुये
 इस महात्मा शूर चंदेरके राजा धृष्टयुम्नको उठाती है । १२ । हे श्रीकृष्णजी राजा
 चंदेरी को यह उत्तम स्त्रियां इस सत्य पराक्रमी वीर मैदान में सोनेवाले अपने
 पात्र को बगल में लेकर रोती हैं । १३ । हे श्रीकृष्णजी इन अनाति देवके राजा
 बिन्दानुविन्दको ऐसे देखो जैसे कि हिमऋतुके अन्तपर वायुमें गिराये हुये दोषुष्पित
 शालवृक्षोंका देखते हैं । १४ । हे श्रीकृष्णजी सव पांडव आपके साथ मारनेके
 अयोग्य है जो कि द्रोणाचार्य भीष्म, कर्ण और कृपाचार्य से भी बचे हुये हैं दुर्वा
 घन अवस्थामा, मिथु का राजा जयद्रथ, विकर्ण, सोमदत्त और शूर हतवर्मासे
 भी बचे । १६ । जो नरोत्तम शस्त्रों की तीक्ष्णता से देवताओंको भी मारसक्ये

ered lotus flowers on account of toil and the heat of the Sun. All the
 youthful sons of Dhrishtadyumn, slain by Dronacharya, are sleeping
 here on earth. Similarly, the five Kaikya brothers, slain by Drona,
 sleep in death. Drupad, slain by Drona in battle, looks like a great
 elephant slain by a lion in a forest. His white umbrella shines like
 the moon in winter. 10. His distressed wife and daughter-in-law
 have burnt Drupad the old king of Pandhal and are going away. The
 insensible women lift up the king of Chanderi who was slain by Drona.
 The women of Chanderi have taken up their brave grandern in their
 arms and are weeping over him. Look at Vind and Anuvind the two
 princes of Avanti lying down like two flowering trees uprooted by
 the wind at the end of winter. The Pandavas as well as you, O Krishn,

गः पुनः ॥ १८ ॥ आन्तर्ज्ञैव पुत्रेण प्रलिन विदुरेण च । तद्वशोक्तासि मा स्नेहं कुप
 पारमसुतेष्विति ॥ १९ ॥ तयोर्न दर्शनं तात मिथ्या भविसहंति । अन्तिरेणैव पुत्रा मे
 मस्मीभूता जनादंत ॥ २० ॥ वैशम्पायन उवाच । इत्युपस्था न्यपतद्भूमौ गान्धारी शोक
 मूर्च्छिता । ह्र. खोपहतविज्ञाता धैर्यमुरस्यन्य मारुत ॥ २१ ॥ ततः कोपपरीतांगी पुत्र
 शोकपरिच्छुता । अगाम शौरिं योषिव गान्धारी व्यधितेन्द्रिया । २२ ॥ गान्धार्युवाच ।
 पाण्डवा वारतराष्ट्राश्च दग्धा कृण्व परस्परम् । उपेक्षिता बिनश्यन्तस्त्वया कस्मान्न
 मार्दन ॥ २३ ॥ इच्छस्योपेक्षितो पाण्डु कुरुणां मधुसूदन । यस्मात्त्वया महावाहो फलं
 तस्मादवाप्नहि ॥ २४ ॥ पतिशुश्रूषया अग्ने तपः क्रिच्छन्नद्वारिजितम् । तेन त्वां दुरवा
 यह सच इत् सुद्धम मारमप इम । अपरांत समयका दत्ता । २५ ॥ ६-भाकृष्णजी
 मेरे बेगवान् पुत्र तभी मरेकवे जब कि तुम अपने अभीष्ट प्राप्ती से रहित उपप्लवी
 स्थानको शौचकरके । १८ । छती समय मुझको भीष्म धितामह और हानी
 विदुरभी मे सन्नाथाबा कि अपने पुत्रों पर प्रीति मतकरो । १८ । उन दोनोंकी
 यह बुरईकता किज्जारीके बनेपनहीं थी इसीसे हे जनाईरजी मेरे पुत्र योड़ेही
 दिनोंमें नाश होक्ये । २० । वैशम्पायन बोले हे मरतबंधी यह गान्धारी यह सच
 करकर शोकसे बुरईबाह दुःख से बापल बुद्धि धैर्यको त्यागकर पृथ्वीपर गिर
 पड़ी । २२ । फिर कोबते बूर्ण क्षीर बुजझोक में हूवी जमावधान इन्द्रिय गान्धा
 रीके भीकृष्णजी को दोषनगाया । २२ । गान्धारी बोली हे भीकृष्णजी पांडवों
 के और बुरईभूमके पुत्रादिक सच परस्पर मस्मदुये हे जनादेन तुमने किसहेतु से
 स्व विनाशहोनेवालों को स्वाग किया । २३ । हे महावाह मधुसूदनजी जिसकारण

are indestructible as you scaped death from the hands of Drona-
 charya, Bhishm, Karan, Kripacharya, Duryodhan, Jayadrath, Vikarn
 Somdat and valiant Kritvarma. The heroes, who could slay even
 gods with their sharp and powerful weapons, have died in this war;
 the times are so changed. 17. I held my sons as dead from the
 time you returned from your useless mission of peace to Upap'arya.
 Bhishm the grandfather and wise Vidur told me then that I should
 love my sons no more Their foresight could not be wrong, O
 Janardan, and therefore my sons were slain." 20 Vaishampayan
 says that having talked as above, Gandhari lost her senses and patience
 with grief and fell down on earth. Then with his body full of rage
 and her organs out of control, she blamed Sari Krishna, saying, " The
 sons of the Pandavas and Dhrishtadyumn were all slain at once. Why
 did you leave them in the lurch? You will be punished for your
 wilfully looking at the destruction of the Kauravas By the virtue
 of the asceticism which I have performed in attending on my husband

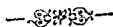
पेन शस्त्रे चक्रगदाभरः ॥ २५ ॥ यस्मात् परस्परं प्रन्तो ज्ञातयः कुरुपाण्डवाः । उपे
क्षितास्ते गोविन्द तस्माज्ज्ञानीन् यत्रिष्यसि ॥ २६ ॥ त्वमप्युपस्थिते वर्षे वद्वीत्रिणो मधु
सूदन । हतशानिर्हतामात्यो हतपुत्रो वनेचर । कुत्सितेनाप्युपायेन निघनं समवाप्स्यसि
॥ २७ ॥ तवाप्येवं हतपुत्रा निहतजातिपान्धवाः । स्त्रियः परितविष्यन्ति यथैव भरत
स्त्रिय । ॥ २८ ॥ वैशम्पायन उवाच । एतच्छ्रुत्वा तु वचनं वामुदेवो महामनाः ।
उवाच देवीं गान्धारीमीपद्भरतमयत्रिय ॥ २९ ॥ संदुर्खा वृषिणश्चक्रुस्व मर्त्यो नेह
विद्यते । जानेहमेतदप्येवं क्षीर्णं खरसि सुव्रते । ३० ॥ अथस्यास्ते नरेरन्यैरपि वा देव

से तुल्यच्छावान ने जान बूझकर कौरवों का नाश होनेदिशा इसहेतुसे तुमभी उसके
फलको पाओगे । २४ । पतिही सेवा करनेवाली मैंने जो कुछ तपपात्र किया उस
दुष्पाप्य तपके द्वारा तुमनक्र गदाधारी को शपदेतीहूँ । २५ । हे गोविन्दजी जो
कि तुमने परस्पर जगतालेहो मारनेवाले कौशव और पांडवोंको नहीं रोका इसहेतुसे
तुम भी अपनी जातियों को मारोगे । २६ । हेमधुसूदनजी तुमभी, छत्तीमवार्ष वर्ष
परमान होनेपर मरेहुये मंत्री पुत्रजातिवाले वनमें, फिरनेवाले अज्ञातरूप लांकोमेंप्रत
अनाथ के समान निन्दित उपायसे मरणहो पाओगे । २७ । इसीप्रकार तेरीस्त्रियां
भी जिनके पुत्रवांश और ज्ञानिवाले मारोगये ऐमे चारोंओरको दौड़ेंगी जैसे कि
यह भरतवंशियोंकी स्त्रियां दौड़ती हैं । २८ । वैशम्पायनबोले कि बड़े साहसी
वासुदेवजी इनयोर वचनको सुन कर मंदसुनकान कर्णहेतुसे उन देवी गान्धारीसे बोले
हे क्षत्रिणार्थी मैं जानताहूँ कि तू मेरे कर्म के समान कर्महोभी अपने तपके नाशक
लिये करतीहै यादवलोच दैवसेही नाशको पावोगे इसमें संदेह नहींहै । ३० । हेसुभ
क्षी पादचक्राण अथ मनुष्य देवता और दानवोंसेभी अन्धाहै परस्पर विनाश को

I curse you. Because you did not stop the mutual carnage of the
Kauravas and the Pandavas, you will destroy your own kinsmen
too. After thirty six years your ministers, sons and kinsmen being
slain, and you hiding in a forest will die an ignominious death. The
women of your family will run here and there like these Kaurav
women." Vaishampayan says that brave Vasudev smiled slowly
at these words of Gandhari, and said, "I know, Kshatriya woman
that you have done a deed like mine to destroy the merit of your
asceticism. The Yadavas are sure to die of God's will. They are
indestructible by the gods and Danavas and therefore they shall die

नये । परपरकृतं नाशं यत प्राप्स्यसि यादयाः । ३१ ॥ इत्युजयति दाशाहं पाण्ड
 ॥ क्लृप्तचेतस । बभूवुर्धृशस विग्ना निराशाः अपि जीविते ॥ ३२ ॥

इति सौपर्वण्ये स्त्रीविलापपर्वणि गन्धारीवाक्य पंचविंशोऽध्याय २५ ॥



भगवानुवाच । उत्सिष्टोत्सिष्ट गान्धारी मा य शोके मनःकुप्या । तथैव ह्यपराधेन
 बहवो निघ्नं गता ॥ १ ॥ यत्त्वं पुत्र दुरात्मानमोषुमत्यन्तमानिनम् । दुःखोघनेन पुर
 स्हत्य दुःखेन स्राष्टुं मन्यसे ॥ ३१ ॥ निःसुर धैरपुरुष वृद्धानां शासनोत्तमम् । कथमा
 भक्त दोषं मया धातुमिहेच्छसि ॥ ३२ ॥ मृतं वा यदि वा नष्टं धीतीतमनुशोचति ।
 दुःखेन लभते तु खं द्वावनेर्या प्रपद्यते ॥ ४ ॥ तयोर्धियं ब्राह्मणवत्से गर्भं गौर्वोढारं
 पावंगे । ३१ । श्रीकृष्ण जी के इस प्रकार कहने पर पाण्डवसंग भगवन्निर्गत चित्त
 अत्यन्त व्याकुल और जीवनेमें निराशा पुक्तहुये । ३२ ।



अध्याय २६ ॥

श्रीभगवान् बोले हे गान्धारी उठो उठो शोकमें चित्तको मतकरो तेरेअपराध
 से कौरवोंने नाशको पाया । १ । जो उस दुर्बुद्धी अत्यन्त अहङ्कारी ईर्ष्या करनेवाले
 दुःखोघनको अग्रवर्त्ती करके अपने दुष्ट कर्मको अच्छा मानताहै । २ । जो कि कठोर
 ध्वज शत्रुताको प्रिय जाननेवाले मनुष्य और वृद्धोंकी आज्ञाके विपरीत बिरुद्धकर्म
 करनेवाला या यहाँ तू अपने कियेहुये दोषको कैते मुझमें लगाना चाहती । ३ । जो
 मृतक अथवा विनाशयुक्त व्यतीत समय को शोचती है और दुःखसे दुःखकोपातीहै
 अर्थात् आदि अन्तके दोनों दुखोंको पाती है । ४ । ब्राह्मणी तपके निमित्त उत्पन्न

fighting with one another." The Pandavas were terrified at these
 words of Shri Krishna and lost all hope of life in their distress " 32



CHAPTER XXXI

Shri Krishna said to Gandhari, " Rise up and donot give your
 self up to grief The Kauravas were destroyed by your own fault.
 You made proud and envious Duryodhan headstrog and yet call your
 wicked deed good He loved enmity and despised the advice of old
 men, and yet you wish to lay your own fault on my shoulders. You
 were at this great destruction and are doubly distressed, A Brahman

धावितारं तुरंगी । शूद्रा दासं पशुपालञ्च वैश्या वधार्थीश्च स्यद्विधा राजपुत्री ॥ ५ ॥
 वैशम्पायन उवाच । तच्छ्रुत्वा वासुदेवस्य पुनरुक्तं वचोऽपियम् । तूर्णो वभूव गान्धारी
 शोकव्याकुलचेतना ॥ ६ ॥ धृतराष्ट्रस्तु राजर्षिर्निगृह्याबुद्धिज तमः । पृथ्वपृच्छत
 धर्मात्मा धर्मराज युधिष्ठिरम् । जीवतां परिमाणं नः सैव्यानानपि पाण्डव । इतानां यदि
 जानीषि परिमाणं वदस्व मे ॥ ८ ॥ युधिष्ठिर उवाच दशायुतानमपुतं सहस्राणि च
 विशतिः । कोट्यः षष्टिश्च षट्चैव येसि । न राजन् मृधे इताः ॥ ९ ॥ अलक्ष्याणां तु
 धाराणां अहस्राणि चतुर्दश । दश चान्यानि राजेन्द्र शतं षष्टिश्च पञ्च ॥ १० ॥
 धृतराष्ट्र उवाच । युधिष्ठिर गतिं कान्ते गता । पुरुषसत्तमाः । आचक्ष्व मे महाबाहो
 सर्वज्ञो ह्यसि मे मतः ॥ ११ ॥ युधिष्ठिर उवाच । वैर्हुतानि शरीराणि दृष्टैः परमं युगो
 देवराजसमांलोकं गतास्ते सत्यविक्रमाः ॥ १२ ॥ ये त्वद्दृष्टेन मनना मर्त्तव्यमिति

होनेवाले गर्भको धारण करती है गौं भार लेचलने वालेको घोड़ी दौड़ानेवाले को
 शूद्रा दास को वैश्या पशुपालको राजपुत्री क्षत्रिया युद्धके अभिलाषी गर्भको । ५ ।
 वैशम्पायन बोले कि शोकसे व्याकुल नेत्र गान्धारी वासुदेवजी के उस अभिषम्भ
 दुवारा कहेहुये वचनको सुनकर मौनहोगई । ६ । फिर राजकृपि धृतराष्ट्रने अज्ञान
 से उत्पन्न होनेवाले मोहको रोककर धर्मज्ञ राजा युधिष्ठिर से पूछा । ७ । कि हे
 पांडव तुमजीवतीहुई सेनाकी संख्याके जाननेवाले हो और जोमृतक शूरवीरों की
 संख्याको जानने हो तो मुझे कदो । ८ । युधिष्ठिर बोले हे राजा इम युद्धमें दश
 करोर बीसहजार शूरवीर मारेगये । ९ । हे राजेन्द्र दृष्टि न आनेवाने धीरों की संख्या
 चौबीस हजार एकसाँ पैसठ है । १० । धृतराष्ट्रबोले हे पुरुषोत्तम महाबाहु युधिष्ठिर
 उन्हेंने किस गतिको पाया वह मुझसे कदो भेरे विचारसे तुम सब घातों के जानने
 बोलेहो । ११ । युधिष्ठिर बोले जिन प्रसन्न चित्तों ने वह युद्धमें अपने शरीरको
 नाश किया वह सत्य पराक्रमी इन्द्रलोकके समान लोकोंको गये । १२ । हे भरतवंशी
 जो अभयचिन्तसे युद्धमें लड़तेहुये मारेगये वह गन्धर्व लोकको गये । १३ । और

woman produces offspring for asceticism, a cow to carry load, a mare
 to produce a runner, a shudra woman produces a slave, a Vaishya
 woman produces one who rears beasts; but a kshatrya woman pro-
 duces fighting men." Vaishampayan says that on hearing these
 words of Vasudev, respected again and again and unpleasant to hear,
 Gandhari distressed with grief, became silent. Then Dhritrashtra the
 wise, checking his passions, which were the outcome of ignorance,
 said that he did not know the number of the warriors slain, and
 Dhritrashtra said that the dead warriors amounted to ten crores
 and twenty thousands and that twenty four thousands, one hundred
 and sixty five were invincible. Dhritrashtra then questioned about

रत । युध्यमात्रा हताः संख्ये ते गन्धर्वैः समागता ॥ १३ ॥ ये च संप्रामभूयिष्ठा
 ॥ चमाना, परांमुखाः । जल्पेण निघ्नं प्राप्ता गतास्ते गुह्यकानुपति ॥ १४ ॥ पीड्यमाना
 रैर्येतु हीनमाना निरायुवाः । द्विगिनेश्वा महात्मान परानभिमुखा रणे ॥ १५ ॥ इच्छिय
 माना, शिने शस्त्रैः क्षत्रधर्मगरायणाः । गतास्ते प्रह्लासदनं ह्ना वीराः सुवर्चस
 ॥ १६ ॥ ये तत्र निहता राजन्नन्तरायोधने प्रति । यथाकथञ्चित्ते राजन् संप्राप्यास्तू
 वराद् कुरुन् ॥ १७ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । केन ज्ञानबलेनैवं पुत्र पदयासि सिद्धवत् ।
 श्रेष्ठे वय महाबाहो श्रोतव्यं यदि मन्यसे ॥ १८ ॥ युधिष्ठिर उवाच । निदेशाद्भवतः
 पूर्व घने विचरता मया । तीर्थयात्राप्रसङ्गेन संप्राप्तोऽयमनुग्रह ॥ १९ ॥ देवर्षिलोमशो
 ष्टस्ततः प्राप्तोऽस्म्यनुस्मृतिम् । दिव्यं चक्षुरनुगण्ठे ज्ञानयोगेन वै पुरा ॥ २० ॥ धृत्
 राष्ट्र उवाच । धेत्रानाथा जनस्यास्य सनाथा ये च भारत । कश्चित्तेषां शरीराणि

शरीरभूमि में नियत याचना करते परांगुल्य होकर शस्त्रोंसे मारगये वत गुह्यकों के
 शोकोंको गये । १४ । जो पात्यमान अशस्त्र लज्जासे युक्त और नई साइसी युद्धमें
 शत्रुओं के सम्मुख शत्रुओं के हाथसे गिरते क्षत्रिय धर्मको उत्तम माननेवाले तेज
 शस्त्रों से मारगये वह निस्मंदेह ब्रह्मलोकको गये । १५ । हे राजा जोमनुष्य यहां
 रणभूमि के मध्यमें जिन किसी प्रकारसे मारगये वह उत्तर कौरवदेशको गये । १६ ।
 धृतराष्ट्र बोले हे पुत्र तुम सिद्धोंके समान जिस ज्ञानबल से इस प्रकार देखते हो हे
 महाबाहु वह मुझसे कसो जो मेरे मुनेने के योग्यहै । १८ । युधिष्ठिर बोले कि
 पूर्वसमय में आपकी आज्ञानुसार वनमें घूमनेवाले मैंने तीर्थयात्रा के योगसे इस अ-
 ग्रहको प्राप्त किया । १९ । देवर्षीप लोमशरूपि देखे उनसे इस मनुस्मृतिको
 पाया और निश्चयकरके पूर्वसमयमें ज्ञान यांगमे दिव्य नेत्रों को पाया । २० ।
 धृतराष्ट्र बोले हे भरतवंशी क्या तुम नाथ और सनाथ लोगों के शरीरोंको विधि
 के अनुसार दाह करोगे । २१ । जिन्हों का संस्कार करने के योग्य नहीं है

their fate hereafter, and Yudhishtir said, " Those who died cheerfully
 have gone to the region of Indra; those who were cheerless, joined
 the Gandharvas; those who begged for mercy and turned back, were
 turned into Guhyas; those who were deprived of their weapons
 and yet faced the enemy and were slain, have surely gone to the
 regions of Brahm. All those who died in this field of battle, under
 any circumstance, have gone to the country of Uitar-Kurus. "
 Dhritashtira then asked him how he could see all that like eiddha,
 and Yudhishtir said, " Roaming by your order in forests, I got this
 faculty by visiting holy places. I saw Lomash the dove sage and
 got from him the knowledge as well as divine sight. " 20. Dhrit-
 ashtra then said, " Will you burn these bodies which have none to
 look after? We shou'd save the bodies from being dragged and eaten

घृह्यन्ति विधिपूर्वकम् ॥ २१ ॥ न येषां सति कर्तारो न च येऽत्रादितान्मयः । वपञ्च
 कस्य कुर्व्याम बहुत्वात्तात् कर्मणः ॥२२॥ यान् सुपर्णाश्च वृधाश्च विकर्षन्ति ततस्ततः
 तेषान् तु कर्मणा लोका भविष्यन्ति युधिष्ठिर ॥ २३ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवमुक्तो
 महाप्राज्ञः कुन्तीपुत्रोयुधिष्ठिरः । आदिदेश सुधर्माणं धौम्यं सूतञ्च सञ्जयम् ॥ २४ ॥
 विदुरञ्च महावृद्धिं युधुस्तुञ्चैव कौरवम् । इन्द्रसेनमुक्षाञ्चैव भृत्यान् सूताञ्च सर्वम्
 ॥ २५ ॥ भवन्तः कारयन्त्वेषां प्रेतकार्याण्यनेकशः । यथा चानायधत् किञ्चिच्चरिती
 न विनश्यति ॥ २६ ॥ शशनाद्धर्मराजस्य क्षत्रा सूतञ्च सञ्जयः । सुधर्मा धौम्यश्च
 द्वित इन्द्रसेनाह्वयस्तथा ॥२७॥ चन्दनागुरुकाष्ठानि तथा कालीयकाण्युत । घृतं तैलञ्च
 गन्धाञ्च क्षौमाणि घसनानि च ॥ २८ ॥ समाहृत्य महाहोणि दारुणाश्चैव सज्जयान्
 रथाञ्च सूदितास्तत्र नानापहरणानि च ॥ २९ ॥ चिता कृत्वा प्रयत्नेन ययामुत्थायान्
 धिप । दाहयामासुरव्यप्रा विविदष्टेन कर्मणा ३० ॥ दुर्योधनञ्च राजानं भ्रातृञ्चास्य

और यहाँ जिनकी अग्नि नियत नहीं है हे तात कर्मों की अधिकता से ही
 किसका क्रिया कर्मकरे जिन्होंको सुवर्ण अर्थापि गरुड और गिद्ध इधर उधर
 से खेंचो दे हे युधिष्ठिर क्रियाकर्म से उन्हीं के लोकहोगे । २३ । वैशम्पाय
 ने दे महाराज इस वचनको सुनकर कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिरने दुर्धर्षन के पुरोहित
 सुधर्मा, धौम्यश्चपि सूत संजय, वड़े बुद्धिमान् विदुरजी, कौरव युधुस्तु इन्द्रसेनादिव
 भृत्य और सब सूत । २५ । इन सबलोगोंको आज्ञाकरी कि आप सबलोग इन्हीं
 के सब मेतकार्यों को करो जिससे कि कोई शरीर अनाथ के समान नाशको न
 पावे । २६ । धर्मराजकी आज्ञा से विदुर सूतमंजय सुधर्मा और धाम्य पुरोहित
 समेत इन्द्रसेन और जयन । २७ । चन्दन, अगुरु, काष्ठ और कालीयक घृत,
 तेल, सुगन्धियां बहुमूल्य क्षौमवस्त्र । २८ । लकड़ियों के ढेर और वहाँ पर टूटेहुये
 रथ और नानामुकार के शस्त्रोंको इकट्ठा करके । २९ । सावधानों ने वड़े उपायों
 से चिताओंको बनाकर मुख्य २ राजाओंको शास्त्र विहित कर्मों के द्वारा दाह
 किया । ३० । राजा दुर्योधन उसके सौ भाई शल्य राजाशल भूरिश्रवा । ३१ ।

away by the hands of prey and should burn them in accordance with
 the religious rites. 23. Vaishampayan said that on hearing
 Dhritrashtra's words, Yudhishtir asked Sidharma the priest of
 Duryodhan, Dhaumya, Sanjaya, wise Vidur, Yuyutu the Kaurav
 and Indrasen and other servants and drivers to perform the funeral
 rites and let no corpse be destroyed for want of care. 26. By
 Yudhishtir's order Vidur, Sanjaya, Sidharma, Dhaumya, the priest,
 Indrasen and Jaya collected sandal, agur wood, ghee, oil, perfumes,
 clothes, heaps of fuel, broken cars and weapons. They then made
 funeral piles and burnt over them the bodies of chief kings with religious
 rites. 30. Prince Duryodhan with his hundred brothers, Shalya,

(७४२५)

शताधिकान् । शतं शंलञ्च राजानं भूरिश्रवसमेव च ॥ ३१ ॥ जयद्रथश्च राजानं
मभिमन्युश्च भारत । दौःशासनं लक्ष्मणश्च धृष्टकेतुश्च पार्थिवम् ॥ ३२ ॥ दृहन्तं
सोमदत्तश्च सूत्र्यांश्च शताधिकान् । राजानं क्षेमघन्वानं विराटद्रुपदौ तथा ॥ ३३ ॥
शिक्षिष्विनञ्च पावालयं धृष्टद्युम्नश्च पार्यतम् । युधामन्युश्च विक्रांतमुत्तमंजसमेव च
॥ ३४ ॥ कौशल्यं द्रौपदेयांश्च शकुनिवेष शौवलम् । अचलं वृषकक्ष्व भगदक्षं च पार्थि
वम् ॥ ३५ ॥ कर्णं वैकर्त्तनेचैव सहपुत्रमभरणम् । कैकयांश्च महेश्वान्मांश्रिगर्तांश्च महारथान्
॥ ३६ ॥ प्रदोत्कचं राक्षसेन्द्रं वक्रसानरमेव च । जलम्युपं राक्षसेन्द्रं जलसन्धश्च पार्थि
वम् ॥ ३७ ॥ अन्यांश्च पार्थिवान् ॥ अत्र शतशोऽथ सहस्रशः । घृतधाराहुनदीप्तः पावकैः
समदाहयन् ॥ ३८ ॥ ये चाप्यगायास्तत्रासन्नानादेशसमागताः । तांश्च सर्वान् समा
नाय्य राक्षान् कुर्यात्सहस्रशः ॥ ३९ ॥ चित्रा दाढीमरुत्प्रभैः प्रभ्रैः स्नेहपाचितैः ।
दाहयामास विदुरो घमेराजस्य शासनात् ॥ ४० ॥ कारयित्वा क्रियास्तेषां कुरुराजो
युधिष्ठिरः । घृतराष्ट्रं पुरस्कृत्य गङ्गामभिसुखोऽगमत् ॥ ४१ ॥
इति स्त्रीपर्वणि श्राद्धपर्वणि युद्धमृतानामौर्ध्वदोहिके षड्विंशोऽध्यायः २६ ॥

राजानयद्रथ, अभिमन्यु दुःशासन के पुत्र लक्ष्मण राजा धृष्टकेतु । ३२ । दृहन्त सोम
दत्त सैकहो मृजयदेशी, राजा क्षेमघन्वा, विराट् द्रुपद । ३३ । शिक्षण्डी धृष्टद्युम्न
पराक्रमी युधामन्यु उत्तमोभस कौशल्य द्रौपदीके पुत्र शौवलका पुत्र शकुनी,
अचल वृषक राजा भगदत्त । ३५ । क्रोधयुक्त सूर्य का पुत्र कर्ण पुत्रो समेत बड़े
घनेषधारी केकयदेशी महारथी त्रिगर्तदेशी । ३६ । राक्षसाधिप घरोत्कच वक्रका
भाई राक्षसोंकाराजा जलम्युप राजा जलसिन्ध इनको और अन्यहजारों राजा ३७।
ओंको घत की धाराओं से होमी हुई प्रकाशमान अभिनयों से अच्छे प्रकारसे दाह
किया । ३८ । वहाँपर नानामकार के देशोंसे आनेवाले जो अनाथ भी थे उन
सबको इकट्ठा करके । ३९ । सीधे लडियुक्त तेल से संयुक्त लकड़ियों की चिताओं
से विदुरजीने राजाकी आज्ञानुसार उन सबको दाह किया कौरवराज युधिष्ठिर
उन्होंकी क्रियाओंको कराके घृतराष्ट्रको आगे करके श्रीगङ्गाजी के सम्मुख गये ४१

Shal, Bhurishrava, Jayadrath, Abhimanyu, Drihasan's son, Laksh-
man, Dhristaketu, Vrihant, Somdatta, the Srinjayas, Kshemdhawa,
Virat, Drupad, Shikhandi, Dhristadyunn, valiant Yudhamanya,
Uttamauja, Ksals, the sons of Drupad, Shakuni the son Sural,
Achak, Vriehak, king Bhagdatta, 35. rash Kera the son of Surya,
the Kaikaya warriors and their sons the warriors of Tripart.
Ghatotkach the prince of rakshasev, Vak's brother Alamvuh, Prince
Jalandh and other great warriors by thousands were burnt with
libations of ghee. Other warriors from different countries, having
no freinds, were collected together and burnt with libations of oil by
Vidur. Having p rformed their funeral ceremonies, Yudhishtir
and Dhritrashtra, went to the Ganga. " 41.

वैशम्पायन उवाच । ते सनासाद्य गंगान्तु शिवां पुण्यजलोचिताम् । हृदिनीं वपु
सम्पन्तां महानृपा महाबलाम् ॥ १ ॥ सूयणाण्युत्तरीयाणि वेदनाभ्यघमुदय च ततः
पितृणां पौत्राणां भ्रातृणां स्नजनस्पृश ॥ २ ॥ पुत्राणामार्यकाणाञ्च पतीनाञ्च कुशस्त्रियः ।
उदकं त्रिकिरे सर्वा रुदन्त्यो भृशदुःखिताः । सुहृदांचापि धर्मज्ञाः प्रचक्षुः सलिलक्रिया
॥ ३ ॥ ततः कुन्ती महाराज सहस्रा शोककारिता । रुदती मन्द्या वाचा पुत्रान् वचन
मध्वदात् ॥ ४ ॥ यः स शूरो महेश्वासो रथयुधपयूथपम् । अर्जुनेन हतः संख्ये वीरलक्ष
णलक्षितः । ५ ॥ यं सूतपुत्रं मन्यध्वं राधेभिमिति पाण्डवाः । यो वराजचक्रमध्ये दिवा
कर इव प्रभुः ॥ ६ ॥ प्रथयुध्वत यः सर्वान् पुग्वः सपदानुगात् । दुर्योधनघलं सर्व
यः प्रकर्षन् व्यरोचत ॥ ७ ॥ यस्य नास्ति समोवीर्यं पृथिव्यामपि कञ्चन । यो वृणीत
यशः शूरः प्राणैरपि सदा भुवि ॥ ८ ॥ शरयसन्धस्य शूरस्य संप्रामेध्वपलायिनः । कुश

अध्याय २७ ।

वैशम्पायन बाले कि उन्होंने कल्याणरूप पवित्र जलों से पूर्ण श्रीभद्राजी
को और बड़ी रूपवान् स्वच्छजल रखनेवाली हृदिनीको पाकर । १ । उत्तरीयवस्त्र
और पगड़ी आदि को उतारकर पिता भाई पौत्र स्वजनपुत्र और नानाओं के
जलदानोंको किया । २ । अत्यन्त दुःखी रोनेवाली सब कौरवीय स्त्रियोंने अपने
पतियोंको जलदान किया । तबशोकार्त कुन्ती अकस्मात् अपने पुत्रोंसे यह वचन
बोली । ४ । किन्ने वह बड़ा धनुषधारी महारथी वीरोंके चिहनों से चिह्नित युद्ध
में अर्जुनके हाथ से विजय हुआ । ५ । हे पांडव तुम जिनको मृत और राधाका
पुत्र मानने हो और जो समर्थ सूर्य के समान सेनाके मध्य में विराजमान हुआ
प्रथम जिसने तुम सब समेत तुम्हारे साथियों से युद्ध किया और जो दुर्योधनकी
सब सेनाको खिचता शोभामान हुआ जिसके बलके समान सम्पूर्ण पृथ्वीपर कोई
राजा नहीं है और जिन शूरने सदैव इस पृथ्वीपर शुभ कीर्तियों को प्राणोंसे भी
अधिक चाहा उस सत्यप्रतिज्ञ युद्ध में पराङ्मुख न होनेवाले । धृगमकर्मा अपने भाई

CHAPTER XXVII

Vaishampayan said, "Going to the Ganges, the best of rivers and waters, they put off their clothes and offered water to the manes of their elders, sons, kinsmen and friends. The lamenting Kaurav woman offered water to the manes of their husbands. Then Kunti, distressed with grief, said to her sons, 'The great archer defeated by Arjun, known to you as the son of Sut and Raiha, who shone like the sun in the field of battle, the foremost of your opponents, who led the Kaurav forces, who was the strongest of the princes of the world, who preferred fame to life, was your truthful and invincible brother and therefore you must offer water to his

व्यमुदकं तस्य भ्रातुः किलिष्टमणं ॥९॥ स हि व पूर्वजो भ्राता मास्करान्मयजा
 पत । कुण्डली कवची शूरो दिवाकरसमप्रभः ॥ १० ॥ अत्वा तु पाण्डवाः सर्वे मातुर्ध
 वनमप्रियम् । कर्णमेघान्दशोचन्त भूयश्चात्तराभवन् ॥ ११ ॥ तत स् पुरुषध्यात्र
 कुन्तीपुत्रोयुधिष्ठिरः । उवाच मातरं धीरो निश्यसाधिवं पन्नगः ॥१२॥ वस्येपुपातमासाद्य
 नाम्बस्तिष्टेद्धनत्रयात् । भवत्यस वधे पत्रो देवगर्भः पुराभवत् ॥१३॥ अहो भवत्या
 मन्त्रस्य ग्रहणेन वधे हता । निधनेन हि कर्णस्य पीडितास्मै सवान्बवाः ॥ १४ ॥ अग्नि
 मन्थोर्बिनाशेन द्रौपदेवधेन च । पांचालानां च नाशेन कुरुणां पतनेन च । १५ ॥ ततः
 शतगुणं दुःखमिदं मामस्पर्शशृणुम् । कर्णमेघानुशोचन् हि सन्देहोऽनाधिवाहित-
 ॥ १६ ॥ एवं बिलप्य वदलं धर्मराजो युधिष्ठिर । विनदन् दुःखितो राजा चकाराःस्थो
 इकं प्रभः ॥ १७ ॥ तत आनाययामास कर्णस्य सपरिकल्पया । खियः पुरपीतर्धीमान

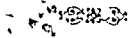
कर्ण का जलदान करो । १९। वह तुम्हारा बड़ा भार्द सूर्यदेवता से मुझमें उत्पन्न हुआ
 था वह शूर कुण्डल कवचधारी और सूर्य के समान तेजस्वी था । १० । सब
 पांडव माता के उस अद्विय वचनको सुनकर कर्णको शोचतेहुये फिर पीड़ावान हुये
 । ११ । इसकेपीछे सर्प के समान श्वासलेता वह कुन्तीका पुत्र पुरुषोत्तम वीर
 युधिष्ठिर अपनी मातासे बोला । १२। अर्जुन के सिवाय दूसरा मनुष्य जिसकी
 वापट्टी को पाकर सम्मुख नियत नहीं हुआ वह देवकुमार पूर्वसमय कैसे आपका
 पुत्र हुआ । १३ । दुःखकी बात है कि आपके भेद गुप्त करने से हम वानरों समेत
 कर्ण के मरनेसे हम वान्धवां सपेन कर्ण के मरने से पीड़ावान हुये । १४ । अग्नि
 मन्थु द्रौपदी के पुत्र पांचालों के नाश और कौरवों के गिरने से भी हम पीड़ावान
 हुये परन्तु उनसवसेभी सौगुने इस दुःखने अब मुझको दवाया है मैं कर्णकाही शोच
 ताहुआ मानों जन्म में नियत होकर जन्मता हूं । १५ हे राजा इसप्रकार धर्मराज
 युधिष्ठिरने बहुत बिछाप करके धीरे २ बहुतरोदन किया इसके पीछे उसप्रभुने उसका
 जलदान किया । १७। इसके पीछे उसें युद्धिमान कौरवपति युधिष्ठिरने भार्द के प्रेमसे

manes. He was the off-spring of Surya and myself, born with armour and ear-rings and glorious like the Sun." 10. Hearing these unwelcome words of their mother all the brothers were much grieved for Karan. Yudhishtbir then said to his mother, "How could he, whose shower of arrows none but Arjun could oppose, be your son? Alas! we are undone by your keeping the matter a secret and have to suffer the pang of Karan's death. We are distressed for the death of Draupadi's sons and Panchala; but hundred times greater has been Karan's death. I burn for Karan's death." 19 Thus Yudhishtbir wept much for Karan's death and offered water to his manes. Then for fraternal love he sent for all the women of

भ्रातृ भेदनायुःशिविरः ॥ १८ ॥ स ताभि सह धर्मात्मा मेतकृत्यमनन्तरम् । कृषोत्त
 तारगंगायाः सेलिदादाकुलन्दिर्यः । १९ ॥

इति स्त्रीपर्वणि धादपर्वेण कर्णस्प गूढपुत्रत्वकथने सप्तविंशोऽध्यायः १७ ॥

॥ समाप्तं च धादपर्वं समस्तं ॥



कर्णकी सप्त स्त्रियों का परिवारसमेत बुझानिया । १८ । वसुधैवात्मा बुद्धिमान्
 धर्मरान युष्मिधने वन्द्यो के साथ निरान्देह विधिपूक प्रतिक्रियाकी किया । १९ ।

इति स्त्री पर्व समाप्त ॥

Karn's family and joined with them in performing his funeral
 ceremonies

